

DUE DATE SLIP**GOVT. COLLEGE, LIBRARY**

KOTA (Raj.)

Students can retain library books only for two weeks at the most.

BORROWER'S No.	DUE DATE	SIGNATURE

वार्षिक सर्वेक्षण प्रतिवेदन
(एक वर उद्योगीय उत्पादन का अर्यशास्त्रीय अग्रयन)

कोटा जिला में मसूरिया उत्पादन

राजस्थान विश्वविद्यालय

की

एम. ए. (अर्थशास्त्र), १९६४

की

परीक्षा हेतु प्रस्तुत

319911

निर्देशक

डा. एम. पी. माथुर

प्रिन्सिपल, राजकीय महाविद्यालय, कोटा

ॐ

प्रस्तुतकर्ता

मानमल जैन

एम. ए. (उद्योग) अर्थशास्त्र
राजकीय महाविद्यालय, कोटा (राजस्थान)

वैसे तो सम्पूर्ण राजस्थान ही औद्योगिक दृष्टिकोण से एक पिछड़ा हुआ प्रदेश है, परन्तु गत दो तीन वर्षों से कोटा में नवीन उद्योगों का फलित द्रुत गति से विकास हो रहा है उसी यह देश के प्रमुख औद्योगिक नगरों की पंक्ति में आ गया है। कोटा के इस औद्योगिक विकास में चर्मण्यवती नदी ने तो चार-चांद लगा दिये हैं। सम्पूर्ण कोटा क्षेत्र में प्राकृतिक साधनों का बाहुल्य है और चर्मण्यवती नदी ने इनके औद्योगिक उपयोग के लिये सस्ती विद्युत शक्ति प्रदान कर औद्योगिक विकास का मार्ग प्रशस्त कर दिया है। यातायात की दृष्टि से भी कोटा रेल द्वारा देश की राजधानी व अन्य प्रमुख औद्योगिक एवं व्यापारिक नगरों से सुसम्बन्धित है। सड़कों द्वारा भी कोटा राजस्थान के सभी प्रमुख नगरों से मिला हुआ है एवं सड़क यातायात भी इसके औद्योगिक विकास में अत्यधिक नहायक सिद्ध हुआ है। कोटा का स्थान राज्य की औद्योगिक वर्तमान अवस्था में प्रमुख हो गया है, और इसीलिये इसे राजस्थान का 'कानपुर' की संज्ञा दी जाने लगी है।

राजस्थान की अर्थव्यवस्था में विज्ञात प्रतापीय उद्योगों के साथ साथ दैनिक आवश्यकता का वस्तुएं एवं दस्तकारी के उत्कृष्ट नमूने प्रस्तुत करने वाले उद्योग एवं कुटीर उद्योगों का भी बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है। राजस्थान का लगभग प्रत्येक नगर अपनी विशिष्ट दस्तकारी के लिये केन्द्र भारत में ही नहीं विदेशों में भी प्रसिद्ध है। औद्योगिक अर्थव्यवस्था में कोटा का प्रमुख स्थान तो है ही परन्तु दस्तकारी के क्षेत्र में भी कोटा अपनी एकमात्र दस्तकारी मण्डलियां के कारण इस क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

गत वर्षों में चिन्तित द्रुत गति से कोटा का औद्योगिक विकास हुआ है लगभग उन्नीस गति से इस दस्तकारी का भी विकास हो रहा है। गत दो-तीन वर्षों में इस उत्पादन में दो बड़े केन्द्र कोटा, केसू व बून्दो को हुए फार्मास्यूटिकल एवं पारखाने विभागीय तह तक जोमित या बर कोटा विभाग के विभिन्न कस्बों एवं देश विदेश के उत्कृष्ट, कलापूर्ण एवं महान् मूल्य रखने वाले वस्तु

बना क्षेत्र विस्तार कर लिया है। गत वर्ष में होने वाली अत्यधिक मांग ने सरकार, सहायी विभाग एवं कृषि का ध्यान इस और वाकफिरत किया है। अब तक यह उत्पादन व्यापारियों एवं वैठियों को निजी स्वार्थ मरी नीतियों द्वारा सम्पन्न हो रहा था, सहायिता का प्रवेश तो इस क्षेत्र में नहीं के बराबर था।

कोटा की इस दस्तकारी के अग्रिम विकास में मुझे भी कोटा-निवासी होने के नाते, इस सम्बन्ध में विशिष्ट जानकारी प्राप्त करने की तीव्र उत्सुका हुई एवं इस हेतु मुझे सर्वेक्षण करने के लिये साधन, कारण एवं उचित निर्देश का सुझाव उपलब्ध हो गया एवं यह सर्वेक्षण प्रतिवेदन हकीकत परिणाम है। एतना उद्देश्य केवल परीक्षा हेतु प्रस्तुत कर देना मात्र न होकर इसके सम्बन्ध में अधिक से अधिक जानकारी सुधमसिद्ध रूप में प्रस्तुत करना है।

प्रस्तुत सर्वेक्षण प्रतिवेदन में जन उत्पादन के संगठन, विन-ग्रन्थ, रोज़गार, श्रम, कृषि मातृ, विनयन आदि के सम्बन्ध में तात्कालिक स्थिति को प्रस्तुत करते हुये उत्तम व्याप्त दोषों एवं कमियों का उल्लेख कर उत्पादन के मावी विकास हेतु व्यवहारिक एवं सुचित सुझाव प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया गया है। जाज्ञा है उनको व्याहार में लाने के अति कम उदाये जाने पर दस्तकारी के विकास एवं संघर्ष के साथ साथ सुझावों को स्थिति में सुधार होगा बिचये कृषि को दीर्घजीवन एवं संरक्षण प्राप्त हो सकेगा।

यह सर्वेक्षण एक कुटीर उपयोगी उत्पादन के सम्बन्ध में सुधमसिद्ध जानकारी प्रस्तुत करने का मेरा प्रथम प्रयास है। न तो सरकार द्वारा नस्ली दिनी व्यक्त विशेष द्वारा-सुरिया उत्पादन का पूर्ण सर्वेक्षण किया गया है बिलवे उद्योग की स्थिति एवं विकास का सही मूल्यांकन किया जा सके। सीमित साधनों एवं कर्मियों के कारण मैंने केवल कोटा जिला तक ही बना क्षेत्र सीमित रखा है। भविष्य में कोटा विभाग में विनयन दस्तकारी के सम्पूर्ण उत्पादन केंद्रों की एक साथ लेहर गान एवं विस्तृत सर्वेक्षण करने की आवश्यकता है जिससे लिये अधिक साधन, सुविधाएँ एवं जन्य वांछनीय है।

मैं वायव्य विभाग का ० एम. पी. माधुर, अविष्ठाता, राबकीय - महा-विभाग, कोटा का हादिक दृष्ट हूँ जिनके सुयोग्य निर्देशन एवं प्रोत्साहन से मैं यह कार्य को पूरा कर सका। डा० आर. पी. सिंह एवं महा-विभाग के ज्येष्ठ विभाग के अन्य प्राध्यापकों का भी मैं हादिक जानकारी हूँ जिन्होंने मुझे समय समय पर प्रोत्साहन एवं उचित निर्देशन देकर इस कार्य को पूरा करने में मदद की है। बहुमूल्य सुवार्थ देने एवं प्राप्त करने में सहयोग देने के लिये श्री महावीर प्रसाद जी, मृतपूर्व प्रशिक्षक, छात्रवृत्ति प्रशिक्षण केंद्र, देहली, बाठकिशत जी मेहता एवं अब्दुल्ला गार्ड कर्मचारी, बुनकर सहकारी समिति, देहली प्रशासन के पात्र हैं। सहकारी - विभाग एवं सांख्यिकी विभाग के कर्मचारियों एवं अधिकारियों को भी मैं हादिक कृतज्ञता देता हूँ जिन्होंने मुझे पर्याप्त जानकारी पूर्ण सुविधा के साथ प्रदान की। अन्त में मैं उन सब बुनकर एवं अन्य महानुभावों के प्रति वाग्य प्रदर्शित करता हूँ जिनके प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष सहयोग से ऐसे कठिन कार्य को जो असाधारण एवं श्रमपूर्ण होते हुये भी, बन्ने व्यस्त जीवन के साथ साथ पूरा कर सका।

जाशा है इस सर्वेक्षण के द्वारा इस उद्योग के सम्बन्ध में विकासोन्मुख मार्ग निर्धारण हेतु आवश्यक जानकारी उपलब्ध हो सकेगी।

विनोद

Shanmugam

(मान मंडल)

१११५६ धानमण्डी,)
कोटा)
२५ फरवरी, १९६४ ।)

अध्याय

पृष्ठ संख्या

१. प्रस्तावना	१
२. संगठन	२०
३. उत्पादन प्रक्रिया	४३
४. कच्चा माल - सहायक सामग्री, उपकरण एवं सज्जा	६२
५. मूँजी, विनियोग एवं वित्त-प्रबन्ध	७८
६. उत्पादन लागत एवं मूल्य उच्चावकत	९७
७. विपणन	१११
८. श्रम	१३५
९. उपसंहार	१४८

परिशिष्ट

अध्याय १ -- प्रस्तावना

परिचय

कौटा जिला

स्थिति

इतिहास

भौगोलिक स्थिति एवं प्राकृतिक विभाग

प्रशासनिक संगठन

कुटीर एवं हाथकर्या उद्योग

कार्य

उद्गम एवं विकास

निष्कर्ष

१-१६

अध्याय २ -- संगठन

संगठन का अर्थ एवं महत्व

मसूरिया उत्पादन क्षेत्र

विपमान संगठन

गैर सहकारी क्षेत्र

सहकारी क्षेत्र

सहकारिता

अर्थ एवं महत्व

उद्गम एवं विकास

स्वरूप

कौटा जिले में हाथकर्या बुनकर सहसमितियां

संगठन का आलोचनात्मक अध्ययन

समाप्त

२०-४२

अध्याय ३ -- उत्पादन प्रक्रिया

परिचय

प्रारम्भिक क्रियार्थ

ताना व सज्जीकरण

कुतार्थ

अन्तिम क्रियार्थ

प्रशिक्षण

आवश्यकता

उपउद्दिष्ट

कठिनाइयाँ

सरकारी प्रयत्न

सुफाय

उत्पादन प्रक्रिया में जाने वाली कठिनाइयाँ

मानवीय कठिनाइयाँ

प्राकृतिक कठिनाइयाँ

अन्य सम्बन्धित समस्याएँ

प्रकाश

कलापूर्ण एवं बारीक काम

मितव्ययता

रंगार्थ व रूपांकन

व्यपार्थ

निष्कर्ष

४३-६१

अध्याय ४ -- कच्चा माल, सहायक सामग्री, उपकरण एवं सज्जा

आवश्यक प्रकार एवं मात्रा

उपउद्दिष्ट

सहकारिता एवं सरकारी योगदान

महत्त्व एवं आवश्यकता

कार्यकारण
दोष एवं कमियां
कठिनाइयां
कौशिल्यकार्य
निष्कर्ष

६२-७७

अध्याय ५ -- पूंजी, विनियोग एवं वित्त-प्रबन्ध
वित्त-प्रबन्ध का महत्त्व एवं स्वरूप
आवश्यक मात्रा

स्थिर पूंजी

चञ्चल पूंजी

वित्त प्रबन्ध की प्रचलित प्रणाली
सरकार एवं सहकारिता

उपउद्घ सञ्चन एवं सुविधार्य

मसूरिया उत्पादन में प्रयोग

सुविधार्य का उपयोग न होने के कारण

आलोचनात्मक अध्ययन एवं सुझाव

७८-९६

अध्याय ६ -- उत्पादन लागत एवं मूल्य उच्चावचन
लागत के तत्त्व

लागत को प्रभावित करने वाले घटक

प्रत्यक्ष घटक

अप्रत्यक्ष घटक

विभिन्न स्तरों पर लागत

मूल्य उच्चावचन

सरकार एवं सहकारिता

कार्यकारण

महत्त्व एवं आवश्यकता

दौष एवं कमियाँ

सुफाव

निष्कर्ष

६७-११०

अध्याय ७ -- विपणन

मांग का क्षेत्र एवं स्वरूप

प्रचलित विपणन पद्धति

उत्पादन के विभिन्न स्वरूप

विपणन सम्बन्धी समस्याएँ

आवागमन के साधन

श्रेणीकरण

प्रमापीकरण

प्रचार एवं विज्ञापन

प्रतियोगिता

अन्य

सरकार एवं सहकारिता

महत्त्व एवं आवश्यकता

कार्यकरण

कमियाँ एवं दौष और उनके कारण

सुफाव

निष्कर्ष

१११-१२४

अध्याय ८ -- ऋण

ऋण का महत्त्व एवं प्रकार

ऋण की पूर्ति एवं प्रवृत्ति

सामाजिक एवं आर्थिकस्थिति

आय

कार्य करने व एतने का स्थान

मौज, शिजा एवं स्वास्थ्य
सामाजिक स्थिति एवं रहन महन का स्तर
मनोरंजन

श्रम समस्यायें

गृह समस्या

श्रम विभाजन

प्रशिक्षण

मनोरंजन व स्वास्थ्य

सरकार एवं सहकारिता

आवश्यकता एवं महत्व

कार्यकरण

दोष एवं कमियां

सुफाव

निष्कर्ष

१३५-१४७

अध्याय ६ -- उपसंहार

विकसित स्थिति

कच्चा माउ, उपकरण एवं सज्जा, संगठन,
उत्पादन प्रक्रिया, उत्पादित माउ, विप-
प्रबन्ध, मांग एवं विपणन, श्रम एवं राज-
गार एवं अन्य

कमियां एवं दोष

दोष

सहकारिता का अभाव

दुन्दरों का शोषण

कच्चा माउ उन्नति

किसम छास

अन्य

कमियां

विद्यमान रूढ़ के परिणाम
विकास की समुचित व्यवस्था के परिणाम
सुभाष

तात्कालिक

दीर्घकालीन

गविष्य

१४८-१६३

परिशिष्ट

- (क) कुनकर सहकारो समितियां जिनके सदस्य
मसूरिया उत्पादन में संलग्न हैं ।
(ख) मसूरिया वर्कों के स्थानीय व्यापारी ।
(ग) मसूरिया उत्पादन में संलग्न सैठिये ।
(घ) प्रश्नावलियां
१. व्यापारी
२. सैठिये
३. कुनकर
(च) सहकारो एवं सरकारी विश्व्यालय
(छ) स्थिति दर्शन-फारवरी, ६४

संदर्भ-ग्रन्थ सूची

नक़्शे, चित्र एवं जालीकचित्र

नक़्शे:-

	क/ पृष्ठ संख्या
१. लौटा बिडे की स्थिति	२
२. लौटा चित्र (प्राकृतिक)	६
३. लौटा चित्र (राशौतिक)	८
४. मसूरिया उत्पादन केंद्रों की स्थिति:	२२
५. बाबागवन के मार्ग	१२७

चित्र :-

१. मसूरिया उत्पादन में संलग्न कर्मी का वितरण	२१
२. कल्पाभाउ मूल्य एवं मजदूरी उच्चावचन	१०६
३. मसूरिया कर्मी के मूल्यों में उच्चावचन	१०७
४. उत्पादन के विभिन्न स्वरूपों का बदलता क्मुपात	११७
५. मसूरिया उत्पादन एवं विपणन	११८
६. उत्पादन के विभिन्न स्वरूप	१२२

जालीक चित्र (फ़ोटो) :-

१. उत्पादन प्रक्रिया (क)	४७
२. उत्पादन प्रक्रिया (ख)	४९
३. उत्पादन प्रक्रिया (ग)	५१
४. विभिन्न उत्पादन केंद्रों पर कुतकर	१४०
५. गृह समस्या एवं उसका हल	१४४

ब ध्या य प्र थ म

प्रस्तावना

भारती उद्योगी का ती कश्य ही केन्द्रोयकरण व राष्ट्रीयकरण करना होगा । परन्तु वे उस राष्ट्रीय प्रवृत्ति का कौटा ये सैटा भाग होंगे, जो मुख्यतः देहात में बनेगे । १ यदि भारत यंगोयोगवादी बन जायगा तब वहर वह दूसरे राष्ट्रों का शोषण करेगा और वह दूसरे राष्ट्रों के लिए बलिदान --सारे संसार के लिए सारा क्त जायगा। २

गांधीजी

विश्व के रंगमंत्र पर युवाँ ये अनेकानेक संस्कृतियाँ, उद्योगी, हस्त-कलाकार्वाँ, दस्तकारियाँ एवं वास्तु कलाकार्वाँ का उत्कर्ष, बनकरफर्से होता जाया है । भारत की परम पावन धुनित धरा पर भी कार्य संस्कृति के उत्कर्ष-बनकरफर् एवं विभिन्न संस्कृतियाँ के सम्पर्क एवं समन्वय के साथ साथ विविध प्रकार की कलाकार्वाँ का विभिन्न रूपों में उद्गम विकास एवं पान होता रना है । तब क्या रयोग में हस्तकला व दस्तकारी का सुन्दर समन्वय यना की प्राचीन एवं अविनाशो परम्परा है । हिन्दु साम्राज्यकाल में ढाका की मकमठ और केठिकों से वर्तमान में मैसूर, अरारकों व चन्देरी की साड़ियाँ, भागलपुर मिल्क, कासमोर के शाउ-दुशाउ व कोटा का डौरिया मसूरिया इस लुटीर उद्योग से प्रस्फुटित हस्तकला व दस्तकारी को सुन्दर समन्वय के विभिन्न रूप हैं ।

प्रकृति के विभिन्न रूपों की संयुक्त रूप स्यठी, रैगोसान, पैदान, पठार, पगड़, नदियाँ आदि विविध स्वरूपों से युक्त कटीठी काड़ियाँ से उकर सागवान जैसे वड्डुकर्याँ नती से मरसूर, रेत से लगाकर कागम उत्पादक काठी मिट्टी से कती गम में वर्तमान सप्तका के मूठपूत पदार्थ पैट्रीलियम, लौयका, अवरक, सोसा, ताम्बा आदि से परी, मकका से उकर चावठ तरु पैदा काने नाठी, मिल्क-मकर सांगा प्रताप, दुर्गादास जैसे सूखीर देश मकत व स्वाभिमानो सपुर्वा व मानसिंठ, वपमंतसिंठ जैसे कुड करंठों व ससुसमरुकी, पत्रिनो रैगो वोरारंगनाकार्वाँ, डाठमियाँ, विडुका जैसे व्यागारियाँ, अहिल्याक से मकराँ एवं अनेकानेक साहित्यकार्वाँ की

जन्मभूमि, विशाल भारतीय प्रांगण के पश्चिमी भाग में २३ अंश ३ कला से ३० अंश १२ कला उत्तर अक्षांश व ६६ अंश ३० कला से ७८ अंश १७ कला पूर्व देशान्तर के मध्य स्थित राजस्थान, हस्तकला वास्तुकला व दस्तकारी को विभिन्न सम्बन्धित रूपों में प्रस्तुत करने में भी परम्परा से भारत के अन्य भागों से कभी भी पीछे नहीं रहा है। वाच भी जयपुर चन्दन, हाथोदांत व पोतल पर नक्काशी व मोनाकारी एवं संगमरमर पर कटाई, बूतों पर क्लीवाकारी, कलायुक्त लाल को बुड़ियाँ व काठीनी के रूप में, जोधपुर वादले (पानों को फेटडियाँ) हाथी दांत को बुड़ियाँ, चुतियाँ एवं बूतों, रंगारई व बंधारई के द्वारा सिरौही तखारई, चादु व झुरियाँ के रूप में, उदयपुर, तखारई व साड़ियाँ पर मुनछरी, झपछरी झपारई व नक्काशी एवं चन्दन की कटाई के द्वारा, सांगानेर विविध प्रकार की रंगारई, झपारई व बन्धेय के रूप में, जैसलमेर व मकराना संगमरमर को विभिन्न वस्तुओं के द्वारा व कोटा मसूरिया की साड़ियाँ एवं वर्सा के रूप में हस्तकला व दस्तकारी के विभिन्न रूप प्रस्तुत कर न केवल भारत में वरन् विदेशों में भी जन्मा स्थान हस्तकला व दस्तकारी को उज्ज्वल करने वाली के हृदयों में बनाये हुये हैं।

कोटा जिला :-

स्थिति:- राजस्थान का दक्षिणी पश्चिमी भाग जो प्राचीनकाल से सूतो वस्त्र उत्पादन का केन्द्र है बीसवीं सदी में हस्तकला के इतिहास में जन्मा एक नया अध्याय जोड़कर कला के क्षेत्र में अने अस्तित्व की घोषणा कर रहा है। कोटा जिला इसी भाग के कोटा विभाग के मध्य में २४ अंश २७ कला उत्तर अक्षांश से २५ अंश ५४ कला उत्तर अक्षांश और ७५ अंश ३७ कला पूर्व देशान्तर के मध्य स्थित है। पश्चिम व उत्तर में चम्बल नदी इसे घेरे हुये है जो इसे बून्दो, सवाईमाधोपुर, व टॉक जिलों से अलग करती है। इसके पूर्व में मध्य प्रदेश, दक्षिण में फाजावाड़ जिला व दक्षिण पूर्व में मोलवाड़ा व निवौड़गढ़ जिले हैं।

इतिहास:- प्रकृति को महान अनुकम्पा का भागी राजस्थान का यह अतीक प्रवेश कोटा जिला, भूतपूर्व कोटा रियासत से कुछ भागों को विलग करके व कुछ भाग भूतपूर्व मर रियासतों के जोड़कर बनाया गया है। इसलिए इसका इतिहास कोटा रियासत के उद्गम एवं विकास का इतिहास है। कोटा राज्य की विधिवत् स्थापना

मुगल साम्राज्य के उत्कर्ष काल में सम्राट शाहजहाँ की स्वीकृति पर, मुगलों के अधीनस्थ राव राजा रत्नसिंह के द्वारा सन् १६२५ में अपने द्वितीय पुत्र माधोसिंह को बुन्देली राज्य का एक भाग अलग से देकर की गई। उद्गम से लगाकर सन् १६४८ में एकीकरण तक यह राज्य वीर दासत्व के काल में जन्मा था जीवन पर दासत्व में ही बढ़ा व रहा। समग्र समय पर यहां के परम्परागत अग्निवंशी बौहान राजपूतों के वंशज छाट्टा राजपूत राजाओं ने मुगल, मराठों व अंग्रेजों को अधोन्तता स्वीकार कर अपने अस्तित्व को बचाव्य बनाये रखा। मुगल सम्राटों की विविध प्रकार से सेवाओं के उपरान्त में यहां के शासकों को १६३५ में राजा व १७०७ में महाराज की पदवी दी गई थी आज तक चली आ रही है। माधोसिंह बी, भीमसिंह पी, दुर्जनशाल जी, हनुमाल पी, उम्मेदसिंह जी एवं वर्तमान महाराज भीमसिंह जी यहां के प्रमुख एवं श्रियाशील शासक रहे हैं। इस राज्य के ऐतिहासिक जीवन में सदैव महत्त्वपूर्ण घटना हनुमाल जी के फौजदार गुरुवंशी काला राजपूत बाळिम सिंह के सम्बन्ध में है, जिसने फौजदार के रूप में ही राज्य का सम्पूर्ण नियंत्रण अपने हाथों में ले लिया और अन्त में सन् १८३८ में कौटा रियासत का एक टुकड़ा और कर माता के नाम से क्षेत्र फालावाड़ राज्य को स्थापना कर कौटा राज्य - घराने के एक केंद्र की हमेशा के लिये दूर किया गया।

दासत्व व स्वाभिमान की विपरीत गुण हैं। दासत्व में जन्म लिया हुआ राज्य स्वतंत्रता के स्वप्न कठिनाई में ही देस सकता है। इसीलिए जिला प्रान्त यहां के शासक मुगलों, मराठों एवं अंग्रेजों को आधोन्तता स्वीकार करने में पीछे नहीं रहे हैं उसी प्रकार स्वतंत्रता के बाद एकीकरण कर राष्ट्रभक्ति का परिवर्ष देने में भी राजस्थान के राजाओं में अग्रणी रहे हैं। २५ मार्च, १६४८ को राजस्थान व अंग्रेज १८, १६४८ को युनाइटेड राजस्थान यूनियन के निर्माण में अग्रणी बनकर यहां के महाराज ने अन्तः राज प्रमुख व उपराज प्रमुख का पद सुश्रीमित किया है।

प्राकृतिक व मानवीय परिस्थितियां :- मानव परिस्थितियों की उपलब्धि है। परिस्थितियां मनुष्य की आर्थिक उन्नति करने के लिये अजर प्रदान करती है, और विभिन्न व्यभिक्त वर्ग एवं समुदाय अपनी प्रतिभा बुद्धि, संस्कृति और ज्ञान के अनुसार उस अजर का काम उठाकर विकास का मार्ग ग्रहण करते हैं। इनो प्रकार किन्ही उपायों के किन्ही स्थान पर उद्गम विकास एवं पतन के लिये भी यहां की प्राकृतिक व

मानवोय परिस्थितियां ही उत्तरदायी होती हैं । कोटा जिले का क्षेत्रफल ४७६४ वर्गमील एवं जनसंख्या १६६१ की जनगणना के अनुसार ८ लाख ४८ हजार ३ सौ नवासी है जो क्रमशः राजस्थान के क्षेत्रफल का ३,६३ प्रतिशत व जनसंख्या का ४,२१ प्रतिशत है । यह जिला राजस्थान के दक्षिणी पूर्वी कोने में जोस को वाकृति लिये हुये सौ मील लम्बे व सौ मील चौड़े क्षेत्र में फैला हुआ है । राजस्थान की गंगा चर्मण्यवती (चम्बल) नदी इसको पश्चिमी व उत्तर में घेरे हुये है । दक्षिण में मुन्दरा पहाड़ो श्रेणियां हैं जो समुद्र तल से १४०० से १६०० फीट तक ऊंची हैं और उत्तर पश्चिम से प्रारम्भ होकर दक्षिण पूर्व तक चली गई हैं । मूमि का ढलाव दक्षिण से उत्तर की ओर है जो मालवा के पठार से प्रारम्भ होता है । इसके अलावा उत्तर में इन्द्रगढ़ के पास १५०० फीट उंची पहाड़ियां एवं पूर्वी भाग में रामगढ़ व शाहाबाद की पहाड़ियां हैं जो समुद्र तल से १५०० से १८०० फीट के लगभग ऊंची हैं ।

चम्बल, काली-सिन्ध, बर्न-व पार्वती व परवन जिले को प्रमुख नदियां हैं जो पश्चिम, दक्षिण व दक्षिण पूर्व से जिले में प्रवेश करती हैं और अनेकानेक सहायक नदियां की बल संग्रह करती हुई जिले के सुदूर उत्तर में चम्बल में मिल जाती हैं । यह जिले को चार प्राकृतिक भागों में विभक्त करती हैं और विभिन्न तहसीलों की सीमायें बनाती हैं ।

जिले का उत्तरी भाग नदियों द्वारा ढाई गई क़शर मिट्टी का बना हुआ है, लेकिन कोटा शहर के पास से बलुआ पत्थर मिलने लगता है जो सम्पूर्ण दक्षिणी भाग में फैला हुआ है ।

नवम्बर से फरवरी तक यहाँ की बलुआयु उत्तम होती है । मार्च से गर्मी बढ़ने लगती है जो जून में जाकर अति ज्वाजल्यमान हो जाती है । उस समय दिन में अधिकतम तापक्रम ११२ से ११५ डिग्री फे० तक पहुँच जाता है । जुलाई के प्रथमांश से वर्षा प्रारम्भ हो जाती है जो सितम्बर तक चलती रहती है । जुलाई से सित० तक बलुआयु अति-अत्यधिक मछेरियुत रहती है । इसके विपरीत जनवरी में तापक्रम ४६ डिग्री फे० से ४४ डिग्री फे० रह जाता है । जिसमें पानी भी बम जाता है । इस प्रकार हम देखते हैं कि यहाँ पर गर्मी अत्यधिक उष्ण व सर्दों अत्यधिक शीत होती है ।

कुछ स्थानों को छोड़कर वहाँ पर ५० से ६० फीट गहराई पर पानी मिलता है, शेष सब जगह २५-३० फीट पर पानी मिळ जाता है । इस प्रकार यहाँ पानी की कोई कमी नहीं है ।

दक्षिण में मुकुन्दरा पहाड़ी श्रेणियाँ दक्षिण-पश्चिम-उत्तर में चम्बल नदी, उत्तर पूर्व में पार्वती व कम्बाळ नदो, पूर्व में शाहवाड की पहाड़ियाँ और दक्षिण पूर्व में पार्वतीने नदी जिठे की प्राकृतिक सीमायें बनाती हैं ।

इसके पश्चिम में धार का रेगिस्तान, उत्तर एवं पूर्व में गंगा सतलज का मैदान व दक्षिण में मालवे का पठार है जो यहाँ को जलवायु व भूमि की बनावट का निर्धारण करते हैं । सामान्य रूप से यह क्षेत्र भारत के पहाड़ी, पठारी, मैदानी व रेगिस्तानी प्रदेशों का केंद्र बिन्दु बन गया है । वहाँ पश्चिम से प्रवेश करने वाला व्यक्त एक दम आश्चर्य चकित हो जाता है और सोचता है कि क्या यह भी राजस्थान का एक भाग है ?

इस प्रकार रेगिस्तानी प्रदेश, मैदानी प्रदेश, पठारी एवं पहाड़ी प्रदेशों से गिरा यह भू भाग भौतिक दृष्टिकोण से एक इकाई न रहकर विभिन्न भौतिक इकाइयों में विभक्त हो जाता है जो घरातल की बनावट, भूमि, वनस्पति, सिंचाई उद्यम आदि की दृष्टिकोण से भिन्न भिन्न स्वरूप रखती हैं ।

कौटा रियासत काल में जनगणना हेतु कौटा राज्य को प्राकृतिक दृष्टिकोण से मालवा, हाड़ीती, जंगल व कौटडियाँ या बागीरें इन चार विभागों में बांटा जाता था । कौटा राज्य से जन्म लिया हुआ यह कौटा जिजा भी इन्हीं स्तम्भ बाघारों पर ३ प्राकृतिक विभागों में बांटा जा सकता है क्योंकि कौटडियाँ का राजनैतिक दृष्टिकोण से ही उग्र महत्व था प्राकृतिक दृष्टिकोण से वे अन्य भागों का एक भाग ही थीं ।

मालवा विभाग :-

इसमें मुकुन्दरा पर्वत श्रेणियों के दक्षिण में बसा हुआ सम्पूर्ण प्रदेश आ जाता है जिसमें छोटी छोटी पहाड़ी श्रेणियाँ व उपजाऊ भूमि है । यहाँ की भूमि उपजाऊ व गहरी है और समुद्रतल से ऊँचाई ३२५ से ४५० मीटर तक है । दक्षिणी

पश्चिमी भाग में कृषि योग्य भूमि के साथ साथ जंगल व चट्टाने भी हैं। इसके विपरीत दक्षिणी-पूर्वी भाग में तुम्हात्मक रूप से अधिक उपजाऊ एवं व्यापारिक कसबा के लिये अत्यधिक उपयुक्त काली मिट्टी है। पर कुंठ साँदना कठिन होने से अब तक सिंचाई सुविधाओं की बहुत कमी थी। प्राकृतिक सौन्दर्य, लल्लहाते क्षेत्र, व बसती नदियों का बाहुल्य यहाँ की विशेषता है।

जंगल विभाग :-

पार्वती नदी के पूर्व में स्थित यह प्रदेश बंगर्ज व हिंसक पशुओं से भरपूर होने से शिकार का सर्वोत्तम स्थल है। पश्चिम से पूर्व को और निरन्तर ऊँचा होने वाला यह भू क्षेत्र शाहाबाद के पास एक हवार से सौलहराँ फीट ऊँचा हो जाता है, जिसके कारण इसके भी दो भाग हैं। प्रथम भाग सटेटी है। पर्याप्त पानी, स्वस्थकर जलवायु, कृषियोग्य भूमि की कमी एवं जावागमन के साधनों का अभाव यहाँ की प्रमुख विशेषता है। पूर्वी भाग भी खरेटी कहलाता है पूर्ण रूपेण जंगली व पहाड़ी प्रदेश है जिसमें पानी की अत्यधिक कमी है निम्ने और ऊँचाई १६०० फीट तक है जिससे यह प्रदेश मानव निवास के लिये अनुपयुक्त है।

हाड़ीती विभाग :-

मुक्तदरा पहाड़ी श्रेणियों के उत्तर, चम्बल नदी के पूर्व एवं पार्वतीने नदी के पश्चिम में, त्रिकोण के रूप में चम्बल पार्वती व मुक्तदरा की सीमाओं वाला यह क्षेत्र जिले का आर्थिक, सामाजिक व राजनैतिक सभी दृष्टिकोणों से सर्वाधिक सम्पन्न भाग है। सम्पूर्ण प्रदेश कम ऊँचाई होने वाला मैदानी प्रदेश है जिसमें पूर्व से पश्चिम व उत्तर से दक्षिण तक समुद्र तल से १५० से ३०० मीटर तक ऊँची भूमि विविध प्रकार के कृषि उत्पादनों में संलग्न है। वर्तमान में इसका पश्चिमी भाग राजस्थान का महान औद्योगिक क्षेत्र बन रहा है, और चर्मण्यवती से प्राप्त विद्युत गाँव-गाँव व नगर-नगर को आलोकित कर रही है। झालोसिन्ध व पर्वन नदी इसके मध्य में से गुजरती हुई इसे पुनः ३ प्राकृतिक उपविभागों में विभक्त कर देती है।

१. चम्बल काठीसिंध का दोबाव।
२. काठीसिंध, परवन का दोबाव।
३. काठीसिंध, परवन व पार्वती का दोबाव।

इस प्रकार सम्पूर्ण कोटा जिला जलवायु की दृष्टि से लगभग समान है,

पर मूमि की खावट, मिट्टी, वनस्पति व नदियों की उपउब्धि की दृष्टिकोण से काफी भिन्नता रहता है। जिसके कारण विभिन्न भागों में विभिन्न प्रकार की पैदावार होती है और जनसंख्या का विभिन्न उद्यमों में वितरण भी भिन्न भिन्न है। दक्षिणी पूर्वी मालवा प्रदेश, कालीसिंध-परवन का दोआब, कालीसिंध परवन व पार्वती का दोआब व चम्बळ कालीसिंध के दोआब के उत्तरी भाग में कृषि प्रमुख व कुटीर उद्योग सहायक उद्यम हैं। बांगल विभाग में पशु पालन कृषि मुख्य उद्यम हैं। चम्बळ-काली-सिंध दोआब के दक्षिणी भाग में कृषि के साथ साथ खनिज सम्पत्ति का शोधन भी प्रमुख उद्यम है व पशु पालन सहायक। वर्षा सम्पूर्ण भाग में 30 इंच के लगभग होती है जो अश्वित व अनियमित है और तापक्रम भी काफी परिवर्तनशील ४६ डिग्री फे० से ११५ डिग्री फे० तक रहता है। नदियों से सम्पूर्ण चिन्ता परिपूर्ण है जो कि राजस्थान का इस दृष्टि में एक मात्र भाग है। चूना व पत्थर यहाँ की प्रमुख खनिज सम्पत्ति है जिसे चम्बळ-काली-सिंध के दोआब का दक्षिणी भाग मरा पूरा है। वन सम्पत्ति भी काफी है परंतु अधिकतर जठाने की लकड़ी के वन हैं, बहुमूल्य लकड़ी के वनों का अभाव है।

जाति के दृष्टिकोण से यहाँ श्याम वर्ण जाति के लोग रहते हैं जो कि कम सम्य व अवनत हैं। इसीका परिणाम है कि परम्परा से यहाँ का व्यापार व उद्योग बाहर के व्यापारियों एवं उद्योगपतियों के हाथ में रहा है। भूतकाल में यह अकीम उत्पादन का विशाल क्षेत्र था पर इसका अधिकतर व्यापार बाहर के व्यक्तियों के हाथ में ही था। आज भी जब भारत औद्योगिकीकरण के मार्ग पर अग्रसर हो रहा है, चर्मण्यवती की महती कृपा से इस भाग की भी भारत का एक बड़ा औद्योगिक केन्द्र बनने का स्वर्ण अवसर प्राप्त हुआ है। परंतु शंका है कि यहाँ के निवासियों का इस प्रगति में योगदान केवल अत्रिशिक्षित श्रम के रूप में है।

धर्म की दृष्टि से हिन्दू, मुसलमान व जैन यहाँ के प्रमुख धर्म हैं। मुसलमान जो कि कुछ आबादी का लगभग ७ प्रतिशत है मुख्य रूप से कस्बों में रहते हैं व जुआहर पिंजारा, लहारा व रंगरेज जादि कार्यों में संलग्न हो ग्रामीण व शहरी जनता की सेवा कर रहे हैं। केवल मुसलमान बौद्ध ही मुख्य रूप से ^{कुछ विशिष्ट प्रकार के} व्यापारों परम्परा से संलग्न हैं।

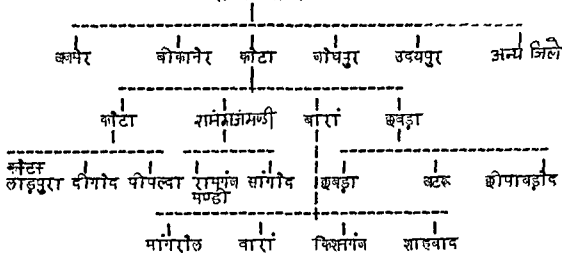
यातायात के साधनों में कोटा-बीना व दिल्ली-बम्बई रेल मार्ग कोटा

जिड़े में से गुजरते हैं। पक्की सड़कों का लगभग अभाव है, केवल कोटा-शिवपुरी व कोटा-फालावाड़ पूर्णतः पक्के सड़क मार्ग हैं। कुछ सड़कें बाघी पक्की व बाघी कच्ची हैं जो यातायात में बहुत अधिक बाधक हैं। गत दो वर्षों में नहरों के कारण लगभग सभी कच्चे मार्ग बिगड़ गये हैं और यातायात अत्यधिक कठिनाई पूर्ण हो गया है।

इन सब कारणाँ से केवल जिड़े का पश्चिमी भाग ही बौकि रेल मार्ग व पक्के सड़क द्वारा सुसम्बन्धित है वर्तमान औद्योगिक कृषियवस्था की जोर अग्रसर हो विकास का मार्ग ग्रहण कर रहा है। शेष भाग वही परम्परागत कृषि, पशु पालन व स्वयं निर्भर ग्राम्य जीवन के हेतु कुटीर उद्योगों में संलग्न है।

प्रशासनिक संगठन :- प्रशासनिक दृष्टिकोण से कोटा जिला, मारत्तण राज्य के १६ राज्यों में से एक राजस्थान राज्य के पांच विभागों में सबसे छोटे कोटा विभाग का सबसे बड़ा व प्रमुख जिला है। यह ४ उपजिलों व १२ तहसीलों में विभक्त है, जिनका विवरण निम्न प्रकार है :-

रा ष स्था न



इस सिद्धि में लगभग सभी तहसीलों व प्राकृतिक विभागों को सीमा नदियाँ आती हैं जतः तहसीलों का प्राकृतिक विभागों में वितरण क्रमबद्ध है जो निम्न प्रकार है :-

१. कोटा विभाग से तात्पर्य राजस्थान के दक्षिणी-पूर्वी भाग से है जिसमें कोटा, बुन्देली व फालावाड़ जिले आ जाते हैं।

प्राकृतिक विभाग

तहसीलें

(१) हाड़ोती विभाग

- | | |
|--------------------------------|-------------------------------------|
| (क) चम्बळ काली सिंध का दोआब | हाड़पारा, दीगोद एवं सांगोद (पश्चिम) |
| (ख) कालीसिंध परवन का दोआब | सांगोद (पूर्व) |
| (ग) कालीसिंध परवन पार्वती दोआब | बूटल, बारां, मांगरोल एवं पापल्दा |

(२) मालवा विभाग

- | | |
|-----------------------|-----------------------|
| (क) दक्षिण पश्चिम भाग | रामगंजमंडी |
| (ख) दक्षिण पूर्व भाग | खवड़ा एवं क्षीपावड़ीद |

(३) जंगल विभाग

- | | |
|------------|---------|
| (क) तठेटी | किलतगंज |
| (ख) अमरीषी | शाहवाद |

उपरोक्त अध्ययन से ज्ञात होता है कि जाय के साधनों में मृषि के पश्चात् जंगल विभाग में पशु पालन एवं लकड़ी काटना, दक्षिणी पश्चिमी मालवा व चम्बळ काली सिंध के दोआब के दक्षिणी भाग में तनिज विदोलन व पशु पालन व शेष भाग में पशु पालन व अन्य कुटीर उद्योग विद्यमान हैं। भौगोलिक विशेषता, आवागमन के साधनों के कारण कच्चा माल उपउत्पि एवं विपणन में सुविधा आदि के कारण इस क्षेत्र के लगभग सभी कस्बे वस्त्र उत्पादन के मुख्य केंद्र हैं। इस क्षेत्र की यह भी विशेषता है कि यहां के सभी गांव नदियों के किनारे बसे हुए हैं। तदनुरूप ही वस्त्र उत्पादन के समस्त केंद्र जोर साथ ही मसूरिया उत्पादन केंद्र भी नदियों के किनारे ही अवस्थित हैं। योजनाबद्ध विकास से पूर्व आवागमन के साधनों के अभाव, बाजार के सीमित होने एवं मोटे कपड़े का स्थानीय बाजार होने से मसूरिया कपड़े का उत्पादन केवल कोटा, बुन्दी व कोटा के ही पास बसे हुए बुनकरों के गढ़ केंद्र तक सीमित था। वर्तमान में आवागमन के साधनों के प्रसार एवं मांग में वृद्धि के कारण अन्य बुनकर केंद्रों पर भी इसका उत्पादन होनेला है।

कुटीर एवं हाथकर्म उद्योग :-

महत्त्व :- वर्तमान युग की औद्योगिक प्रगति साधारणतया यंत्रिकरण, वैज्ञानिकरण विवेकीकरण आदि से व्युत्पन्न पूर्वी प्रधान वृद्ध प्रमापीय उत्पादन की प्रमुखता से सम्बद्ध है, जो अक्षा एवं सस्ता उत्पादन कर मानव समाज की सेवा में संलग्न है। ऐसी स्थिति में लघु उद्योगों का अस्तित्व संकापूर्ण दृष्टिगत होता है। किंतु इसके फलस्वरूप लघु प्रमाण उद्योगों का सर्वथा लोप नहीं हो सकता। मुख्य अंतर्विक्र तथा बाह्य मितव्ययताओं के त्याग के बिना ही वाष्प के स्थान पर विद्युत के बढ़ते हुये प्रयोग ने उत्पादन को उदाहर्यों को छोटा करने की प्रवृत्ति को जन्म दिया है। पुनः प्रत्येक उन्नतिशील समाज में बहुत सी कलापूर्ण तथा विलास की सामग्रियाँ होती हैं जिनका प्रमाणित उत्पादन नहीं हो सकता। इसके अतिरिक्त सम्यता के भौतिक उपस्करों के अंक सुधार छोटे छोटे कारखानों को जन्म देते हैं। औरस प्रकार विशाल प्रमापीय उद्योगीकरण के काल में भी लघु प्रमाण उद्योग चलते रहते हैं। अन्तिम नये उद्योग भी जब तक वे प्रयोग रूप में होते हैं, पहले छोटे पैमाने पर ही आजमाये जाते हैं और सफल होने पर बड़े पैमाने पर संगठित फिये जाते हैं। इस भाँति भारत जैसे अर्द्धविकसित देशों में ही नहीं वरन् पश्चिम के अति अत्युन्नत देशों में भी वृद्ध प्रमाण उद्योगों के साथ साथ बहुत से लघु प्रमाण उद्योग फूलते फूलते हैं। जापान व चीन की आर्थिक व्यवस्था में लघु प्रमाण व कुटीर उद्योगों का महत्त्वपूर्ण योग सर्व विदित है।

भारत में कुटीर उद्योग :-

भारतीय कर्म व्यवस्था व समाज व्यवस्था में कुटीर उद्योगों का स्थान युगों पुराना है, आज भी विद्यमान है और निश्चित रूप से भविष्य में भी बना रहेगा। प्राचीन काल से ही यहाँ दैनिक जीवन की सामान्य वस्तुओं के साथ साथ बहुत सी कला पूर्ण तथा पिठासिता की सामग्रियों का उत्पादन कुटीर उद्योगों के रूप में होता रहा है। भारत के शिल्पकार प्राचीनकाल से ही नाजुक तन्तुओं से कपड़ा बुनने, रंगों के मिश्रण, सुन्दर गलने बनाने, उनमें नगों को अडार्स करने तथा अन्य कलात्मक कार्य के लिये विश्व प्रसिद्ध रहे हैं। औद्योगिक आयोग १९१८ ने ठीक ही कहा है कि जिस समय अल्पम्य नातियाँ से भरा यूरोप वर्तमान औद्योगिक

गिक क्षमसेम पद्धति के प्राथमिक स्तर पर था, भारत, शासकों की धन सम्पदा एवं कलाकारों के कौशल व प्रवीणता के लिये विश्व प्रसिद्ध था। भारतीय वस्त्रों के लिये मुगलकालीन यात्री दैवेनियर ने भी सत्य ही लिखा है कि भारत निर्मित वस्तुयें इतनी सुन्दर थी कि वे तुम्हारे हाथ में हैं यह ज्ञान किंचित ही होता था वह क्तीव कौमलता से काते गये घागी से बुने जाते थे जो एक फॉड रुई में २५०मील लम्बे बनते थे।

प्रकृति के सभी भागों में उत्कर्ष, उत्थान, अक्षय और पतन का चक्र निरंतर चलता रहता है, भारत के कुटीर उद्योग जो कि हिन्दु व मुसलिम काल में उत्थान के उच्चतम शिखर पर अवस्थित थे—अंग्रेजों के प्रवेश, विशाल प्रमापीय औद्योगीकरण की तकनीक के विकास, भारतीयों पर पारश्वात्य प्रभाव, ब्रिटिश सरकार की घातक नीति, विदेशी उत्पादन से गलाकाट प्रतियोगिता और सबसे अधिक भारतीयों के मनोवैज्ञानिक परिवर्तन के फलस्वरूप इनके अक्षय का काल प्रारम्भ हुआ और निरंतर बढ़ता चला गया। इतना होते हुये भी भारत में कृषि उद्योग की मुख्यता व उसकी विशेषताओं, यातायात के साधनों के अविकसित होने, कुटीर उद्योगों की मौलिक विशेषताओं, कुछ उत्पादनों की कुटीर उद्योगों में ही उपयुक्तता व एकाधिकार एवं भारतीय ग्रामीण आर्थिक जीवन से स्वरूपता आदि ऐसे कारण हैं जिनके कारण आज भी कुटीर उद्योग भारतीय अर्थव्यवस्था का मुख्य आ है। अनुमान लगाया गया है कि वर्तमान में लगभग २ करोड़ व्यक्ति कुटीर उद्योगों में लगे हुये हैं, जिनमें से लगभग ५० लाख व्यक्ति केवल हाथकरा उद्योग में हैं।^१

वर्तमान में कुछ कुटीर उद्योग तो ऐसे हैं जो कि लुप्त प्रायः हो गये हैं और उन्हें सरकारी संरक्षण व सहायता रूपी संवीवनों की आवश्यकता है। विलसे वे पुनः जागृत हो सकें। कुछ कुटीर उद्योग ऐसे हैं जो अपनी मौलिक विशेषताओं के कारण प्रबलित आर्थिक नीति का शिकार बन हो नहीं सकते। शेष कुटीर - उद्योग ऐसे हैं जो यंत्रोत्पादित वस्तुओं से प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं और जिनकी दशा त्रिसंकु बेसी है, पर पेट्रिक घन्धे की छोड़ने की अनिच्छा, फाँसियों में काम करने की कठोर दशाओं और अर्थव्यवस्था साँदागर द्वारा बाध्य किये जाने के कारण जिनमें नहीं छोड़ा जा रहा है।

गांधीजी द्वारा सादी व ग्रामोद्योग पर बल व विकेंद्रित वात्मनिर्भर व्यय व्यवस्था के विचार से कुछ कुटीर उद्योगों को विकास की दिशा मिठी है। मीनाकारी व दस्तकारी आदि से सम्बन्धित उत्पादन की मांग भी भारतीय जनता के रहन सहन के स्तर में वृद्धि व पूंजीवादी देशों में विशिष्ट प्रकार की व कठोरपूर्ण वस्तुओं की मांग में वृद्धि के कारण बढ़ने लगी है। कुछ कुटीर उद्योग सरकारी सहायता के आधार पर ही विकास कर रहे हैं। इस प्रकार वर्तमान में भारतीय कुटीर उद्योग जो वनकर्ष की अवस्था से गुजर रहे थे कुछ सीमा तक पुनः उत्कर्ष की दिशा ग्रहण कर चुके हैं।

भारत बने कल्याणकारी राज्य, समाजवादी लोकंत्र, अधिकतम उत्पादन व पूर्ण रोजगार के बने वादश कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन देकर व उनका उत्थान करने ही पूरा कर सकता है। कल्याणकारी राज्य की स्थापना के लिये कुटीर उद्योग घन्य ही मुख्य आधारशिला है। वास्तव में कुटीर उद्योग भारत को सामाजिक व आर्थिक अग्रति के बीज हैं जिनके बिना रामराज्य ऐसे वृक्ष को कलना नहीं की जा सकती। जिनकी सुखद व शीतल छाया में भारतीय नागरिक मुक्त व शान्ति की नोंद सों सकें।

हाथकर्म उद्योग :-

हाथकर्म उद्योग एक ऐसा उद्योग है जो युगों से भारतीय किसानों के आर्थिक धनुष को दूसरी डोरी का कार्य कर रहा है व इसके साथ ही साथ कठोर-त्रिय देशों व विदेशों ^{राजा} महाराजा व रईसों के लिये बहुमूल्य कठोरपूर्ण दस्तकारी के वादश नमूने भी प्रस्तुत करता रहा है। कपड़ा बुनना हमारा राष्ट्रीय घन्य व सूत कातना लाखों करोड़ों स्त्रियों का व्यवसाय रहा है। जान भी लगभग ५० लाख व्यक्ति केवल हाथकर्म उद्योग में लगे हुये हैं जोकि समस्त संगठित उद्योगों (वृहत्-प्रमाण रोजगार तथा सनिन उद्योग सहित) में नियोजित व्यक्तियों के बराबर हैं। इस समय देश के विभिन्न भागों में लगभग २७.५८ लाख हस्तनालित कर्म पंजीकृत हैं। जिनसे अनुमान लगाया जा सकता है कि लगभग ३५ लाख हस्तनालित कर्म भारत में हैं जिन पर लगभग १ करोड़ ५० लाख जनसंख्या निर्भर है।

१. भारतीय अर्थशास्त्र, ग्यार तथा वेरी पृष्ठ ७३.

व वर्तमान में भी हस्तकर्म उद्योग में कला के उत्कृष्ट नमूने विद्यमान हैं जिनमें दस्तकारी व हस्तकला का सुन्दर समन्वय है। उनमें चन्देरी व बनारस की साड़ियां मागलपुर टसर सिल्क, लखनऊ की चिकन की कढ़ाई, काश्मीर के शाल दुशाड़े, व कोटा का मसूरिया आदि ऐसे उत्पादन हैं जो भारत में ही नहीं विदेशों में भी बड़ा पूर्ण वर्सा के उत्पादन में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं।

मसूरिया :-

अत्यन्त प्राचीनकाल से, जहां तक प्रमाण मिले हैं वैदिक काल से भारत में साड़ियां स्त्री वेशभूषा का व फाड़ियों व धोतियों व पुरुषों की वेशभूषा का मुख्य ढां रही हैं। विभिन्न युगों में, विभिन्न स्थानों पर, विभिन्न प्रकार की साड़ियां व फाड़ियां, विभिन्न प्रकार के वाक्यार्थक व सुहावने ढंग से पहिनाया यहां की अविनाशी परम्परा है। साड़ियां व फाड़ियां हमेशा से ही अत्यधिक महीन सूत व रेशम के धागों से बुनी जाती रही हैं जिन पर बरों के पट्टे व डोरियां व नक्काशी का काम उनकी सुवसूती में चार चांद लगा देता है। वर्तमान में भी भारत के विभिन्न भागों बनारस, मैसूर, चन्देरी, मागलपुर आदि में रेशम व बरों का प्रयोग कर नक्काशी के काम वाली विभिन्न प्रकार की साड़ियां बनाई जाती हैं। सूती साड़ियां अधिकतर मिर्छों की बनी मउमउ पर बनाई करके बनाई जाती हैं। मिर्छों में भी कैवठ सूत, कैवठ रेशम या कनास व रेशम को मिठाकर बनाये धागों के बस्त्र बनाये जाते हैं। परन्तु इन सबके जागे कोटा क्षेत्र में सूत व रेशम के अत्यधिक महीन धागों से, उनका बड़ा बड़ा अस्तित्व बनाये रखकर, वाक्यार्थक ढंग से एक वर्गादार बुनावट डालकर, जगह जगह पर बरी का प्रयोग व नक्काशी करके साड़ियां, हुनट्टे, बाँड़ने व फाड़ियों के रूप में एक बस्त्र उत्पादित किया जाता है। जिसे मसूरिया कहा जाता है।

वर्ग :-

मसूरिया एक विशिष्ट प्रकार की वर्गादार बुनावट है जिसमें वर्गों में भी उपवर्ग बनाये जाते हैं। बड़े वर्गों को सत व छोटे वर्गों को सत कहते हैं। इसमें धागे सटे न छोड़कर कुछ कुछ दूरी पर होते हैं और बीच बीच में समान दूरी पर एक साथ दो या चार धागे सटाकर डाल दिये जाते हैं जिससे अन्तः छोटे व बड़े वर्ग

वन बाते हैं। एक बड़े वर्ग में ६, १२ या १६ छोटे वर्ग होते हैं। बड़े वर्ग या सर्तों की लम्बाई चौड़ाई २.२५ मिमी मीटर से ५ मिमी मीटर तक होती है इसकी किस्म का निर्धारण वर्ग के आकार से ही होता है। जितना छोटा वर्ग होता है वस्त्र की किस्म उतनी ही ऊंची मानी जाती है।

इस तकनीक से बुने हुये वस्त्रों को मसूरिया वस्त्र क्यों कहा जाता है ? इसके सम्बन्ध में विभिन्न मत प्रचलित हैं।

१. सामान्य एवं अधिकतर व्यक्तियों का विचार यह है कि सर्तों (उपवर्ग) का आकार मसूर की दाढ़ के समान होने से इसे मसूरिया कहा जाता है।
२. यह भी मत प्रचलित है कि सर्व प्रथम इसको बुनने में जो रेशम काम आता था वह मसूर से आता था। इसलिये मसूरी रेशम से बुना जाने के कारण इसे मसूरिया कहा जाने लगा व बाद में बिगड़कर मसूरिया हो गया।
३. कुछ व्यक्तियों का यह मत है कि भारत की परम्परा के अनुसार कोई मसूर का बुनकर कठा प्रदर्शन कर पारितोषिक पाने के उद्देश्य से कोटा में आया होगा और उसने इस प्रकार की बुनावट से निर्मित वस्त्र यहाँ के महाराज को भेंट किया होगा जो कि उन्हें पसन्द आ गया होगा। अर्थात् स्वाभाविक रूप से यहाँ पर उस वस्त्र की माँग बढ़ गई होगी जिससे यहाँ के अन्य बुनकरों को भी यह कार्य सीखा दिया गया होगा और मसूर के निम्नस्त्री-के नाम पर ही मसूरिया कहा जाने लगा। या यह भी हो सकता है कि उस व्यक्ति का नाम ही मसूरिया शब्द से मिलता जुलता रहा हो।
४. यह भी हो सकता है कि यहाँ के बुनकर हज़रत के लिये बरब गये हों और वहाँ से कपासोत्पादक महान प्रदेश मित्र की यात्रा के लिये भी चले गये हों। और वहाँ से ही इस वस्त्र का उत्पादन करना सीख कर आये हों क्योंकि मित्र में ही इस प्रकार का ^{कपास पीटा होता है जिससे ऐसा} बारीक मूत तैयार किया जाता है जोकि इस वस्त्र के उत्पादन में काम आता है।

विश्लेषण पर द्वितीय मत तो उचित प्रतीत नहीं होता क्योंकि द्वितीय महायुद्ध से पूर्व तो मसूरिया वस्त्रों में रेशम का प्रयोग केवल नाम मात्र की होता था। सामान्य रूप से सूती मसूरिया ही बुना जाता था। जहाँ तक प्रथम मत का प्रश्न है सामान्य व्यक्ति इससे सहमत हो सकते हैं पर मसूर की दाढ़ और सर्तों के

बाकार में समानता और फिर बाल के बाकार से वस्त्र की बुनाई तकनीक का सम्बन्ध औचित्यपूर्ण दृष्टिगत नहीं होता । मेरा ऐसा मत है कि इसका सम्बन्ध किसी व्यक्ति से होना चाहिये या फिर मैसूर या मिश्र से ; क्योंकि मैसूर और मिश्र में ही इस प्रकार के वारीक रेशम व सूत के चागें तैयार हो सकते हैं जिनका प्रयोग वर्तमान में इस वस्त्र के उत्पादन में हो रहा है । यह हो सकता है कि यहाँ का कोई व्यक्ति मैसूर या मिश्र गया हो और वहाँ पर इससे मिलती जुलती बुनावट बुनी जाती हो जिसके आधार पर उसने यहाँ पर प्रचलित किमची व महरवात (डोरिया) में सुधार कर मसूरिया बुनावा चालू किया हो । जहाँ तक प्रमाण मिले हैं अर्ध वैद्य और क्लावेद में भी डोरिया व चौकाना नाम के वस्त्रों का उल्लेख मिलता है । इससे स्पष्ट होता है कि इस तकनीक में इन दोनों प्रकार की तकनीक का सम्बन्ध करके नई प्रकार की तकनीक का प्रयोग किया गया है । इसमें चौकाने के वस्त्रों से वर्गाकार बुनावट और डोरिया से कुछ चागों का ढग ढग डालना और फिर कुछ कुछ अन्तर पर दोहरां डोरी डाल देना प्रकट होता है । उपरोक्त मत की पुष्टि इस कारण से भी होती है कि मसूरिया का उद्गम केवल ६०-७० वर्ष पूर्व हुआ है जिसमें प्रारम्भ से ही १०० से १२० काउन्ट का मील का बना हुआ विदेशी सूत काम आता रहा है और यह बुनाई मुख्यतः मुसलमान बुजार्हों के हाथ में है जिनके लिये हज़ करने बाने के साथ साथ मिश्र तक पहुँच जाना व उस समय तक उपउच्च हुई बनान व रेश यातायात की सुविधाओं के द्वारा कुछ ही वर्षों में वापिस लौट जाना अंभव प्रतीत नहीं होता ।

अन्ततः कोई भी एक ठोस एवं प्रमाणित मत इसके लिये सर्वज्ञान के दौरान प्राप्त नहीं हो सकता है ।

उद्गम एवं विकास :-

प्राथमिक आवश्यकताओं के लिये आत्मनिर्भरता के क्षेत्र में कोटा भी किमी अन्य प्रदेश से पीछे नहीं रहा है । मौजके पश्चात् दूसरी प्राथमिक आवश्यकता वस्त्रों की होती है जिसके लिये कि अतीत से भारत में गाँव गाँव में चरते व कर्मे चल रहे हैं । कोटा रियासत का यह क्षेत्र प्राचीन काल से अकीम व रुईउत्पादन का केंद्र रहा है । साथ ही यहाँ की जनसंख्या में मुसलमान आबादी भी पर्याप्त

माना में रही है जो कि मुगल काल से भारतीय हस्तकला के इतिहास में बना गौरवपूर्ण स्थान रखती है। १६३१ की जनगणना देखी पर ज्ञात हुआ है कि उस समय कोटा रियासत की ३०.५ प्रतिशत आबादी मुसलमान थी और कोटा रियासत में १२३६६ व्यक्ति केवल वस्त्र निर्माण में लगे हुये थे। कोटा, बारां, अन्ता, कोयला, सोसवाली, मांगरौल, दोगोद, सानपुर और सारौला रियासत के प्रमुख बुनकर केंद्र थे। इतना ही नहीं उत्पादन भी कड़ापूर्ण होता था। कोटा की मलमल, किरमची, महमूदी और डौरिया जन्मी चारीकी व रंगों के लिये बहुत प्रसिद्ध थे। बारां के चून्डो के बने हुये साफेव डुपटे जन्मी बंधाई के लिये प्रसिद्ध थे। कोयला, कैथून व मांगरौल की रैनी व कौड़सुमां का रैना प्रसिद्ध था। इस प्रकार मोटा कपड़ा तो सभी जगह बुना जाता था पर राजारवां, बागीरदारी, राज्य कर्मचारियों, सैठ साहूकारों, बड़े बड़े व्यापारियों आदि के लिये विशेष प्रकार के कोमती व यहां को जलवायु के अनुसार क्रीमती वस्त्र होना भी आवश्यक था। जिनको पूर्ति मसूरिया जैसे वस्त्रों द्वारा होती थी। चूंकि कोटा व बून्दी राज्यों की स्थापना मुगल साम्राज्यकाल में हुई है, यहां के रहनसहन के ढंग, कला, भाषा एवं परम्पराओं पर मुगल रहनसहन के ढंग, कला, भाषा व परम्पराओं का काफी प्रभाव पड़ा है। इसी प्रकार पहनाव में भी दिल्ली परम्परा के अनुसार अवत, चूड़ीदार पायजामा, कमरबन्द व पगड़ी यहां की राजसो पोशाक प्रारम्भ से हो रही है। जिस प्रकार दिल्ली में ढाका को मलमल उ तर्ह करके पहनी जाती थी उसी प्रकार स्वाभाविक है कि यहां के राजामहाराजा भी उसी प्रकार का बारीक कड़ा पहनना पसन्द करते हैं। कोटा रियासत काल के अन्तिम वर्षों में यहां की राजसो पोशाक यही थी जिसमें पगड़ी व कमरबन्द सामान्यतया मसूरिया कड़े के बने थे एवं गर्मों में अवतने में मसूरिया वस्त्रों की बनावी जाती थी। बड़े बड़े घरानों की स्त्रियां व सामान्य रूप से विशेष उत्सवों पर मसूरिया के बौढ़ने पहने जाते थे।

परंतु मसूरिया जो कि उच्च किस्म के बारीक सूत, रेशम व जरी से बनाया जाता है इसके लिये कच्चा माल लम्बे रेशे वाली रूई व रेशम का उत्पादन यहां नहीं होता और न ही कोटा में किसी प्रकार की इतनी बारीक कला के प्रमाण ही मिलते हैं। अतः निश्चित है कि इसका उत्पादन इस भाग के याता-

यात के उत्तम साधनों द्वारा देश के मुख्य व्यापारिक केंद्रों से सम्बद्ध हो जाने पर ही हुआ होगा। इसके साथ ही भारत में इतना उच्चकोटि का सूत मिलने में भी ब्रिटिश शासन काल में नहीं बनाया जाता था क्योंकि उससमय तो २० काउन्ट से अधिक के सूत पर ही अतिरिक्त कर लगाया जाता था और साथ ही उच्चकोटि के सूत के बुने मंहो बारीक वस्त्रों के प्रति औंधी सम्पत्ता के कारण मुन्काव कम हो गया था।

पर अब बाहर से मैन्वेस्टर की मिलों का बुना सूत जाने लगा होगा, जो कि रैलों के विकास होने के कारण देश के कौने कौने में पहुंचने लगा होगा तो स्वाभाविक रूप से भारतीय राजाओं की, जो कि बहुत कुछ पुराने रंग ढंग से चले रहे थे अपने पुरानो कला के प्रति रुचि वाग्रत हुई होगी और उन्होंने बाहर से कता हुआ सूत मंगाने की सुविधा व उत्पादन को प्रोत्साहन देकर उनके उत्पादन को बढ़ावा दिया होगा। इस प्रकार राजाओं द्वारा संरक्षण ही मुख्य रूप से इस उद्योग के उद्गम एवं विकास का कारण बना। इसके साथ ही १६ वीं सदी के अंत व २० वीं सदी के प्रारम्भ में जापान व चीन में औद्योगिककरण के कारण उच्च किसम का रेशम उत्पन्न होकर भारत में जाने लगा। परिणामस्वरूप यहां कताई की अनेका अनुाई पर अधिक ध्यान दिया जाने लगा जो अब भी चला आ रहा है।

इस प्रकार मसूरिया वस्त्रों के उत्पादन का प्रारम्भ ६०-७० वर्ष पूर्व, तबकि कोटा रेल मार्गों द्वारा देश के मुख्य व्यापारिक केंद्रों से जुड़ा, हुआ प्रतीत होता है। उस समय तक भी कोटा में मुसलीम प्रभाव मौजूद था और यहां के व्यापार में मुसलमान बोहरों का मुख्य हाथ था। कोटा में बोहरे मुस्लीम काल में ही जा बसे थे। इन लोगों में मुस्लिम सम्पत्ता के प्रभाव के अनुसार बारीक कपड़े के प्रति रुचि थी ही जिसको पूर्ति यहां पर काले जाने वाले सूत द्वारा होती होगी बिना किमचो व महरबात जैसे कपड़े बुने जाते होंगे। किमचो महरबात/बाद में मसूरिया इनके द्वारा इतना पसन्द किया जाता था कि ये लोग अपने मुल्जार्बों को भी यही वस्त्र पेंट किया करते थे। बोहरे लोगों को तो यह पसन्द था ही उसके साथ ही साथ राजाओं एवं उनके अन्य कर्मचारियों, बड़े बड़े व्यापारियों आदि को भी यह वस्त्र पसन्द आ गया होगा और फलतः उसे राजसी पोषाक में महत्वपूर्ण स्थान

प्राप्त हुआ। इससे पूर्व भी कोटा में वेने बुने जाते थे वीं कि राजस्थान के विभिन्न भागों, बम्बई, कच्छका आदि की भेजे जाते थे। प्रारम्भ में मसूरिया के वीं वेने ही बुनाये गये और परम्परानुसार बाहर भेजे जाने लगे। मारवाड़ी शैर्डी की भी यह वस्त्र काकी पसन्द आया मन्ड-और फलतः मारवाड़ में बड़े पैमाने पर औदनी के रूप में इसका प्रयोग होने लगा। उस समय कोटा में बड़ी संख्या में जुआरे व काष्ठये रहते थे जो कि मसूरिया काष्ठे बुनते थे। फिर भी सम्पूर्ण दृष्टि से इन वस्त्रों का बाजार सीमित ही था और केवल कोटा, कैथून व बून्दो में ही इन वस्त्रों की उत्पादन होता था।

वेसे सूत के साथ साथ रेशम का प्रयोग बहुत थोड़ी मात्रा में तो प्रारम्भ ही ही होता था पर उसका कोई महत्व नहीं था। पहले त्त व त्त बारीक व-मोटे सूत का प्रयोग कर बनाये जाते थे। धीरे धीरे रेशमी मसूरिया अधिक पसन्द किया जाने लगा और द्वितीय महायुद्ध काल में बयकि सूत का मिजना अस्म्भव हो गया सामान्य रूप से सूत के साथ साथ रेशम का प्रयोग किया जाने लगा। सूत व रेशम दोनों प्रकार के दानों से निर्मित मसूरिया वस्त्र मारवाड़ी शैर्डी द्वारा अत्यधिक पसन्द किये गये। फलतः इसका बाजार मारवाड़ में व बर्नां वहाँ भी मारवाड़ी शैर्डी रहते थे निरन्तर बढ़ता चला गया।

आवागमन के साधनों के प्रसार व कोटा के यात्रा केन्द्र होने के बाद कोटा की एक मात्र कला होने से स्वाभाविक रूप से इसका प्रसार होने लगा। साद्वियों का प्रवजन बढ़ने पर यह वस्त्र साद्वियों के रूप में अत्यधिक उपयुक्त साधित हुआ। गत १० दशकों में इसका बाजार निरन्तर बढ़ता चला गया और उसके साथ ही साथ इसको उत्पादन कोटा कैथून व बून्दो की सीमा की आँचकर कोटा विभाग के विभिन्न क्षेत्रों तक पहुँच गया। माँग बढ़ने के साथ साथ ही युद्धोत्तर काल में बेरोजगार जुआरे वीं बम्बई, सुरत व अमदावाद की मिंठों में काम करने चले गये वे वापिस लौटकर वने वैश्विक घन्वे में संलग्न हो गये। उन्होंने मिंठों में प्राप्त ज्ञान व तकनीक का उपयोग कर इसमें नई नई डिजाईर्न बनाना चालू किया जिससे माँग में और भी अधिक वृद्धि हुई।

आज बयकि फैशन के बदलने के कारण निरन्तर क्ठापूर्ण साद्वियों की माँग बढ़ती चली पा रही है और मिंठों में उनका उत्पादन बन्द है स्वाभाविकरूपी

बनारस, चन्देरी, जादि की वनी सिल्क साड़ियों के साथ साथ उच्च किस्म के सूत और रेशम से बरी के द्वारा बनाकर बनाई गई मसूरिया साड़ियों का प्रयोग भी बढ़ रहा है। परिणामस्वरूप एक ओर तो बंधुन, कोटा और बून्दी के सब बुनकर एक मात्र हनी कार्य में संलग्न हो रहे हैं और दूसरी ओर बास पास के अन्य बुनकर केंद्रों के बुनकर भी निरंतर मोटे कड़े की बुनाई छोड़कर इसके बुनने की ओर अग्रसर हो रहे हैं।

निष्कर्ष : मसूरिया बुनकर उद्योग का विकास भारत में औद्योगिक-करण के साथ साथ हुआ। युद्धोत्तर काल में विकास को प्राप्त यह उत्पादन आज जब बम्बई से प्राप्त विद्युत द्वारा किया जाने वाला औद्योगिक-करण और अणु-शक्ति गृह विश्व में कोटा को प्रसिद्ध कर रहा है मसूरिया उत्पादन भी कोटा के नाम को साथ लेकर हस्तकला के क्षेत्र में कोटा का नाम विस्थापित कर रहा है। आज यह उत्पादन कोटा, कोटा जिला, राजस्थान या भारत का न रहकर अन्तिम-राष्ट्रीय क्षेत्र में प्रवेश कर चुका है और वाशा है शीघ्र ही मन्दिष्य में औद्योगिक-क्रान्ति के फलस्वरूप पद दलित बुनकरों को पुनः उत्थान के मार्ग पर अग्रसर करेगा।

ब ध्या य द्वि ती य

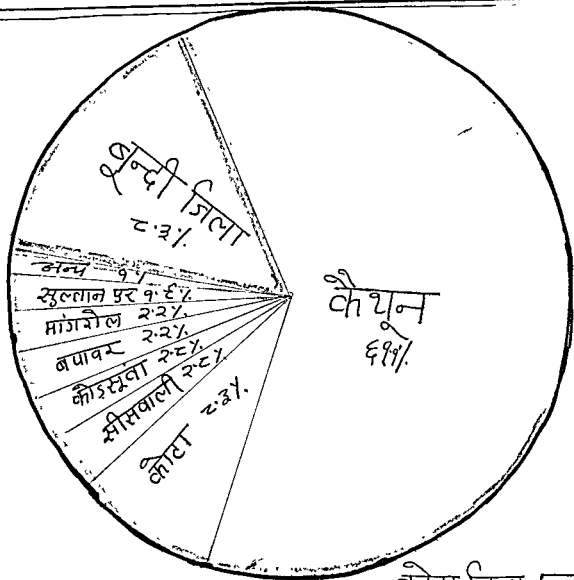
संगठन

विकासबौर पतन युग की परम्परा है । अनेक संस्कृतियाँ, अनेक राष्ट्राँ, अनेक अर्थ व्यवस्थाओं व अनेक उद्योगों का विश्व में विकास हुआ और इनसे पतन भी । विकास के लिये एक ढांचा बनाया जाता है पर ज्योंही कोई दूसरा प्रवाह बौर पकड़ लेता है विकास को रोक ही नहीं देता बरन् पीछे धकेल देता है । विकास एवं पतन का कारण होता है उनका संगठन एवं नियंत्रण । सुदृढ़ एवं विवेक पूर्ण संगठन विकास का कारण एवं निबंड़ व अयोग्य संगठन पतन का कारण होता है और संगठन की कुशलता एवं सुदृढ़ता विवेक पूर्ण नियंत्रण पर निर्भर होती है । एतदर्थ संगठन एवं नियंत्रण कितो भी राष्ट्र , उद्योग, समाज, संस्था या अर्थ-व्यवस्था की वास्तविक अन्तरिक एवं बाह्य स्थिति का सच्चा दिग्दर्शक होता है ।
अर्थ एवं महत्व :-

कितो भी संस्थान के विभिन्न घटक होते हैं । उनमें से एक घटक ऐसा भी होता है जिसका कार्य केवल विभिन्न घटकों की क्रियाओं में समन्वय करके संतुलन बनाये रखा जाता है । जैसेकि वृक्षा में तना, फूल फल, पत्तों, टहनो आदि विभिन्न घटकों का समन्वय करके उनका सम्बन्ध समग्र रूप से जड़ों के साथ स्थापित करता है । इन सब घटकों के मध्य भी वैज्ञानिक एवं क्रमबद्ध अन्तरसम्बन्ध होता है जिसके कारण यह सब संतुलित रूपसे अपनी अपनी क्रियाएँ करते हुये पैड़ की स्थिति का बोध कराते हैं, जो एक संतुलित रूपसे क्रियाशील ढांचा है , इससंतुलित रूप से क्रियाशील ढांचे को ही संगठन कहते हैं । वे घटक जो इस संगठन को व्यवस्थित रूप से बनाये रखते हैं नियंत्रक कहलाते हैं । उद्योग में व्यवस्थापक, प्रबन्धक या साहसी राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था में सरकार एवं कितोनि संस्था समाज या समिति में संवालय होते हैं जो विभिन्न घटकों का विवेक एवं कुशलता से वैज्ञानिक एवं क्रमबद्ध समन्वय करके उनका सम्बन्ध बाह्य संसार के साथ स्थापित कर निश्चित सर्वोन्मान्य उद्देश्यों की ओर संस्थान को अग्रसर करते हैं ।

बिना प्रकार वृक्षा में तने की सुदृढ़ता व स्थिति पर ही वृक्षा का आकार

मसूरिया उत्पादन में संलग्न कर्षो का वितरण



कोरा जिला

बुन्दी जिला

प्रकार एवं सुदृढ़ता निर्भर होती है उसी प्रकार किसी भी उद्योग में नियंत्रक की योग्यता पर ही संगठन का स्वरूप एवं सुदृढ़ता, उसमें नियोजित विभिन्न साधनों की कार्यक्षमता व योग्यता एवं उत्पादन की श्रेष्ठता व मितव्ययता निर्भर होती है। वह चाहे विद्युतीकरण यंत्रोकरण, विवेकीकरण, वाधुनिकरण आदि से संवाहित विशाल प्रमाणीय उद्योग हो अथवा कुटिया में बैठकर साधारण उपकरणों एवं साज सज्जा से मानव श्रम द्वारा संवाहित लघु या कुटीर उद्योग हो संगठन एवं नियंत्रण का महत्त्व कम नहीं होता है।

मसूरिया उत्पादन क्षेत्र :-

वर्तमान में कोटा क्षेत्र में मसूरिया का उत्पादन कोटा विभाग के कोटा व बून्दी जिले के विभिन्न स्थानों पर हो रहा है। जिनकी स्थिति निम्न प्रकार है :-

<u>क्र०</u>	<u>उत्पादनकेंद्र</u>	<u>जिजा</u>	<u>उपजिजा</u>	<u>तहसील</u>	<u>प्राकृतिक विभाग</u>
१.	बून्दी	बून्दी	बून्दी	बून्दी	जम्बत कालीसिंह का दोलाब
२.	केशोदायनाटन	"	"	केशपाटन	" " "
३.	कापरेन	"	"	केशपाटन	" " "
४.	राउंदा	"	"	केशपाटन	" " "
५.	मण्डावरा	कोटा	कोटा	दीगौद	" " "
६.	कोटा	"	"	ठाड़पुरा	" " "
७.	कैथून	"	"	"	" " "
८.	मण्डाना	"	"	"	" " "
९.	कोड़सुवां	"	"	दीगौद	" " "
१०.	मांरपा	"	"	"	" " "
११.	वड़ोद	"	"	"	" " "
१२.	सुल्तानपुर	"	"	"	" " "
१३.	सीसवाली	"	बारां	मांगरील	कालीसिंह पार्वती का दोलाब
१४.	मांगरील	"	"	"	" " "

क्र० उत्पादन केंद्र	बिठा उपजिला	तहसील	प्राकृतिक विभाग
१५, कन्ता	कोटा	बारां	मांगरील, कालोसिंधु पार्वती का दोआब
१६, फठायथा	"	"	" " "
१७, बपावर	"	चेवट	सांगोद, कालोसिंधु पार्वती का दोआब
१८, सांगोद	"	चेवट	" " "

इस प्रकार मसूरिया उत्पादन केवल कोटा जिले की ५ व बून्दी जिले की २ तहसीलों में और प्राकृतिक दृष्टिकोण से हाइलांती के मध्य भाग में बम्बल, कालोसिंधु व पार्वती के दोआब प्रदेश में केंद्रित है।

विषयगत संगठन :-

मध्यकाल में लौकी मध्यस्थों के बन्म एवं वर्तमान में पुनः सहकारिता पर राष्ट्रीय नीति के रूप में महत्त्व देने के कारण हमारे कुटीर उद्योगों में, मुख्य रूप से स्थानीय कच्चा माल व विपणन के न होने वाले उच्च कोटि के हाथ कर्मा उद्योगों में दो प्रकार का संगठन पाया जाता है। जिसे हम सहकारी व गैर सहकारी फौज कह सकते हैं। एतदर्थ, मसूरिया बुनकर उद्योग में भी संगठन के दोनों स्वरूप विषयगत हैं।

(क) गैर सहकारी फौज :-

मसूरिया उत्पादन जो कि कोटा विभाग में लगभग १००० वर्ग मीटर के फौज में फैली हुई लगभग १५०० कुटियाओं में हो रहा है कोटा नगर के कुछ व्यापारियों द्वारा नियंत्रित है। उत्पादन के लिये साधनों को उपलब्ध करना, उत्पादन कराना व उत्पादन का विपणन करना इनके कार्यों के मुख्य ३ भाग हैं। ये लोग आवश्यक उत्पादन सामग्री उपकरण एवं अन्य सब सज्जा बर्तनों से भी उपलब्ध होती है मंगवाते हैं। इन व्यापारियों ने बुनकरों में से ही कुल, चतुर एवं अच्छी बार्थिक स्थिति वाले बुनकरों को जाना प्रतिनिधि चुन लिया है। जिन्हें सामान्य बुनकर बैठिया कहते हैं। इस उद्योग में संगठन बैठियों की संख्या ३१ है जिनमें से २५ कैम्प में, ३ कोटा में व ३ बून्दी के निवासी हैं। बून्दी वालों का काम केवल बून्दी,

केशोरायपाटन, कामरेन व रौंटेदा में हैं, और कोटा व कैथून वाले सेठियाँ का काम बून्दी को छोड़कर शेष सब सा स्थानों पर होता है। इनके अलावा पांगरोल में भी एक सेठिया भी पहले मोटा कपड़ा बुनवाता था अब मसूरिया बुनवाने लगा है। व्यापारी गण सेठियाँ को कच्चा माल व बाहर से मंगायें जाने वाले उपकरण नकद या उधार बेच देते हैं। इनके साथ ही मैं मजदूरी नुकाने के लिये आवश्यकतानुसार नकद रकम भी देते हैं। सेठिया आवश्यकतानुसार कच्चा माल बुनकरों को देते हैं। एक समय पर उत्पादन के प्रकार के अनुसार २४ गज, २५ गज, और ३० गज कपड़ा बुनने के लिये कच्चा माल दिया जाता है जिसे एक पाण करते हैं। पाण के अनुसार ही मजदूरी का निर्धारण होता है। सम्पूर्ण कच्चा माल सेठियाँ का होता है बुनकर तो केवल अपना श्रम उगाकर कच्चे माल का रूप बदल देता है। जिससे वह पहले को जैदा अधिक उपयोगी भी जाता है जिसे हम कर्षशास्त्र की भाषा में उत्पादन कहते हैं। इतना ही नहीं सेठिया जिन बुनकरों के पास कपड़े नहीं होते हैं उनके यहाँ कपड़े लाते हैं, समय समय पर तकनीक सम्बन्धी जानकारी देते हैं, काम सिखाते हैं एवं समय समय पर मार्ग दर्शन करते रहते हैं और इस प्रकार प्रशिक्षक एवं तकनीकी सहायकार का काम भी करते हैं।

कपड़ा बुन बुनने पर वापिस सेठियाँ के पास आ जाता है। इसके लिये कैथून में बुनकर ही स्वयं सेठियाँ को जल्द पहले बुना हुआ कपड़ा दे जाते हैं और बागे के लिये कच्चा माल ले जाते हैं। गाँव में सेठिया लोग ही माह में एक या दो बार चक्कर लगा जाते हैं और आवश्यकतानुसार कच्चा माल देकर वह बना हुआ कपड़ा लेकर वापिस आ जाते हैं। कुछ सेठिया अब धनवान हो गये हैं जो स्वयं नकद मूल्य देकर कच्चा माल बाजार से खरीदते हैं या बाहर से मंगा लेते हैं। फिर मजदूरी के आधार पर उत्पादन कराकर प्रतियोगी चरों पर वापिस व्यापारियों को बेच देते हैं। इनमें से कुछ सेठिया कितना बाहर के व्यापारियों से सम्बन्ध स्थापित हो गया है उनको सीधा ही बुना हुआ कपड़ा भेज देते हैं। परन्तु इस प्रकार से विक्रय की मात्रा अत्यल्प है।

इसके साथ ही कुछ बुनकर ऐसे भी हैं जो नकद मूल्य देकर बाजार से कच्चा माल खरीद लाते हैं व माल तैयार करके वापिस प्रतियोगी दरों पर व्यापारियों को या सेठियाँ को बेच जाते हैं। ऐसे बुनकर मुख्य रूपसे कोटा व कैथून में ही हैं।

बुनाई तकनीक सम्बन्धि प्रशिक्षण नये बुनकर वर्ग सम्बन्धियों या मित्रों के पास जाकर प्राप्त करते हैं। सभी बुनकर एक ही जाति के होने के कारण आपसी सहयोग प्राप्त करने में ज्यादा रुठिनाई नहीं आती है। बाद में बाजार प्रकार सम्बन्धि निर्देशन समय समय पर सेठियों एवं व्यापारियों द्वारा किया जाता है।

इस प्रकार समस्त उत्पादन व्यापारियों के पास आकर एकत्रित हो जाता है जो घुलवाने के पश्चात् इसे डाक द्वारा देश के विभिन्न भागों में भेज देते हैं व अन्ती दुकानों पर ही बेच देते हैं। कभी कभी बाहर के व्यापारों भी जा नाते हैं जो स्वयं अन्ती हचणानुसार माल खरीद कर ले जाते हैं। मसूरिया वर्कों को घुलाई के लिए भी विशेषज्ञ धोवियों की आवश्यकता होती है। कोटा के केवल १० धोबी ऐसे हैं जो इनको घुलाई करते हैं। इतना ही नहीं यह भी कहा जाता है कि इस कड़े को बेसी घुलाई कोटा में होती है अन्य किसी स्थान पर नहीं हो सकती है। कुछ दिन पूर्व यहाँ के एक धोबी को बीकानेर ले जाकर वहाँ पर उससे घुलाई करवाने का प्रयत्न किया गया पर वह असफल रहा। यह भी यहाँ की बलवायु एवं पानी की विशेषता है।

गैर सहकारी ढाँच में सेठियों का विशेष महत्व है जो कुछ बुनकरों व व्यापारियों के मध्य एक महत्वपूर्ण कड़ी का काम करते हैं। सेठिया लोग केवल कच्चा माल उपलब्ध करने व विपणन का कार्य ही नहीं करते वरन् नये बुनकरों को अन्ती तरफ से कर्षा व अन्य उपकरण देकर व तकनीक सम्बन्धी मार्गदर्शन कर कच्चे माल की पूर्ति करती, चूड़ व जूड़ वित्त प्रवन्धक, प्रशिक्षक, मार्गदर्शक एवं विपणनकर्ता का काम भी करते हैं।

(ख) सहकारी ढाँच :-

वर्तमान में सरकार की अनुसूच नीति के कारण हाथकरियाँ उद्योग में सहकारिता का एक अन्वद एवं पूर्ण संगठन है। उल्लिखित भारतीय हाथकरियाँ परिषद इस ढाँच में नियंत्रक का कार्य करती है। कच्चे माल की पूर्ति के लिये वान आयुक्त (टेक्सटाइल कमिश्नर) एवं केंद्रीय रेशम परिषद (सेन्ट्रल सिल्क बोर्ड) हैं जो अन्न: सूत व रेशम का प्रवन्ध करते हैं। अंतर्बन्धी एवं उपकरण व सज्जा के लिये हाथकरियाँ परिषद व कार्यक्षेत्र पुंजी के लिये रिजर्व बैंक आफ इंडिया केंद्रीय

सहकारी बैंकों के माध्यम से ऋण प्रदान करता है। विद्युत केंद्र खोजने के लिये ऋण एवं अनुदान दोनों प्रकार की सुविधायें दी जाती हैं। विपणन के लिये राज्य स्तर पर राज्य बुनकर सहकारी संघ, राष्ट्रीय स्तर पर अखिल भारतीय हाथकच्चा वस्त्र विपणन सहकारी समिति लिमिटेड एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हाथकच्चा व हस्तकला उत्पादन नियामक निगम लिमिटेड हैं।

मसूरिया हाथकच्चा उद्योग में प्राथमिक स्तर पर केवल मात्र एक सहकारी समिति नं० २२७ है जो कि राजस्थान राज्य बुनकर सहकारी संघ व अखिल भारतीय हाथकच्चा वस्त्र विपणन सहकारी समिति की सदस्य है। यह सरकार द्वारा कच्चे माल की पूर्ति व विपणन हेतु प्रदत्त सुविधाओं का उपयोग कर अपने क्षेत्र में उत्पादन, विपणन एवं वित्त प्रबन्ध का कार्य कर रही है। इसको सूत व रेशम की निश्चित मात्रा नियंत्रित मूल्यों पर बान आयोग व केंद्रीय रेशम परिषद के माध्यम से प्राप्त होती है। परन्तु उसकी मात्रा इसको आवश्यकताओं की ओरता कम होने से जरी, सूत एवं रेशम की शेष आवश्यकता की पूर्ति यह समिति भी स्थानीय बाजार में भ्रम करके पूरा करती है। वित्त प्रबन्ध के लिये इस समिति ने व्याज मुक्त कार्यशील पूंजी के हेतु ऋण लिया था जो कि सदस्यों में उनके अम्यन-शानुसार वितरित कर दिया गया था। वर्तमान में उत्पादन एवं विपणन का वित्तप्रबन्ध है-+ समिति के अध्यक्ष व मंत्री स्वयं कर रहे हैं।

यह समिति सदस्यों को ऋणा माल देती है एवं कार्यानुसार मजदूरी के आधार पर कपड़ा बुनवाती है। कपड़ा बुनवाने के लिये केवल सदस्यों तक ही सीमित नहीं रहती वरन् गैर सदस्य बुनकरों से भी यह समिति अपना काड़ा बुनवाती है। निर्मित माल में से राज्य बुनकर सहकारी संघ लि० जयपुर, अखिल भारतीय हाथकच्चा वस्त्र विपणन सहकारी समिति लि०, अखिल भारतीय हाथ कच्चा व हस्तकला नियामक निगम लिमिटेड, हाथकच्चा गृह दिल्ली एवं अन्य सहकारी विपणन केंद्रों की मांग की पूर्ति कर शेष माल सीधा उपभोक्ताओं को या कोटे के व्यापारियों को बेच देती है।

शेष सब समितियां ऐसी हैं जिन्होंने अंत पूंजी एवं चउ पूंजी हेतु दिये गये ऋण प्राप्त कर अपने सदस्यों में बांट दिये हैं और अब उनका काम ऋणों की किस्तों को एकत्रित करके हाथकच्चा परिषद एवं केंद्रीय सहकारी बैंक को चुकाना मान रहे

गया है ।

इस प्रकार विभिन्न प्रकार से उत्पादन में संलग्न बुनकारों का चार मुख्य वर्गों में वर्गीकरण किया जा सकता है । जिनमें अनुमानित प्रतिशत निम्न प्रकार है-

विभिन्न प्रकार के बुनकारों का प्रतिशत

वर्ग	प्रतिशत
१. सेठियों के लिए उत्पादन करने वाले	७५
२. स्वयं के लिए उत्पादन करने वाले	१०
३. सहकारी समिति के लिये उत्पादन करने वाले	१०
४. व्यापारियों के लिये उत्पादन करने वाले	५

	१००

सहकारिता :-

अर्थ एवं महत्व :-

भारतीय संस्कृति आदि काल से ही जब पाश्चात्य जगत सहकारिता का नाम भी नहीं जानता था विश्व बन्धुत्व, सहकारिता एवं संगठन का पाठ पढ़ाती आई है । किसी मनुष्य, किसी कुटुम्ब, किसी वर्ग, किसी जाति, किसी राष्ट्र का तब तक उत्थान नहीं हो सकता जब तक उनमें परस्पर एकता एवं संगठन न हो । मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, समाज में भिन्न हो वह पूर्णतः सुखी हो सकता है । एकात्मता, विलग्नता तो इन्हें कच्चे सूत के समान है, जो किसी भी दायण टूट सकता है । अकेला मनुष्य तो जंगल में उस वृक्ष की तरह है जो हवा के मार्गों से अकेला ही मूलता है । तपार्, जांधी और तूफान में अकेला सड़ा रहता है ।

अर्थ मन्म वेद, पैगुआद, ५।१६।५ में लिखा है कि

ज्यायश्चन्तश्चिन्तोमा वियौष्ट,

संराथ्यन्त सयुराश्चरन्तः ।

अन्योन्यस्यै यत्नयदन्तोयात,

समग्रास्य सवृी चीनाद् ॥

अर्थात् तुम सब लोग एक साथ भिन्नकर रहो, कभी अलग न होवो, एक

दूधरे को प्रसन्न रखकर एक साथ मिठकर मारी से भारी काम भी कर डालो । परस्पर सदा मोठे शब्द बोलो और बनें कुरक बर्ना से मिठते रहो इससे तुम श्रेष्ठता को प्राप्त करोगे ।

इसी प्रकार ऋग्वेद में भी लिखा है :-

सहनावस्तु सन्नोपुनुक्त्वा

महवीर्यं क्लामहे ।

तेवर्ष्विनामधीत मधु

मा विद्विषामहे ॥

क्यात् वाप लोग प्रत्येक कार्य एक साथ मिठकर करो, एक साथ मिठकर काम करो, इस प्रकार तुम तेज व उन्नति (यज्ञ, धन, धान्य, व्यसनाय में उन्नति) प्राप्त करोगे तथा वापस में परस्पर क्लमी द्वेष (शत्रुता) न करो ।

साथ ही सहकारिता का स्वरूप क्या हो इसके लिये ऋग्वेद १०।१६।१४ पर लिखा है कि

समानो वः वाक्लूतो,

समाना हृदयानिवः ।

सनानमष्तु वो मनो,

यथावः सुसहासति ॥

क्यात् वाप लोगों के अभिप्रायों में, विचारों में, हृदयों में भी एकता होनी चाहिये विससे तुम्हारे संघ, समिति व समुदायकी उन्नति हो सके । इसी प्रकार यह भी लिखा है कि स

समानो मंत्रा सप्तोति : समानो,

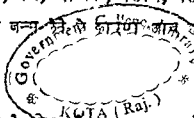
समान मनः सहविविषाम् (ऋग्वेद)

क्यात् तुम्हारी समिति एक ही, तुम्हारी मंत्रणा एक हो (क्योंकि सब लोगों के एकमत न होने से कार्य नहीं हो सकता) तुम्हारे मानसिक विचार एक ही और तुम्हारा चित्त एक ही । इ

इस प्रकार का सहकारिता का दिवंगत स्वरूप भारतीय जीवन के आर्थिक सामाजिक राजनैतिक व धार्मिक सभी पहलुओं में विद्यमान था और इसीका परिणाम था कि भारत एक समृद्ध देश था व यहाँ के कुटीर उद्योगों से उत्पादित माल

का वाजार विश्वव्यापी था। परन्तु विरकाल तक विदेशी शासन में बड़ड़े रत्न तथा देश में प्रदेश, वर्ण, जाति, रूप, भाषा, ज़िम्मे, लिंग के आधार पर परस्पर संकीर्णता की दूषित मनोवृत्ति बन्नी ^{के} ^{कारणों} ^{जो} ^{हमारे} ^{यह} ^{गवन} ^{परम्परा} नष्ट प्रायः को गई है।

उद्यम एवं विकास :-



अज्ञानस्व मानव जाति के जीवन के ती प्रमुख कार्य का अध्ययन है एवं सञ्चारिता इस सामान्य कार्य के दृष्ट बंधों को पूर्ति का एक साधन है। यह वात्म-सहायता है जो कि संज्ञान के कारण अधिक प्रभावकारी हो जाती है। इसका आधार व्यापार व नीति शासन का वह सम्बन्ध है जो हमारी वर्तमान औद्योगिक प्रणाली की आवश्यक व्यवसायिक इमानदारी से श्रेष्ठतर है। व्यवसायिक संज्ञान के रूप में सञ्चारिता का बन्नी यूरोप में औद्योगिक ज्ञान्ति से उत्पन्न निर्धनता व आर्थिक कठिनाइयों के कारण हुआ। जिसमें विभिन्न व्यक्तित्व ज्ञानता के आधार पर और सामान्य आर्थिक हितों को प्रतिष्ठित के त्रिये स्वैच्छा से संगठित होते थे। इसका गारिभाषिक कार्य उत्पादन औरवितरण में प्रतिस्पर्धा का परित्याग तथा सभी प्रकार के मध्यस्थों की बरतन खत्म कर देना है। विभिन्न देशों में सञ्चारिता का प्रकार वहां की आवश्यकताओं एवं धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक परिस्थितियों के अनुसार विभिन्न रूपों में हुआ है। ब्रिटेन में मण्डार ज्ञान्दोऊन के रूप में, जर्मनी व इटली में साह ज्ञान्दोऊन के रूप में, डेनमार्क व स्वीडन में दूषित ज्ञान्दोऊन के रूप में, रूस व फिडीस्तोन में सामूहिक दूषित ज्ञान्दोऊन के रूप में एवं चीन में उत्पादन ज्ञान्दोऊन के रूप में मुख्यतः सञ्चारिता का बन्नी एवं विकास हुआ है।

भारतीय कार्य व्यवस्था का मुख्य आधार दूषित है हमारी राष्ट्रीय ^{का} ^{उत्पन्न} ^{५०} ^{प्रतिशत} ^{भाग} ^{उत्पत्ति} ^{प्राप्त} ^{होता} ^{है} ^{और} ^{हमारी} ^{७०} ^{प्रतिशत} ^{जनता} ^{उत्पत्ति} ^{सहारे} ^{पड़ती} ^{है}। अतः स्वाभाविक रूपसे व्यवसायिक रूपसे सञ्चारिता का बन्नी औद्योगिक ज्ञान्ति से दठित निर्धन किसानों व श्रमजीवियों को आर्थिक कठिनाइयों को दूर करने के त्रिये २० वों सदों के प्रारम्भ में हुआ। द्वितीय महायुद्ध व उत्तरे पूर्व मुख्यतः दूषित साह सञ्चारिता सभितियां हो गयी। युद्धोपरिकाल में मने-जन्य क्षेत्रों में भी इसका विकास हुआ। नायकराज युद्ध उद्योग में ज्ञान प्रयास

१९२३ में हुआ जबकि केंद्रीय सरकार ने बुजार्गों को सहकारी संस्थायें बनाने के लिये आर्थिक सहायता प्रदान करने की घोषणा की। द्वितीय महायुद्ध काल में जायातों पर कड़े प्रतिबन्ध लगाने व निर्यात को प्रोत्साहन देने के कारण सभी औद्योगिक कम्पनियां युद्ध सम्बन्धी माल उत्पन्न करने लगी थी। इन सब कारणों से उपभोक्ता वस्तुओं का उत्पादन बहुत कम हो गया जिसके फलस्वरूप कौटे कौटे उद्योगों को प्रोत्साहन मिला। प्रत्येक राज्य में सहकारी विभागों ने इस अवसर का लाभ प्राप्त किया और सरकारी ऋणानों को सहायता से बहुत सी औद्योगिक संस्थायें सहकारी ढाँच में स्थापित करने व उन्नति करने में सुरु दिशचरसी ली तथा उन्हें परामर्श तथा पथप्रदर्शन द्वारा उत्साहित किया। भारत में औद्योगिक सहकारिता का विकास मुख्यतः कुठौर उद्योगों में हुआ। यह बान्दोजन कृत्य बान्दोजनों से विपरीत बुनियादी रूप से ग्रामों में उत्पन्न हुआ, कलाकूठा और वहाँ से फिर शहरों को और गया। स्वतंत्रता से पूर्व सहकारिता विदेशी शासकों द्वारा कृपा-व्यवस्था के सीमित उद्देश्य से प्रारम्भ की गई जो रूको घनी गति से चलती थी और इसके द्वारा ग्राम तथा नगरों की जनता को भी छोड़ी बहुत सहायता पहुंचाई जाती थी वह इसलिये कि शोषण और उत्पीड़न से इनको कम न टूट जाय। यह राष्ट्र नीति नहीं अपितु एक ताउ नीति के रूप में चलती थी। इसीकाल में सूत की कमी के कारण उसके वितरण का नियंत्रण हुआ और परिणामस्वरूप सभी बुजार्गों को आवश्यक रूप से सहकारी समिति के रूप में बन्धना पड़ा।

स्वतंत्रता के पश्चात् भारतीय संविधान में राज्य के नीति निर्देशक तत्वों एवं १९४८ की औद्योगिक नीति द्वारा कुठौर उद्योगों में सहकारिता के प्रसार पर जोर दिया गया। इस काल में लगभग सभी बुजार्गों को सहकारी ढाँच में लाने का पूर्ण प्रयत्न हुआ। विभिन्न सहकारी समितियों के कार्यों में समन्वय करने व उनके विकास की योजना बनाने, उनके लिये सहायता का प्रबन्ध करने, सरकार को उद्योग की समस्या पर परामर्श देने आदि कार्यों के लिये सरकार द्वारा १९५२ में बलित भारतीय हाथकरमा परिषद स्थापित की गई। १९५३ में खादी एवं हाथकरमा उद्योग विकास अधिनियम पास किया गया जिसके अनुसार ४ करोड़ रुपये का बोर्ड को सहकारी समितियों की आर्थिक सहायता के लिये दिया गया। परिणामतः कितनी ही नई बुजार्ग सहकारी समितियां बनीं और पुरानी सहकारी समितियां

को सप्तस्य संख्या की 1 इस काठ में समितियों की संख्या लगभग दुगुनी हो गई । छायाकर्षा उत्पादन के विपणन के लिये एक केंद्रीय विश्व संस्था स्थापित की गई । देश व विदेश में लोक प्रदर्शन गृह व विश्व बैंड और राज्यों में राज्य बनकर सहकारी संघ व विभिन्न स्थानों पर सहकारी छत्र विश्व बैंड स्थापित किये गये ।

कोटा बिठा-सि-व्यवसायिक गोंठन के रूप में सहकारिता का विकास करने में राजस्थान में कृषियोग स्थान रखता है । मृतपूर्व कोटा रियासत द्वारा ही राजस्थान में-सक- सर्वप्रथम एक सम्पूर्ण सहकारी कानून १९१६ में भारत सरकार के सहकारी अधिनियम १९१२ के आधार पर बनाया गया । इससे पूर्व ही मराठपुर व अन्य राज्यों में सहकारी कानून बनाये जा चुके थे पर वे अपूर्ण थे । जबकि मराठपुर, कोटा बीकानेर, बीधपुर, अजर व बयपुर को छोड़कर किसी राज्य में १९४८ से पूर्व किसी प्रकार के सहकारी कानून का निर्माण नहीं हुआ । कोटा में सन् १९१७ में सहकारी बैंक कार्य कर रहा है जिसको १९-२-१९२७ को कोटा स्टेट पीपलस प्रोविडेंट बैंक लि० के नाम से १९५५ समितियाँ तथा १२७ व्यक्तियों के ग्रार्थना पत्र पर की गई थी ।^२ राजस्थान के राज्यों में यह सर्वप्रथम प्रयास था तथा राज्य सरकार द्वारा जुदान एवं ऋण के रूप में इसे पूर्ण संरक्षण प्रदान किया गया । इसके बाद स्वतंत्रता प्राप्ति तक राजस्थान में ऐसा कोई भी संगठित सहकारी बैंक स्थापित नहीं हुआ । यही कारण था कि एकोकरण के अक्षर पर कोटा राज्य में राजस्थान में मराठपुर के बाद सर्वाधिक सहकारी समितियाँ थीं जिनकी संख्या ६२५ थी ।^३ कोटा का केंद्रीय सहकारी बैंक धन विश्वास व आर्थिक सुदृढ़ता का जीता जागता उदाहरण है । कार्यशील गुंजी के दृष्टिकोण से राजस्थान में इसका पांवना स्थान है एवं निर्माण कार्य-शोउगुंजी क्षुपात सर्वाधिक ७७.७ प्रतिशत है जबकि राजस्थान के सब सहकारी बैंकों का औसत केवल २८.२५ प्रतिशत है ।^४

कोटा जिले में बनकर उद्योग में संलग्न सहकारी समितियों की स्थापना द्वितीय महायुद्ध काठ में एवं युद्धोत्तर काठ में मने-हे- हुई है । प्रथम- उस समय युत को कमी के कारण नियंत्रित मूल्यों पर मूल प्राप्त करने के उद्देश्य से एवं बाद में

१. सहकार गंठन पृष्ठ ११४, प्रचार संविभाग सहकारी विभाग, राजस्थान

२. कृषियोग सहकारी समन पृष्ठ १, ठार० स्वल्पबन्ध मैलता ।

३. सहकार गंठन पृष्ठ ११५, प्रचार संविभाग सहकारी विभाग, राजस्थान

४. सहकार गंठन पृष्ठ १४७.

५३-५४ से विभिन्न प्रकार को सहायता व कृपा प्राप्त करने के उद्देश्य से बुनकर सहकारो समितियां संगठित की गई हैं ।

बुनकर सहकारो समितियां कई प्रकार की हो सकती हैं । उनमें से प्रमुख स्वरूप निम्न हैं :-

स्थानिय समितियां ---

स्थानिय समितियां भी चार प्रकार की हो सकती हैं ।

(१) साधन समितियां :- इनके निम्न कार्य होते हैं :-

- (१) सदस्यों से प्राप्त हिस्सा पूंजी के अतिरिक्त केन्द्रीय सहकारो बैंक से आर्थिक सहायता प्राप्त करना और बने सदस्यों को आवश्यकताओं को पूरा करना ।
- (२) कच्चे माल को थोक मूल्यों पर खरीदना और उचित मूल्य पर सदस्यों में बांटना ।
- (३) थोक मूल्यों पर बीजारों को खरीदना और उचित मूल्यों पर सदस्यों में बांटना ।
- (४) सदस्यों को सामान्य व यंत्रात्मक शिक्षा प्रदान करना ।
- (५) सदस्यों में पारस्परिक सहायता की भावना उत्पन्न करना और उनमें बंधन करने की वादत डालना ।
- (६) समितियां का संघर्ष में संगठन करना ।

(२) उत्पादन और विक्रय समितियां :-

ये समितियां निम्न कार्य करती हैं :-

- (१) हिस्सा पूंजी के अतिरिक्त केन्द्रीय सहकारो बैंक व अन्य साधनों से आर्थिक सहायता प्राप्त करना ।
- (२) बीजारों एवं कच्चेमाल को थोक मूल्यों पर खरीदना ।
- (३) सदस्यों से मजदूरी देकर कपड़ा बुनाना ।
- (४) उत्पादन को बेचना व उचित मूल्य प्राप्त करना ।
- (५) सदस्यों को सामान्य व यंत्रात्मक शिक्षा दिलाने का प्रयत्न करना ।
- (६) सदस्यों में पारस्परिक सहायता की भावना पैदा करना और उनमें बंधन करने की वादत का विकास करना ।

(७) समितियों को संघों में संविद्ध करना ।

(स्थानीय सहकारी समितियों के संघ :-

इसके निम्न कार्य होते हैं :-

(१) विभिन्न सहकारी समितियों के कार्यों में समुच्चय करना ।

(२) उनकी वस्तुओं की बिक्री की व्यवस्था करना ।

(३) उनके लिए कच्ची सामग्री खरीदना ।

(४) निजी व सार्वजनिक संस्थानों से उँके प्राप्त करना ।

(५) उत्पादित के उन्नत ढंगों में कुसंधान की सुविधायें प्राप्त करना व

उनकी वस्तुओं का प्रचार करना ।

(४) गृह निर्माण समितियाँ :-

इनका कार्य बुनकरों के लिए दोषकालिन कृपा प्राप्त करके उन्हें गृह निर्माण हेतु देना है ।

केन्द्रीय समितियाँ :-

भारत में वर्तमान में प्रचलित केन्द्रीय बुनकर या हाथ कर्मा वस्त्र सहकारी समितियाँ निम्न हैं :-

(१) राज्य बुनकर सहकारी संघ लि०

(२) अखिल भारतीय हाथ कर्मा वस्त्र विपणन सहकारी समिति लि०

(३) भारतीय हस्तकला व हाथकर्मा विपणन निगम

(४) जौनीय क्रय-विक्रय संघ

कोटा जिले में बुनकर सहकारी समितियाँ :-

मसूरिया, जो कि सूत रेशम व बरौ तीन प्रकार के धागों से बुना जाता है, के उत्पादन, वित्तप्रबंध या विपणन के उद्देश्य से तो कोटा जिले में केवल एक सहकारी समिति की स्थापना हुई है । चूंकि कुछ वर्षों पूर्व अधिकतर बुताहे केवल सूती वस्त्रों के निर्माण में लगे थे सूती वस्त्रों के उत्पादन व विपणन के वित्त-प्रबंध के लिए ही शेष प्राथमिक सहकारी समितियों की स्थापना हुई है । केन्द्रीय समितियों का सम्बंध तो हाथकर्मा पर बुने जाने वाले सभी प्रकार के कपड़ों से है ही, फिर भी मसूरिया उत्पादन के लिए कोटा जिले में कोई विशिष्ट

केन्द्रीय समिति स्थापित नहीं हुई है।

कोटा जिले में हाथकमा उद्योग में सहकारिता का इतिहास १९४५ से प्रारम्भ होता है। इस समय युद्ध के कारण सूत की कमी थी साथ ही बड़े कारखानों के सैनिक कार्यों के लिए उत्पादन में संलग्न होने से उपभोग के लिए एकदम बड़ी मांग थी, अतः चुत्तारों ने सूत को नियंत्रित मूल्यों पर प्राप्त करने, कृष्ण सुविधार्थ प्राप्त करने के लिए सहकारी विभाग के संज्ञा प्रयत्नों एवं प्रोत्साहन से सहकारी समितियां बनाईं। सर्वप्रथम बुनकर सहकारी समितियां की स्थापना कोटा जिले में बुनकरों की गठ स्थलों कैथून से प्रारम्भ हुई और फिर ग्रामीण क्षेत्रों में ही अन्य वस्त्र उत्पादन केन्द्रों मांगरोठ, सुल्तानपुर, बारां, हड़ड़ा, कोडसूबां, कपावर सांगोद आदि में हुई। १९४५ से लेकर १९४७ के काल में लगभग सभी वस्त्र उत्पादन, केन्द्रों पर सहकारी समितियां बन चुकी थी।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् ४६-५० व ५०-५१ के वर्षों में पुनः सूती वस्त्र उद्योग पर बं संकट के बादल मंडराये और कपास के कम उत्पादन के साथ-साथ सूत की भी कमी पड़ गई। परिणामस्वरूप पुनः कुछ सहकारी समितियां स्थापित हुईं। इसके पश्चात् उपकर कोष से व्याजमुक्त कृष्ण प्राप्ति के ५४-५५ से ५७-५८ तक कुछ सहकारी समितियां बनीं। तब से नई सहकारी समितियों के बनने का काम रुका पड़ा है।

कोटा जिले में वर्तमान में कुल ७१ प्राथमिक बुनकर सहकारी समितियां हैं जिनके लगभग ७० प्रतिशत बुनकर (२५४६) सदस्य हैं। इनमें से २६ समितियां के सदस्य मसूरिया बुन रहे हैं। वास्तव में केवल एक सहकारी समिति है जो मसूरिया उत्पादन के लिए वित्तप्रबंध, उत्पादन व विपणन का कार्य कर रही है। शेष सब समितियां केवल इस प्रकार की हैं जिनमें ने सूती वस्त्र उत्पादन के नाम पर हाथ कमा परिषद व रिजर्व बैंक योजना के अंतर्गत केन्द्रीय सहकारी बैंक से कृष्ण ले रखा है जो कि नकद रूप में ही सदस्यों में बांट दिया गया है और अब इनके सदस्य सामान्य सूती वस्त्रों का बुना छोड़कर मसूरिया बुनने लग गये हैं।

केवल समिति नम्बर ८२७, कैथून है जो कच्चा माल मंगाती है, सदस्यों व गैर सदस्य बुनकरों ने मजदूरी देकर कच्चा बुनाती है और फिर सहकारी श्रोतों द्वारा ९. इनका पूर्ण विवरण परिशिष्ट में दिया गया है।

संरक्षित ही विद्युत करती है ।

संगठन का जातीयतात्मक अध्ययन :-

भारतीय वस्त्र उद्योग उत्कर्षकाल में जब सम्पूर्ण विश्व नक हाना वाचारा था, इतना ही नहीं इसमें हतनी प्रतियोगितात्मक शक्ति थी कि औद्योगिककरण में अप्रसर वृद्धत प्रभाषीय है- उत्पादन के नेता इंग्लैंड कोमो बने उद्योगों को प्रतिस्पर्धा से बनाने के लिये भारतीय वस्त्रों के आयात पर कठोर प्रतिबन्ध लगाने लड़े, एक सुसंछित कुटोर उद्योग ही था । उस समय कच्चेमाल, उपकरण एवं सज्जा के लिये बुनकरों को मीठों और व्यापारियों को और न देकर भारत के गांव गांव व्याप्त कमार के लच्छहाते क्षेत्रों, गांव के जाती और फिजानों को और नो देसा पड़ता था । गरिणामस्वल्प सबमें आपूर्ण मद्योग व प्रत्यक्षा सम्बन्ध के कारण मध्यस्थों के होने का तो प्रश्न ही नहीं उठता उनकी जोषिका भी अधिक थी व जीवनस्तर भी ऊंचा था ।

आज जबकि भारत के उच्च कोटि के हस्त निर्मित वस्त्रों का वाचारा स्थानीय, क्षेत्रीय, प्रान्तीय या राष्ट्रीय न रहकर अंतरराष्ट्रीय हो गया है और दूसरी ओर कच्चे माल, उपकरण व साज सज्जा के लिये बुनकरों को एकदूसी मीठ दूर लड़े वृद्धत प्रभाषीय उद्योगों को और देसा पड़ता है, साथ ही मध्यकाल में वृद्धत प्रभाषीय उत्पादन में गला ^{बैठ} बँट्टे प्रतियोगिता के कारण उनकी आर्थिक दशा सोचनीय है - ऐसे वर्गों का धन स्वाभाविक है जो उनकी सोचनीय जत्था का ठाम उठाव । वर्तमान में सभी विकासशील हाथ कर्मा उत्पादनों को भांति मसूरिया उत्पादन में भी मध्यस्थों को एक कच्चे कृच्छ्रा है जो इस कठोरपूर्ण उत्पादन से प्राप्त हो रही आप के एक बड़े भाग के भाषीदार हैं । पर गैर सल्लकारी क्षेत्र में संगठन सुदृढ़, श्रमद, एवं विवेकपूर्ण है । जिससे कच्चा माल प्राप्ति, विव प्रबन्ध, तकनीक सम्बन्धी शिक्षा विषयन आदि के बारे में कोई कठिनाई नहीं आती है । लेकिन सल्लकारी क्षेत्र में जो संगठन है वह जस्यार्थ एवं नाम मात्र का है ।

लेकिन हमारे भारतीय जीवन के आधारभूत सिद्धांत आत्मनिर्मलता एवं सांघिमिमान का पूर्णतः जीन लो वाता है । कला का कर्मा बुनकर पूर्णतः गैठिर्ण पर निर्भर है जो स्वयं व्यापारियों के हाथ को कठजुतती को लुपे है । कोटा के ५ प्रमु

व्यापारी कभी भी संगठन करके सैकड़ों बुनकरों को वैरोचकार कर सकते हैं या सामान्य स्तर से भी नीचे स्तर पर जीवन व्यतीत करने को बाध्य कर सकते हैं। इस प्रकार की केन्द्रित नियंत्रण शक्ति का भी परिणाम है कि हम उत्कृष्टकृता के कर्ता बुनकर केन्द्र मजदूर हैं न कि एक स्वतंत्र स्वाभिमानी व स्वनिर्भर उत्पादक। परंतु यह बुनकर इन व्यापारियों के भी विरुद्ध ऋणो हैं जिनके अमूल्य सहयोग, सहायता, परिश्रम एवं प्रोत्साहन से ये बुनकर भिन्नों के अस्वास्थ्य प्रद एवं गंदे वातावरण में निरकर पुनः अपने परस्परगत उद्योग में संलग्न हो गये हैं। साथ ही इन्हींके कारण मोटा कड़ा जुना झोड़कर मसूरिया बुनने लगे हैं जिससे उनकी आय काफी दुगनी हो गई है।

इस भी ही स्वाभिमान, आत्मनिर्मिता व स्वतंत्रता के बिना कृषा का स्थायित्व एवं निरन्तर विकास सम्भव नहीं है। आत्म सहायता ही एक मात्र मार्ग है जो बुनकरों को स्वाभिमान, आत्मनिर्मिता व स्वतंत्रता का पाठ पढ़ा सकता है। जिसका कि दूसरा नाम सहकारिता है। इसके कारण अतीत में भी भारतीय कृषा वर्मात्कर्म पर पहुँच पाई थी। सहकारिता विश्व का नियम है और जीवन का भी। सहकारिता में मानवीय चेतना, विवेक, मानना, श्रद्धा, विश्वास, सिद्धांत, निष्ठा और इन मानसिक बौद्धिक तत्वों से संवाहित आचार विचार, व्यवहार क्रिया और परस्पर वर्तन (वताव) का महत्व मौखिक-साधन, -सम्पत्ति-संगठन-व्यापार-व्यवसाय से कहीं अधिक है। दूसरे शब्दों में मानवीय-आत्मगत तत्व अर्थात् गहकारी चेतना, मानना-श्रद्धाविवेक, सिद्धांतनिष्ठा और इनने निर्दिष्ट क्रिया व्यापार वस्तुगत तत्वों जैसे पूँजी, कच्चेमात्र, श्रम संगठन, कानून समितियों और सदस्यों की संख्या, व्यापार व्यवसाय से अधिक मौखिक और महत्वापूर्ण स्थान रखते हैं। सहकारिता की सकलता का मुख्य आधार आत्मगत तत्व हैं न कि वस्तुगत तत्व। इसके अर्थ यह भी नहीं है कि स्तन- वस्तुगत तत्व की उपेक्षा है या उसके अस्तित्व को मान्यता नहीं। वस्तुगत तत्व तो आत्मगत तत्व को भाँति हो अस्तित्व का अनिवार्य भाग हैं। केन्द्र वात स्थानी है कि सहकारिता में वस्तुगत तत्व को आत्मगत तत्वों के अधीन रचना पड़ता है। समस्त उत्पादन, वितरण, व्यापार, व्यवसाय और उद्योग को आत्मगत तत्वों के अमूल्य नियंत्रण किया जाना चाहिये तभी सहकारिता का वास्तविक उद्देश्य पूर्ण हो सकता है।

मसूरिया बुनकर- उत्पादन भारत के ऐसे दुर्गो उद्योगीय उत्पादकों में से एक

है जिसे लिये कच्चा माल सैकड़ों एवं हजारों मोल दूर से आता है जो स्वाभाविक रूपसे बहुत कीमती होता है और जिसका उत्पादन कार्य मोलों दूरी के क्षेत्र में फैला हुआ है हजारों फार्पडियर्स में निरंतर कार्यरत मानव श्रम द्वारा होता है, साथ ही उत्पादित माल का बाजार सैकड़ों व हजारों मोल के क्षेत्र में देश व विदेश में फैला हुआ है और सरकार द्वारा इसके लिये किसी प्रकार के ऋण ज्यवा अनुदान की सुविधा नहीं है उसका नियंत्रण कोई एक श्रमिक या श्रमिकों या समूह, कोई एक व्यापारी या वर्तमान सरकार के किसी विभाग द्वारा कर सना वर्तमान में जबकि सब और अधिकांश रूपसे स्वार्थी और कामचोर कार्यकर्ता दृष्टिगत होते हैं ही सना अस्मभव हो प्रतीत होता है। यही कारण है कि आज भी जबकि हम योजनाबद्ध विकास के १३ वर्षों व स्वतंत्रता के १७ वर्षों गुजार चुके हैं सरकारान्तरिता एवं कुटीर व ग्रामोद्योगों के नाम पर जनता के कड़े पतने की कमाई का करोड़ों रूपया कर चुको है, भारतीय कुटीर उद्योगों में संलग्न श्रमिक परम्परागत रूपसे बड़े साहूकारों के शिखरों में फंसे हुये हैं। विशेष रूपसे भारतीय गांवों व कस्बों में फैला हुआ कृषिनीत प्रकार के नमूने और डिजाइनों के बस्त तैयार करने वाला व ३० लाख व्यक्तियों को नियोजन करने वाला व सना करोड़ व्यक्तियों को जाजीविका का साधन हायकारा उद्योग, केवल जिनके विकास पर कि सरकार के किसी ही विभाग, समितियों, कमीशन एवं परिषदें लगी हैं, स्वतंत्र भारत को सरकार द्वारा लगभग ४० करोड़ रूपया खर्च कर दिया गया है और ३४ करोड़ रूपया तीसरो योजना में व्ययकिये जाने को है—ऐसे हाथ धर्मा उद्योग में आज भी ८० प्रतिशत उत्पादन मध्यस्थों व साहूकारों को हुनकर शोषण नीति के अन्तर्गत ही रहा है।

मसूरिया उत्पादन में सहकारिता का प्रवेश नाम मात्र को है जो भी बुराई है क्योंकि उसमें कच्चा माल, साब रज्जा व उपकरणों को प्राप्ति, पित प्रबन्ध व विपणन कार्यों में कोई सह सम्बन्ध नहीं है। सना नं० ८२७ केवल मात्र प्राथमिक सहकारी समिति है, जिसकी सदस्य संख्या केवल ६० है इसके अलावा मसूरिया के लिये कोई अन्य प्राथमिक या केन्द्रीय समिति नहीं है। इसमें भी सहकारिता केवल वस्तुगत है आत्मगत नहीं, क्योंकि सदस्य और गैर सदस्य सभी बराबर मजदूरी पर हजारा कपड़ा बुनते हैं, पित प्रबन्ध केवल लघ्यता व मंत्री करने हैं और वे जो न्नी कामका अधिकतर मांग प्राप्त कर लेते हैं। प्राथमिक सहकारी समितियाँ, स्थानीय

ग्रान्तीय, राष्ट्रीय व विदेशी विपणन संघों में क्रमबद्ध सम्बन्ध है पर वह केवल नाम-मात्र की है। उसका इतने बड़े उद्योग में नम्र योगदान केवल दो प्रतिशत के लगभग है। कच्चे माछ की पूर्ति के लिये हाथकरा परिषद वान जायोग बम्बई व केन्द्रीय रेलन परिषद से सम्बन्ध स्थापित कर कच्चा माछ निर्यातित मूर्या पर उपलब्ध करने का प्रावधान है पर उसकी शर्त अत्यन्त कठोर, अमहारिक है और उसकी प्राप्त करने की प्रक्रिया दोष एवं बटिठ है बिगको ग्रामों के अक्षिचित बुनकर समक सन्ना सम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है। इनो का परिणाम है कि इतने बड़े क्षेत्र में जो केवल एक सहकारी समिति के लिये भी मांग का केवल ४० से ५० प्रतिशत ही कच्चा माछ सहकारी शर्तों से प्राप्त होता है शेष मांग की पूर्ति हेतु उसे भी स्थानीय व्यापारियों को शरण लेनी पड़ती है। और अन्य शर्तियों के समान ही कार्य करना पड़ता है।

अतः यही कच्चा उचित होगा कि इस उत्पादन में कच्चा व्यवहारिक सम्कारिता की तो अत्यधिक आवश्यकता है हो व्यवसायिक रूप से सहकारी संगठन की भी कम आवश्यकता नहीं है, पर उसका भी यहाँ पूर्णतः जोष ही है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि इस उत्पादन में व्यवसायिक संगठन के रूप में ही आध्यात्मिक व नैतिक आदर्शों की ध्यान में रखकर तदनुरूप सम्पूर्ण प्रक्रिया का सुदृढ़ एवं विवेकपूर्ण पुनर्गठन किया जाय।

संगठन की सुदृढ़ता एवं कार्यशीलता के अभाव में हाथकरा परिषद, नम्र राजस्थान सरकार द्वारा एवं रिजर्व बैंक योजना के अन्तर्गत केन्द्रीय सहकारी बैंकों द्वारा जो ऋण मुद्रिधायै एवं जुदान उपलब्ध किये जाते हैं उनका भी कोई प्रयोग नहीं किया जाता है। पर्यटनिक यै ऋण अब नकद न दिये जाकर कच्चे माछ के रूप में ही दिये जाते हैं; आवश्यक किसिम का कच्चा माछ मर्दि- उचित दर पर यदि कोई बुनकरों का क्षेत्रीय या स्थानीय संगठन ही तो यही खरीद सकता है। शीर्ष स्तर पर जहाँ सरकार का प्रत्यक्ष सम्बन्ध है व पूर्ण संरक्षण प्राप्त है संगठन सुदृढ़ एवं पूर्ण है नु परन्तु प्राथमिक स्तर पर संगठन का जो स्वरूप विपणन है उसके लिये केवल इतना कहा जा सकता है कि यह सरकारी जागृकी की पूर्ति का एक बहाना मात्र है, वास्तव में उसका कार्यकरण नहीं के बराबर है। संगठन स्ववाचित न होकर सहकारी विभाग के कर्मचारियों द्वारा नियंत्रित एवं संवाचित है जिसका

स्पष्ट प्रमाण इस बात से मिलता है कि समितियों के सम्बंध में जानकारी व उसके पुराने हिसाब सब केवल सहकारी विभाग में ही देखे जा सकते हैं समिति के मंत्री अध्यक्ष व अन्य अधिकारियों के पास उनके सम्बंध में न कोई सूचना है न उन्हें उसकी पूर्ण जानकारी। जब कभी आवश्यकता होती है सहकारी विभाग के कर्मचारी हो मजदूरों के मुखिया बुनकरों के पास चले जाते हैं जो फिर समस्त सदस्यों को एकत्रित कर लेते हैं और जो कुछ कार्यवाही चुनाव इत्यादि करना होता है कर लेते हैं। इसके पीछे उनका एकत्रित होना शायद ही कभी होता हो। सामान्यतः सहकारी समितियों के जो पदाधिकारी हैं वह ही अब व्यापारियों के प्रतिनिधी जिन्हें सेठिया कहा जाता है उन चुके हैं जिनसे वे स्वयं ही इस बारे में कोई ध्यान नहीं देते। इस प्रकार प्राथमिक स्तर पर सहकारी समितियों का जो संगठन है वह वैसे तो मसूरिया उत्पादन से कभी तक सम्बंधित है ही नहीं लेकिन उसे इससे सम्बंधित किया जा सकता है सुब परन्तु विधान रूप में ही यदि उन्हें मसूरिया बुनकर संगठन का नाम दे रख्यदिया गया तो उसे बुनकरों के कल्याण हेतु कुछ होने वाला नहीं है। जो एक समिति मसूरिया उत्पादन का काम कर रही है उसका संगठन भी वास्तव में तो सहकारिता के आधार पर पूर्ण नहीं है क्योंकि उसका संवाहन बुनकरों के कल्याण के लिए न होकर उनके पदाधिकारियों को बेवै मरने के लिए हो रहा है जो कि उरका विच-प्रबन्ध एवं संवाहन कर रहे हैं इसके पदाधिकारी भी कुछ सेठिया ही हैं जो सरकारी श्रोतों से कच्चे मात को प्राप्त करने व सहकारी श्रोतों से वेवने से होने वाले बतिरिका लाभ को प्राप्त के हेतु इसका संवाहन करते हैं। आश्चर्य का विषय है कि वर्तमान में जबकि इस समिति का वार्षिक उत्पादन लगभग 2000 रुपये का है इसने इस हेतु कोई कृपा प्राप्त नहीं किया है और न ही इसके सम्बंध में सहकारी विभाग में कोई आंकड़े उपलब्ध हैं। वैसे तो इसका नाम जगह जगह पर दिया गया है लेकिन जब इसके सम्बंध में आंकड़े प्राप्त करने श्रुत हेतु सम्बंधित रजिस्टर जो सहकारी विभाग में देता गया तो सब समितियों के बारे में आंकड़े क्लिप्त पिये हुए थे परन्तु इस समिति के बारे में यह लिखा था कि आंकड़े उपलब्ध नहीं है। केवल इस वर्ष के सम्बंध में ही नहीं बरन पिछले वर्षों के लिए भी ऐसा ही लिखा हुआ था। समिति के अध्यक्ष व मंत्री ने भी ^{कई बार} पिछले पर भी टाठ-मटौठ के कबाबा व्य, विद्या

विषयान, विद्युत्प्रबंध, छात्र आदि के सम्बंध में कोई सही आंकड़े उपलब्ध नहीं हो सके हैं। जब तक प्राथमिक स्तर पर संगठन सुदृढ़ नहीं हो जाता शीर्ष स्तर पर सरकार द्वारा किया जाने वाला संगठन नाम मात्रा का व सरकारी धन का अव्यय मात्र ही रह स जाता है।

प्राथमिक स्तर पर सुदृढ़ एवं विवेकपूर्ण संगठन के अभाव का मुख्य कारण अज्ञान व अशिक्षा है जिसके कारण पहले तो बुनकरों को सरकार द्वारा प्रदत्त की जाने वाली सुविधाओं का पूर्ण एवं वास्तविक ज्ञान होनी नहीं पाता है और यदि सहकारी विभाग के कर्मचारियों के द्वारा कुछ ज्ञान होता भी है तो फिर वास्तविक संवाहन व सुविधार्थ उपलब्ध कराने का सम्पूर्ण भार उनके ऊपर ही आ पड़ता है। इसमें सबसे बड़ी कठिनाई यह होती है कि एक ओर तो उन अशिक्षित बुनकरों के कल्याण के गीत गाये जाते हैं पर उसके लिए सारा पन्-व्यवहार होता है हमारे दासत्व की अमिट छाप कौड़ी में निसेकके-बुनकर बाब के पड़े लिये व्यक्ति भी ठीक प्रकार से नहीं समझ पाते तो फिर उन बेवारे बुनकरों के लिए तो उसका समझना व उसके अनुसार आगे कार्य करना बड़ा क्लेश हो जाता है। इस प्रकार यदि बुनकर सकारिता की ओर कदम बढ़ाते भी हैं तो उन्हें प्रारम्भ से अन्त तक दूसरों के ऊपर ही निर्भर रहना पड़ता है। अन्ततः विद्यमान स्वरूप में सहकारिता वास्तविक न होकर केवल कागजी कार्यवाही मात्र रह गई है।

सुझाव :-

एक ओर भाषा है दूसरी ओर जायतों की मांग है और तीसरी ओर राष्ट्रीय आवश्यकता दृष्ट परन्तु समन्वय व संगठन के अभाव में तीनों के तीन रास्ते हैं। अतः आवश्यक है कि सरकार द्वारा प्रदत्त समस्त सुविधाओं का पितव्यता, ईमानदारी, कुशलता, एवं प्रभावी ढंग से उपयोग करने के लिए संगठन में आवश्यक परिवर्तन किये जायें।

सर्वप्रथम तो प्राथमिक सहकारी समितियों को जो सम्पूर्ण सहकारी आन्दोलन की पूंज हैं सुसंगठित किया जाना चाहिए। उन्हें बहुमुसी समितियों की तरह कार्य करना चाहिए और बुनकरों के सम्पूर्ण जीवन को वसने फौंड में ले

जाना चाहिए । इन्हें केवल सरकार से प्राप्त कृपा व अनुदानों के सदस्यों में वितरण का माध्यम न रहकर सदस्यों की शोषणीय स्थिति को समाप्त करके उनके कल्याण का माध्यम बनना चाहिए । इनका उद्देश्य होना चाहिए कुनकरों का सामाजिक एवं वार्थिक कल्याण । इसके लिए इन्हें साधन-समितियाँ, उत्पादन-समितियाँ, विपणन-समितियाँ एवं सामाजिक कल्याण समितियाँ के रूप में काम करना चाहिए ।

(२) मसूरिया कुनकर सहकारी समितियाँ का केन्द्रीय संघ :- सम्पूर्ण प्राथमिक सहकारी समितियाँ का गिनके सदस्य मसूरिया उत्पादन की एक केन्द्रीय संघ होना चाहिए । इसका प्रबन्ध कितनी उच्च शिक्षा प्राप्त व कुमवी व्यवस्थानक के द्वारा होना चाहिए । इस संघ को समग्र रूप से सदस्य समितियाँ के लिए कच्चे-माल, उपकरण, सज्जा बादि की व्यवस्था करनी चाहिए क्योंकि इसे इससे बाहर से कच्चा माल मंगाने या बान वायुक्त और केन्द्रीय रेशन परिषद के माध्यम से प्राप्त करने में प्रत्यक्षा एवं अप्रत्यक्षा रूप से प्रकर की मितव्ययतायें प्राप्त होंगी, और समय की बचत होगी; सरकार को विविध प्रकार से सहायता देने व प्रोत्साहन देने में सरलता रहेगी व उसका उपयोग भी अधिकतम लाभ प्राप्त करते हुए किया जा सकेगा; सज्जा एवं उपकरण बाहर से मंगाने में भी सुविधा रहेगी व कम मूल्य पर प्राप्त हो सकेंगे; प्रशिक्षण एवं विवेकीकरण करने में सुविधा रहेगी; प्रभापीकरण व श्रेणीकरण सम्भव हो सकेगा; उत्पादन प्रक्रिया व उत्पादन में सुवार व खोब के लिए मार्ग प्रशस्त होगा और स्थानीय, राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय बाजारों में उत्पादन का विज्य सुविधापूर्ण एवं मितव्ययी हो सकेगा । क्योंकि एक समिति के पास बनी साधन स सीमित होने से वह उन सब कार्यों को इतने सुविधापूर्ण ढंग से, कुशलता व मितव्ययता के साथ नहीं कर सकती । इस संघ के हिस्से सरकार द्वारा भी सरोदे जाने चाहिए जिससे कि इसके सामान्य कुनकरों के हित में कुशलता पूर्ण संवाञ्ज के उद्देश्य निरन्तर बनाया रहा जा सके और सरकार का ध्यान भी नियमित रूप से इस कला के विकास की ओर बाकृष्ट रहे ।

(३) छोटी सहकारी समितियाँ हों :- कोटा जिले में सहकारी विभाग द्वारा यह नीति अन्तर्गत गई है कि एक स्थान की सब समितियाँ को मिठाकर एक बड़ी समिति बना दी जावे । मांगरोड में जहाँ पर १६ कुनकर सहकारी समितियाँ को मिठाकर एक कर दिया गया है इस नीति का श्रीगणेश किया है और अब वे

कैथून में भी जो कि मसूरिया उत्पादन का केन्द्रस्थल है ऐसा ही काम उठाने का विचार कर रहे हैं। इसके पीछे वे यह दलील देते हैं कि इससे उनके नियंत्रण में सुविधा रहेगी व वह समिति प्रशिक्षित कर्मचारी रख सकेगी क्योंकि उसके पास साफ अधिक हार्गे और इस तरह से ज्यादा अच्छा काम कर सकेगी। मैं मानता हूँ कि इस दलील में कुछ दम है मगर परन्तु यह दलील केवल एक विद्यमान स्वरूप को ध्यान में रखकर दी जा रही है जो कि वर्तमान में प्रचलित है और जिसका दीर्घकाल तक बने रहना सहकारिता शब्द का दुरुपयोग मात्र ही होगा। इन अस्थायी लाभों का नतीजा शायद अस्थायी नुकसान होगा। सोचने का यह तरीका, यह दृष्टिकोण लोगों में आत्म-निर्मिता, आत्म-विश्वास और एक दूसरे के साथ सहयोग करने की भावना के विकास में बाधा डालता है। इस दृष्टिकोण से ऐसी आदत को बढ़ावा मिगेगा जो विल्कुल गलत है, पर जो देश में किसी कदर फैली हुई है। वह आदत है हर चीज के लिए सरकार का मुँह तानने की आदत। सहकारी समिति जितनी बड़ी होती है उतना ही लोग एक-दूसरे को कम जानते हैं। अन्ततः वह संस्था एक ऐसा संगठन ^{नहीं} रह जाती है जिसमें लोग एक दूसरे को मज़ीभांति जानते हैं और एक दूसरे से सहयोग कर सकें। ऊँचे स्तर पर यदि लोग एक-दूसरे से मज़ीभांति परिवर्तित न हों तो कोई अन्तर नहीं पड़ता, किन्तु गाँव-स्तर पर एक दूसरे को मलौभांति घानना और मिल-जुल कर काम करना कहीं ज्यादा आसान है + जो कि सहकारिता को वास्तविक ज्यों में लाने के लिए आवश्यक है। बड़ी सहकारी समिति से होने वाले सभी लाभ उनका एक संघ स्थापित करके, वैसा कि ऊपर बताया गया है, प्राप्त किये जा सकते हैं।

(४) बुनकर कल्याण समिति :- मुख्य मुख्य गाँवों में जहाँ पर बुनकरों की पर्याप्त संख्या है (कम से कम २५-३०) एक बुनकर कल्याण समिति स्थापित की जानी चाहिए। सरकार के विभिन्न विभागों द्वारा जो भावात्मक सहायता देने, सामान्य प्रशिक्षण देने, सहकारिता, यवत, चरित्र-निर्माण, कुशासन आदि के सम्बन्ध में किये जाने वाले कित्म-प्रदर्शन, समार्य, माषण व अन्य कार्य उसके माध्यम से किये जाने चाहिए। इस समिति को ^{दैनिक} जीवन की आवश्यकताओं की उपरान्त प्रशिक्षण, मनोरंजन एवं स्वास्थ्य सुविधायें उपलब्ध कराने का प्रयत्न करना चाहिए। इन सब कार्यों के लिए कुछ अनुदान सरकार को देना चाहिए, कुछ अनुदान संघ द्वारा

दिया जाना चाहिए और शेष व्यय सदस्यों द्वारा ही वहन किया जाना चाहिए।

(५) केन्द्रीय बैंकों का पुनर्गठन :- केन्द्रीय सहकारी बैंक को केवल कृषि देने का माध्यम न रहकर सदस्य समितियों के कार्यों में अधिक रुचि लेनी चाहिए। सदस्यों के भीति का व नैतिक स्तर को ऊंचा करने के लिए केन्द्रीय बैंकों को समितियों के कार्यों का पथ-प्रदर्शन, पर्यवेक्षण, सदस्यों को सहकारी शिक्षा देने में सहयोग तथा सामान्यतः सहकारिता की कार्य प्रणाली के सुधार में सहायता देनी चाहिए।

इस प्रकार मौक्तिका व नैतिकता का सच्चा रूप हमारे सामने जा सकेगा व अग्निद श्रुवेद आदि में वर्णित सहकारिता का सच्चा रूप प्राप्त किया जा सकेगा। यहही बुनकरों के आर्थिक व सामाजिक कल्याण का मार्ग व राष्ट्रीय आवश्यकता है।

श्रुवेद में लिखा है कि

ये न देना न वियन्ति, नौ च विदिषते मियः ।

तत्कृष्णो ब्रह्मो गृहे, संज्ञानं तुल्यैर्म्यः ॥

(अग्निद ३० ५।१६।४)

जिसप्रकार प्रेम से देवगण एक दूसरे से प्रयुक्त नहीं होते और न ही जानस में श्रेय ही करते हैं, वही प्रेम तुम लोगों में भी जो जिससे परस्पर सुमति व सदभावना का विस्तार हो। सभी

समानो यः जाद्वती, समाना द्रव्यानिवः

समान भस्तु यो मनो, यथावः सुसहासति ॥ (अग्निद २०।१६।४)

आप लोगों के अभिप्रायों में, विचारों में, व छद्मों में एकता होंगे जिससे कि तुम्हारे संघ, समुदाय व समिति की उन्नति हो सके।



अध्याय तृतीय

उत्पादन प्रक्रिया

१. परिचय:- मसूरिया वर्तमान में सूत, रेशम व बरौ का मिश्रण बनाया जाता है। इसमें अन्य नव प्रकार के हाथकर्म उत्पादनों से भिन्न उच्च कौटि का सूत, रेशम व बरौ काम में ली जाती है। भारत में शायद ही कोई ऐसा हाथकर्म उत्पादन हो जिसमें इस प्रकार से तीनों मस्बे-र-र-वस्तुओं का एक साथ उपयोग किया जाता हो। जिस प्रकार इसमें प्रयुक्त किया जाने वाला कच्चा माल सामान्य हाथकर्म उपयोगों में प्रयुक्त किये जाने वाले कच्चे माल से भिन्न प्रकार का है, इसकी बुनावट भी सबसे भिन्न प्रकार की है जिसका वर्णन पहले किया जा चुका है। चूंकि इसमें उच्च कौटि का कच्चा माल प्रयोग में जाता है इसको उत्पादन प्रक्रिया में सफाई का विशेष ध्यान रखा जाता है। यह कपड़ा केवल छोटे शटल पिट लूम पर बुना जाता है। फुलाई शटल पिट लूम या किसी भी प्रकार के फ्रेम लूम या स्वचालित लूम पर इसे नहीं बुना जा सकता। यह इसको प्राविधिक सम्बन्धी विशेषता है। इसमें जहाँ एक बोर क्रम से सूत रेशम व बरौ का प्रयोग कर उनके जुगार चौकड़ियों का देते हैं उसके साथ ही क्रमसे विभिन्न प्रकार का सूत काम में लेकर पट्टा, चौकड़ी, चौत्ताना आदि भी बनाये जाते हैं। इतना ही नहीं इसके साथ ही साथ सत बनाते हुये पट्टा, चौकड़ो या चौत्ताना डालने के साथ साथ उनके बीच बीच में फूल एवं पतियों भी बनाई जाती हैं। इस प्रकार यह एक उत्पन्न बारीक व कलापूर्ण काम है।

इसके आर्थिक महत्वों का सुव्यवस्थित अध्ययन करने के लिये यह आवश्यक है कि इसकी निर्माण प्रक्रिया का भी अध्ययन किया जाय। अतः आगे बढ़ने से पूर्व पहले इसकी निर्माण प्रक्रिया का विवेक किया गया है।

२. प्रारम्भिक क्रियाएँ :-

इसमें धागे को बुनाई के लिए कर्षण करने से पूर्व किसी भी प्राथमिक क्रियाएँ करनी पड़ती हैं। उन चक्रों का दो भागों में बाँट सकते हैं।

१. ताना के लिये धागा तैयार करना ।

२. ताना के लिये धागा तैयार करना ।

ताना में तात्पर्य लम्बाई में व बाना में तात्पर्य चौड़ाई से होता है । ताना व बाना (क्रमशः लम्बाई व चौड़ाई) में काम खाने वाली धागों को तैयार करने की विधि कुछ कुछ भिन्न है । अतः हम क्रमशः उन्हें देखेंगे । सूत, रेशम व बारी को कार्य पर ताने योग्य बनाने से पूर्व जिन पूर्व क्रियाओं से गुजरना पड़ता है वे भिन्न भिन्न हैं । अतः इन तीनों के सम्बन्ध में प्रारम्भिक प्रक्रिया का अध्ययन हम अलग अलग करेंगे ।

(क) सूत :-

देनाकि पहले बताया वा चुका है हमें ८० नं० से १८० व २०० नं० तक का सूत काम में आता है । जहाँ जहाँ वस्तु को किस ऊँची कोती पानी के सूत का नं० भी बताता जाता है । सूत का धागा तैयार करने की विधि को हम तीन भागों में बाँट सन्ने-सं- देते हैं :-

१. सूत पक्का करना

२. सूत रंगना

३. मांडो करना

(क) सूत पक्का करना :- सूत १० गॉड या ५ पाँड के बंडल जिनके क्रमशः पूड़ा व पूड़ो कहते हैं वंवा चुका जाता है । बण्डल में सूत के मोटे मोटे पीठे होते हैं । एक पीठे में ५ या १० उच्छियाँ होती हैं जिनमें छोरे और फोउको भी कहते हैं । छोरे को सिकुड़न मिटाने व गंवाको और कई निकालने के लिये उनके बीच में दानों हाथ डालकर उसे कई बार फटकाते हैं । फिर उसे दानों घुटनी में अटकाते हैं इनके बाद तीन छोरा एक साथ में व दो दूसरे हाथ में माडा की तरह उठे हैं जिसे उरियाना करते हैं । फिर उन्हें एक दूसरे के साथ हथ प्रहार गाँह देते हैं कि वे कूटकर साफ करते समय बिखरें नहीं । तदनंतर मिट्टी के तलछा में पानी डालकर उन्हें मियाँ देते हैं । पानी में सूत मियाँने को सूत पक्का करना कहते हैं । मियाँने के लिये पानी मिट्टी-स- मोठा व हल्का होना चाहिये । सारा व मारी पानी अवश नहीं होता । पानी में सकाई जाने के लिये उसमें थोड़ा कपड़ा पीने का सोड़ा भी डाल दिया जाता है ।

२४ घंटे पानी में रन्ने के ताप पौलों को पानी से निकाल लेते हैं और फिर इन्हें हाथ से फावदार-फावदार कर धीरे धीरे पानी डालते हुये मुकने लगाते हैं। बाद में साफ पानी लेकर उसमें धोकर मुक्ता देते हैं। इस प्रकार सूत में जो गंदगी निर्माणशाळा (मील) में रह जाती है वह साफ हो जाती है। जब सूत पक्का हो जाता है और रंगाई के लिये तैयार होता है।

रंगोन सूत :- मसूरिया उद्योग में अधिक मात्रा में रंग-सफेद सूत ही काम जाता है केवल गाड़ियों में रंगोन सूत का प्रयोग किया जाता है। इसलिये साधारणतया रंगोन सूत ही बाहर से मंगा लिया जाता है। कोटा, बेशुन व मांगरील में एक एक व्यक्ति ऐसे हैं जो यहां पर ही रंगाई का काम भी करते हैं। रंगोन सूत को भी सादे सूत के समान ही पक्का करने के लिये भिगा दिया जाता है। पर इसे २४ घंटे न भिगाकर केवल डेढ़-दो घंटे ही भिगाया जाता है। साथ ही इसे घूम में न सुत्ता कर क्षया में छोड़ा जाता है।

सूत को घूम नही सुत्ताया जाता बल्कि उसमें नमा रतो जाती है जिससे उत्तम धागा न टूटे व नशियां ठीक से परो जा सकें। इस क्रिया में अधिक दुस्त्र क्रम को आवश्यकता नहीं होती अतः पुरुष या स्त्रियां कोई भी इस कार्य को वासानी से कर लेते हैं।

(क) सूत रंगना :- जो व्यक्ति यमन पर सूत को रंगते हैं उसको प्रक्रिया इस प्रकार है :-

सूत को रंगने के लिये यहाँ पर ४ प्रकार का रंग काम जाता है।

१. कैरोडोन २. ब्रोमथाळ ३. इण्डियन थ्रोम ४. नैफथाळ। कैरोडोन व इण्डियन थ्रोम का ठाठ रंग होइकर शेष सब रंग पक्के होते हैं। ठाठ रंग ब्रोम थाळ व नैफथाळ का पक्का होता है। कैरोडोन व इण्डियनथ्रोम भारतीय उत्पादन हैं एवं ब्रोमथाळ व नैफथाळ जर्मन उत्पादन हैं। रंगने के लिये बेगा भीरंगना होता है जहाँ रंग डेकर उसकी एक लकड़ी में डेई बना लेते हैं। साथ ही एक बड़े बर्तन में निश्चित क्षुमात में पानी गरम करते हैं। पानी गरम हो जाने पर रंग को डेई उस पानी में डालकर लकड़ों से मित्रा देते हैं। इनके परभाव गितना सूत रंगना होता है वह उस पानी में डाल देते हैं। साथ ही हाइड्रो व कास्टिक सोडा का निश्चित प्रतिक्रम भी पानी में डाल दिया जाता है। उसे लकड़ों से उलटपुलट करते रहते हैं और जब सारे सूत पर बराबर रंग आ जाता है तो उसे निकालकर क्षया में सुत्ता देते

(स) मांडी करना :- मांडी करने के लिये विभिन्न स्थानों पर भिन्न भिन्न तरीके अपनाये जाते हैं। सामान्यतया निम्न दो तरीके अधिकतर बुनकरों द्वारा अपनाये जा रहे हैं।

प्रथम :- इसमें बुनकर एक बर्तन में पानी भरकर उसे बाग पर चड़ा देते हैं फिर उसमें कौलो कान्दा का रस व थोड़ी मेदा डाल देते हैं। कर्गों कर्गों पर जठ कान्दे का रस भी डाला जाता है। यह मांड काफ़ी पतली तैयार की जाती है। जब उसमें प्याँचि किलाई जा जाती है तो उसमें सूत के गोठे डाल देते हैं। फिर बर्तन में उसे अच्छी तरह गिराते हैं। जब सारे सूत पर बराबर व अच्छी तरह मांड लग जाती है तो उसे निकालकर जग में सूता देते हैं। इसे भी पूरा नहीं सुखाया जाता है बल्कि धाग व टूटे व नखे बराबर मरी जाते हैं।

द्वितीय :- इसमें सूत का ताना करने के पश्चात् उसे सज्जोकरण के हेतु विशाकर जग में तैयार की हुई लेई की एक बुजारी से फटक फटक कर सूत को गोठा करते हैं। इस प्रकार जब सारा सूत लेई के कारण गोठा हो जाता है तो फिर घुस से उसे गाफ करते हुये गुत्ता लेते हैं। इस विधि में मांड लगाने व सज्जोकरण दोनों कार्य एक साथ ही हो जाते हैं।

मांड चढ़ा देने के पश्चात् सूत को कुछ गोठा हो रखकर फटक फटक कर चरखी पर चढ़ा करके नारा, नखे या चौबिन्य भर देते हैं। एक नारा या नखे के लिये एक क्षीरे का सूत पर्याप्त होता है। सूत उठके नहीं इस दृष्टि से प्रतीक क्षीरे में रंगीन सूत रंगा रहता है जिसे बनिफा पोलते हैं। क्षीरे का एक किनारा लेकर नखे मरना आरम्भ करते हैं। सूत टूटने पर उसमें एक प्रकार का गट लगाते हैं जिसे मुर्दियाना कर्ते हैं। नखी में सूत बराबर से मरना आवश्यक होता है। नखे को उठावट में मरानी या सूत के ज्यादा सूत जाने या बरसा ^{मांसक के} कारण फूल जाने के कारण यदि नखी बराबर नहीं मरी जाती है तो उसे ठगढोला करते हैं। नखी मर जाने पर उसे पानी में धोया देते हैं।

जब सूत के दो भाग कर देते हैं। एक भाग को नखियां बुनारी के लिये पानी में धोकर रखनी जाती है और शेष नखियां का ताना किया जाता है।

(स) रेशम :-

यह भी लच्छियां के रूप में ही जाता है। इन लच्छियां को थोड़ा

जीला

गोला करके चरखी पर चढ़ा दिया जाता है। गोला करने से रेशम नली में बराबरता है। इसके बाद चरखी चड़ाकर नलियाँ मर ली जाती हैं। लगभग आधी नलियों को बाने में काम जाने वाली होती है पानी में डाल दी जाती है और शेष नलियाँ से रेशम का भी ताना किया जाता है।

(ग) बरी :-

बरी भी उच्छिर्षा के रूप में ही जाती है। लच्छिर्षा को सीधा चरखी पर चड़ा कर नलियाँ मर ली जाती हैं। इसके लिए इससे पूर्व किसी अन्य प्रक्रिया की आवश्यकता नहीं होती है।

सानान्यतया ताने के लिए तो रेशम, सूत व बरी जितनी आवश्यकता होती है उतनी एक ही साथ नलियाँ में मरकर तैयार कर ली जाती है। परन्तु बाने के लिए सूत, रेशम व बरी तीनों की नलियाँ आवश्यकतानुसार बुनाई के काल में ही अलग से स्थानों मरती रहती हैं। इससे एक ओर तो बुनाई के लिए कच्चा पाठ कर्ष पर जाने में कम समय लगता है दूसरी ओर ताना बरी हुई नलियाँ में नमी रहने से घागा भी नहीं टूटता।

३. ताना व सज्जीकरण :-

नलियाँ मर चुकने के बाद सूत, रेशम व बरी तीनों का अलग अलग ताना किया जाता है। सूत का ताना मांड लगाने से पूर्व भी किया जा सकता है और बाद में भी। मांड लगाने से पूर्व ताना करने पर मांड लगाने की दूसरी विधि अपनाई जाती है और बाद में ताना करने पर पहली। मांडी को साफ करने के लिए सूत को ~~हल्के से धोकर~~ ^{केलाकर सफाई की} जाता है जिसे सज्जीकरण कता कहते हैं। रेशम व बरी में मांड नहीं लगाई जाती अतः उसके सज्जीकरण की आवश्यकता भी नहीं होती है।

ताना करने के अनेक दंग होते हैं जैसे ग्राउण्ड मिश्र वारफिंग, वाठ वारफिंग, होरीवेन्डल मिश्र वारफिंग आदि। मसूरिया उत्पादन प्रक्रिया में ग्राउण्ड मिश्र वारफिंग पद्धति ही काम में ली जाती है। इस पद्धति में बमीन में ३ लोहे की मोटी सड़ाई गाड़ दी जाती है जिन्हें खन्ती या सरागे कहते हैं। दो सड़ाई एक वारफ व एक सड़ाई ^{गज} दूसरे १२११, १२, १२५५, या जितनी भी लम्बी पाण करने

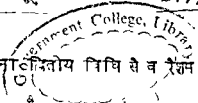
होती है उससे बांधी दूरी पर गाड़ देते हैं । सामान्यतः २४, २५, या ३० गज की पाण की जाती है । राह के सूरसोंके हिसाब से ताने में सूत के धागों की गिनती करके उसके हिसाब से ताना करते हैं और राह के सूरसों के हिसाब से ही खतों को मात्रा निर्धारित हो जाती है । खन्तियों के बीच बीच में लम्बी व मोटी कामड़ियां किन्हीं सांघो कहते हैं क्रॉस करते हुए लगा देते हैं ताकि धागा नीचे न सरके । खतों या सरागों की बमोन में गौड़े का तुंडा गाड़कर उससेबांध देते हैं । बागे ताना करने के लिये यंत्र पर दो विधियां काम में ली जाती हैं ।

प्रथम:- इस विधि में दो नखियों को दो लीले की सरागों में फिरोंकर सरागों को दो सक्कि सरकंडों में तौंस देते हैं । इस प्रकार सरकंडों में लगा हुआ नारा सूनधागा तुंडों के साथ साथ धूता जाता है । सरागों की नाँक पर एक धुंडो खीती है ताकि नखी बाहर न निकल जाय । ताना करते समय लीले की सरागों को पकड़कर एक खंडे से दूसरे खंडे तक दौड़ लगाने पड़ती है ।

द्वितीय :- इस विधि में एक छाल या ढढ़र में एक साथ बहुत सारी अधिकतम १०० तक नखियां लगा देते हैं । प्रत्येक नखी या नारी में से धागे का एक क्षोर निकालकर उसे हत्थे में से पास करके प्रथम खन्ती से बांध देते हैं । इस प्रकार जितनी नखियां ढढ़र में होती हैं उन सबका एक-एक क्षोर खतों से बंधा होता है वह सारे उार हत्थे में से झोंकर गुजरते हैं । अब एक व्यक्ति ढढ़र को लेकर चउता है व दूसरा हत्थे को हाथ में लेकर धूमता है व बन्नी गिनती के अनुसार सांघी में होकर धागे को बिधा देता है ।

जब ताना पूरा हो जाता है तब बन्नां बन्नां सांघी रहती है वहां वहां सरई पहना दी जाती है जिसे घर पहनाना कहते हैं । सांघो के दोनों ओर एक एक सर ठाठकर दोनों सरों के फिलारों को आमस में सूत से बांध देते हैं ताकि वे गिर नहीं ।

ताना उठाने के लिए दो आदमी चाहिए । दोनों आदमी दोनों तुंडों से ताना निकालकर दोनों ओर दो लम्बी, गोल और थिकनी उकड़ो लगाते हैं ताकि सूत मिल न जाय । इसे सिरारा कहते हैं । सिरारा उभेते समय सरई रखकर उभेते हैं। सरई लगाने से उभेते में क्ताव रहता है । इस प्रकार दोनों ओर से ताना उभेते पर लुंडो तैयार हो जाती है ।



साधारणतया सूत का ताना-कौटोय विधि से व रेशम व जरी का ताना प्रथम विधि से किया जाता है ।

सूत को साफ करने के लिये रुंडी को पुनः फैलाकर बूत से साफ करता होता है इसे सज्जोकरण या पाण करना कहते हैं । यदि पहले मांड न दी गई हो तो सज्जोकरण करने से पूर्व बुजारी के द्वारा मांड लगाई जाती है । इसके लिये सजारे की आवश्यकता होती है अतः बांस का कैंवा बनाकर उस पर बांस का टुकड़ा रखकर उसी पर ताना फैलाते हैं । बांसों को मांझा करते हैं । ताना के दोनों किनारों पर जो कैंवा होता है उसे कौवनो भी कहते हैं । यह रस्ती द्वारा सुंटे से बंधी रहती है । ताना फैलाने के बाद दो तीन बादमी तागे को छिटकाते हैं । यदि मांड न लगाई गई हो तो एक वर्तन में पतली मांड लेकर बुजारी के द्वारा उसे ताने पर छिड़कते हैं जिससे सारा सूत गोला हो जाता है । इसके बाद तुरन्त ही दो तीन व्यक्ति मिलकर बूश करना चारू कर देते हैं । यदि मांड पहले लगा दी गई हो तो तागा छिटकाने के पश्चात् धागे पर थोड़ा थोड़ा तैल व पानी छिड़ककर उसके बाद एक साथ दो तीन बादमी बूश करने लग जाते हैं । बूश लगाने का नाम साधारणतया पुड़ुष भी करते हैं क्योंकि इसमें काकरो ताकत की आवश्यकता होती है । इस कार्य के लिये सज्जोरिता भी बहुत आवश्यक होती है क्योंकि एक व्यक्ति बूश लगाने व मांड देने का काम एक साथ आमानो से व कुशलता पूर्वक नहीं कर सकता । अतः दो तीन बादमी मिलकर ही इस काम को करते हैं । बूश द्वारा साफ करने की क्रिया को यण पर सुंझों द्वारा गांभना कहा जाता है । यह क्रिया बल्दो बल्दो करने की होती है जिससे कि धागे की नपी बाने से पूर्व उसे साफ कर दिया जाय । अन्यथा धागा सूखने पर उसके टूटने का डर रहता है । इस प्रकार मांजने से मांडों का बनना होता है । इस सम्पूर्ण क्रिया को पाण कहा करते हैं । इस काम में एक बड़े आकार का बूश काम में आया जाता है । जो कि विशेष रूप से बनाया जाता है । छोटे मांडों में जहाँ पर मसूरिया उत्पादन कुछ नवव पूर्व की प्रारम्भ हुआ है वहाँ यह बूश उपयुक्त न होने के कारण उन्हें कौटा या कैमून से पाण करनाकर ले जाना पड़ता है । कौटा व कैमून में कुछ जुनकर देने से जो कैल पाण करने का काम भी किया करते हैं ।

पाण तैयार हो जाने पर सर की जगह पर बमिका (सूत) बांध देते

हैं ॥ इनसे उनकी सांथो बनी रहती हैं और लुंडो बनाने में भी सुविधा मिलती है । फिर पाई को लपेटते हैं । जिधर से पाई या पाण का मांजना बारम्ब करते हैं उधर से ही उसे उभेटना शुरू करते हैं । जब मारो पाई लपेटलो जाती है तो दूसरी ओर का सिरा निकालकर सूत को रूँठ देते हैं । इसे झुंठी करना कहते हैं । इस मुरी भाग को भी फिर लुंडो में घुँस देते हैं ।

जब ताना बिड़ाने के लिये सूत के धागे की लुंडी तैयार होती है । इसी प्रकार रेशम व जरी के धागों की लुंडी भी अलग अलग तैयार करली जाती है । लेकिन रेशम व जरी को मैं ताना करने के बाद सीधे लुंडो के रूप में लपेट लिया जाता है । एन्त में तानी में रसकर या झोंटा देकर नम रखा जाता है ।

४. बुआई :-

(क) बय मराना व मांज करना :-

जब सब सामग्री तैयार होती है । सबसे पहले ताना बिड़ाना होता है । जितने सूत का मसूरिया तैयार करना होता है उसके अनुसार लुंडी तैयार होती है व पणो व राइ काम में लगे जाती है । एक कंधे में एक गणी या गणी व दो राइ होती है। ४-५ पणो मरी भराई जाती है क्यति इसमें पहले वे साधा धागा लगाया हुआ होता है । गणी कन्धे हाथती में लगे हुई होती है और उसमें दोनों ओर धागे निकले रहते हैं । एक ओर के धागों को राइ में होते हुये तुर से बांध दिया जाता है । राइ डी होती है जिनमें हमसे एक धागा पहली राइ में ऊपर व उसके बाद का धागा दूसरी राइ में नीचे होकर निकाला जाता है । जिससे राइ को पगदम्वे के द्वारा ऊंचा नीचा करने पर एक मार्ग बन जाता है जिसमें से ढोटा फेंका जाता है । अब दूसरी ओर पणी में से निकले हुये धागों के साथ हमसे वेता काड़ा बुनना मिलता है उसके अनुसार हमसे सूत, रेशम व जरी की लुंडिया जालकर उनमें से एक एक धागा लेकर मुरीं लगाते हुये उसे पणी के धागे के साथ बाँड़ दिया जाता है । सूत बाँड़ते समय उन धागों को जिन पर रेशम व जरी बाँड़नी होती है बाँड़ो छोड़ दिया जाता है । और पूरो बाँड़ार में सूत जुड़ जाने पर फिर रेशम का धागा और बाद में जरी बाँड़ो जाती है । अम-अमने

सब धागे पन्न बाने पर तुर को धुमाकर नये बाँड़े गये धागे तुर तक बाहर निकाल छिने जाते हैं । इसके बाद पाई को कुछ मार फेलाकर बरिजा की

बाह सरई या कामड़ी पलना देते हैं। एक ओर से कामड़ी पलनाकर दूसरी ओर से डीरा बांधते हैं। इससे बुनाई के समय बी पाया टूटता है उसका पता चल जाता है। जितनी लम्बी भांज रखी जाती है उतनी दूरी पर एक लकड़ी लगाते हैं जिसे मंजनी या पॉसार कहते हैं। मंजनी रखकर भांज को उलटते हैं और इस प्रकार मंजनी बीच में पड़ जाती है। इसे जब चपती करते हैं। फिर इसके ऊपर एक चपटी लकड़ी रखते हैं। चपती में दो रस्सियां बंधी रहती हैं जिन्हें बाँध करते हैं। भांज को बांधने के लिए एक उम्मी रस्सी लाती है जिसके एक सिरे पर दो रस्सियां होती हैं जिनसे चपती को जोड़ा जाता है। रस्ती का दूसरा सिरा कंधे के सामने गड़े खुँटे, जिसे महतमा या फीला करते हैं, में मुड़ता हुआ बुझाहे के मान उसको ताई और गड़े एक दूसरे खुँटे से बांध दिया जाता है जिसे रमीठा करते हैं। इस प्रकार रस्ती से भांज तना रहता है और बुझाहा आवश्यकतानुसार इसी रस्ती द्वारा जो उसके बाईं ओर रमीठे तक बंधो जाती है भांज को कड़ा व ढीला करता है। शेष भांज को लुँडिया करके जग टांक देते हैं और आवश्यकता पड़ने पर फँसते हैं।

भांज के नीचे वय या फणी के पास कंधे के समानान्तर एक लकड़ी रखी है जिसे खरोट करते हैं, इससे नाईं खुश डी रहती है और बुनाई भी सुविधा के साथ होती है। बुनाई के समय अन्न-कमड़े की चौड़ाई बराबर रहे इसके लिये दो लकड़ियों के किनारे पर नौकोठा लौहा लगाकर उसे कपड़े के दोनों किनारों में पसा देते हैं। इन लकड़ियों का दूसरा किनारा इस प्रकार बंधा रहता है कि दोनों ओर तनाव रहे।

(ख) कपड़ा बुनना :-

जब बुझाहा कपड़ा बुनने पैठा है। वहाँ पर बुझाहा बैठता है वहाँ नीचे एक गड्ढा होता है। दोनों राई में से दो रस्सियां जाती हैं जो बीच में पावदान से बुड़ी जाती हैं और फिर दोनों पावदानों के दोनों किनारों से एक एक रस्ती जाती है यह रस्ती या तो लकड़ी की फी हुई पायड़ियों से बुड़ी जाती है जिस पर बुझाहे के पैर रहे होते हैं या इसके नीचे गाँठ लगाकर बुझाहा उसे अपनी पैर के बूँटों व तर्जनी के मध्य फँसा लेता है।

जब पायड़ियों या बूँटों ने बन्धी रस्ती को जंजम नोचा करने पर इससे एक राई ऊपर फिर दूसरी राई ऊपर व पहली नीचे होती रहती है। इससे

प्रत्येक बार छोटा ढाँड़े के लिये एक मार्ग बन जाता है। अब बुनकर सूत, रेशम व जरी बिना बिना का भी उपयोग करना होता है उनके लिये अलग अलग ढाँटे रखकर उनमें अलग अलग सूत, रेशम व जरी को तुड़ो या नगी बों पहरी से भरकर रखी हुई होती है इस देता है अब जिसके प्रकार का काड़ा बुना हो उसीके अनुसार अपने ढाँटे चगाये जाते हैं। छोटा बाँये हाथ से फेंकने पर उसे दूसरी तरफ दाँये हाथ में पकड़ा जाता है व बाँये हाथ से हाथों को बन्नी जोर ठीका जाता है। जिससे धागा अपने स्थान पर लाकर बम जाता है। यह ठीका हमेशा बराबर नहीं दिया जाता। वहाँ पर चार धाँ एक साथ डालकर सत बनाना होता है ठीका जोर से मारा जाता है व बगल पर दो धागे डालकर कैल सत बनाने होते हैं ठीका धीरे से मारा जाता है। रेशम के धागे के बाद ठीका नहीं लगाया जाता है। फिर दूसरा कार्य हाथ में छोटा फेंकर बाँये हाथ से पकड़ लिया जाता है और दाँये हाथ से हाथों को बन्नी जोर खींचने हुये ठीका जाता है। इस प्रकार बुनाई होती रहती है।

ज्यों ज्यों बुनाई होती जाती है ^{माँच} ~~समक~~ छोटी होती जाती है, और दूसरी जोर बुनकर बन्नी पास की छुंटे की रस्सी को डोका करता जाता है जिससे माँच भी ढीली होकर जागे खिचकी जाती है। बुनाई को हुये कपड़े को उसके जागे कपड़े के प्रथम भाग पर एक चौपल उकड़ी धिसे तुर करते हैं पर लपेटना जाता है। तुर को घुमाने के लिये उसके दाहिने और मूराब में होते हैं इस मूराब में एक लकड़ी डालकर जिसे गिरदानक करते हैं उसे घुमाते हैं जिससे बुना हुआ काड़ा तुर पर लिपट जाता है।

अब पहरी बार लौली गई लुंडी समाप्त हो जाती है यन्त्रि माँच का अन्तिम भाग कण्ठी से छोड़ा को दूर रख जाता है तो लुंडियाँ को खींचकर माँच को वापिस उतना ही लपटा फेंका दिया जाता है।

(ग) फूल पत्ती डालना :-

इसके लिये कपड़े के ऊपर एक प्रकार का उपकरण जिसे डीपो करते हैं व बने हुए लगाया जाता है। डीपो को प्रसार की होती है प्रथम लेटोड़ व नितोड़ टेपोड़। टेपोड़ डीपो में बंद करके डिवाइस बुनी होती है और प्रत्येक छेद में एक धागा निरूतना है। जिस प्रकार की डिवाइस ऊपर होती है और जितने नं० की

डोबी होती है उतने ही तारों पर थोड़ा बड़ा करके ऊपर बुंदो डिवाइज डाली जा सकती है ।

लेटोच डोबी में ऊपर कैबल ब्रेड होते हैं और उनसे घाने बंधे होते हैं जो नीचे ताने से राह के पास सम्बन्धित होते हैं । जितने लेटोच को वह डोबी होती है उतने ही तारों पर उलटमुकट कर कोई सो मो डिवाइज बनाई जा सकती है । यहां पर डिवाइज बनाना बुनकर को सुसज्जता पर हो पूर्णतः निर्भर होता है । इस प्रकार टेरीड डोबी से अधिक नै अधिक ३० तार पर व लेटोच डोबी से १०० तार पर डिवाइज बन सकती है । कितने अधिक तारों पर डिवाइज बनाने के लिये बैकड काम में ली जाती है ।

बैकड के द्वारा १०० से ५०० तारों तक पर एक साथ डिवाइज डाली जा सकती है । मसूरिया उत्पादन में कैबल १०० से २०० नम्बर तक को बैकड काम में ला सकते हैं । पर कैबल रेशन का मसूरिया बुनने पर ५०० नम्बर तक को बैकड मो काम ला सकती है ।

मसूरिया में वर्सा को मांग अधिक होने और यह काम मेहनती करने के कारण बहुत कम किया जाता है । वर्तमान में लामा के १० वर्सा पर कुल पत्ती डालने का काम हो रहा है । मसूरिया वर्सा बुनकर एक ही सत में १४ से १८ तार होते हैं जो डोबी काम में लेना बहुत कठिन होता है । कैबल बैकड काम में ली जाती है जिससे कि ५-६ वर्सा पर एक डिवाइज बन जाती है । उतने कम वर्सा पर डिवाइज बना करना अत्यधिक सस्ते- कठोरपूर्ण, तारीक व मेहनती काम है जिसे ग्रहण के लिये वैसे ही करना समझ नहीं करते ।

५. अन्तिम शिष्टार्थ :-

मसूरिया वर्सा में से कुछ को उपयोग में लाने से पूर्व दो और शिष्टार्थों में से एक गुजरना पड़ता है । प्रथम उनकी धुलाई होती है जिसका एक मात्र स्थान कोटा है । यहां पर लामा १० घण्टी इस प्रकार के हैं जो इसकी धुलाई कर सकते हैं + और करते हैं । ऐसा क्या जाता है कि मसूरिया को बेसी धुलाई कोटा में होती है अन्य स्थानों पर नहीं हो सकती है । इसके लिये प्रयत्न भी किया गया है और कोटा का एक घण्टी बीकानेर लैम्पाकर वर्सा पर उससे मसूरिया वर्सा धुलाने का

प्रयत्न किया गया था परन्तु वह असफल रहा है। यहां पर घुंटे हुए वस्त्र लुगे लुगे हो गये और उनमें रक्तो सकाई व चिकनाई न जा सकी जितनी कोटा में घोंने पर आती है। यह यहां के पानी व चउकान्दे या काँडे कान्दे जो मांड के उत्तर सम्बन्ध का प्रतिबोधन करता है।

इनके साथ ही ही हुये कठालक वस्त्र पलने की इच्छा रखने वाले उपभोक्ताओं के लिये बम्बर, वयपुरव दिलों में नम- मसूरिया धानों पर झपाई का काम किया जाता है। और इनके परभाव मसूरिया काड़े से विभिन्न प्रकार के वस्त्र व अन्य उपसम्बन्ध न-विभिन्न-उपकर-वै-वस्त्र-सादियां बनाई जाती हैं। ये दोनों श्रियायें दोनों आवश्यक नहीं हैं। बिना तुकाई व झपाई के भी रंगीन सादियां व सादे धानों का प्रयोग भी किया जाता है।

4. प्रशिक्षण :-

(क) आवश्यकता :-

ज्ञान के सामरिक प्रयोग के लिये प्रत्येक क्षेत्र में प्रशिक्षण पूर्व आवश्यकता है। कला के क्षेत्र में अज्ञान महत्त्व और भी अधिक बढ़ जाता है। भारत में परम्परा से कृषि उद्योग में लेकर मोनाकारी, नक्काशी, पन्जीकारी तक का प्रशिक्षण धरों पर ही पारिवारिक व राष्ट्रीय सम्बन्धों के आधार पर सामान्यतया मिलता रहा है।

मसूरिया उत्पादन एक अत्यधिक बारीक एवं पर्याप्त कठोरपूर्ण कार्य है। इसमें प्रारम्भिक श्रियायों के साथ साथ ही हर बार ढाँटा फेंकते हुये व ठीकी हुये सूत व रेशम के तारों को संस्था, तुकाई की मात्रा, सतों व स्तों का स्पष्ट व समान आकार का कना आदि पर पूर्ण ध्यान रखना आवश्यक होता है। इसके लिये अनुभव के साथ साथ पर्याप्त प्रशिक्षण भी आवश्यक है। इसके साथ ही स्पष्ट सूत व स्त बनाते हुये विभिन्न प्रकार की साँकड़ियां, साँसाने, पट्टे, फूल, पशियां, बैँ आदि हाजिरा तो एक ऐसा कार्य है जो बिना पूर्व प्रशिक्षण के ही ही नहीं सकता।

(ख) उपाय :-

परम्परा से चली आई पद्धति के अनुसार ही मसूरिया बुनने का प्रशिक्षण नये बुनकर बने पूर्वकों में यदि उनके यहां बुन रहा है और यदि नहीं तो फिर बने सम्बन्धियों, प्राति-बन्धुओं व मित्रों से उनके पास उनके घर पर वास्तु प्राप्त कर लें

हैं। सबसे प्रथम कोटा में यह बुनावट निकाली गई जिसे बून्दी बाजों ने कोटा लाकर सीखा। बाद में जबकि यातायात के साधनों का विकास नहीं हुआ था समय समय पर जातीय या पारिवारिक सम्बन्ध-कार्यों के कारण वे लोग केंद्र आते रहते थे। ऐसा रहा जाता है कि लगभग 60 वर्ष पूर्व प्लेग के समय बून्दी के बसुल्ला नामक बुनकर ने जिसका कि केंद्र ससुराल था प्लेग के समय केंद्र आने पर वहाँ जन्मे ससुराल वालों को मसूरिया बुनना सिखाया। इसी प्रकार कोटा व बून्दी के अन्य बुनकरों ने समय समय पर केंद्र जाकर कुछ को सिखाया कुछ में त्रिपि पैदा की किन्तुने स्वयं ही कोटा जाकर इसे सीखा और कुछ को तैम ही पानकारी दी। केंद्र में यह बुनावट सर्व प्रथम उसलिये गई व वहाँ पर विकसित हुई क्योंकि वहाँ के बुनकरों का कड़ा बुना आसका प्रसृत साधन था मजबूत नहीं। केवल यही नहीं केंद्र में बुनकरों की संख्या लोग जिठे में सर्वाधिक है। इसके अलावा उनके पास केवल 8 मील दूर कोटा का बाजार था जहाँ से जानानी से कच्चा माल प्राप्त किया जा सकता था व निर्मित माल बेचा जा सकता था। जिठे के अन्य बुनकर केंद्रों पर वहाँ के बुनकर स्थानीय मांग को पर्याप्तता, बाजार से दूरी व आवागमन की कठिनाइयों के कारण अपनी बुनाई सोझी की और ब्रसर नहीं हुए। केंद्र से उत्पादित सभी प्रकार के कड़ों का प्रसृत बाजार यहाँ में ही कोटा था वहाँ पर बाहुल्यता से कड़ों का ब्या सस्ता काड़ा जाने पर उसका मारा बाजार होम गया और अन्ततः वहाँ के बुनकर साधारण काड़ा बुना शौद्धकर मसूरिया बुनने लगे। जिसका बाजार बनने विशेषतार्थ के कारण निरंतर बढ़ रहा था।

गत दस वर्षों में जबकि विकासशील भारत में यातायात के साधनों के विकास के साथ साथ मिल्नों का बना सस्ता कड़ा श्रमोण बाजारों में पहुँचा तो वहाँ के बुनकरों को उसकी प्रतियोगिता के कारण न्यूनतम मूल्यों पर बना कड़ा बेचना पड़ा। गत 2-3 वर्षों में एक ओर तो मसूरिया कड़ों की मांग बढ़ी दूसरी ओर विपणन सम्बन्धी कठिनाइयों के कारण परम्परागत मोटे कड़े का उत्पादन सम्भव हो गया तो विभिन्न गांवों के बुनकरों ने केंद्र में अपने सम्बन्धियों व मित्रों के पास जाकर मसूरिया बुनने का प्रशिक्षण लिया और वहाँ से सीखकर जाकर अपने गांवों में दूसरों को सिखाया। बढ़ती मांग के कारण व्यापारियों व भेड़ियों ने भी अधिक से अधिक बुनकरों को प्रशिक्षित करने की ओर रुचि की और उनके लिए

साधन व सुविधायें उपलब्ध की। सेठियों ने नये बुनकारों को प्रारम्भिक शिक्षा देकर व कोटा से तैयार की गई पाण लेंजाकर बुनने को दी और उन्हें जमा कमड़ा बुनने के लिए बांध लिया। इसके लिए सेठियों द्वारा उपकरण व सज्जा भी बुनकारों को जमा की और से दी गई। इस प्रकार सेठियों ने बुनकारों को विपणन व वित्त-प्रबन्ध संबंधि कठिनाइयों से मुक्त करके उन्हें मसूरिया बुनना अधिक से अधिक सीखने को प्रोत्साहित किया। वर्तमान में भी इसी प्रकार से प्रशिक्षण प्राप्त किया जा रहा है। सामान्यतः बुनकारों में पैदा हुए व्यक्ति को इसे सीखने में ३ से ५ माह लगते हैं।

(ग) कठिनाइयां :-

वर्तमान में जबकि एक ओर तो संयुक्त कुम्हणालो व जातीय प्रेम डीला होता जा रहा है और दूसरी ओर मांग को निरन्तर बढ़ावे रखने के लिए बदलती हुई फैशन के अनुसार विभिन्न प्रकार की डिजाइनों के वस्त्र बुनने की आवश्यकता है प्रशिक्षण की वर्तमान पद्धति पर्याप्त नहीं है। ऐसे व्यक्तियों की आवश्यकता है जिन्हें मिलों व विभिन्न स्थानों पर चल रही आधुनिक ढंग की बुनावटों का व डिजाइनों का ज्ञान हो जिससे वे उसे ध्यान में रखकर प जमा मस्तिष्क का उपयोग करके साधारण दुतावट के वैज्ञानिक ढंग से प्रशिक्षण के साथ साथ बदलती हुई फैशन के अनुसार बदलती हुई डिजाइनों के वस्त्रों के निर्माण का प्रशिक्षण दे सके व उपयुक्त आधुनिक उपकरणों व विधियों का उपयोग जमा सके। वर्तमान में बदलती हुई फैशन के व मांग के अनुसार उत्पादन करने के लिए व्यापारी ही मार्ग दर्शन करते हैं। चूंकि व्यापारी इसके व्यावहारिक प्रशिक्षण से अभिन्न होते हैं, और न ही उनका ज्ञान तकनीक के क्षेत्र में इतना विस्तृत हो होता है, उनके द्वारा मार्गदर्शन अन्याप्त व कठिनाइयों से परिपूर्ण होता है। बुनकर भी अब बढ़ती हुई स्वार्थपरता को भावना के कारण स्वात्मक कार्य का प्रशिक्षण औरों को देना पसन्द नहीं करते। इससे भी दला को जीवित रखने व विकास करने के लिए आधुनिक ढंग से प्रशिक्षण व निरन्तर मार्ग दर्शन की आवश्यकता है जो वर्तमान में बिल्कुल भी उपलब्ध नहीं है।

(घ) सरकारी प्रयत्न :-

कोटा जिला में हाथ कर्मा उद्योग में आधुनिक ढंग से प्रशिक्षण के

क्षेत्र में सर्वप्रथम प्रयास द्वितीय योजना काल में सन् १९५८ व १९५९ में किया गया। वह कि वारां, इटावा, मांगरोल, शाहवाद एवं कैथून में कुटीर उद्योग विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत हाथ कर्मा प्रशिक्षण केंद्र खोले गये। कैथून कैथून के प्रशिक्षण केंद्र पर एक कर्मा मसूरिया का मी १९६२-६३ में चलाया गया जिसपर २-३ व्यक्ति प्रशिक्षण ले रहे थे। परन्तु १ अक्टू १९६३ से ये सभी प्रशिक्षण केंद्र समाप्त कर दिये गये हैं। वर्तमान में कोटा में आदर्श हाथ कर्मा प्रशिक्षण केंद्र स्थापित है परन्तु वहां पर मसूरिया उत्पादन के प्रशिक्षण की कोई व्यवस्था नहीं है।

(६.) सुझाव :-

प्रशिक्षण की सफलता प्रशिक्षकों की योग्यता, मानना एवं विचारों में प्रशिक्षण प्राप्त करने को इच्छा व सुविधा पर निर्भर होता है। प्रशिक्षकों का चुनाव वर्तमान चुनकरों में से जो माध्यमिक शिक्षा प्राप्त हैं उनमें से किया जाना चाहिए। सर्व प्रथम तो कोटा या कैथून में एक मसूरिया हाथकर्मा वस्त्र बुनाई प्रशिक्षण केंद्र स्थापित किया जाना चाहिए जिसमें प्रशिक्षण प्राप्त करने वालों के लिए अच्छे जरीके को व्यवस्था होने चाहिए। प्रशिक्षकों की रखरखाव करने के लिए शिक्षित, कुम्हरी व बुद्धिमान चुनकरों को चुनकर वाकर प्रशिक्षण के लिए भेजा जाना चाहिए जहां वे इस प्रौद्योगिकी को ध्यान में रखकर उसके अनुसार ज्ञान का सर्जन करें। यह प्रशिक्षण केंद्र सरकार द्वारा संचालित होने को धीका सहकारी संघ द्वारा संचालित होने चाहिए परन्तु उसके लिए सरकार को पर्याप्त कुम्हदान उस संघ को देना चाहिए। विद्यार्थियों को पर्याप्त वृत्ति दी जानी चाहिए जिससे वे घर पर बुनने से प्राप्त होने वाली अम्बिकने आजीविका को छोड़कर प्रशिक्षण के लिए जा सकें। इस दिशा में चुनकरों, व्यापारियों और सरकार सब को आपस में मिलकर सहयोग करना चाहिए क्योंकि यह सब ही के हित में है।

प्रशिक्षण के लिए आदर्श तरीका यह होगा कि लक्ष्याय द्वितीय में बताये गये अनुसार आदर्श चुनकर बस्ती स्थापित की जावे और उसमें ही एक प्रशिक्षक नियुक्त कर दिया जावे जो प्रत्येक स्तर पर प्रशिक्षण दे। सरकार द्वारा स्थापित केंद्र साधारणतया अधिक सफलता प्राप्त नहीं कर पाते हैं क्योंकि उनमें ४०-५० रुपये मासिक वृत्ति दी जाती है जो उस लक्ष्य से कम होती है जिसे वे बिना प्रशिक्षण प्राप्त किये ही घर पर काम करके प्राप्त कर सकते हैं। ज्ञान एवं

संकीर्ण मनावृत्ति के कारण वे मायो लाभ को ध्यान में न रखकर तात्कालिक लाभ पर अधिक ध्यान देते हैं।

७. उत्पादन प्रक्रिया में जाने वाली कठिनाइयाँ :-

कठिनाइयाँ किो मो कार्य की उत्कृष्टता का पोषक हो सकती हैं। कच्चा, विशिष्ट एवं ऊँचा कार्य करने में सँदा जोक बाधायें जाती हैं। मसूरिया उत्पादन कलापूर्ण, एवं अस्वामान्य हस्तशिल्प होने के कारण इसके उत्पादनकार्य में मो जोक कठिनाइयाँ जाती हैं। उनमें से कुछ प्राकृतिक हैं और कुछ मानवीय।

क. मानवीय कठिनाइयाँ :- सर्व प्रथम कठिनाई कार्य करने के अनुचित एवं अनुकूल स्थान का अभाव म्ने है। बुनकारों के वसने रहने के मकान साधारणतया कच्चे व लंबेरे हैं। बुनाई का काम रहने के मकानों के एक भाग में ही किया जाता है। इससे लंबेरा रहने से धागे को जोड़ने व बुनाई में श्रम व समय बर्बाद होता है। इसके साथ ही कच्चे व थिना जाली की झोटी-झोटी सिड़कियाँ वाले लाने से मिट्टी उड़ने, कंकर-पत्थर गिरने, बूहे फाट देने आदि के कारण काफ़ी कठिनाई होती है। कमी कमी तो माँज दूध जाती है जिससे वह बग़ड़ा आंशिक या पूर्ण रूप से ही सराव हो जाता है। बीच बीच में धागा टूट जाना तो सामान्य बात होती है जिसके कारण व्यर्थ हो उठे जोड़ने में काफ़ी समय बर्बाद हो जाता है। बर्बाकाल में तो लंबेरे के कारण इन मकानों में कार्य करना पूर्णतः असम्भव होता है। मकानों में साधारणतया एक सिड़की होती है जो कि उस स्थान पर होती है वहाँ बैठकर बुनकर बग़ड़ा बुनता है। इस सिड़की में से जो साधारणतया बाहर के रास्ते से लगभग ५-६ फीट ऊँच होती है कंकर, पत्थर, पत्ती या कोड़े आकर कमी मो ताने को सराव कर सकते हैं।

मकान के बग़ावा ताना करने एवं सज्जोकरण के लिये लगभग बग़ड़ा एवं समतल मैदान चाहिये जिसका कि भूमि को उपयोगिता बढ़ने के साथ साथ निरंतर ^{होना} अभाव ^{होना} बढा जा रहा है। कोटा में हम प्रकार के स्थान का अभाव अधिक स्पष्टता है जिससे गठियाँ व रास्ता में नो ताना करने को बाध्य होना पड़ता है या फिर शहर से बाहर काफ़ी दूर जाना पड़ता है।

ख. प्राकृतिक :- बर्बाकाल बाधाओं से परिपूर्ण होता है। कम्पि एक ओर नलियाँ में यव जिपटकर या फूलकर सराव हो जाता है दूसरी ओर ताना करने व सज्जोकरण

के लिए शायदास स्थान नहीं मिलता । यहाँ तक कि लगातार काढ़ी के दिनों में कई दिन तक बेकार बैठे रहना पड़ता है । ग्रीष्मकाल में भी इसी प्रकार समस्या आती है क्योंकि ताना करने व सज्जीकरण के लिए बाहर कड़कड़ाती धूप का ही एक मात्र वासरा लेना होता है ।

ठ-उ ८. अन्य संबंधित समस्याएँ :-

(क) प्रकाश :-

प्रकृति के निर्मूल्य उपहार के रूप में प्राप्त सूर्य-किरणों का प्रकाश दिन में तो बुनकारों को कार्य करने के लिए सुविधा प्रदान कर देता है परन्तु रात्रि में कार्य करने के लिए उन्हें भी कृत्रिम विश्व की शरण में जाना पड़ता है । सस्ती रोशनी होने पर रात्रि का समय छपर-उघर गप्पे लगाने में वयादि न करके उत्पादन कार्य में प्रयुक्त किया जा सकता है । रात्रि में काम दिन में मौसमी कठिनाइयों के कारण होने वाली समय की वयादी का स्थानापन्न भी कर सकता है । इसके साथ ही रोशनी उपउत्पन्न होने पर वर्षाकाल में भी उत्पादन कर सना सम्भव ही जाता है । इतना ही नहीं अंधेरे मकानों में काम करने से जालें खराब होती हैं उनकी भी रक्षा की जा सकती है । इसलिये आवश्यक है कि विद्युत की सस्ती रोशनी उपउत्पन्न की जावे । सौचनीय आर्थिक वास्था कोटा व कैम्पू में जहाँ विद्युत उपउत्पन्न है उसका उपयोग करने में बाधक सिद्ध होती है । शेष स्थानों पर अभी तक विद्युत सुविधायें उपउत्पन्न नहीं हो पाई हैं ।

(ख) कठानुर्ण व बारीक काम :-

सामान्यतया बुनकारों का उद्देश्य कैठ बाय प्राप्त करना पाया जाता है । कठा के विकास के प्रति उनकी रुचि कम है । कैम्पू में हस्तकर्म प्रशिक्षण केंद्र के प्रशिक्षक द्वारा १९५९ में १० कर्षों पर डोबी व २० पर बाठा का काम चारु कावाया^{जमा}या जिन्से क्रमशः गाड़ी की फ्लार पर फूलपती व बूटियां और फूठदार चौकड़ी डाली जाती थी, परन्तु वर्तमान में केवल दो कर्षों पर डोबी का और २ कर्षों पर बाठे का काम ही रखा है । इसी प्रकार बुनकर अधिक तारों का कड़ा बहुत कम बुनते हैं । साड़ी ३०० से ३५० खत तक की बुनी जा सकती है जो अधिक मजबूत और बारीक ही सकती है परन्तु इस बाँर रुचि के अभाव में ६० प्रतिशत साड़ियां केवल

२०० और २२० खत को ही बुनी जाती है। सामान्यतः बिना विशेष प्रयत्न या दबाव के बुनकर बारीक व अधिक कटापूर्णा काम करना पसन्द नहीं करते हैं।

(ग) मितव्ययता :-

इसी प्रकार उत्पादन प्रक्रिया में कम विभाजन और सुधीं हुये तरोके काम में लाने से काफी मितव्ययता प्राप्त की जा सकती है। परन्तु ज्ञान के कारण ऐसा नहीं हो रहा है।

(घ) रंगाई एवं रूपांक :-

साड़ियों में रंगीन सूत काम जाता है व रूपांक का काम किया जाता है। परन्तु उपयुक्त रंगाई गृह के अभाव में रंगा हुआ सूत ही बाहर से मंगाना पड़ता है और इसी प्रकार रूपांक केन्द्र न होने से नये नये प्रकार के रूपांकित वर्स्ती का उत्पादन बहुत कम ही रहा है। केवल कुछ व्यक्ति ऐसे हैं जो धरों पर ही साधारण ढंग से रंगाई का काम करते हैं। इसी प्रकार सहकारी विभाग के अन्तर्गत एक डिवाइजर है जिसका कार्यक्षेत्र सम्पूर्ण कोटा जिला है। विस्तृत कार्यक्षेत्र होने से वह कहीं पर भी स्थायी रूपसे ठहर कर बराबर मार्ग दर्शन करते हुये डिवाइनिंग का काम प्रशिक्षण नहीं दे पाता।

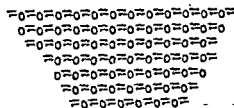
(ङ) ज्वाई :-

वर्तमान में हुये हुये मसूरिया वर्स्ती की मांग निरंतर बढ़ रही है। कोटा में उत्कृष्ट कोटि की ज्वाई का प्रबन्ध न होने से यहाँ से मसूरिया धान बाहर जाकर दिल्ली वम्बई व बयपुर में ज्वाई का काम होता है और फिर वहाँ से उपभोग के लिये विभिन्न स्थानों पर भेजे जाते हैं। इस प्रकार व्यर्थ हो मध्यवर्ती की लम्बी दूरी में एक बड़ी कटौती और बुझ जाती है। इसलिये कोटा में ही सहकारी विभाग के प्रयत्नों द्वारा सहकारी समिति के अन्तर्गत या सहकारी समितियों के संघ के अन्तर्गत उच्च कोटि की ज्वाई का प्रबन्ध भी किया जाना चाहिये। यदि कोटा में ही उच्च कोटि की ज्वाई का प्रबन्ध हो जाता है तो इससे प्राप्त मितव्ययता के कारण मसूरिया उत्पादन की मांग में और भी अभिवृद्धि होगी। गत दो वर्षों से हुये हुये वर्स्ती की मांग अधिक होने से पुनः मसूरिया धानों का उत्पादन बढ़ गया है।

६. निष्कर्ष :-

निष्कर्षतः पक्के, छायादार व प्रकाशदायक मकानों, बाहर ताना व सज्जीकरण के लिये छायादार मैदानों व प्रकाश की सुविधा के अभाव में मसूरिया उत्पादन में बुनकारों को बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ता है। इसी प्रकार ज्ञान, प्रशिक्षण, रंगाई व रूपांकन की सुविधा एवं ऋचि के अभाव में के कारण अधिक धारीक व दूजापूर्ण कार्य बहुत कम ही रना है। सरकार द्वारा भी हम दिना में कोई प्रयत्न नहीं किया गया है। जबकि बयनुर, लोधनुर, चिपांडगाड़, पांडेनर, टॉप, सवाईमाधोगुर आदि विभिन्न प्रस्तकता केंद्रों पर सम्बन्धित कार्यों के सम्बन्ध में रूपांकन, उत्पादन एवं प्रशिक्षण केंद्र हैं, कोटा क्षेत्र में यहाँ की एकमात्र दस्तकारी मसूरिया में सम्बन्धित किसी भी प्रकार का उत्पादन, प्रशिक्षण, रूपांकन केंद्र एवं रंगाई गृह नहीं है।

ज्ञा : कला के विकास के लिये आवश्यक है कि कार्य करने के समुचित एवं अनुकूल स्थान, प्रशिक्षण, रंगाई, रूपांकन एवं प्रकाश की सुविधा उपलब्ध की जाये इसके लिये आदर्श बुनकर बस्ती में सरकारी फायदा से रूपांकन व रंगाईगृह होना अधिक उत्तम होगा। इसके अलावा कोटा में एक रूपांकन व रंगाई गृह सरकारों के द्वारा भी, यदि इसका निर्माण हो जाये तो बढ़ाया जा सकता है। इसी प्रकार आदर्श बस्ती के चौर के मैदान में पैड़ लगाकर या शेड लगाकर ताना एवं सज्जीकरण के लिये आदर्श सुविधायें उपलब्ध की जा सकती हैं। आदर्श बस्ती का रंगाईगृह व रूपांकन केंद्र बस्ती के बाहर वालों के लिये भी कार्य कर सकता है। इससे पितृव्यता के साथ साथ कला का विकास भी अविसम्भावी है। परंतु आवश्यकता सरकार एवं बुनकारों में सहयोग की एवं सकारिता का मार्ग बनाने की है।



कोटा जिला में मसूरिया उत्पादन

व ध्या य : च तु धं

कच्चा माल, सहायक सामग्री, उपकरण एवं सज्जा

कर्मशास्त्र का चक्र उत्पादन से प्रारम्भ होकर उपभोग पर समाप्त हो जाता है। उत्पादन का कार्य दो प्रकार से लिया जाता है। प्रथम मूनी, श्रम, पूंजी प्रबन्ध व साहस इन उत्पादन साधनों के सम्पन्नित प्रयास से प्रकृतिक सुविधा का उपयोग कर किसी नई वस्तु को पैदा करना और दूसरे विद्यमान वस्तु को रूप परिवर्तन कर अधिक उपयोगी बना देना। द्वितीय प्रकार के उत्पादन में मूठ वस्तु कच्चा माल होती है जिसे उपकरण व साज सज्जा की सहायता से श्रम द्वारा रूप परिवर्तन कर इस योग्य बना दिया जाता है कि वह हमें अधिकतम संतुष्टि दे सके। मसूरिया उत्पादन भी इसी श्रेणी में आता है। इसमें सूत, रेशम, जरी व मसूरीजन कच्चा माल होता है जिसे कपड़े व अन्य उपकरणों की सहायता से मानव श्रम इस रूप में प्रस्तुत कर देता है कि उसकी उपयोगिता कई गुनी बढ़ जाती है।

१. आवश्यक प्रकार एवं मात्रा :-

मसूरिया एक उत्पत्तिक महान वस्त्र है जिसकी साड़ियों का वजन न्यूनतम ८ तौला होता है। साथ ही इसे केवल छठी शतक फिट लूम द्वारा ही बुना जा सकता है। अतः स्वाभाविक है कि इसमें विशिष्ट प्रकार का कच्चा माल, विशिष्ट प्रकार के उपकरण एवं साज सज्जा का प्रयोग हो।

(क) कच्चा माल :-

प्रारम्भ में मसूरिया केवल सूती धागों से बुना जाता था। इसके बाद पाड़ियाँ, साकाराँ, हुनट्टाँ आदि के पल्लों पर जरी का काम भी किया जाने लगा। इसके बाद धीरे धीरे थोड़ी थोड़ी मात्रा में उच्च कोटि का मसूरिया वस्त्र बुनने के लिए रेशम का प्रयोग भी होने लगा। युद्ध व युद्धोत्तर काल में उच्च कोटि के सूत के अभाव में रेशम के उपयोग को प्रोत्साहित किया जिससे सभी प्रकार के मसूरिया वस्त्रों में सूत के साथ साथ रेशम का प्रयोग भी किया जाने लगा। पहले सूत पीटा व ज़रूरी सूत काज लेकर बनाये जाते थे मरनु रेशम काम लेता प्रारम्भ करने पर सूत

रेशम व सूत काम लेकर बनाये जाने लगे । साड़ियों का प्रवजन बढ़ने पर जरी जो कि पहले फैब्रिल पल्लों पर काम आती थी चौकड़ियां, चौखाने व पट्टे सम्पूर्ण साड़ी को पुनाई में ढालने के लिये काम जाने लगी । जब साड़ियों के प्रवजन से मसूरिया वस्त्रों को मांग बढ़ी तो, फिलॉ में काम करनेवालेने बुनकर वापिस लोटकर आने लगे और मसूरिया साड़ियों में भी उन्होंने फूल पतों व वेरें ढालना चारू किया जिसके लिये पूना रेशम व मर्रा राज का प्रयोग किया जाने लगा । इस प्रकार वर्तमान में धान में फैब्रिल सूत व रेशम, साड़ियों, पैरों और साफरों में सूत रेशम व जरी तथा साड़ियों में सूत, रेशम, जरी, मर्रा राज व पूना रेशम कच्चे माल के रूप में प्रयुक्त किये जाते हैं ।

(ख) सूत :- इनमें ८० काउन्ट से २०० काउन्ट तक का सूत काम आता है । काउन्ट से बर्त होता है कि १० पॉड के एक पूडे में कितनी ठिन्धियां होती हैं व सूत उतने ही काउन्ट का कहा जाना है । २०० काउन्ट का सूत एक पॉड में १,६८,००० गज या ६० मोठ लम्बा होता है । इतना ऊंचा सूत वर्तमान में भी मुश्किल ही कोई सूती वस्त्र उत्पादन कारखाना प्रयुक्त करता ही, पर भारतीय वस्त्र उपयोग के लिये यह कोई विशेष बात नहीं है क्योंकि भारतीय १ पॉड में से २५० मील लम्बा धागा भी तैयार करते हैं जो कि वर्तमान हिसाब से लगभग ५०० काउन्ट का होता चाहिये ।

किस प्रकार का सूत प्रयुक्त किया जाय यह उत्पादन की किस पर निर्भर होता है। जितने अधिक बत का कड़ा तैयार किया जाता है उतने ही अधिक काउन्ट का सूत काम में लिया जाता है । साधारणतया पैरों में ८० व १०० काउन्ट का, साड़ियों में १०० व १२० काउन्ट का व धानों में १२०, १४० व १६० काउन्ट का सूत काम में लिया जाता है ।—मसूरिया वर्तमान में १८० व २०० काउन्ट का सूत बिल्कुल नहीं मिट रहा है और नहीं बुनकर इतने ऊंचे और भारी सूत से काम करना पसन्द करते हैं बतः ३२०-३३० बत से अधिक का कड़ा भी तैयार नहीं किया जा रहा है ।

सूत, देशी व विदेशी दोनों प्रकार का आता है । देशी सूत अधिक से अधिक १२० काउन्ट का आता है । पर इममें सगुआई कम होती है इसलिये विदेशी सूत को ही अधिक पसन्द किया जाता है ।

वर्तमान में बड़ ^{मसूरिया} रेशम के उत्पादन के लिये लगभग ५०,००० पॉड वापिक सूत को आवश्यकता है । इसके साथ ही विदेशी सूत भी किस ऊंची करने के लिये

समुचित मात्रा में उपलब्ध होना बति आवश्यक है ।

(ब) रेशम :-

सूत के पश्चात् दूसरा कच्चा मात रेशम होता है । मसूरिया उत्पादन में १३११५ व २०१२२ काउन्ट का रेशम काम जाता है । १३११५ काउन्ट का रेशम अधिक महीन, साफ व उच्च फिस्म का होता है । २०० से कम खत की बुनाई में साधारणतया २०१२२ काउन्ट का रेशम ही काम में लिया जाता है । २०० से २६० तक की बुनाई में ताणों में २०१२२ काउन्ट व बाणों में १३११५ काउन्ट का रेशम काम लिया जाता है । इससे अधिक खतों की बुनाई में पूर्णतः १३११५ काउन्ट का रेशम ही काम में लिया जाता है ।

साधारणतया साड़ियाँ में ताणों में २०१२२ काउन्ट का व बाणों में १३११५ काउन्ट का काम जाता है व धान में १३११५ काउन्ट का ही काम में लिया जाता है । पैरों में भी खतों के आकार के अनुसार दोनों प्रकार का रेशम काम जाता है ।

रेशम भी देशी व विदेशी दोनों प्रकार का काम जाता है पर विदेशी रेशम को जो जपानी होता है अधिक पसन्द किया जाता है क्योंकि यह अधिक साफ व चमकीला होता है ।

मसूरिया बुनकर उद्योग के लिये रेशम की मांग लगभग २०,००० पाँड वाणिजिक है ।

(स) बरौ :-

बरौ कपड़े को बुनाई व कढ़ाई में हस्तकला व दस्तकारी का कौशल दिखाने का एक सुन्दर माध्यम है । मसूरिया में ही नहीं वरन् जौक प्रकार की साड़ियाँ ख बन्ध वस्त्रों में भी इसका प्रयोग होता है । बरौ रेशम या सूत के तार पर स्वर्ण या रणत का धौल चढ़ाकर बनाई जाती है और इस प्रकार से दो प्रकार की स्वर्ण बरौ व रणत बरौ होती है । वस्त्रों में बरौ का प्रयोग सामान्यतः पल्लों पर, फिार पर व बोच में बोलाना, चौकड़ी या पट्टा ढाऊने में किया जाता है । वर्तमानमें कुछ बुनकर बरौ के फूल व पत्ती भी ढाऊते हैं । इसके अलावा टोसू साड़ी में बरौ का प्रयोग सूत व रेशम की तरह सामान्य बुनावट में ही किया जाता है ।

मसूरिया वस्त्रों में २३००, २४०० व २४०० गनो बरौ काम जाती है ।

२७०० व २४०० गवो बरी रेशम पर व १४०० गवो बरी सूत पर बनी होती है। मसूरिया उत्पादन में सही प्रकार की बरी काम ली जाती है पर रजत बरी केवल २७०० गवो ही काम जाती है। २७००, २४०० व १४०० गवो बरी में यह तात्पर्य होता है कि इसमें प्रति तोड़ा श्रम: २७००, २४००, व १४०० गव उम्मा बरो का तार निकलता है। २७०० व २४०० गवो महीन^व उच्च किसम की बारी १४०० गवो निम्न किसम की व मोटी जाती है। ये सब प्रकार की बरी भारतीय ही होती हैं।

रजत बरो का प्रयोग मसूरिया उत्पादन में १९६२ में स्वर्ण नियंत्रण के परवात् प्रारम्भ हुआ था। पर इसका युवा जनता अधिक आकर्षक न होने तथा इसके कुछ दिनों बाद काठे पड़ जाने के कारण अब इसका प्रयोग लगभग नहीं के बराबर हो रहा है।

मसूरिया उत्पादन में बरो को वाषिक मांग लगभग २००० पौंड है।

(६) मर्सीरेशम :-

मर्सीरेशम एक प्रकार का कृत्रिम सूती धागा होता है जिस पर रासायनिक द्रव्यों द्वारा रेशम के समान चिकनाहट व चमक पैदा करके दरो जाती है। मसूरिया उत्पादन में इसका प्रयोग केवल साड़ियों में रेशम के स्थान पर फूल, पत्ती, वैटें आदि निकालने व चौड़ी किलार बनाने के लिये किया जाता है। यह विभिन्न रंगों में १०० व १२० काउंट का जाता है जो कि मसूरिया उत्पादन में काम में लिया जाता है। थैरेशम से सस्ता व सूत से मंगा होता है। अब रेशम के स्थानापन्न के रूप में काम जाता है।

(६) मूना रेशम :-

यह हल्की किसम की रेशम होती है जो कि विभिन्न रंगों में जाती है। इसका प्रयोग भी मर्सीरेशम के समान ही फूल पत्ती डाग्रे, वैटें निकालने व साड़ियों को किलार बनाने में किया जाता है। इसका प्रयोग मसूरिया उत्पादन में केवल चार पांच वर्ष से ही रहा है। मूना रेशम पट्टा साड़ी में सामान्य दुनावट में ही इसका प्रयोग किया जाता है।

स. सहायक सामग्री :-

उत्पादन प्रक्रिया के विभिन्न स्तरों पर कच्चे माउ की ताक करने

उत्पादन प्रक्रिया को सुविधापूर्ण बनाने व अन्तिम उत्पादन को आकर्षक व चमकीला

बनाने के लिये कच्चे माल के साथ साथ विभिन्न प्रकार के सहायक सामग्रियों का भी प्रयोग किया जाता है। मसूरिया उत्पादन में रंग, कोली कान्दा एवं जल कान्दा, चावल व तैल का सहायक सामग्रियों के रूप में प्रयोग होता है।

(१) रंग- सूत रंगने के लिये मसूरिया उत्पादन में कैलोडोन, इण्डियन थ्रीम, नेफथाळ व ब्रौन थाल चार प्रकार के रंग काम जाते हैं। प्रथम दो प्रकार के रंगों के साथ रंग को जोड़कर शेष सब रंग पकते होते हैं। और नेफथाळ व ब्रौन थाल का केवल उज रंग पकता होता है। अतः उज रंगने के लिये ब्रौन थाल या नेफथाळ और शेष अन्य रंगों के लिये कैलोडोन या इण्डियन थ्रीम काम जाता है। रंगोंन सूत का प्रयोग केवल साड़ियों व डुपट्टों में किया जाता है। कैलोडोन व ब्रौनथाळ भारतीय व नेफथाळ व इण्डियन थ्रीम वर्मन उत्पादन हैं।

(२) जलकान्दा व कोलीकान्दा :- इनका प्रयोग लई बनाकर सूत पर मांडी चढ़ाने के लिये किया जाता है। जब यह नहीं मिलते तो चाकल कोमांड द्वारा उन्हें स्थानापन्न कर लिया जाता है। इनको मांड अधिक साफ, चिकनी व लुबधुरत होती है। यहां पर अधिकतर कोलीकान्दा ही काम में लिया जाता है।

(३) अन्य :- उपरोक्त सहायक सामग्रियों के अलावा बहुत थोड़ी मात्रा में कपड़े धोने को सोड़ा, हाइड्रो, कास्टिक सोडा, चावल को कणो व मोठा तैल काम जाता है। कपड़े धोने के सोड़े का प्रयोग सूत पक्का करने में हाइड्रो व कास्टिक सोड़े का सूत रंगने में, चावल को कणो का मांडी चढ़ाने में व तैल का प्रयोग पाण पर घुस करते समय विकनाहट बनाये रखने के लिये किया जाता है।

४. उपकरण एवं सज्जा :-

उपकरण एवं सज्जा मानव श्रम को कई गुना उत्पादक बना देते हैं और इसीलिये बहुत प्रमाणीय उत्पादन में ही नहीं बल्कि कुटीर उद्योगों में भी इनका बसा महत्व है। हाथ द्वारा बुनकर उद्योग में प्रमुख वस्तु धर्या होती है जो कि विभिन्न उपकरणों को जोड़कर बनाया जाता है। हाथ की मुख्यतः निम्न पांच प्रकार के होती हैं :-

पिटलूम :- (१) पिट - थो शल्ल लूम

(२) पिट - फ्लाई शल्ल लूम

फ्रेम लूम :- (३) फ्रेम - फुलाई शट लूम

(४) फ्रेम - फुलाई शट लूम विद हेन्ड वाउन्डिंग

(५) फ्रेम - फुलाई शट लूम विद ओटोमेटिक वाउन्डिंग

मसूरिया उत्पादन में कैचर पिट-प्रो शट लूम काम में आता है। हमें

वहाँ धुनकर बैठता है वहाँ एक गड्ढा (पिट) होता है और बुनाई ढोटा (शटल) हाथ से ऊपर उधर चलाकर की जाती है। मसूरिया उत्पादन में काम जाने वाले उपकरण एवं सज्जा को स दो भागों में बाँट सकते हैं :- प्रथम क्रम पर काम जाने वाले व दूसरे प्राथमिक क्रियाओं में काम जाने वाले।

(क) प्राथमिक क्रियाओं में काम जाने वाले :- सूत पकना करना, मांडी चढ़ाना, रंगाई, ताना करना, सज्जीकरण व नरी भरना प्राथमिक क्रियाएँ हैं। इनमें काम जाने वाले प्रसाधन निम्न हैं, जिनका क्रमिक उपयोग निर्माण प्रक्रिया में उल्लेखित किया गया है।

१. सूत पकना करना :- इसके लिए एक वर्तन की आवश्यकता होती है जो किनो धातु का अविकर पोतल का हो जाता है।

२. मांडी चढ़ाना :- इसके लिये मांडी बनाकर पहनने के लिये एक वर्तन आवश्यक होता है जो किनो मो धातु का हो सकता है।

३. रंगाई :- रंगाई के लिए भी पोतल का वर्तन लाना आवश्यक है। उसके अलावा एक मोटो लकड़ी व दो छोटी लकड़ियाँ भी आवश्यक होती हैं।

४. नरी भरना :- हमें नली, नरी, पुडी, या गट्टक एवं चरखी दो चीजें काम आती हैं। मसूरिया उत्पादन में कारखानों में या खेतों द्वारा बनाये हुये गट्टक काम में लेकर सरकी की नलियाँ बनाकर काम में ली जाती हैं। प्रति कक्षा लगभग १०० नलियाँ बनानी चाहिये। बाने के लिए तो सामान्य रूप से सरफोक्की नलियाँ ही काम में ली जाती हैं पर ताने के लिए कारखानों में क्वी नलियाँ (वाक्स) भी काम में ली जाती हैं।

५. ताना करना :- मसूरिया उत्पादन में सामान्य रूप से जमान पर ताना करने (ग्राउन्ड मिड वारफिंग) की विधि काम में ली जाती है। ताना करने के एक सेट में निम्न सामान उल्लेखित मात्रा में आवश्यक होते हैं :-

नाम	मात्रा	नाम	मात्रा
१. लोहे की बड़ी - सलाखें या सरिया	३	२. छूंटे (लोहे के)	२
३. कामड़ियां	२०	४. सरई	२
५. पोंगरा	१	६. हथुथा	१

६. सज्जी करण :- मांडी चढ़ाने के बाद जब पाण को फैलाकर बूझ से साफ किया जाता है तो निम्न उपकरणों की आवश्यकता होती है :-

१. बूझ या मेणयूं	१
२. सूत को रस्ती लगाना	१०० गज
३. कामड़ियां (१ फुट लम्बी)	२०

७. कर्बे पर काम बाने वाले उपकरण :- विभिन्न प्रकार के उपकरण एवं सज्जा मिलकर कर्बा कहा जाता है। एक कर्बे पर सामान्य रूप से निम्नसामान उल्लिखित मात्रा में काम में लिया जाता है।

नाम	मात्रा	नाम	मात्रा
१. राख या बय	२	२. हाथडी	१
३. फण्डी या कंबी	१	४. तुर	१
५. बेंसरा	४	६. पोसांर या तारगोट	२
७. लकड़ी के छूंटे (फनीला या महतना एवं रसोला)	२	८. हेरती	१
९. लकड़ो	१	१०. कामड़ियां	४
११. डंडाडी	१	१२. भेला	१
१३. टैकड़ियां	४	१४. डोटा (लटलस)	४
१५. तक भरती	१	१६. रस्ता	२० गज (लगभग)

मसूरिया कनड़ा बुनने के लिये ३६ इंच से ८० इंच तक लम्बे तुर काम जाते हैं। साधारणतया ३६ इंच व ४५ इंच पर बम्ब-न पैवे व फाड़ियां या हुनदटे बुने जाते हैं, ६० इंच व ६५ इंच पर शान वीर ७० इंच, ७२ इंच व ८१ इंच पर साड़ियां बुनी जाती हैं। विभिन्न प्रकार के कर्बों का प्रतिशत सामान्य रूप से निम्न प्रकार पाया गया है :-

विभिन्न प्रकार के कर्षों का प्रतिशत

<u>कर्षों का परिमाण (साइज)</u>	<u>प्रतिशत</u>
३६ इंच	१
४५ इंच	२
६० इंच	१०
६५ इंच	४
७० इंच	२
७२ इंच	८०
८२ इंच	१

कर्षों के परिमाण के जापार पर ही विभिन्न प्रकार की कंधो काम जाती है। ७० व ७२ इंच के कर्षों में ६० इंच को, ६० व ६५ इंच के कर्षों में ५२ इंच व ५६ इंच को व ३६ इंच व ४५ इंच के कर्षों में २५ व ३० इंच लम्बी कंधो काम जाती है। अधिकतर ७२ इंच लम्बा तुर व ६० इंच लम्बी कंधो काम में ली जाती है।

२. उपलब्धि :-

क. कच्चा माल :-

मसूरिया उत्पादन में कानो विशेषता है कि हमें प्रयुक्त किया जाने वाला सम्पूर्ण कच्चा माल विनिर्माण उद्योगों द्वारा पैदा किया जाता है। देशी सूत बम्बई व अहमदाबाद की कर्षों में, रेशम काश्मीर, मैसूर व काँजौर में व परो सूत में निर्मित की जाती है। विदेशी, सूत जो लम्बे रेशे वाली रई का बना होता है इठली, इंग्लैंड व अमेरिका से व रेशम जापान से जाती है। मसूरिया मारतीय व विदेशी दोनों होता है और उन्हीं स्थानों से जाता है वहाँ से सूत जाता है। सूत रेशम पूरा से जाती है।

कोटा जौन में मसूरिया उत्पादन में प्रयुक्त होने के लिये कच्चा माल सीधा उत्पादन गुर्ना से न आकर साधारणतया राष्ट्र के मुख्य व्यापारिक केन्द्रों बम्बई, कलकत्ता, अहमदाबाद, मद्रास, मुरत आदि में जाता है। आवश्यक मांग का अधिकतम माग लगभग ६५ प्रतिशत गैर सहकारी श्रोतों द्वारा पूरा किया जाता है। कोटा

के मसूरिया वर्कों के व्यापारी ही कच्चे माल उपरोक्त स्थानों से प्रतियोगी दरों पर अध्वयन कर मंगाते हैं। सूत व रेशम जोक मिर्जों का व जोक प्रकार का जाता है इसलिये इसको प्रतियोगी दरों पर तरीफने के लिये विशेष जुम्ल व ज्ञान की आवश्यकता होती है। व्यापारी कच्चे माल को विभिन्न शर्तों पर सोधा बुनकरों को या सेठियों को दे देते हैं। वर्तमान में इस प्रकार कच्चा माल देने को विभिन्न प्रचलित पद्धतियां निम्न हैं :-

१. सेठियों या बुनकरों को नकद मूल्य लेकर विक्रय।
२. बुनकरों को बुनाई के लिये मजदूरी के आधार पर देना।
३. सेठियों को बुनाई के लिये, मूल्य लगाकर इस शर्त पर देना कि निर्मित माल उन्हीं को बेचा जावेगा।
४. बुनकरों को मूल्य लगाकर इस शर्त पर विक्रय कि निर्मित माल उन्हीं को बेचा जावेगा।

एन पद्धतियों द्वारा विक्रय का अनुमानित प्रतिशत क्रमः २०, १०, ६० व १० है।

सेठिया लोग इस प्रकार से लिये गये कच्चे माल को दो प्रकार से बुनकरों को देते हैं। प्रथम मूल्य लगाकर विक्रय और द्वितीय केवल बुनाई के लिये मजदूरी के आधार पर सिद्ध देना। २० प्रतिशत माल नैतने-न- मूल्य लगाकर दिया जाता है और अवशेष मजदूरी के आधार पर बुनाई के लिये बुनकरों को दे दिया जाता है। बावजूद कुछ सेठिया व धवान हो गये हैं कच्चा माल सोधा मुख्य व्यापारिक-केंद्रों से भी मंगा लेते हैं।

सहकारी क्षेत्र में केवल एक प्राथमिक सहकारी समिति (बिसका पंजीयन क्र २२७ है) है जो कच्चा माल सहकारी व सरकारी श्रोतों से प्राप्त करती है। इस समिति को जो कि बसिठ भारतीय हाथ कर्मा वस्त्र विपणन सहकारी समिति एवं राजस्थान राज्य बुनकर सहकारी संघ लि० की सदस्य है केंद्रीय रेशम परिषद द्वारा गापानो रेशम का कौटा दिया हुआ है और वान वायुक्त बम्बई समय समय पर विदेशों से आयात किया हुआ सूत भी नियंत्रित मूल्यों पर देते हैं। रेशम का वार्षिक कौटा ७२० कि० ग्राम है जो कि मांग का ५० प्रतिशत भी नहीं है। इसी प्रकार सूत भी मांग के अनुसार किस एवं मात्रा दोनों में नहीं मिल पाता है। अतः समिति

को भी अपनी कच्चे माल सम्बन्धी शेष आवश्यकता की पूर्ति बाजार में व्यापारियों से क्रय करके पूरी करनी होती है। समिति नकद विप्रेय या मसूरियों के कारखाने पर बुनने के लिये कच्चा माल बुनकरों को दे देती है।

ख. सहायक सामग्री :-

सहायक सामग्री में लगभग सभी वस्तुएँ सामान्य बाजार में मिल जाती हैं केवल कोली कान्दा एवं गठ कान्दा जंगलों में पाया जाता है जिसे कुछ विशिष्ट व्यक्ति सौचकर लाते हैं और बुनकरों को बेच जाते हैं।

ग. उपकरण एवं सज्जा :-

इस श्रेणी में जाने वाले वस्तुओं को उपउद्योग के दृष्टिकोण से हम पांच भागों में बांट सकते हैं :-

१. स्थानीय स्त्राती द्वारा बनाये जाने वाले सामान,
२. बाहर से आयात किये जाने वाले
३. स्थानीय बाजार में उपलब्ध,
४. विशिष्ट प्रकार के कारीगरों द्वारा बनाये जाने वाले
५. बुनकरों द्वारा बनाये जाने वाले।

(१) स्थानीय स्त्राती द्वारा बनाये जाने वाले :-

चसई, लकड़ी के सूटे (पतोला व रसीला), पींजरा, हत्था, तुर, तुर का सूंटा, हाथड़ी, लड़सरी, बैतरा, पॉसार, ठैली, कपटी, डंडाली, फेज और बूटा के ऊपर का भाग स्त्राती द्वारा बनाये जाते हैं। गाँवों में वहाँ इनके बनाने वाले स्त्राती नहीं हैं कोटा या कैथून से बनवाकर उँ नाये जाते हैं।

(२) बाहर से आयात किये जाने वाले :-

पण्नी या कमी और ढाँटे (शदूख) बतारस व चन्देरी में प्रमशः विशिष्ट प्रकार की लकड़ी व पेंस के सींग से कुटीर उमोंग के रूप में हो बनाये जाते हैं कोटा के धौक व्यापारी इन्हें मंगाने हैं जो सैठियाँ और बुनकरों को नकद या उधार बेच देते हैं।

(३) स्थानीय बाजार में उपलब्ध :-

सूत पकना करने माँडी चढ़ाने व रंगने के बर्तन, जौहे को रजकें व सूटे, सरकियाँ, डिंभाघोड़ी, रस्सियाँ आदि सामान्य बाजार में उपलब्ध हो जाते हैं।

(४) विशिष्ट प्रकार के कारोगरों द्वारा बनाये जाने वाले :-

बुझ व राख विशिष्ट प्रकार के कारोगरों द्वारा बनाये जाते हैं। बुझ या पेणायुं मीगदया घास की बड़ व उस के बनते हैं, जो बीकानेर की तरफ पाई जाती है। यहां से इस कार्य के बान्नीवाले मजदूर घास लेकर जाते हैं और आवश्यकतानुसार दो सैर, ढाई सैर व तीन सैर के घास के बुझ बुनकरों के घर पर ही बना देते हैं। इनकी मजदूरी ₹ मुद्रा में एवं वस्तुओं के रूप में दोनों ही प्रकार से दी जाती है। जो कि परम्परा से बन्पी हुई है। राख विशेष प्रकार के रेशम के सफेद मोटे धागों को विशिष्ट ढंग से दो बराबर की लकड़ियों पर गुंथ कर, जिसे भरना कहते हैं बनाई जाती है। इसके भरने वाले कोटा व क्यून में हैं जो ५० नये पैसे प्रति सैकड़ा के हिसाब से मजदूरी के आधार पर डले भरते हैं। कंजी के आकार व नम्बर के अनुसार ही राख परी जाती है।

(५) बुनकरों द्वारा बनाये जाने वाले :-

कामड़ियां, नरई, फादम्बा और तरु भरती बुनकरों द्वारा ही आवश्यकतानुसार बनायी जाती हैं। कामड़ियां और सरई सरफियों की जनार्त् जाती है जो कि कोटा में मिलती हैं। फादम्बा लकड़ों के गुदटे या पत्थर को रस्ते में बांधकर बना लिया जाता है। तल्लरती जो कंबी में धागा पिरौने के काम जाती है विशेष प्रकार की बड़ को बहुत धारिक खींचकर सुई की तरह बनाई जाती है।

सहकारी क्षेत्र से उपकरण व सज्जा उपजब्ध करने के लिये कोई प्रावधान नहीं है सहकारी समिति के लिये काम करने वाले बुनकरों को भी यह सप सामान अन्य बुनकरों की तरह ही सरीदना पड़ता है।

नये कर््यों पर जो कि सेठियों के प्रोत्साहन से प्रारम्भ हुये हैं राख, हाथड़ी, कंधी, तुर, बुझ आदि मुख्य सामान सेठियों द्वारा दिये गये हैं। ऐसे कर््यों के मालिक सेठिया लोग हैं परंतु इन पर काम बुनकर वाने घरों में ही करते हैं।

३. सहकारिता व सरकारी योगदान :-

जीवौगीकरण, मशीनीकरण, विवेकीकरण, स्थानीय करण, विपुलीकरण एवं केन्द्रीयकरण के इस युग में देश को अर्थव्यवस्था एवं आदर्शों के अनुसार वान-वाकार विशाल प्रजापीय उद्योगों के समता मानवाकार कुटीर उद्योगों को अनापुण्य बनाये रखने के लिये सर-रूपी सरकार का मद हस्त उन पर होना युग को महान

आवश्यकता है। भारत के संविधान में राज्य के नीति निर्देशक तत्वों में सरकार को सहकारिता के माध्यम से लघु एवं कुटीर उद्योगों का विकास करने का निर्देशन किया गया है। एतदर्थ आज विभिन्न प्रकार की सुविधायें उपलब्ध कर सरकार इनका अस्तित्व उत्तुण्य बनाये रखने के लिये निरंतर प्रयत्नशील है।

वित्त प्रबन्ध एवं विपणन सम्बन्धी समस्याओं के साथ अनेक उद्योगों में वित्त में कच्चा माउ और उपकरण या तो बाहर से आते हैं या उनकी यहां न्यूनता है पर्याप्त मात्रा में आवश्यकतानुसार प्राप्त होना भी एक बड़ी समस्या है। मसूरिया उत्पादन के लिये सूत एवं रेशम विदेशों से आता है जिसका आयात होना विदेशी-विनिमय के संक्रांति काल में स्वाभाविक रूप से कठिनाई से भरा पूरा है। इसी प्रकार स्वर्ण नियंत्रण के काल में इसके उपयुक्त स्वर्ण बरी प्राप्त करना भी जो कि उचित मूल्य पर प्राप्त हो सके एक कठिन समस्या है। विदेशों से आयात किया हुआ सूत व रेशम सहकारी समितियों को उपलब्ध करने के लिये सरकार द्वारा प्रावधान किया गया है। अखिल भारतीय हाथ कर्मा वस्त्र विपणन सहकारी समिति के सदस्यों को अखिल भारतीय उत्पादन विदेशों में निर्यात किया जाता है। केन्द्रीय सिल्क बोर्ड नियंत्रित दर पर जापानी रेशम देता है। मसूरिया उत्पादन में केवल सहकारी समिति नं० २२७ है जो कि अखिल भारतीय हाथ कर्मा वस्त्र विपणन सहकारी समिति की सदस्य है और अखिल भारतीय उत्पादन विदेशों को निर्यात किया जाता है। इस समिति को ७२० कि०-ग्राम वार्षिक का जापानी रेशम का कौटा दिया गया है। इसी प्रकार नियंत्रित मूल्यों पर वान आयुक्त बम्बई द्वारा विदेशों से आयात किया गया सूत सहकारी समितियों को दिया जाता है। परंतु इस प्रकार से प्राप्त होने वाले सूत व रेशम की मात्रा कुछ उपयोग की मांग का लगभग ३ प्रतिशत व सहकारी समिति की मांग का लगभग ५० प्रतिशत है। बरी उपलब्धकरने के लिये इस प्रकार का कोई प्रावधान नहीं है। एतदर्थ मसूरिया में प्रयुक्त किये जाने वाले सभी प्रकार के कच्चे माउ में अधिकतर ऊँचे मूल्य देने पड़ते हैं। स्थानीय बाजार मूल्य व सहकारी समिति को प्राप्त होने वाली दर में लगभग २५ प्रतिशत का अंतर होता है।

समिति नं० २२७ के अलावा अन्य कोई सहकारी समिति उत्पादन के लिये कच्चे माउ का प्रबन्ध नहीं करती है और न ही कोई अखिल भारतीय हस्तकर्मा वस्त्र विपणन सहकारी समिति की सदस्य ही है। अखिल भारतीय हाथ कर्मा परिषद

चउ पूंजी के रूप में श्रुण बन्वा माउ अरु करने और उपकरण व सज्जा अरु करने के लिये देता है । परंतु वास्तव में उनका उपयोग इस हेतु नहीं होता । परिणामस्वरूप वर्तमान में भी लगभग ६५ प्रतिशत कर्मी पर कच्चे माउ, उपकरण व सज्जा को मुक्ति व्यापारियों द्वारा को जाती है । जिससे लगभग २० प्रतिशत अधिक मूल्य जाता है निष्कर्षतः इस क्षेत्र में कर्मां सरकारी योगदान व उसका उपयोग करने के लिये सरकारीता के माध्यम को बहुत बड़ी आवश्यकता है इनकी उपस्थिति केउ नाम मात्र को है ।

४. कठिनाइयां :-

उचित मूल्य पर व अनुचित मात्रा में उच्च कोटि का कच्चा माउ प्राप्त करना मसूरिया उत्पादन के विकास में सबसे बड़ी कठिनाई है । सरकारी समिति को मिल मूल्य पर सूत व रेशम मिलता है उस मूल्य व बाजार मूल्य में काफी अंतर होता है जो निम्न तालिका से स्पष्ट है :-

नाम वस्तु मय किसम	नियंत्रित मूल्य	बाजार मूल्य	प्रतिशत बाधिका
रेशम (विदेशी) १३।१५ काउन्ट:प्रति किगो	१५०)००	२००)००	३३ प्रति०
२०।२२ काउन्ट:प्रति किगो	१४०)००	१८०)००	२६ प्रति०
सूत (विदेशी) १०० काउन्ट : प्रति पाँड व श्रेणी	८)५०	६)५०	१२ प्रति०
१२० काउन्ट : प्रति पाँड व श्रेणी	६)२५	१२)००	३० प्रति०
पूना रेशम (देशी) १३।१५ काउन्ट:प्रति किगो	१५०)००	१७२)००	१५ प्रति०

इस प्रकार उच्च कोटि के कच्चे माउ विशेष रूप से विदेशों से आयातकिये जाने वाले सूत व रेशम के बाजार मूल्य व उचित मूल्य में काफी अंतर होता है । रेशम में तो लगभग एक तिहाई मूल्य अधिक लगता है। बरी तो उचित मूल्य पर प्राप्त होने का कोई प्रावधान ही नहीं है इसलिये सभी की बाजार से काफी ऊँचे मूल्यों पर लेने पड़ती है ।

स्पर्ण नियंत्रण (१९६२) के बाद एकदम बरी मिजना बंद हो गया था, उस समय तक स्पर्ण बरी ही मुख्यतः मसूरिया उत्पादन में काम में ली जाती थी ।

इसके पश्चात् स्वर्ण जरी के स्थान पर रजत जरी का प्रयोग किया जाने लगा । इसमें प्रयुक्त की जाने वाली स्वर्ण जरी कानाने के लिये न्यूनतम २० कैरिट शुद्धता का स्वर्ण आवश्यक होता है जो कि स्वर्ण नियंत्रण के पश्चात् मिलना बन्द हो ही गया था । रजत जरी का प्रयोग मसूरिया उत्पादनों में पिल्कुल असफल रहा । न तो उपभोगिताओं द्वारा इसे पसन्द ही किया गया और न ही दीर्घकाल तक इसके चमक बँसी की वेंती बनी रह सकी । फलतः बुनकरों द्वारा भारी मांग करने पर शूरत की जरी निर्माण फैक्ट्री की इन्ड्रीय सरकार द्वारा २० से २४ कैरिट के सोने का फोटा दिया गया जिससे पुनः परो प्राप्त होने लगी । परंतु जन इसका मूल्य बहुत बढ़ गया है स्वर्ण नियंत्रण से पूर्व २७०० गजी जरी का माप ३)६० पैसे प्रति तोला था जो अब ५)२० पैसे प्रति तोला हो गया है और इसी प्रकार १४०० गजी स्वर्ण जरी का माप ३) तोला था जो ४)३७ पैसे प्रति तोला हो गया है । इस प्रकार क्रमशः ४० प्रतिशत व ३५ प्रतिशत की वृद्धि जरी के मूल्यों में स्वर्ण नियंत्रण के कारण हो गई है । इतना होते हुये भी वर्तमान में जरी पर्याप्त मात्रा में नहीं मिलती है ।

भारतीय सूत अधिक है अधिक १४० काउन्ट का जाता है जिसमें भी अधिकतर १०० व १२० काउन्ट का ही उपलब्ध ही पाता है जबकि उच्च कोटि के मसूरिया धानों के उत्पादन के लिये १६० से २०० काउन्ट तक का सूत आवश्यक होता है । वर्तमान में १८० व २०० काउन्ट का सूत बाजार में मिश्रता पूर्णतः दुर्लभ हो गया है सकारो समिति को भी वान आयुक्त द्वारा ८०, १०० व १२० काउन्ट का सूत ही दिया जाता है । इससे अधिक काउन्ट का सूत नहीं दिया जाता है । यह सूत भी मांग के अनुसार पर्याप्त नहीं होता है । इस प्रकार सभी प्रकार का कच्चा माल सकारो समिति के सदस्यों एवं अन्य बुनकरों को वास्तविक एवं उचित मूल्यों से ऊंचे मूल्यों पर क्रय करना होता है जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव उत्पादन के मूल्यों पर पड़ता है और उसका प्रभाव उत्पादन की मांग एवं बाजार एवं अप्रत्यक्ष रूप से बुनकरों की मजदूरी पर भी पड़ता है । उद्योग के विकास के लिये कच्चे माल की पूर्ति का व्यवस्थित प्रबन्ध अति आवश्यक है ।

५. नैतिकतायें :-

मसूरिया जैसे तो एक पिऊसिता की वस्तु है परन्तु विदेशी विनिमय के कारण का एक ब्रह्मा साधन होने से और हस्तशिल्प का उत्कृष्ट नमूना होने से यदि

इसका विकास आवश्यक है और समानवादी समान की स्थापना का लक्ष्य सामने है तो इसके लिये कच्चे माल की पूर्ति का समुचित प्रबन्ध करना अति आवश्यक है। नियंत्रित मूल्य पर कच्चा माल उपलब्ध होने पर या तो बुनकारों को आय २० से ३० प्रतिशत तक बढ़ सकती है या फिर उत्पाद ही उत्पादन का मूल्य कम हो सकती है जो समग्र रूप से उत्पादन की मांग बढ़ाने में सहायक हो सकता है। उपलब्ध को कठिनाइयों के कारण ही वर्तमान में सारे उद्योग का नियंत्रण केवल ५ - ६ व्यापारियों के हाथ में केंद्रित है, बुनकर को केवल मजदूर मात्र रह गये हैं।

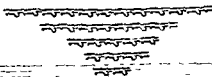
इसके लिए आवश्यक है कि प्रथम तो पर्याप्त मात्रा में उचित किसम का सूत उचित मूल्यों पर सामान्य बाजार में उपलब्ध किया जाय या फिर सहकारी समितियों को उच्च कौटि के सूत का कौटा सदस्यों की संख्यानुसार दे दिया जाय। इसी प्रकार केंद्रीय रेशम परिषद को भी रेशम का कौटा अधिक समितियों को देना चाहिये। सर्वोत्तम तरीका तो यह होगा कि एक ओर तो विदेशों से मारी मांग और दूसरी ओर कच्चे माल का विदेशों से आयात को देखते हुये क्लिन्क-मस्तेन-इस यहाँ एक निगम स्थापित किया जाना चाहिये जिसकी कि उपरोक्त कच्चे माल का व इसके साथ साथ नियंत्रित मूल्यों पर बरी उत्पादक फैक्ट्री से बरी सरोदने का कौटा भी दिया जाना चाहिये। यह निगम नियंत्रित मूल्यों पर या तो बुनकारों को कच्चा माल देवे या फिर सहकारी विध्य केंद्रों के लिये कच्चा माल देकर मजदूरी के आधार पर सहकारी समिति के माध्यम से बुनवाई का कार्य करे। इसके अलावा यदि यह सम्भव न हो सके तो अखिल भारतीय हाथ डर्या वस्त्र विपणन सहकारी समिति एवं राजस्थान राज्य बुनकर सहकारी संघ को ही कौटा दिया जाना चाहिये जो कि सहकारी क्षेत्र में मसूरिया के सबसे बड़े ग्राहक होवे वहाँ से कच्चा बुनकर वापिस भेजने की शर्त पर कच्चा माल वहाँ की समितियों को भेज दें। यदि यहाँ पर भी सहकारी समितियों का संघ संगठित हो जाता है, ऐसा कि पहले बताया गया है तो उन्हें असा कच्चा माल उसी को भेजना चाहिये जो कि सदस्य समितियों के सदस्यों से बुनवाकर वापिस उन्हें भेज दें। बुवाई को मजदूरी चुकाने के लिये रिजर्व बैंक को योजना के अन्तर्गत चालू पूंजी ऋण दिया जाना चाहिये। यदि निगम स्थापित किया जाय तो उसमें राज्य का भी स्वामित्व होना चाहिये = जिससे वित्त सम्बन्धों कठिनाइयों उसके सामने न आवे। इस प्रकार एक ओर तो सस्ती दर पर कच्चा माल

मिलेगा दूसरी ओर सहकारी समितियाँ कोटा से प्राप्त होने वाले कच्चे माल को बाजार में बेचकर अनुचित लाभ प्राप्त न कर सकेगीं और परिणामस्वरूप कुनकरों की आय में पर्याप्त वृद्धि होगी ।

बारी को पर्याप्त पूर्ति के लिये आवश्यक है कि बारी उत्पादन करने वाली एक फैक्ट्री और स्थापित की जावे। यह फैक्ट्री कोटा में स्थापित करना अधिक उपयुक्त हो सकता है क्योंकि यहाँ पर एक और तीसरी पर्याप्त बाजार है दूसरी ओर सस्ती जड़ वियुत सुविधा व औद्योगिक सम्पदा में निर्मित भवन उपलब्ध हैं । इससे बारी उचित मूल्यों पर व पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हो सकना सम्भव हो सकेगा ।

निष्कर्ष :-

हस्तकर्म उद्योग में विशिष्ट इस उद्योग में सज्जा व उपकरण बहुत कम मूल्य व सरलता से उपलब्ध होने के कारण उनके सम्बन्ध में कोई विशेष समस्या नहीं है परन्तु आवश्यक किस्म का कच्चा माल समुचित मात्रा में उपलब्ध होने की कितनी अधिक कठिनाई इस उत्पादन के सम्बन्ध में है शायद ही अन्य किसी कुटीर उद्योगीय उत्पादन के सम्बन्ध में हो । उद्योग के विकास व कुनकरों को शोषण से मुक्त करने के लिये सरकार को सहकारिता के माध्यम द्वारा उचित एवं आवश्यक किस्म का कच्चा माल पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध कराने के लिये शीघ्र ही सक्रिय कदम उठाने चाहिये । हाल ही में फरवरी ६४ के प्रथम सप्ताह में उद्योग मंत्री, राजस्थान सरकार द्वारा कैम्पन यात्रा के समय कुनकरों को कैम्पन में एक निगम स्थापित कर उसके माध्यम से कच्चा माल उपलब्ध कराने का आश्वासन दिया गया है आशा है उद्योग मंत्री का यह आश्वासन सरकारी लालकोताशाही के वाजबूद भी शीघ्र ही कार्यरूप में परिणित हो कुनकरों के एवं इस हस्तकला के उत्कृष्ट नमूने के उत्पादन में अज्ञा महत्वपूर्ण योगदान दे सकेगा ।



अध्याय पंचम

पूंजी, विनियोग एवं वित्त प्रबन्ध

१. वित्त प्रबन्ध का महत्व एवं स्वरूप :-

वित्त प्रबन्ध राष्ट्र के मौक्तिक एवं वैक्तिक, आन्तरिक एवं बाह्य साधनों का प्रवर्तक है। उद्योग का स्वरूप ही वित्त प्रबन्ध के प्रकार एवं मात्रा का स्वरूप निर्धारित करता है। और इसके साथ ही वित्त प्रबन्ध भी उद्योग के स्वरूप का विवरण करता है। इन प्रकार उद्योग और वित्त प्रबन्ध अन्तर्सम्बन्धित घटक हैं जिनका समन्वय ही अस्तित्व का मार्ग है।

वित्त प्रबन्ध का साष्ण उद्योग के स्वरूप पर निर्भर है। मसूरिया उत्पादन के लिये कच्चा माल सैकड़ों एवं हजारों मोर्तों दूनर-न दूर देश व विदेश से जाता है। उपकरण एवं सज्जा के कुछ भाग भी देश के दूरस्थ भागों से आते हैं ^{और} ~~उत्पन्न~~ ^{उत्पन्न} बाजार देश के समस्त बड़े बड़े नगर व अमेरिका, इंग्लैंड आदि उन्नत राष्ट्र हैं।

ऐसी स्थिति में प्रत्येक चरण पर बड़ी मात्रा पर मध्यमकाग्रेस वित्त प्रबन्ध आवश्यक है। वित्त प्रबन्ध को समुचित सुविधा के बिना न तो कच्चा माल उपकरण व सज्जा ही प्राप्त हो सकती है और न ही उत्पादन का दूरस्थ प्रदेशों में विपणन हो पा सकता है। इसके विनिरित सुविधा मात्रा परम्परागत थो सटल पिट लूय प्रयुक्त होने से सामग्री मूल्यों की आवश्यकता तुम्हात्पक रूप में अन्य हाथ कर्म उद्योगों से का हो है।

२. आवश्यक मात्रा :-

मसूरिया उत्पादन में कच्चे माल व अन्य आवश्यक सामग्रियों को पूर्ण, कर्ष व अन्य आवश्यक उपकरणों को उपउच्चि व मजदूरी चुकाने के लिये पूंजी की आवश्यकता पड़ती है। मजदूरी चुकाने और कच्चा माल व अन्य सामग्रियों तप करने के लिये चठ एवं कर्ष की स्थापना व अन्य उपकरण सरोदन के लिये स्थिर पूंजी की आवश्यकता होती है।

क. स्थिर पूंजी :- स्थिर पूंजी की आवश्यकता ८०) रुपये में १३०) के बीच तक प्रति

इकाई आवश्यक होती है। नीचे ऐसे तीन उत्पादन स्मूहों के सम्बन्ध में स्थिर पूंजी की मात्रा बताई गई है जिनमें क्रमशः साड़ी, धान और पैसे बुने जाते हैं।

स्थाई पूंजी विनियोग विवरण

नाम उपकरण	आवश्यक मात्रा	लागत (रुपयों में)			कुल-निर्गत (बौसत) वायु (रुपयों में)	
		साड़ी कानूनी वाले कर्ष के लिए	धान कानूनी वाले कर्ष के लिए	पैसे कानूनी वाले कर्ष के लिए		
१. तुर	१	१८)	१६)	१०)	१२)	२५ वर्ष
२. कंजी	१	१३)५०	१२)५०	७)	११)	६ माह
३. हाथगो	१	६)६७	५)५०	५)	५)५०	५ वर्ष
४. कनस्ट्री	१ काँड़ा	१)	१)	१)	१)	२ वर्ष
५. पाँसारा	१ काँड़ा	१)५०	१)२५	१)	१)२५	२ वर्ष
६. राख	१ काँड़ा	१६)	१५)	१०)	१४)	६ माह
७. बैसरा	४	४)	३)७५	३)	३)५०	२ वर्ष
८. लकड़ी के सूँटे	२	२)	२)	२)	२)	१० वर्ष
९. रस्ता	२० गज	६)	६)	६)	६)	५ वर्ष
१०. फेला	१	२२)	२)	२)	२)	१ वर्ष
११. लड़सरी	१	४)	४)	४)	४)	२ वर्ष
१२. ढोटा	४	१२)	१२)	१२)	१२)	५ वर्ष
१३. चरखी	१	७)	७)	७)	७)	५ वर्ष
१४. बूज या मँगयु	१	२५)	२५)	२५)	२५)	१० वर्ष
१५. पाँचरा	१	२)५०	२)५०	२)५०	२)५०	५ वर्ष
१६. लूया	१	४)५०	४)५०	४)५०	४)५०	५ वर्ष
१७. लोहे की सलास	५	५)	५)	५)	५)	२० वर्ष
१८. कामड़ियां	१००	५)	५)	५)	५)	१ वर्ष
१९. रस्सियां आदि		१०)	१०)	१०)	१०)	५ वर्ष
२०. अन्य विविध सामान		५)	५)	५)	५)	
		१५०)	१४५)	१२३)	१३८)	

वनस्पत उपरोक्त उपकरणों के अलावा जिस कर्ब पर फूल पती डालने का काम भी होता है श्वेकड़ या जाला लगाना पड़ता है जिसकी औसत लागत ५०) होती है ।

ये सारे उपकरण साधारणतया बुनकर बाजार से नहीं लेते हैं बल्कि कुछ खुद ही बनाते हैं । इसी कारण से कुल स्थिर पूंजी लागत १२५ रु० से २०० रु० तक होने पर भी बुनकरों को नया संस्थान लगाने के लिए न्यूनतम ८०) रु० से काम चला जाता है । इसीलिए पहले बनने स्थिर पूंजी आवश्यकता ८० से १३० रु० तक बताई गई है ।

उपरोक्त मूल्य लगभग एवं अनुमानित स्वरूप औसत मूल्य हैं । वस्तु की किसम के अनुसार मूल्यों में थोड़ा बहुत अन्तर हो सकता है । इतना सामान एक विशद्वुत नये कर्ब के लिए जिसके साथ ताना व सज्जीकरण का काम भी किया जावे आवश्यक होता है । जहां पर ताना व सज्जीकरण का काम नहीं किया जाता है अर्थात् ताना मजदूरी देकर कोटा या कैथून से करावा कर ले जाया जाता है केवल ५०) रु० की आवश्यकता रह जाती है । इसी प्रकार बुनाई परम्परागत धन्धा होने से भी एक साथ सारी चिन्ने सरोदने की आवश्यकता नहीं होती है । तुर, कण्ठी, राइ टोटा, हाथली और कुछ मुख्य सामान हैं जिनकी लागत कुल लागत का लगभग ६० प्रतिशत होती है । एक बुनकर को जो पहले से बुनाई का काम करता आ रहा है मसूरिया उत्पादन प्रारम्भ करने के लिए ८०) रु० पर्याप्त होते हैं (स्थिर पूंजी के रूप में) कि क्योंकि शेष सामान जो पुराना चला आ रहा है वही काम आ जातक है ।

सू. चउ पूंजी :-

मसूरिया उत्पादन में चउ पूंजी पर विचार प्रति कर्ब के हिसाब से न्नेरें किया गया है । एक कर्ब पर औसत प्रति माह ५० गज कपड़ा बुन लिया जाना है जिसके लिए औसत ४० तोला रेशम, ३ पाण्ड सूत और कपड़े की किसम को अनुसार जरी को मात्रा आवश्यक होती है । बाजार मूल्य के अनुसार सूत व रेशम का मूल्य लगभग १२०) होता है । जरी व मर्लाइन का प्रयोग भिन्न भिन्न प्रकार की साड़ियाँ में भिन्न भिन्न मात्रा में किया जाता है । औसत सामान्य चौकड़ी की साड़ी में ^{जिसका मूल्य लगभग ५०) होता है ।} १० तोला जरी प्रति माह आवश्यक होती है । इस प्रकार प्रति कर्ब पर कच्चे माह

के लिए औसत रूप से ११०)६० चउ पूंजी के रूप में वावश्यक होती है। ५० गज काड़ा बुनने की मजदूरी भी औसत ११०)६० लगती है। इस प्रकार प्रति कर्मा चउ पूंजी की वावश्यकता २८०) ६० होती है। नर्सिंग कम से कम २ पाण के लिए वित्त-प्रबन्ध की व्यवस्था होनी चाहिए, विससे कि एक पाण का माल बनते ही दूसरी पाण का काम चालू किया जा सके, तौर फिर उस माल को बेचकर काली पाण के लिए कच्चा माल तैयार जा सके।

वर्तमान में कोटा जिला में लगभग १५०० कर्मे व सम्पूर्ण कोटा क्षेत्र में लगभग १८०० कर्मे मसूरिया उत्पादन में लगे हुए हैं जिसके लिए ब्रह्म: ४ लाख एवं ५ लाख रुपये को चउ पूंजी की वावश्यकता होती है। वर्तमान संघटन के अनुसार व्यापारी के पास कच्चा माल बनने व उसका काड़ा बुनकर बाजारों और विक्राने में औसत दो माह लग जाते हैं। इस प्रकार मेरे अनुमान के अनुसार सम्पूर्ण मसूरिया उत्पादन के लिए कोटा क्षेत्र में १० लाख रुपये की पूंजी लगी हुई है।

३. वित्त-प्रबन्ध की प्रचलित प्रणाली :-

(क) चउ वित्त-प्रबंध :-

वित्तप्रबन्ध की व्यवस्था इस बात पर निर्भर करती है कि बुनकर किस रूप में उत्पादन कर रहे हैं। मसूरिया उत्पादन में संलग्न बुनकरों में से कुछ स्वयं के लिए बुनते हैं, कुछ मध्यस्थों के लिए बुनते हैं, कुछ सहकारी समिति के लिए बुनते हैं और शेष सब गैठियों के लिए बुनते हैं। विभिन्न वर्गों में जाने वाले बुनकरों का प्रतिशत निम्न प्रकार है :-

क. गैठियों के लिए बुनने वाले	६० प्रतिशत
ख. व्यापारियों के लिए बुनने वाले	११ प्रतिशत
ग. स्वयं के लिए बुनने वाले	११ प्रतिशत
घ. सहकारी समिति के लिए बुनने वाले	८ प्रतिशत

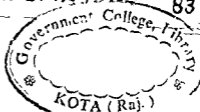
अलग अलग स्थानों पर इस प्रतिशत में काफी भिन्नता पाई जाती है किन्तु में ८५ प्रतिशत गैठियों के लिए बुनने वाले, १० प्रतिशत सहकारी समिति के लिए बुनने वाले और केवल ५ प्रतिशत स्वयं के लिए बुनने वाले हैं। कोटा में अधिकतर बुनकर स्वयं के लिए व व्यापारियों के लिए बुनने वाले हैं। इसका कारण यह है कि प्रथम तो यहाँ के बुनकर काफी समय पूर्व से यह कार्य कर रहे हैं अतः

उनका व्यापारियों से अच्छा सम्बन्ध है दूसरे वे लोग अभिषेक पर पेने बुनते हैं ...
 लिए कच्चे मात के लिए कम पूंजो की आवश्यकता होती है। कोटसूबा में जहाँ पर
 केशुन के बाद गत ५-६ वर्षों से मसूरिया बुना जा रहा है ४० प्रतिशत बुनकर कोटा
 के व्यापारियों के लिए बुन रहे हैं और शेष सब सेठियों के लिए ही बुनते हैं।
 इसके अलावा अन्य सब स्थानों पर मसूरिया उत्पादन गत २-३- वर्षों में ही प्रारम्भ
 हुआ है अतः वहाँ पर लगभग सभी बुनकर सेठियों के लिए ही बुनते हैं। नीचे दो
 गई तालिका में विभिन्न स्थानों पर मसूरिया बुन रहे कर्षों की संख्या व उनका
 विभिन्न वर्गों में विभाजन दिया गया है।

विभिन्न प्रकार से उत्पादन में संलग्न कर्षों की संख्या

(स्थानानुसार)

उत्पादन केन्द्र	कुल कर्षों की संख्या जो मसूरिया उत्पादन में संलग्न हैं।	विभिन्न वर्गों के लिए उत्पादन कर रहे कर्षों			
		व्यापारियों के लिए	सेठियों के लिए	स्वयं के लिए	सहकारी समिति के लिए
१. कै घु न	११००	५०	८५०	६०	११०
२. कोटा	१५०	४०	३०	८०	--
३. कोटसूबा	५०	२०	३०	--	--
४. सीसवाली	६०	६०	--	--	--
५. बपावर	५ ५०	--	५०	--	--
६. मांगरौल	४०	४०	४०	--	--
७. सुल्तान पुर	३५	--	३५	--	--
८. बहौद	४	--	४	--	--
९. अन्ता	४	--	४	--	--
१०. मण्डावरा	३	--	३	--	--
११. अन्य स्थान (मौरपा, पञ्जायवा व मण्डाना)	४	--	४	--	--
योग	१५००	१५०	१०५०	१७०	११०



क. सेठियों के लिये उत्पादन :-

कोटा के आकर बड़े पैमाने पर मसूरिया उत्पादन का प्रसार होने के साथ साथ इस पद्धति का विकास हुआ है। सेठियों की वित्त सम्बन्धि आवश्यकता की पूर्ति कोटा के व्यापारों उन्हें कच्चा माल उधार देकर व कुछ नकर रकम अग्रिम देकर करते हैं। जिनके पास अपने स्वयं के पर्याप्त कोष हैं वे उनमें ही अपना वित्त प्रबंध कर अपना काम करवाते हैं। सेठिया लोग कच्चा माउ व चुनाई की मजदूरी, पूर्ण या आंशिक रूप से अग्रिम देकर बुनकरों को वित्त सम्बन्धी कसम समस्या से मुक्त कर देते हैं। इतना ही नहीं समय समय पर आवश्यकता पड़ने पर बुनकर उनसे नकद उधार भी लेते हैं। जिस पर यदि अल्पकालिक तो तो कोई ब्याज भी नहीं लिया जाता। इस सुविधा के बदले में बुनकर अपने सैठ से बंध जाता है जिससे वह कियो कस्य के लिये उत्पादन नहीं कर सकता। व्यापारियों से वास्तु सुविधा प्राप्त करने के बदले में सेठिया लोग भी व्यापारियों से बंधे होते हैं। वेधुन में बुनकर स्वयं जाकर कच्चा माल ले जाते हैं और निर्मित माल दे जाते हैं। परन्तु कस्य गांवों में साधारणतया सेठिया लोग स्वयं जाते हैं और जागे के लिये कच्चा माउ देकर निर्मित माल ले जाते हैं।

ख. व्यापारियों के लिये उत्पादन :-

परम्परा से बली लाई यह पद्धति कोटा व देहली में आज भी विद्यमान है। इसमें बुनकर स्वयं व्यापारियों को दुकान पर जाकर कच्चा माल और आवश्यकता तो तो अग्रिम भी ले जाते हैं। माउ तैयार हो जाने पर वे स्वयं ही दुकान पर जाकर दे जाते हैं और अग्रिम कागकर अपनी मजदूरी ले जाते हैं। यह पद्धति भी पूर्णतः सेठियों के माध्यम से उत्पादन वाली पद्धति की तरह ही है। इसमें भी व्यापारि बोनरे की तरह काम करते हैं क्योंकि वे बुनकरों को आवश्यकतानुसार समय समय पर अग्रिम व कृपा देते रहते हैं।

ग. स्वयं के लिये उत्पादन :-

जिस प्रकार पांचों कुंठियां समान नहीं होतीं, उसी प्रकार बुनकरों को आर्थिक स्थिति भी भिन्न भिन्न है। कुछ बुनकर जिन्हें हम मध्यम श्रेणी का कर सकते हैं वे अपनी वित्त सम्बन्धी आवश्यकता की पूर्ति स्वयं के साधनों से कर लेते हैं।

साधारणतया ये नकद मूल्य देकर व्यापारियों या चैडियों से कच्चा माउ मरीद लेते हैं और फिर निर्मित माउ भी मान ताव करके किसी भी व्यापारी या चैडिया को बेच सकते हैं। ये पद्धति मुख्य रूप से कोटा में व अल्पतया माना में केंद्रित है।

घ. सहकारी समिति के लिए उत्पादन :-

आवश्यकता से बहुत ही कम मात्रा में विद्यमान यह पद्धति मुख्य रूप से केंद्रित है। केवल एक सहकारी समिति जिमका संजोयन क्रमांक ८२७ है उत्पादन एवं विपणन के विषय प्रश्न का कार्य कर रही है। समिति कच्चा माउ सरकारी एजेन्सियों व व्यापारियों से नकद मूल्य देकर प्राप्त करती है। समिति को सूत जान बायुक्त बम्बई से व रेशम केंद्रिय रेशम परिषद से प्राप्त होता है। इसके लिये समिति को कुछ राशि अग्रिम के रूप में भेजनी पड़ती है और शेष राशि का भुगतान माउ जानी पर करना पड़ता है। इसके अलावा कच्चे माउ सम्बन्धी लेव आवश्यकता की पूर्ति समिति भी व्यापारियों से नकद या उधार रूप करके पूरा करती है। इसी प्रकार समिति का लगभग सम्पूर्ण विद्यमान सहकारी विद्यमान केंद्रों द्वारा होता है जो कि देश के विभिन्न नगरों में स्थापित हैं। समिति को कच्चे माउ माउ सात के आधार पर वहां भेजना पड़ता है और फिर कुछ समय बाद उसी राशि प्राप्त हो जाती है। परन्तु आश्चर्य का विषय है कि समिति ने वृत्त-संबन्धी आवश्यकताओं के विभिन्न सम्बन्धी आवश्यकताओं को पूर्ति के लिये किसी प्रकार का ऋण सरकारी एवं सहकारी स्रोतों से नहीं ले रखा है। समिति के अध्यक्ष, मंत्री एवं कोषाध्यक्ष ही जाने कोषों से विषय प्रश्न करते हैं। चैडियों के सामान को समिति भी मजदूरी देकर कड़ा बुनाती है। अग्रिम प्रथा सहकारी समिति में भी विद्यमान है।

इस प्रकार उत्पादन के लिये वृत्त सूंजी का विषय प्रश्न विभिन्न स्रोतों से हो जाता है, परन्तु विपणन के लिये माउ अन्ततः व्यापारियों के माउ प्रकार सहित होता है। कच्चा माउ व उत्तरण मंगाने और उत्पादन के विपणन के लिये आवश्यक सम्पूर्ण विषय को व्याख्या, सहकारी समिति को छोड़कर, व्यापारियों को करते हैं। मांग के अधिक्य के कारण साधारणतया विपणन में सात बुजिया देने की मुस्ते-कसु- सौं आवश्यकता नहीं पड़ती है। स्थानीय विद्यमान सामान्यतः नकद को लेता है।

(आ) स्थिर पूंजी प्रबन्ध :-

कर्म व अन्य उपकरणों के लिये आवश्यक स्थिर पूंजी का विच प्रबन्ध नज़्दे में मसूरिया मुन एं व्यक्तिर्वा द्वारा सां के साधर्वा से हो किया जाता है । गत कुछ वर्षों में कैपुन व अन्य गांनों में जर्नां पर उत्पादन सेटिर्वा को प्रेरणा में प्रारम्भ हुआ है वहाँ कर्म व अन्य उपकरणों को व्यवस्था भी सेटिर्वा द्वारा ही कीर्गई है । लगभग ७५ प्रतिशत कर्म स्वयं बुनकर्वा के हैं और शेष २५ प्रतिशत कर्म सेटिर्वा द्वारा स्थापित किये गये हैं । जहाँ कर्म सेटिर्वा के हैं कार्यलाल पूंजी का प्रबन्ध भी आवश्यक त्त से उन्हों के द्वारा किया जाता है । और इस प्रकार बुनकर उनके कटोर कंतुन में गने हैं ।

४. सरकार एवं सकारिता :-

भारत राष्ट्र का निर्माण कुटोर उद्योगों के विकास का प्रभाव लेकर आया भारतीय संविधान के अनुच्छेद ४३ ने राज्य के नीति निर्देशक तत्वां में राज्य को ग्रामीण क्षां में सकारिता के माधर पर कुटोर उद्योगों के विकास करने का निर्देश किया जो कि गांव के पुराने संगठित जीवन के पुर्नउत्थान और उसको शक्ति को पुनः प्रष्ट करने का एक मान सशक्त साधन है । तदनन्व बांयोगिक नीतियां में पी-वैस्स रोकगार, आय व धन को समानता एवं पूंजी व कुशलता के प्रभावपूर्ण उपयोग को ध्यान में रखकर उनके समन्वित विकास पर जोर दिया गया । कुटोर - उद्योगों के नेता साथ क्षर्वा उद्योग से विभाग कार्यक्रम प्रारम्भ हुये और वड़ते चडे गये । योजना बद्ध विकास के अन्तर्गत केन्द्रीय व राज्य सरकारों ने साथ क्षर्वा व अन्य कुटोर उद्योगों को विविध प्रकार से सहायता कर विकास करने की प्रेरणा प्रदान की । फलतः वर्तमान में सकारिता के माध्यम से इस्तस्कां उद्योग को विच प्रबन्ध के सम्बन्ध में विविध सुविधायें प्राप्त हैं । उनमें से वे नुविधायें जिनका उपयोग मसूरिया उत्पादन के सम्बन्ध में हो सकता है निम्न है :-

१. संग पूंजी के लिये अतिरिक्त भारतीय साथ क्षर्वा परिषद से कृपा :-

(क) नई सरकारों समिति स्थापित करने के लिये संग के मूल्य का ८३ प्रतिशत प्रत्येक सदस्य को ।

(त) क के अनुसार सदस्यों का भाग होने पर अंश पूंजी बढ़ाने के लिये १०० प्रतिशत रुपा ।

-(म) यह रुपा दो वार्षिक किरतों में $8\frac{1}{2}$ प्रतिशत व्याज सहित अंटाना होता है । पन्द्रहो किरत रुक प्राप्त के ठोक १ वर्ष बाद देना पड़ती है ।

शोष सहकारी समितियों को अंश पूंजी का ५१ प्रतिशत रुपा दिया जाता है जो $8\frac{1}{2}$ प्रतिशत वार्षिक व्याज सहित १२ से २० वार्षिक किरतों में देय होता है ।

२. कार्यशील पूंजी के लिये रुपा :-

रिपन बैंक योजना के अनुसार सूती कड़ा बुनने वाले समितियों को ३००) प्रति कर्मा व रेशमो कड़ा बुनने वाले समितियों को ५००) प्रति कर्मा रुपा दिया जाता है । हस्तकर्म सहकारी उद्योगशाखा को ४००) प्रति कर्मा के हिसाब से रुपा दिया जाता है । यह रुपा १० वार्षिक किरतों में दो रुपा प्राप्त के दो वर्ष बाद से प्रारम्भ होती है व्याज सहित चुगना नइजा है । शोष सहकारी समितियों को दस पूंजी के ५ गुने तक रुपा दिया जाता है, जो कि ६ सान किरतों में चुकाना होता है । प्रथम पान वर्षों के लिये एत पर कोई व्याज नहीं दिया जाता है ।

३. विद्युत केंद्र खोलने के लिये सहायता :-

सहकारी समितियों को विद्युत केंद्र खोलने पर दुकान किराया, कर्मचारि कर्मचारो एवं अन्य खर्चों को पूर्ति के लिये प्रथम वर्ष में १ लाख से नीचे आबादी वाले शहर में ४०००)रुपये, १ लाख से-नेने- ऊपर आबादी वाले शहर में ६०००)रुपया और अंतर्राज्यीय विद्युत केंद्र खोलने पर १५,०००)रुपया या वास्तविक व्यय जो भी कम हो सहायता के रूप में दिया जाता है । दूसरे, तीसरे व चौथे वर्ष में क्रम-रुपया ७५ प्रतिशत, ५० प्रतिशत और २५ प्रतिशत या वास्तविक व्यय जो भी कम हो सहायता के रूप में दिया जाता है ।

उपरोक्त सहायता प्राप्त करने के लिये अधीनस्थित माना में विद्युत खोना आवश्यक है । यदि केंद्र एत उल्लिखित माना में विद्युत न कर सकें तो वास्तविक व्यय या उम्मा जो अनुपात होगा उसी अनुपात में सहायता दी जाती है ।

निर्धारित ऋदान प्राप्ति के लिये आवश्यक न्यूनतम विद्यमान मात्रा

	जहाँ पर १ आस्र से कम बनसंख्या हो	जहाँ १ आस्र से अधिक बनसंख्या हो	कर्तव्यान्तोय विक्रय केन्द्र
	रुपये	रुपये	रुपये
प्रथम वर्ष	१५,०००)	३६,०००)	१,००,०००)
द्वितीय वर्ष	२०,०००)	४५,०००)	१,२५,०००)
तृतीय वर्ष	३०,०००)	५५,०००)	१,५५,०००)
चतुर्थ वर्ष	३५,०००)	६५,०००)	२,००,०००)

४. उत्पादन सामग्री के लिये ऋण एवं ऋदान :-

- क. ताना करने का क्रम या निंबरा :- ७५ प्रतिशत ऋदान व २५ प्रतिशत ऋण
 स. कंधी :- ७५ प्रतिशत ऋदान व २५ प्रतिशत ऋण । (अधिकतम ५०) रुपया)
 ग. डौबी :- ७५ प्रतिशत ऋदान व २५ प्रतिशत ऋण (अधिकतम ५०) रुपया)
 घ. लौहे या बांस को हाथजो के लिये :- ७५ प्रतिशत ऋदान व २५ प्रतिशत ऋण
 (ऋणः २०) व १०) अधिकतम)

ड. राह :- २०) प्रति जोड़ा ।

५. सामान्य सुविधा केन्द्र बनाने के लिये ऋदान :-

सहकारी समितियों को इस सम्बन्ध में निम्न कार्यों के लिये निम्न प्रकार से सहायता दी जाती है :-

- (क) काम करने के सामान्य सैड बनाने के लिये जिसमें ५० कर्बे का सर्क - -१०० प्रतिशत ऋण
 (स) एक रंगई गृह व १०० कर्बों के लिये स्थान वाजा काम करने का सामान्य सैड बनाने के लिये --- १०० प्रतिशत ऋण ।

यह ऋण प्राप्ति के एक वर्ष बाद से १० समान वार्षिक किश्तों में देय होते हैं ।

६. बुनकर बस्ती :-

बुनकर बस्ती के निर्माण के लिये सहकारी समितियों को १।३ भाग ऋदान के रूप में व २।३ भाग ऋण के रूप में दिया जाता है । इसमें प्रत्येक घर ऐसा बनाया जाना चाहिये जिसको आगत भूमि की आगत सहित ३६००) हो ।

इसने अधिक व्यय होगा तो वह बुनकर को ही उस या नकद के रूप में देना होता है । यह राशि निम्न प्रकार से प्राप्त होती है :-

- (क) योजना के स्वीकार हो जाने पर --- --- --- ऋण का १।३ भाग ।
- (ख) नाँव के स्तर तक निर्माण हो जाने पर --- --- --- ऋण का १।३ भाग ।
- (ग) कृत् तक निर्माण हो जाने पर --- --- --- ऋण का १।३ भाग ।
- (घ) मकान के पूरे हो जाने पर --- --- --- ऋण का १।३ भाग ।
- (ङ) खर्च के अंतिम- बंधेकाित साते पैस कर देने पर --- ऋण का २।३ भाग ।

यह ऋण, ऋण को प्रथम किरत देने के एक वर्ष परवान् से ४ $\frac{1}{2}$ प्रतिशत वार्षिक व्याज सहित २५ समान वार्षिक किरतों में देय होता है ।

बुनकर वस्ती के पास निम्न योजनायें स्थापित करने के लिये भी सहायता दी जाती है :-

(क) प्रयोगात्मक बुनाई केंद्र :- स्थायी खर्च का २।३ भाग ऋण व १।३ भाग ऋण का रूप में और प्रथम वर्ष के चारू खर्च का ५० प्रतिशत ऋण स्वल्प दिया जाता है । यह ऋण १० समान किरतों में चुकाना होता है ।

(ख) हवाई केंद्र :- पूंजीगत व्यय का २।३ भाग ऋण व १।३ भाग ऋण का रूप में दिया जाता है । यह ऋण भी १० समान किरतों में चुकाना होता है ।

(ग) रंगाई गृह :- १. रंगाई गृह के वाकार के अनुसार मूमि के लिये ८००), ५००) व ३५०) का ऋण १० वर्ष के लिये ।

२. निर्माण के लिये १० वर्ष का ऋण ।

३. स्थायी खर्च के लिये १०० प्रतिशत ऋण ।

४. चारू खर्चों के लिये प्रथम, द्वितीय, तृतीय व चतुर्थ वर्ष में क्रमशः १०० प्रतिशत, ७५ प्रतिशत, ५० प्रतिशत व २५ प्रतिशत ऋण ।

५. चारू पूंजी के लिये ५ वर्ष का व्याज सहित ऋण ।

उपरोक्त योजनाओं में से चारू पूंजी के लिये ऋण को व्यास्यता को छोड़कर बाकी सब योजनाओं के लिये ऋण एवं ऋण का प्रत्यक्ष अतिरिक्त भारतीय साथ खर्च परिषद द्वारा किया जाता है । कार्यशील पूंजी के लिये ऋण रिजर्व बैंक केंद्रीय सहकारी बैंक को दीया जाता है जिन्हें वह ऋण के रूप में कुछ ऊंची दर पर सहकारी

समितियों को दे देता है ।

कार्यसोच पंजी के लिये ऋण प्राप्त करने के लिये बुनकर सहकारो समिति को निर्धारित प्रपत्र में प्रबन्धक समिति के प्रस्थान के साथ आवेदन पत्र सम्बन्धित पंवायत समिति के उद्योग विस्तार अधिकारी या विकास अधिकारी के माफत सहायक पंजीयक सकारो समितियों को भेजना पड़ता है, जो कि उन्हें केंद्रीय सहकारो बैंक के पास भेज देता है । केंद्रीय सहकारो बैंक के पास इस प्रकार के ऋण के वितरण के लिये रिजर्व बैंक से प्राप्त ऋण होते हैं जिनमें से वह ऋण ^{प्रदान} मंजूर-करता है ।

अन्य ऋण एवं ऋदान प्राप्त करने के लिये भी इसी प्रकार के निर्धारित प्रपत्र पर आवेदन पत्र सहायक पंजीयक के पास पहुंच जाता है । सहायक पंजीयक, (सहकारो समितियां) आवेदन पत्र को जांच करके व यह देखकर कि सब नियमित्तार्य पूरे ही गई हैं उसे संयुक्त संचालक हाथ क्या रावस्थान को भेज देता है । संयुक्त संचालक ही विभिन्न योजनाओं को स्वीकृति देता है । कभी कभी पंवायत समिति द्वारा ही आवेदन पत्र अग्रिमस्थ उद्योग एवं सहकारिता विस्तार अधिकारो जांच करवाकर सोधे संयुक्त संचालक को भेज दिये जाते हैं ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि भारतीय संविधान के नीति निर्देशक तत्वों का अनुसरण कर प्रान्तीय व केंद्रीय सरकारें विभिन्न प्रकार से हाथ क्या उद्योग विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत विदेशी सहायता सहकारिता के माध्यम से देने को तत्पर है । परंतु महत्वपूर्ण बात यह है कि इन साधनों एवं सुविधाओं का उपयोग कहां तक हो रहा है ?

मसूरिया उत्पादन में उपयोग :-

मसूरिया बुनकर उद्योग का उद्गम एवं विकास हो इस ढंग से हुआ है कि एतर्न अब तक सहकारिता को काम करने का मौका ही नहीं मिला है । मसूरिया बुनकारों के नाम से ^{उद्योग तक} कौई सहकारो समिति नहीं बनी है । जितनी भी सहकारो समितियां स्थापित हुई हैं वे सब सूती वस्त्र उत्पादन के लिये प्रबन्ध एवं नियंत्रण के समय नियंत्रित मूल्यों पर सूत प्राप्त करने के लिये संगठित हो गई थी । इसी लिये जो भी ऋण मिठे हैं वे सब सूती वस्त्र उत्पादन के लिये ही दिये गये हैं । सन 1927 को भी जो कि केवल मात्र एक समिति है जो कि मसूरिया उत्पादन में

संलग्न है, चाटू पूंजी के लिये 3000) रूपया ऋण मिला था जो कि 100) रूपया प्रति सदस्य के हिसाब से उसी समय सदस्यों में बांट दिया गया था । वर्तमान में मारा विद्युत प्रबन्ध समिति के अधिकारी जसे कोषी से करते हैं जोर विभिन्न रूपों में समिति को होने वाले काम का अधिकांश भाग स्वयं ले लेते हैं । किन्तु भी प्रभार का मसूरिया वस्त्र विद्यो केंद्र सहकारी आधार पर अभी तक नहीं खोला गया है जिससे हम हेतु सहायता प्राप्त करने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता । कोटा, कैम्पू, मांगरोल जादि कुछ स्थानों पर सहकारी नस्- हाथ कर्मा व वस्त्र छ्प विद्यु केंद्र हैं परन्तु उन पर भी मसूरिया^{वस्त्रों} का छ्प मिश्र नहीं होता है । उसी प्रकार मसूरिया उत्पादन हेतु उत्पादन सामग्री प्राप्त करने एवं रंगाई गृह व गामान्य सुविधा केंद्र खोलने के लिये भी किन्तु प्रकार की सहायता एवं ऋण का उपयोग नहीं किया गया है ।

कोटा जिला में केवल मात्र मांगरोल में बुनकर बस्ती के निर्माण हेतु 1,20,000) रूपया ऋण एवं 10,000) रूपया अनुदान के रूप में देने की स्वीकृति प्राप्त हुई है और उनमें से ऋण का 21 भाग प्राप्त भी हो चुका है । परंतु यह ऋण एवं अनुदान उसी समय मिला था जबकि वे बुनकर मोटा कपड़ा बुनते थे, वर्तमान में भी मांगरोल में लगभग 400 बुनकर हैं उनमें से केवल 30 - 40 ही मसूरिया उत्पादन में संलग्न हैं । इसके अलावा मसूरिया उत्पादन के मुख्य केंद्र कैम्पू में भी बुनकर बस्ती निर्माण हेतु ऋण एवं अनुदान दिये जाने की योजना पर विचार चलाया था । परंतु गत वर्ष चीनी जाग्रण के समय संकटकाळीन स्थिति होने से यह योजना अभी स्थगित पर ही गई है । इस प्रकार मसूरिया उत्पादन के क्षेत्र में हम प्रभार से प्राप्त होने वाले अनुदान एवं रणों का कोई उपयोग अभी तक नहीं किया गया है ।

सन्ततः यलो कहा जा सकता है कि एक ओर जहां सरकार द्वारा हाथ-कर्म उद्योग में विद्यु प्रबन्ध के लिये विभिन्न प्रकार की सुविधाएँ उपलब्ध हैं मसूरिया उत्पादन में सहकारी व सरकारी धौन का अभी तक विद्यु प्रबन्ध में कोई प्रत्यक्ष एवं महत्वपूर्ण योगदान नहीं है ।

सुविधाओं के उपयोग न होने के कारण :-

किन्तु भी साधन या सुविधा के उपयोग का विचार ही तब उठता है जबकि

पहले उसका ज्ञान ही। वास्तव में तो इन बुनकरों को इन मत्र सुविधाओं के बारे में कोई ज्ञान ही नहीं है। ज्ञान न होने का कारण अशिक्षा व संबुद्धित ज्ञान के साथ साथ सरकार एवं सहकारी विभागों द्वारा अभी तक मी अंग्रेजी के माध्यम से उनसे सम्पर्क स्थापित करना व उन्हें बताने का प्रयत्न करना भी है। इसलिये उनको तरफ से इनका उपयोग करने में अभी भी प्राथमिकता नहीं की जाती है। इन सुविधाओं का भी कुछ भी उपयोग होता है वह तभी होता है जबकि सहकारी विभाग या विकास विभाग से सम्बन्धित कोई व्यक्ति आकर उसके बारे में बतावे, प्रेरणा दे, प्रारम्भिक कार्य करे व समय समय पर उनका निर्देश करता रहे।

दूसरे जिन लोगों को कुछ ज्ञान है और जो कि कुछ शिक्षित व धनिक हैं और समाज का नेतृत्व करते हैं वे लोग सैठियाँ हैं। जो कि उस दौर कदम ^{ही} उठाते क्योंकि इससे उनको सैठिया या मध्यस्थ के रूप में प्राप्त हो रहे मारी लाभों का अंश अवश्यम्भावी है।

उसके साथ ही यह भी अभी तक स्पष्ट नहीं हो पाया है कि मसूरिया बुनकर सहकारी समितियाँ किस वर्ग में रखी जायें। वर्तमान में हाथ क्या बुनकर, समितियों को निम्न चार वर्गों में विभाजित कर रखा है :-

१. कृत्रिमरेशम व ऊनी वस्त्र बुनकर समितियाँ।
२. सूती वस्त्र बुनकर समितियाँ।
३. औद्योगिक सहकारीतायें।
४. रेशम वस्त्र बुनकर सहकारी समितियाँ।

मसूरिया उत्पादन में सूत, रेशम व धरी तीनों चीजें काम आती हैं तो इसे किस श्रेणी में रखा जाय ऐसा अभी तक स्पष्ट निर्णय नहीं लिया गया है। यही कारण है कि अभी तक रिजर्व बैंक योजना के अन्तर्गत सम्पूर्ण पिछे में फेड सूती वस्त्र बुनकर सहकारी समितियों को सूती वस्त्र उत्पादन के नाम से क्रम दिये गये हैं।

फलस्वरूप सहकारिता का प्रारम्भ भारत में सरकार द्वारा हुआ है न कि जनता द्वारा और अब भी आन्दोलन की आगहौर सहकारी हाथों में होना बहुत बड़ा दोष है क्योंकि सहकारिता का मार अभी उजायता अने आप करता है।

अन्तिम रूप में यह कहा जा सकता है कि परिस्थितियाँ ही इस प्रकार की हैं कि बुनकरों को मसूरिया उत्पादन के लिये सहकारी समिति स्थापित करने को

आवश्यकता ही प्रतीत नहीं होती। क्योंकि वे विच एवं विपणन दोनों कठिनाइयों से मुक्त हैं। सैठिया लोग व व्यापारी भी उनके लिये सब प्रकार के बल्कलाहोन व बीघलाहोन विच को व्यवस्था कर देते हैं एवं विपणन का कार्य भी वे ही कर देते हैं। साथ ही मसूरियाउत्पादन से जो मजदूरी वर्तमान में उन्हें प्राप्त हो रही है वह उस मजदूरी से डेढ़ी व दुगनी है जो उन्हें मोटा कपड़ा बुनने से प्राप्त होता था था: वे उससे एक छद तक संतुष्ट हैं। इन सब कारणों से ही सहकारिता के माध्यम से मरफारी विधायी सुविधाओं का उपयोग करते के ठीके मसूरिया बुनकर उद्योग में अभी तक कोई कदम नहीं उठाये गये हैं।

५. जातीयनात्मक अध्ययन एवं सुझाव :-

आधुनिक जायौगिक संगठन में विच प्रबन्धक व नियंत्रणकर्ता भिन्न भिन्न हो सकते हैं परंतु कुटीर उद्योगों में जहां कच्चे मातृ व उपकरणों से लेकर विपणन तक के विच प्रबन्ध के लिये औरों पर निर्भर रहना पड़ता है उद्योग के वास्तविक नियंत्रणकर्ता वे व्यक्ति बन जाते हैं जो विच को व्यवस्था करते हैं। मसूरिया उत्पादन के सम्बन्ध में कोटा के ४ प्रमुख व्यापारी ऐसे हैं जो कुछ उद्योग की उत्पादन सम्बन्धी आवश्यकता का ६० प्रतिशत विच प्रबन्ध करते हैं। उत्पादन के लिये विच प्रबन्ध के साथ ही विपणन के लिये विच प्रबन्ध में भी लगभग ७५ प्रतिशत भाग इन व्यापारियों का होता है। फलतः वर्तमान में मसूरिया उत्पादन व उसके साथ साथ मसूरिया बुनकर पूर्णतः इनके ऊपर ही निर्भर हो गये हैं। उत्पादन में शेष विच प्रबन्ध कोटा के अन्य छोटे व्यापारी सैठिया और सहकारी समिति करते हैं। विपणन का शेष विच प्रबन्ध कोटा के हमेटे अन्य छोटे व्यापारी और सहकारी समिति करते हैं। वैसाकि बताया गया है सहकारी समिति भी वास्तविक अर्थ में समुदाय के हितों के लिये संवाहित सहकारी समिति न होकर कुछ व्यक्तियों के हित पूर्ति के लिये होती है जो कि सहकारिता शब्द का दुरुपयोग हो रहा था सकता है। सदस्य उद्योग के नियंत्रण का केन्द्रोपकरण कुछ जायों में है और केन्द्रोपकरण द्वारा शोषण का जन्म वर्तमान युग में स्वाभाविक है। ऐसी स्थिति में हो सकता है कि बढ़ती हुई मांग के समय बुनकरों का अस्वाभाविक शोषण न हो परंतु फिर भी क्योंकि व्यापारी बहुसंख्य स्थिति में और शोषण का सूत्रात ही बाना अस्वाभाविक

नहीं है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण अभी अभी मिठा है क्योंकि केशुन के बड़ावा फल कोटा जिले के अन्य गांव में मसूरिया उत्पादन करने वाले कर्षी की माना में वृद्धि व सर्वा के मौसम के कारण ^{मांग को} ~~माना में~~ दुर्लभ कमी होने के कारण बुनकरों की मजदूरी उन व्यापारियों के द्वारा मिठावर एक दग २० से २५ प्रतिशत तक कम करदी गई है। पहले २५ गज बुनारें ली जहाँ ५०) इया दिया जाता था अब केवल ४८) इया दिया जाता है। अधिक मांग के समय ग्रीष्म काळ में तो बड़ी हुई मांग का लाभ (मूल्य बढ़ाकर) व्यापारी हड़न कर जाते हैं पर जहाँ जहाँ थोड़ी मो भी खुदता मिठी कि बुनकरों को मजदूरी कम करने में नहीं चुके।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि कटा का मविष्य इन व्यक्तियों के हाथों में सुरक्षित नहीं है। बल्कि मजदूरी के कारण उन्हें नुई बुनकर कमी भी उस उद्योग को छोड़कर अन्य उद्योगों में संलग्न हो सकते हैं जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण कोटा में मिठा है। कोटा शहर में १९२९ में वस्त्र उद्योग पर ३३५४ व्यक्ति निर्दिष्ट-निर्भर थे। जबकि वर्तमान में केवल १००-१५० ही बच रहे हैं जिन पर लगभग ५०० व्यक्ति निर्भर हैं। मविष्य में भी कोटा क्षेत्र में औद्योगिककरण द्वारा प्रति-स्पर्धा कर उद्योग के विकास में रुकावट पैदा कर सकता है। अतः आवश्यक है कि इस हस्तकला को पोषित रखा यदि आवश्यक है और विकास करना है तो आवश्यक रूप से पिछे प्रवृत्त को समुचित एवं गुठल व्यवस्था को जानने चाहिये। जिससे बुनकर व्यापारियों के केन्द्रीत नियंत्रण से मुक्त होकर स्वतंत्र रूप से कटा के विकास में रुचि लें।

आत्म सहायता या सहायिता ही एक मात्र साधन है जो उस समस्या का उचित हल कर सकता है। तन्तु सहायिता सरकारी कार्यालयों के पन्नों का विषय और सरकारी सुविधाओं को जैने जैसे प्राप्त करने का माध्यम मात्र नहीं होना चाहिये। उदात्तमिक संगठन के रूप में सहायिता से पूर्व भावात्मक सहायिता का होना जति आवश्यक है। क्योंकि भावात्मक सहायिता के बिना सरकारी संगठन बिना पीव का सौतठा ढांचा मात्र रह जाता है जिसे सहायरी एवं विकास विभाग के कर्मारो जैसे जैसे जीवित मात्र रखते हैं।

हमारे गांवों में भावात्मक सहायिता पर्याप्त मात्रा में पाई जाती है

परन्तु परिस्थितियों के बदलने में जाकर व निरंतर क्षीण होती चली जा रही है । ऐसी अवस्था में यह आवश्यक है कि एग्रीकल्चरल सरकार जागे जावे और क्लान क्लब में पड़े बुनकरों को संगठित कर उन्हें धनी शक्ति दे फिर्से उनको निकरकर स्वतंत्र वायु में स्वांस ले सकें । पर यह ध्यान रहे कि संगठित बनाने से पूर्व उन्हें संगठित होने की भावना पैदा की जावे । अथवा एक जाघारू को छोड़कर उन्हें दूसरा जाघार पकड़ना पड़ेगा ।

वर्तमान में जोतड़े गंगठन विद्यमान हैं क्योंकि उनको स्थापना से पूर्व संगठित होने पाठों में इस प्रकार संगठित होने की भावना विद्यमान नहीं थी । अब आवश्यकता इस बात की है कि पहले संगठित होने एवं पारस्परिक सहायता करने की भावना पैदा की जावे + और फिर उनका पुनर्संगठन किया जावे । परंतु प्रश्न यह आता है कि संगठित होने की भावना कैसे पैदा की जावे ? केवल भाषण कर देने, ल पोस्टर चिपका देने, फिल्में दिखा देना और विस्तृत सहकारी विभाग को स्थापना कर देने मात्र से संगठित होने की भावना पैदा नहीं हो सकती । ऐसा कि मुख्य गांधीजी ने कहा है 'एक से लोक होते हैं' उसी प्रकार एक बादश उपस्थित करना होगा जिसमें उनके ज्ञान में जाये हुये व्यक्तियों के वास्तविक विकास एवं स्वतंत्र रूप से बोधित रह सकने की योग्यता पैदा हो सकने का व्यवहारिक एवं प्रत्यक्ष उदाहरण प्रस्तुत किया जाय । जिसका अनुकरण कर अन्यो में संगठित होने की भावना जागृत होगी । परिणामस्वरूप उनके संगठन का स्वाभाविक रूप से पुनर्गठन होगा और तब आवश्यक गहयोग सरकार का होगा । लेकिन सरकार सहयोगी के रूप में कार्य करे, नियंत्रक के रूप में नहीं तभी अन्ततः क्लान क्लब में पड़े व्यापारियों के द्वारा सोषण के शिकार बुनकर आत्मनिर्भर होकर कला को बोधित रहने व उसका विकास करने के लिये कृत संकल्प हो सकें । हमारे अज्ञाना हमारे दासत्व के बुये कोजी का त्रेन छोड़कर मातृभाषा हिन्दी में ही बुनकारों से सभी प्रकार से लिखित एवं मौखिक सम्बन्ध बनाये रहने का प्रयत्न करना चाहिये । जिससे कि यह अल्प-ज्ञानी व कम शिक्षित बुनकर को कि हिन्दी में जो फिर भी कुछ समझ सकते हैं उन बुधिवार्धों का ज्ञान प्राप्त कर सकें उनकी प्राप्त करने के तरीकों को जान सकें व उनके अनुसार कार्य कर बिना दूसरों पर निर्भर रहे स्वयं ही उन्हें प्राप्त कर वही विकास का मार्ग निर्धारित कर सकें ।

एकदम बहुत सारी सहकारी समितियां स्थापित कर देने और फिर उन्हें थोड़ा थोड़ा अनुदान एवं ऋण देने से उनमें से एक मो सुदृढ़ एवं आत्मनिर्भर नहीं हो पाती है। वर्तमान में यही नीति अज्ञात जाती रही है बिना परिणाम यहलोग कि सब अवमूली रहेंगे। और अन्त में निराश होकर सरकार को या तो प्रत्यक्ष करना ही झुंझना होगा या अपना मार्ग बदलना होगा। अतएव उपयुक्त यह होगा कि सरकार पहले एक या कुछ समितियां लेकर उन्हें सम्पूर्ण सुविधार्थ उपबन्ध कर सुदृढ़ व आत्मनिर्भर बनादे। परिणामस्वरूप उसमें जाये व्यक्तियों के विकास को देखकर स्वाभाविक रूप से दूसरों में भी उसी प्रकार संगठित होने और अपनी उन्नति करने की भावना पैदा होगी, तब सरकार को चाहिये कि उन्हें प्रोत्साहन एवं सहयोग दे पित्तों उनमें सहकारिता पैदा हो और फिर वे पुनर्गठित होकर तीव्र-आन्तरिक इच्छा के साथ अपने की भी उसी प्रकार संगठित कर आत्म निर्भर होने के लिये दृढ़ संकल्प कर तभी सहकारी मन्थान से वास्तविक अर्थों में सफलता प्राप्त की जा सकेगी। अन्ततः यह आत्म सहायता का मार्ग उनके कल्याण एवं कृषा के विकास व संवर्द्धन का माध्यम बन सकेगा।

इतना ही नहीं जब एक दो सदस्य सहकारी समितियां बन जायेंगी तब फिर स्वाभाविक रूप से व्यापारी भी शोषणीय प्रवृत्ति को छोड़कर धीरे धीरे सुनकरों की लक्ष्य बनाने लगे हैं और उनके कल्याण में हाथ बटाने को जागे जायेंगे और इस प्रकार दोनों ओर से प्रयास होकर उद्योग में वह बाधक व्यवस्था स्थापित हो जायेगी जो सुनकरों के स्थायी कल्याण का कारण बन कृषा के विकास एवं संवर्द्धन का मार्ग ग्रहण करेगी।

मसूरिया उत्पादन में संलग्न सहकारी समितियां शीघ्र ही आत्मनिर्भर हो जायें ऐसा सम्भव नहीं है क्योंकि इसके लिए कार्यशील मूंडों के रूप में बड़ी मात्रा में पित्त प्रबन्ध की आवश्यकता होती है जिसको पूर्ति, मिर्ठा से कठोरप्रतियांगिता के काल में जीवन निमांड से भी कम जाय पर घोषित करने वाले सुनकर करने की सक्षम हो जायें अस्मभ हो प्रतीत होता है। अतः सरकार को आवश्यक रूप से प्रारम्भ काल में पर्याप्त, सुगम एवं सस्ती पित्त प्रबन्ध की व्यवस्था करनी चाहिये। सरकार का उद्देश्य सहयोगों के रूप में कार्य कराने- अन्ततः उन्हें आत्मनिर्भर बनाना ही होना चाहिये न कि उस पर स्मेता के लिये नियंत्रण रक्ता।

इन मसूले पूर्व यह आवश्यक है कि पहले मसूरिया बुनकर सहकारी समितियों के स्थान का निर्धारण कर लिया जाय । इसके लिये हाथ क्या परिषद व रिजर्व बैंक को मिठकर इसको सूती समिति माना जाय या रेशमी या फिर कोई अन्न वर्ग पता दिया जाय इसके सम्बन्ध में निर्णय कर लेना चाहिये । तभी उसके अनुकूल ही सरकार को, अखिल भारतीय हाथ क्या परिषद, राजस्थान हाथ क्या परिषद व केन्द्रीय सहकारी बैंक आदि को साधन सुविधायें उपलब्ध कर सकता सम्भव होगा, जो कि पूर्णतः उसके उपयुक्त होंगी ।

निष्कर्षतः वर्तमान में वित्त प्रबन्ध के व्यापारियों के हाथों में केन्द्रीयकरण के कारण बुनकरों का पूर्ण नियंत्रण उनके हाथों में है जो कि उनके शोषण व अनिश्चित भविष्य का कारण है । सहकारिता इसके लिये एक अमोघ साधन है पर इसको सकलता तभी हो सकती है जबकि उसे बताया गये ढंग से उपयोग किया जाय । सहकारी बांडोलन उन सारी आर्थिक व सामाजिक बुराइयों को जिनसे बुनकर आज पीड़ित हैं, दूर करने व बड़े पैमाने के उत्पादन के बहुत नै लाभों को प्राप्त कर सकने का विशिष्ट गुण है । फिर भी यह नितांत निष्प्रयोजन भी नहीं है । कम से कम उस सहायता के कारण जो कि कार्यशील मूँजों के लिये ऋण के रूप में बुनकरों को मिली है उसके द्वारा वे परम्परा से चले जाये महाबर्तों व साहूकारों के ऋण भारसे ब्यस्य हो बहुत कुछ घट तक मुक्त हो गये हैं । साथ ही साथ व जिन कारणों से बुनकरों है आवश्यकता केवल उसके समुचित उपयोग को रह गई है ।

-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-
 0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-
 0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-
 0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-
 0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-
 0

कोटा जिला में मसूरिया उत्पादन

बध्याय - षष्ठम

उत्पादन लागत एवं मूल्य उच्चावचन

१. लागत के तत्व :-

स्वरूप परिवर्तन द्वारा उत्पादन उद्योग में कच्चा माल, श्रम, साहस, एवं पूंजी उत्पादन के प्रमुख घटक होते हैं। फलतः कच्चे माल का मूल्य श्रम की मजदूरी, पूंजीपति का प्रतिकार एवं साहसी का लाभ उत्पादन लागत के मुख्य भाग होते हैं। मसूरिया उत्पादन में भी उच्च कौटि का ^{कच्चा} माल प्रयुक्त होने, पूर्ण श्रम प्रदान उत्पादन प्रक्रिया होने और कच्चे माल की पूर्ति व विपणन का कार्य दीर्घ एवं बटिउ होने से इसकी लागत में कच्चे माल के मूल्य, कुतार्ई की मजदूरी व व्यापारियों का प्रतिकार लागत के मुख्य भाग होते हैं। लागत के घटकों का विस्तृत निरूपण इस प्रकार है :-

(१) कच्चे माल की लागत :-

इसमें निम्न मूल्य शामिल होते हैं :-

- क. कउकता, बम्बई आदि मुख्य बाजारों में विक्रय मूल्य।
- ख. वहां से यहां आने का खर्चा।
- ग. स्थानीय व्यापारियों का लाभ।
- घ. अन्य मध्यस्थों का प्रतिकार।

(२) मजदूरी :- इसमें निम्न मद शामिल होती हैं :-

- क. ताना, पाण करने की मजदूरी,
- ख. नलियां भरनेकी मजदूरी,
- ग. कुतार्ई की मजदूरी,
- घ. सज्जाखं उपकरणों का ह्रास,
- ङ० सहायक सामग्री का मूल्य।

(३) मध्यस्थों का प्रतिकार :- इसमें निम्न मदें शामिल होती हैं :-

- क. यात्रा व्यय, ख. पूंजी पर ब्याज, और ग शुद्ध प्राप्ति।

(४) कुतार्ई

(५) व्यापारियों का लाभ

उक्त उत्पादन के स्वरूपों में एवं आकार प्रकार में अत्यधिक भिन्नता होने के कारण विभिन्न जागतों का प्रतिशत सामान्य रूपसे निश्चित नहीं किया जा सकता एक ही श्रेणी के उत्पादन में भी निम्न कारणों से जागत कम अधिक हो सकती है

१. आकार प्रकार में भिन्नता :-

२. स्रष्टांकन की मात्रा ।

३. कच्चे माल की किस्म । हल्के किस्म का कच्चा माल निम्न प्रकार से काम लिया जाता है, जिसका सामान्य दृष्टि से ज्ञान भी नहीं हो पाता । :-

- क. क. सम्पूर्ण माल में हल्की किस्म का कच्चा माल काम में लेकर
- ख. विदेशी के स्थान पर देशी कच्चा माल काम में लेकर
- ग. ऐसा सम्पूर्ण उत्पादन में या केवल ताने में या केवल बाने में किया जा सकता है ।

४. सतों में गड़बड़ करके :-

क. १२ सत के बजाय ६ सत के सत बनाकर,

ख. एक सत ६ सत का व एक सत १२ सत का बनाकर,

ग. सूत रेशम और बरी के तारों में अलग अलग स्थानों में अलग अलग मात्रा में प्रयोग करके ।

५. बरी की मात्रा एवं किस्म ।

प्रतिनिधि उत्पादनों का जागत विवरण संग्रह तालिका में दिखाया गया है । यह जागत सामान्य एवं प्रमाणित उत्पादन के सम्बन्ध में है । बाजार में ऊपर बताये गये विभिन्न तरीकों से गड़बड़ कर जागत में कमी करने का प्रयास किया जाता है । इन तालिकाओं में बताई गई जागत एक सामान्य विवरण उपस्थिति करती हैं जिनके आधार पर उत्पादन का प्रमाणीकरण किया जा सकता है ।

इन जागत विवरणों में हम पाते हैं कि निम्नतम किस्म के उत्पादन की जागत में मणदुरी का अनुपात सर्वाधिक होता है । सामान्यतः ५० प्रतिशत मणदुरी, ४० प्रतिशत कच्चे माल का मूल्य व १० प्रतिशत अन्य जागत होती है । उत्पादन की किस्म तीन प्रकार से ऊंची होती है । प्रथम अधिक सतों का कपड़ा बुनकर दूसरे स्तरांकन कार्यों द्वारा (नकलाशी) ^{एवं तीसरे} बरी का प्रयोग अधिक करके ।

खतों की मात्रा बढ़ाकर किस्म ऊंची करने पर सामान्यतः मजदूरी एवं कच्चे माउ की लागत का अनुपात वही रहता है। केवल मजदूरी की लागत का प्रतिशत कुछ बढ़ जाता है। नक्काशी करने से किस्म ऊंची करने पर थम लागत का प्रतिशत बढ़ जाता है। एवं कच्चे माउ की लागत का प्रतिशत कम होता जाता है। बरों का अधिक प्रयोग करके किस्म ऊंची करने पर कच्चे माउ की लागत निरंतर बढ़ती चली पाती है एवं थम की लागत का प्रतिशत कम होता जाता है यहाँ तक कि स्वर्ण बरी कोस स्ट्रेटवार में १५ प्रतिशत मजदूरी, १५ प्रतिशत अन्य लागतें और ७० प्रतिशत लागत कच्चे माउ की होती है।

२. लागत को प्रभावित करने वाले घटक :-

विभिन्न कारणों से जिनका वर्णन ऊपर किया गया है, उत्पादन की लागत भिन्न भिन्न हो सकती है। ऐसे कारणों को हम दो भागों में विभाजित कर सकते हैं। (१) प्रत्यक्ष एवं (२) अप्रत्यक्ष। प्रत्यक्ष में वे घटक हैं जिनका समी परिस्थितियों में समान रूपसे प्रभाव पड़ता है और अप्रत्यक्ष घटक वे परिस्थितियाँ हैं जिनकी उपस्थिति के कारण ही लागत प्रभावित होती है।

(क) प्रत्यक्ष घटक :-

(१) खतों की मात्रा :- इसका सीधा प्रभाव कच्चे माउ की मात्रा व मजदूरी पर पड़ता है। इस प्रकार खतों की मात्रा बढ़ने के साथ साथ औसतन रूपसे मूल्य वृद्धि होती चली जाती है जैसे ३५० खत का धान ६०) में २६० खत का धान ६२) में, २७० खत का धान ६५) में २८० खत का ६७) में २९० खत का ७०) में एवं ३०० खत का ७३) में आता है।

(२) खतों का प्रकार :- खत तीन प्रकार के होते हैं :- (१) नौसत वाले (२) बारह सत वाले व (३) सोलह सत वाले। ६ सत वाले खत में नन ताने व बाने (लम्बाई व चौड़ाई) दोनों में प्रति सत ८ तार सूत के व ६ तार रेशम के होते हैं। क्योंकि लम्बाई व चौड़ाई दोनों में दो धारियाँ वाले खत डाले जाते हैं। बारह सत वाले खत में ताने में आठ तार सूत व छ तार रेशम के होते हैं परन्तु बाने में १० तार सूत के व ८ तार रेशम के होते हैं। १६ सत वाले खत में ताने व बाने दोनों में प्रति सत १० तार सूत के व ८ तार रेशम के होते हैं। इस प्रकार खतों के प्रकार

का लागत पर बाँसवन प्रभाव पड़ता है। इससे कच्चे माल की लागत, मजदूरी व अन्य लागतें समान प्रतिशत में बढ़ती हैं। जैसे दो सौ सत का धान १२ सत के सतों वाला ५०) रूपये में जाता है जबकि १६ सत के सतों वाला ५५) रूपये में।

एक ही किसम के उत्पादन में सतों में भिन्नता डालकर उत्पादन की किसम निम्न करने का प्रयत्न किया जाता है और इस प्रकार यह घाँसाबाजी के एक साधन के रूप में भी प्रयोग हो रहा है।

(३) नक्काशी :-

साड़ियाँ व चौदरनों में चौड़ी फिनार के बीच में या चौकड़ीदार बुनावट होने पर चौकड़ी के बीच में बारी, पूना रेशम या मर्राएण के फूल व पत्ती ढाँठे जाते हैं। रेशम व मर्राएण के फूल पत्ती डालने पर इसका मुख्य प्रभाव धम लागत पर पड़ता है जिससे धम लागत का प्रतिशत बढ़ता नमनक जाता है और कच्चे माल की लागत का प्रतिशत घटता जाता है। पैरी के फूल पत्ती डालने पर धम लागत व कच्चे माल की लागत दोनों पर प्रभाव पड़ता है परन्तु कच्चे माल की लागत का प्रतिशत बढ़ता जाता है और धम लागत का प्रतिशत कुछ कम होता जाता है। सूती चौकड़ी को साड़ियों वर्ग २१)५० पेसे में जाती है नक्काशी का काम होने पर (लगभग २०० फूल डालने पर) इसका मूल्य ३०) ही जाता है। इसी प्रकार नक्काशी की मात्रा भी मूल्य में कमीवर्ती करने के लिये विम्बेदार होती है।

(४) प्रयुक्त कच्चे माल की किसम :-

एक ही श्रेणी के, एक ही आकार प्रकार के व उतने ही सतों के कण्डे का मूश्य या लागत भी भिन्न भिन्न हो सकती है। माल की किसम में भिन्नता का प्रभाव केवल कच्चे माल की लागत पर पड़ता है। जैसे २५० सत का ४५ एंव चौड़ा, १२ सत के सतों वाला धान यदि १३।१५ काउन्ट का रेशम व १४० काउन्ट का सूत काम में लेकर बनाया जाने पर उसका मूल्य लाभ ६७) होगा जबकि २०।२२ काउन्ट का रेशम व १२० काउन्ट का सूत काम में लेने पर केवल ६५) ही होगा। बारी के काम में २७०० गजी के स्थान पर १४०० गजी काम लेने या १४०० गजी के स्थान पर २७०० गजी काम लेने पर लागत में परिवर्तन ही जायेगा।

(५) आकार प्रकार में भिन्नता :-

एक ही श्रेणी का उत्पादन भी कि एक ही प्रकार का ही विभिन्न आकारों

में होने पर उसका मूल्य एवं लागत भिन्न भिन्न होती है। बाकार में भिन्नता के कारण लागतों में बौसत परिवर्तन होता है और विभिन्न लागतों का प्रतिरूप सामान्यतः वही रहता है। साड़ियां लम्बाई में ५ या ६ गज की हो सकती हैं और चौड़ाई में भी ४५ इंच, ४६ इंच, ४७ इंच, ४८ इंच की बुनी जाती हैं। इसी प्रकार अन्य उत्पादनों के बाकार में भी भिन्नता होती है।

(स) अत्यन्त घटक :-

१. इकाईयों का प्रकार :- वास्तव में तो ये मितव्ययता के तरीके हैं जिनका उपयोग कर वृहत प्रमाणीय उत्पादन के क्षेत्र लाभ प्राप्त किये जा सकते हैं। कुटीर उद्योग और सहकारिता मिश्रण ही विशाल प्रमाणीय उद्योग बन जाता है। अतः वर्तमान में प्रचलित व्यक्तिगत बाधार पर उत्पादन पद्धति में स्वाभाविक रूपसे क्षेत्रों अभितव्ययताओं के कारण लागत अधिक होती है इसमें भी स्वयं के लिये उत्पादन करने पर लागत कम आ जाती है क्योंकि उन्हें प्रतिशक्ति के बाधार पर कच्चा माल खरोदने, प्रतिशक्ति के बाधार पर बेचने व मध्यस्थों के जनाव के कारण मितव्ययता प्राप्त होती है। मध्यस्थों के माध्यम से होने वाले उत्पादन में लागत सर्वाधिक होती है। जैसा कि बताया गया है कि बादर्श सहकारी बुनकर बस्ती में उत्पादन पर लागत मूल्य बहुत कम हो सकता है यदि सहकारी श्रोतों से ही कच्चा-माल मिश्रण और सहकारी बाधार पर ही विद्युत् ही तो विद्युत् मूल्य में १८ - २० प्रतिशत तक कमी हो सकती है। इसका एक विवरण नीचे दिया गया है :-

धान का उत्पादन लागत विवरण

लम्बाई १२ गज, चौड़ाई ४५ इंच, तर्तों की मात्रा ३००, खत ६ सप्त वाठे।

	<u>प्रचलित पद्धति</u>	<u>सहकारी पद्धति</u>
१. सूत १२० काउन्ट का १४ जोट	१४)००	१०)००
२. रेशम १३।१५ काउन्ट चापानी, ६ नीला	२१)२५	१५)७५
३. मजदूरी	२७)५०	२७)५०
४. घुगाई	-)५०	-)५०
५. विद्युत् तर्त (प्रचलित तर्त सहित)	----	३)५०
६. पूंजो पर बुनाव	----	-)२५

७. मजदूरों का कमीशन	१)२५	----
८. व्यापारियों का लाभ	५)५०	----
कुल लागत	<u>७०)००</u>	<u>५७)५०</u>

२. इकाइयों का वाकार :- उत्पादन इकाई का प्रकार कोर्स का भी जो उसका वाकार ज्यों ज्यों बढ़ता जाता है एक सीमा तक मितव्ययता भी बढ़ती चली जाती है। व्यक्ति से संयुक्त कुटुम्ब प्रणाली, संयुक्त कुटुम्ब प्रणाली से सहकारी समिति एवं सहकारी समिति से सहकारी संघ के अन्तर्गत उत्पादन होने पर सामाजिक रूप से श्रम विभाजन के लाभ, बौद्धिक स्थिर लागतों में कमी और ऊपरी तलों की बौद्धिक लागत के रूप में कुछ लागत घटती चली जाती है। कुटोर उद्योग होने से इस प्रकार ५ से १० प्रतिशत तक मितव्ययता प्राप्त की जा सकती है।

३. विद्युत् प्रवन्ध व विपणन की सुविधायें एवं कच्चे माल की उपलब्धता से उपशुद्धि :- इनसे एक ओर तो मध्यस्थों की कमी हो जाती है दूसरी ओर उपशुद्धि की लागत कम होने से, कुछ बौद्धिक लागत भी कम होती जाती है।

४. कोटा से उत्पादन केंद्रों की दूरी एवं यातायात के साधन :- जो स्थान कोटा से दूर हैं वहाँ पर वातागमन एवं यातायात व्यय लागत कुछ घाने से लागत बढ़ जाती है। इनका प्रभाव मुख्यतः श्रम लागत पर पड़ता है क्योंकि उन बुद्धि करों को भी वही मजदूरी को जाती है जो कोटा या केंद्र के बुद्धि करों को दी जाती है। अतः कुल लागत पर इसका कोर्स प्रभाव नहीं पड़ता। परन्तु श्रम का प्रतिफल कम होकर वातागमन व्यय लागत बढ़ जाती है।

उपरोक्त कारणों का अध्ययन करने पर मालूम होता है कि प्रत्यक्ष मजदूरों के कारण उत्पादन का प्रणालीकरण एवं श्रेणीकरण का कार्य अत्यन्त दूर हो गया है। वर्तमान में निरंतर विविध प्रकार से प्रतियोगिता में टिकने के लिये किसकी हल्की करने का रुत पाया जाता है। अल्पव्यय घटक ऐसे हैं जिनके वाधार पर उत्पादन व्यवस्था में उचित परिवर्तन एवं सुविधायें उपशुद्धि कर सामान्य रूप से बढ़े पैमाने की उत्पत्ति के लाभ व औसत मितव्ययतायें प्राप्त की जा सकती हैं।

३. विभिन्न स्तरों पर लागत :-

लागत गणना के रूप में यहां दो प्रतिनिधि उत्पादकों पर विभिन्न

सर्तों पर होने वाली लागत व उसका प्रतिशत दिया गया है। वैसाफि पहले बताया जा चुका है व्यवहार में २५ गजों पाण की जाती है जिसके आधार पर ही कच्चा माल दिया जाता है व मजदूरी निर्धारित होती है। इसलिये यहाँ पर (१) २५० स्त के ४० इंच चौड़े धान की पाण व (२) साड़ी बरो क्लार २०० स्त व ४६ इंच चौड़ी की पाण पर लागत विवरण दिखाया गया है।

स्तर लागत प्रदर्शन तालिका

१. कच्चा माल (बाजार मूल्य पर)	धान की पाण		साड़ियाँ की पाण	
	लागत	प्रति०	लागत	प्रति०
सूज	२४)००		२२)००	
रेशम	३३)००		२६)५०	
बरी	---		२)५०	
योग	<u>५७)००</u>	<u>४३.६</u>	<u>५४)००</u>	<u>४१.४</u>

२. श्रम :-

ताणा एवं सज्जोकरण (२ दिन)	६)००		६)००	
कर्मों में बौड़ने का (१ दिन)	४)००		४)००	
बुलाई (१२ दिन)	३६)००		३६)००	
नलियां मराई (१२ दिन)	१२)००		१२)००	
योग	<u>५८)००</u>	<u>४४.६</u>	<u>५८)००</u>	<u>४४.६</u>
कच्चे माल व श्रम पर कुल-लागत एवं कुल लागत का प्रतिशत	<u>११५)००</u>	<u>८८.५</u>	<u>११२)००</u>	<u>८६.०</u>

३. अन्य लागत :-

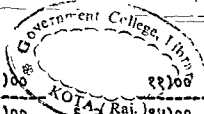
सहायक सामग्री	१)००		१)००	
सज्जा एवं उपकरणों का छाप	१)००		१)००	
धुलाई	१)००		२)००	
योग	<u>३)००</u>	<u>२.३</u>	<u>४)००</u>	<u>३.०</u>
४ उत्पादन लागत	११८)००	९०.८	११६)००	८९.१

४. प्रत्यक्ष एवं विद्यमान लागत :-

ऊपर की व्यय (मध्यसर्तों का समीप)	२)००		३)००	
----------------------------------	------	--	------	--

विक्रय लागत
(व्यापारियों का न्यून-
तमगण)

	१०)००	११)००	
योग	१२)००	१४)००	११.०
कुल योग	१३०)००	१००.००	१३०)०० १००००



उपरोक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि कच्चा माल व श्रम ही लागत के दो मुख्य तत्व हैं। सच्चा एवं उपकरण का मूल्य कम होने से व टिकाऊ होने से उनकी लागत नाम मात्र की होती है। फिस की उच्चता बढ़ने के साथ साथ ही कुल लागत में श्रम व कच्चे माल की लागत एवं अन्य लागतों का अनुपात गमन उतना हो रहता है। पर यदि बरी का काम करके फिस ऊंची की गई तो कच्चे माल की लागत का अनुपात बढ़ता जाता है और श्रम लागत का अनुपात घटता जाता है। यदि नक्काशो का काम करके फिस ऊंची की गई तो श्रम लागत अनुपात बढ़ता जाता है और कच्चे माल को लागत का अनुपात घटता जाता है। ऊपरी व्यय और कु विक्रय लागत का कुल लागत में अनुपात सभी किस्मों में सामान्यतः ६ से १२ प्रतिशत रहता है। यह भी महत्वपूर्ण है कि धानों की अनेक साड़ियों में मध्यस्थों का कमीशन, अन्ध व्यापारियों का लाभ व चुलाई का मूलानुसार प्रतिशत अधिक होता है। क्योंकि इनके विवरण में मूल्य व नगों की संलग्न दोनों बातों का ध्यान रखा जाता है।

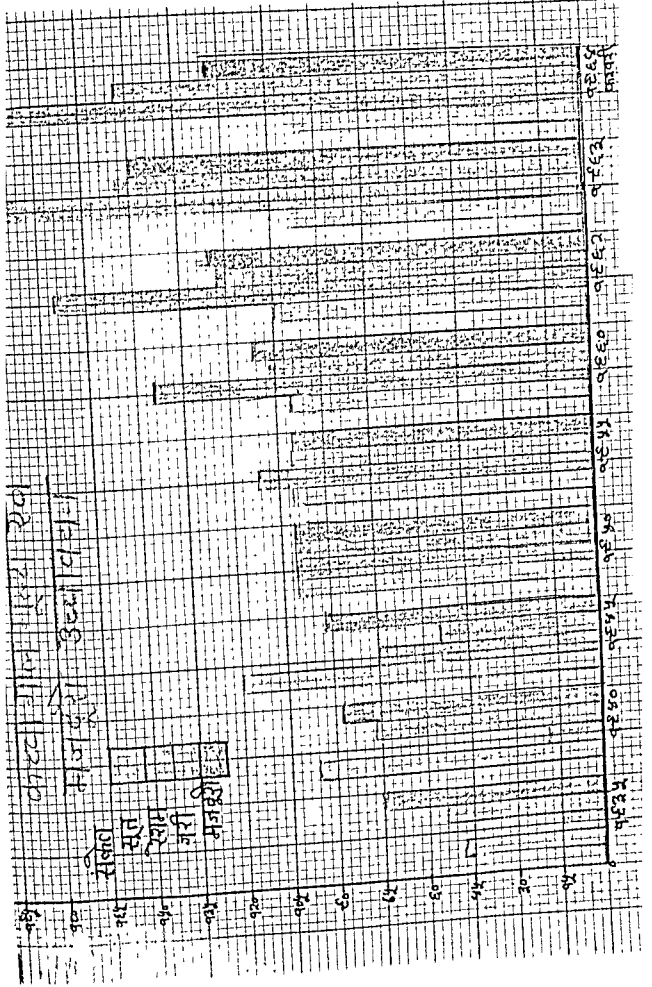
४. मूल्य उच्चावचन :-

पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में मूल्यों का निर्धारण मांग व पूर्ति को स्वतंत्र शक्तियों द्वारा होता है। मसूरिया उत्पादन भी इसका कोई अपवाद नहीं है। मांग व पूर्ति के अनुसार ही समय समय पर इसमें काम करने वाले कच्चे माल, श्रम एवं पूंजीगत सामग्री के मूल्यों में और तदनुरूप उत्पादित सामग्री के मूल्यों में उच्चावचन होते रहते हैं। द्वितीय महायुद्ध काल से ही मुख्य रूपसे मसूरिया उत्पादन का प्रसार दुष्प्र-गोचर होता है। एतदर्थ उसी समय से मूल्य उच्चावचन का विवरण जारी किया गया है।

द्वितीय महायुद्ध काल में इसमें प्रयुक्त किया जाने वाला कच्चा माल जो कि उच्च कोटि का होता है विदेशों से ही लाया जाता था। उस समय इसी - मसूरिया-उत्पादन-करने-से सूत का धाना मुख्य कच्चा-माल था जो कि-एंग्लैंड से लाया

किया जाता था। रेशम की आवश्यकता कम थी जो कि जानान से आयात करके व भारत में उत्पादित रेशम काम लेकर पूरी की जाती थी। फलतः युद्ध के प्रारम्भ होते हुये ही कच्चा माल बाजार से गायब हो गया। परन्तु उत्पादन की सीमा व बुनकरों को रोजगार की आवश्यकता होने से अनिर्धारित तौर पर सूत के मूल्य दुगने तिरुने हुये। जापान के युद्ध में प्रवेश पर रेशम की भी कमी आई और उसका मूल्य भी काफी ऊंचा हो गया। यह बड़े हुये मूल्य युद्ध समाप्ति के बाद तक चलते रहे। फलतः १९४७-४८ में नियंत्रित मूल्यों पर सहाकारी समितियों को सूत दिया जाने लगा दूसरी ओर शांतिकालीन स्थिति स्थापित हो जाने से पुनः इंग्लैंड से सूत मिलने लगा और मूल्य गिरे। १९५० से अब तक सूत के मूल्य बाजार में लगभग समान हैं। रेशम के मूल्य पर भी युद्ध का प्रभाव एक दम पड़ा व मूल्य दुगने हो गये। सरकार द्वारा वितरण की उचित व्यवस्था के अभाव, विदेशों से आयात पर नियंत्रण, एवं मांग वृद्धि के कारण रेशम के मूल्य बाजार में निरंतर बढ़ते चले जा रहे हैं। जरी का मूल्य सूत, रेशम व स्वर्ण के मूल्य पर आधारित होता है। फलतः युद्धकाल में इसका मूल्य भी बढ़ा व परन्तु युद्ध के पश्चात् वापिस कम हो गया। स्वतंत्रता के बाद से स्वर्ण व रेशम के मूल्य में निरंतर वृद्धि के साथ साथ इसका मूल्य भी निरंतर बढ़ता चला जा रहा है। १९६२ में स्वर्ण नियंत्रण के कारण एक दम जरी बाजार से लोप हो गई और मूल्य दुगने तिरुने वसूल किये जाने लगे। फलतः स्वर्ण परी का प्रभाव कम होने लगा व रजत परी द्वारा उसे प्रतिस्थापित करने के प्रयास किये गये। पर भी असफल रहे। कुटीर उद्योगों की स्थिति पर विचार कर सरकार द्वारा सूत की जरी निर्माण शाखा को युद्ध स्वर्ण का कौटा दिया गया। स्वाभाविक रूप से पूर्ण मांग से कम होने व मनोवैज्ञानिक प्रभाव के कारण कौटा देने के बावजूद भी इसका मूल्य स्वर्ण नियंत्रण के पूर्व के मूल्य से लगभग ५० - ६० प्रतिशत अधिक ही रहा जो अब तक चला जा रहा है।

अन्य सामग्री का मूल्य सामान्य मूल्यस्तर के अनुसार ही निरंतर घटता-बढ़ता रहा है। श्रम मूल्य गत सोन चार वर्षों में मांग की अधिकता एवं कौटा के बुनकरों के अन्य उद्योगों में लग जाने के कारण सामान्य मूल्यस्तर से अनेक अधिक बढ़ा है। परन्तु उसके परिणामस्वरूप मोटा कनडा बुने से जाय और मसूरिया बुने से जाय में काफी अंतर पड़ गया है जितने बुनकरों में मसूरिया बुनना सीखने की होइ



सिको
सूत
रेशम
जरी
मजदूरी
रस

व्याज
जाल
रस
क/ज पूरा
उद्योग/व/न/न

03.3.0
08.3.0
13.3.0
18.3.0
23.3.0
28.3.0
31.3.0

95
90
85
80
75
70
65
60
55
50
45
40
35
30
25
20
15
10
5
0

लग गई है। पहले यह विस्तार केवल में हुआ और वहाँ पर सारे बुकर मोटा कड़ा बुना काँड़कर मसूरिया बुने लगे। बाद में मांग के निरंतर बढ़ते रहने पर काँटा क्षेत्र के अन्य बुकर केंद्रों पर भी इसका प्रसार होने लगा। अब तक केवल में इसका एक-धिकार रहा श्रम का मूल्य निरंतर बढ़ता चला गया परन्तु अब जबकि अन्य बुनाई केंद्रों पर भी इसका प्रसार हो गया है और व्यापारियों का वहाँ के बुकारों से सीधा सम्बन्ध स्थापित हो गया है श्रम का मूल्य दिसम्बर ६३ से एक दम १५ ने ३० प्रतिशत तक कम कर दिया गया है। मसूरिया धान जिनको कि वर्तमान में अधिक मांग है उनकी मजदूरी में साधारणतया १० प्रतिशत कमी की गई है। परन्तु वषिन् नकाशो वाले कामों व साड़ियों की बुनाई में काफी कमी कर दी गई है क्योंकि उनकी मांग सर्दी का मौसम होने से कमी कम हो गई है।

उपरोक्त विवरण को पुष्टि निम्न तालिका से ही जाती है :-

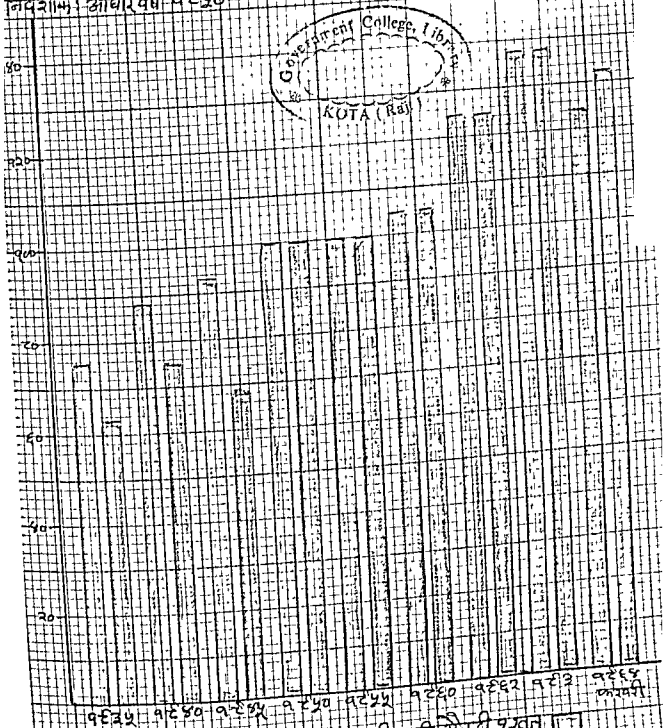
कच्चा माल मूल्य एवं मजदूरी उच्चावचन तालिका

वर्ष	सूत		रेशम		पट्टी		मजदूरी	
	मूल्य ^१	निर्देशांक	मूल्य ^२	निर्देश	मूल्य ^३	निर्देश	मूल्य ^४	निर्देश
	१	२	३	४	५	६	७	८
१९३५	६)००	४८	-)१५	१५	१)७५	५४	३०)	७५
१९४०	१२)००	६६	-)२०	२०	२)५०	७७	३५)	८८
१९४२	१५)००	१२०	-)३०	३०	२)५०	७७	३६)	९०
१९४५	१५)००	१२०	-)७५	७५	१)७५	५४	३०)	६२
१९४७	१३)००	१०४	१)१२	११२	३)००	६३	३८)	६५
१९५०	१२)५०	१००	१)००	१००	३)२५	१००	४०)	१००
१९५५	१२)५०	१००	१)१२	११२	३)२५	१००	४०)	१००
१९६०	१२)५०	१००	१)४५	१४५	३)५०	१०७	४५)	११२
१९६२	१३)००	१०४	१)७५	१७५	४)००	१२३	५०)	१२५
१९६३(नव)	१२)५०	१००	२)१२	२१२	५)००	१५४	६०)	१५०
दिसम्बर से	२२	२२	२२	२२	२२	२२	५०)	१२५

नोट :- आधारवर्ष = १९५० ।
१ प्रति पाँडे, २ प्रति तोला, ३ प्रति तौला, ४ प्रति माणा २०० तत ।

मसूरिया उत्पादन के मूल्यों में उच्चावचन

निर्देशांक: आधार वर्ष १९५०



धान २०० स्वतः [] साड़ी जरी चौकड़ी रखत []

(उपरोक्त तालिका पुराने कुन्वरों एवं व्यापारियों से प्राप्त सूना के आधार पर तैयार की गई है क्तः औसत रूप से मूल्य के उतार चढ़ाव का हस्त प्रतापी है)

हस्त प्रकार गत चार पांच वर्षों में मांग के निरंतर बढ़ने व कुन्वरो जीर विदेशों से आगत पर नियंत्रण, संकटकारीन स्थिति एवं स्वर्णनियंत्रण के कारण कुन्वरो माऊ के मूल्यों एवं मजदूरी में निरंतर वृद्धि हो रही है । १९६३ का ग्रीष्मकाल अब तक के समय में सभी मूल्यों के उच्चतम स्तर का आल रहा है । इनो आधार पर औसतन रूप में सभी मसूरिया उत्पादनों के मूल्यों में वृद्धि हुई है ।

नीचे कुछ कुन्वो हुई उत्पादित किस्मों के मूल्यों में हुये उच्चावचनों को दर्शाया गया है :-

प्रतिनिधि उत्पादन मूल्य उच्चावचन तालिका

आधार वर्ष १९५०

सू	धान २०० सत		साड़ी बरी चौकड़ी १ सत २ तार	
	मूल्य रुपयों में १/४ निर्देशांक		मूल्य रुपयों में १/४ निर्देशांक	
१९३५	३०)००	७५	२५)००	६३
१९४०	३५)००	८८	३०)००	७५
१९४२	३६)००	९०	३१)००	७८
१९४५	३७)००	९३	३७)००	६८
१९४७	३८)००	९५	३५)००	८८
१९५०	४०)००	१००	४०)००	१००
१९५५	४०)००	१००	४०)००	१००
१९६०	४२)००	१०५	४२)००	१०५
१९६२	५०)००	१२५	५०)००	१२५
१९६३	५५)००	१३८	५५)००	१३८
१९६४ कुन्वरी	५०)००	१२५	५३)००	१३३

हस्तसे स्पष्ट होता है कि मसूरिया उत्पादनों का मूल्य निरन्तर बढ़ता

चठा पा रहा है। १९५० से १९६० का काल सामान्यतः स्थिर मूल्यों का काल रहा है। परन्तु १९६० से पुनः मूल्यों में निरंतर वृद्धि हो रही है। इस वृद्धि के मुख्य कारण बाजार का निरंतर विस्तार, विदेशी विनिमय संकट के कारण आयात पर कठोर नियंत्रण एवं स्वर्ण नियंत्रण है। दिसम्बर ६३ से मजदूरी में कमी के कारण उत्पादन के मूल्यों में भी कुछ कमी आई है। मजदूरी में कमी का कारण मसूरिया उत्पादन का कौर्को गांवों में विस्तार होने से कुत्तारों की संख्या में वृद्धि और शीत-काल होने से मांग में कमी है।

५. सरकार एवं सत्कारिता :-

विदेशी विनिमय संकट की इस पड़ी में स्वाभाविक है कि विदेशों से आयात पर प्रतिबंध लगाया जाय फिर भी माल तो जाता ही है, + फ्र बाहे वह किसी भी स्रोत से प्राप्त हो। यह सरकारों निति की बड़ी अक्षमता है कि केवल स्वर्ण नियंत्रण के नाम पर कुत्तारों को कच्चे माल का २० - २५ प्रतिशत अधिक मूल्य देना पड़ता है। लागत का यह भाग न तो कुत्तारों को प्राप्त होता है वो निश्च-दिन संलग्न हो मर्दों, गर्मों वर्षा की परवाह किए बिना उत्पादन कार्य में निरन्तर संलग्न हो रहे हैं। और न हो यह निमित्त माल की उत्पादन लागत कम करके विदेशों में निर्यात करके विदेशी मुद्रा कर्ज का साधन ही बन पाता है। चाहे सीमित मात्रा में ही कच्चा माल बाहर से आयात किया जाय परन्तु उसको वितरण व्यवस्था इस प्रकार को होने चाहिये कि नियंत्रण के नाम पर कौर्को भी अनुचित लाभ न प्राप्त कर सके। इसके लिये सरकार को चाहिये कि बड़ी मात्रा में जो माल काले बाजार में चला जाता है उसे रोककर सीधा कुत्तारों तक पहुंचाने का प्रयत्न करे। यह बड़े आश्चर्य की बात दृष्टिगत होती है कि सारे उद्योग में केवल मात्र एक सह-कारी समिति है, जिसका कि उत्पादन विदेशों में भी बड़ी मात्रा में निर्यात हो रहा है। उसे भी उसकी मांग के अनुसार सूत एवं रेशम बाव आयुक्त एवं केंद्रीय रेशम परिषद से प्राप्त नहीं होता है। वरों के बारे में तो प्राप्त होने का कौर्को प्रयत्न है ही नहीं। सरकार द्वारा वरों उत्पादन के लिये नियंत्रित मूल्यों पर निर्माणशाला को स्वर्ण का कोटा देने पर भी कुत्तारों को वरों बाव भी लामा उन्होंने मूल्यों पर प्राप्त हो रही है जो स्वर्ण नियंत्रण के एक दिन बाद ही गये थे।

स्वर्ण नियंत्रण के नाम पर चुनकरों को बरी का ५०-६० प्रतिशत मूल्य अधिक देना पड़ रहा है ।

इस प्रकार यह बड़ी मिठम्बना है कि विदेशो विनिमय एवं स्वर्ण नियंत्रण होने पर भी सूत, रेशम एवं बरी (देशी एवं विदेशी) आवश्यकतानुसार मिलते हैं । परन्तु केवल नियंत्रण के नाम पर लागत का एक बड़ा भाग उन व्यक्तियों को तैयारों में पहुँच जाता है जिनकी खर्चके लिये कोई उपयोगिता नहीं है । सरकार द्वारा कच्चे माउ को उपउद्भिन् की सुव्यवस्था बासानी से या तो चुनकरों को आय २०-२५ प्रतिशत बढ़ा सकती है या उत्पादन का मूल्य कम करके विदेशी विनिमय के वर्तन को प्रोत्साहन दे सकती है । कम से कम उत्पादन के उस भाग के लिये जो विदेशों में निर्यात हो रहा है ऐसी व्यवस्था की जानी चाहिये कि उसके लिये आवश्यक सम्पूर्ण कच्चा माउ उचित मूल्यों पर मिल सके । ताकि उससे या तो उत्पादन की किस्म ऊँची की जाय या विद्यमान किस्म के मूल्यों में कमी कर निर्यात को प्रोत्साहित किया जाय या फिर चुनकरों को आय बढ़ाई जावे ।

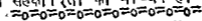
उत्पादन लागत को कम करने में सरकार का योगदान परमावश्यक है । जिसे सरकार सहकारिता के माध्यम से सुविधापूर्वक कार्यरूप में परिणित कर सकता है । वर्तमान में कुल मांग का केवल २ या ३ प्रतिशत और वह भी सरकारी अधिकारियों की इच्छानुसार किस्म का दे देना कोई महत्व नहीं रखता और वह भी ऐसी समिति द्वारा प्राप्त किया जा सकता है जो कि वास्तव में सहकारी समिति है ही नहीं केवल सहकारिता के नाम पर सरकार द्वारा उपउद्भिन् किये गये साधनों को प्राप्त करने का एक अच्छा साधन मात्र है । सहकारिता के माध्यम से उठाये गये विभिन्न कदमों की असफलता देखते हुये यही उचित प्रतीत होता है कि आयात किये जाने वाले कच्चे-माउ को आयात करने का लाइसेंस व नियंत्रित मूल्यों पर बरी मंगाने का लाइसेंस मसूरिया उत्पादक संघ को दिया जाय । यदि हो सके तो इसमें व्यापारी भी भागीदार बन सकी है जिससे उनकी कुशलता ज्ञान एवं शक्ति का अनुपयोग किया जा सके । संघ को इस बात की कूट हो कि वह निश्चित की गई विदेशी मुद्रा से इस उत्पादन के लिये आवश्यक किस्म का माउ आयात कर सके । इसके क्रुणार ही सहकारी समितियों को अन्तर्गत कर्मों की संलग्नानुसार सहायक पंजीयक, सहकारी समितियों द्वारा या सहकारी समितियों के संघ के संवाउरों द्वारा परिमित दिया जाय ।

हाल ही से रिजर्व बैंक द्वारा केंद्रीय सहकारी बैंक द्वारा मसूरिया उत्पादन के लिये कार्यशील पूंजी हेतु ऋण देने पर गारन्टी योजना लागू करने की भी स्वीकृति मिली है उसके अनुसार आज्ञा है कोटा केंद्रीय सहकारी बैंक जिसके पास बने पर्याप्त कोष हैं मसूरिया उत्पादक सहकारी समितियों को ऋण दे सकेगा। यह ऋण नकद रूप में सहकारी समितियों को न दिया जाकर सहकारी समितियों के संघ के पास सहकारी समिति के नाम में जमा करा दिया जाना चाहिये जहां से सहकारी समितियां आवश्यकतानुसार मात्रा एवं मूल्य का कच्चा माल उस राशि का प्राप्त कर सकें और मजदूरी चुकाने के लिये आवश्यक नकद राशि भी प्राप्त कर सकें। अर्थात् बाद में निर्मितमाल के ^{मूल्य का} पुगतान सहकारी समिति को न दिया जाकर सीधा केंद्रीय सहकारी बैंक की कर दिया जाय।

इसके साथ ही इस बात के लिये भी प्रयत्न किये जाने चाहिये कि भारत में ही उच्च कोटि का सूत व रेशम तैयार किया जाय जिससे एक ओर तो विदेशी मुद्रा की बचत हो दूसरी ओर पर्याप्त मात्रा में तथा उच्च कोटि का उत्पादन करके सस्ते मूल्यों पर विदेशों में निर्यात कर विदेशी विनिमय का कर्ज किया जाय। साथ ही स्थानीय बाजार का विस्तार हो जिससे जैको वेरांणगर बुनकरों को रोजगार मिल सके। कोटा में एक बड़ी उत्पादक लघु उद्योग स्थापित किया जाना चाहिये, जिसमें स्वर्णवरी की कमी पूरी हो सके और इस उत्पादन के हेतु कम मूल्यों पर मिल सके। जिससे इनके मूल्यों में या बुनकरों की आय में पर्याप्त कमी या वृद्धि हो।

६. निष्कर्ष :-

मसूरिया उत्पादन की लागत में कच्चा माल और श्रम दो प्रमुख घटक हैं। कच्चे माल के सम्बन्ध में बड़ी कठिनाइयां एवं अमितव्ययताएँ हैं जो उत्पादन लागत को २० से ४० प्रतिशत तक बढ़ा देती हैं। इनकी विपणनकारो वास्तव में सरकारकी अग्रभार पूर्ण एवं असकल नीतियां एवं सहकारी विभाग की अक्रियाशीलता है। यदि इन कठिनाइयां एवं अमितव्ययताओं को कम किया जा सके तो उत्पादन लागत १५ से ४० प्रतिशत तक कम हो सकती है। विपणन में होने वाली अमितव्ययता की मात्रा कच्चा माल प्राप्त करने में होने वाली अमितव्ययता की अपेक्षा ^{कम} कम है। बुनकरों को पर्याप्त मात्रा उपलब्ध है आवश्यकता उनके समुचित प्रशिक्षण को है। इस प्रकार प्रभावपूर्ण सरकारी कदम एवं सहकारिता का माध्यम हो एक मात्र हो है।



वध्याय-सप्तम

वि प ण न

१ मांग का क्षेत्र एवं स्वरूप :-

किसी वस्तु विशेष की किसी क्षेत्र विशेष में या किसी वर्ग विशेष में किसी समय विशेष पर मांग वहाँ की प्राकृतिक परिस्थिति, रीति रिवाज, फैला, परम्परा, राजनैतिक स्थिति एवं आर्थिक स्थिति पर निर्भर होती है। तदनुसार ही भारत में बतित काल में ग्रीष्म ऋतुवायु, सादे वस्त्रों का पहनाव, कठोर और रुचि, राजाजी द्वारा संरक्षण एवं समृद्धता के फलस्वरूप महोन, दुःखता से बने हुये एवं कठोरपूर्ण वस्त्रों का उत्पादन होता रहा है।

पाण्डू, घाँती और माड़ी पहाँ तक प्रमाण मिठे हैं प्रागैतिहासिक युग से भारतीय वैशुभ्मा का अभिन्न का रहे हैं। प्रागैतिहासिक युग में इनका स्वरूप पूर्णतः भिन्न था।^१ उस समय यह कनास से काते कपड़े से न बनकर अन्य किन्हीं वस्तुओं के भिन्न रूपों में बनते थे ऐसा अनुमान किया जाता है। वैदिक काल में वस्त्रों में कनास के प्रयोग के स्पष्ट प्रमाण वेदों में मिलते हैं और साथ ही पाण्डू या उष्णोष्ण व घाँती का और कहीं के विभिन्न भाँों का कई जगह उल्लेख मिलता है।^२ वैदिक साहित्य में कनास का सर्वा प्रथम उल्लेख ऋग्वेद में आया है।^३ महाजन पद युग में (६४२ ई०पू० से ३२० ई०पू०) महापरि निर्वाण सूत्र के टीकाकार विहित कनास पर टीका करते हुये लिखते हैं कि "बुद्ध का मृत शरीर बनारस के बने कपड़े में लपेटा गया था और वह इतना महोन और गंठकर बुना गया था कि तैर तक नहीं सौत सदत्ता था।" इस काल में पाण्डू, घाँती, हुपट्टा और माड़ी साधारण लोगों की वेशभूषावाही चुकी थी।^४ इसी प्रकार मौर्यकाल में (ई०पू० तीसरी सदी से पहली सदी तक) भी भारत में बुनाई के साथ नकलारी भी करधे पर ही बुन ली जाती थी जिते तीलीकार पद्धति कहा जाता था।^५ उस समय सूत और रेशम मिठाकर मो

१. प्राचीन भारतीय वेशभूषा - डा० मातीवन्ड पृष्ठ ३ नं० २ वही पृष्ठ १५, नं० ३ वही पृष्ठ नं० २६, ४, वही पृष्ठ १७, ५, वही पृष्ठ ५१।

कनड़ा बुना जाता था जिसे दुकूठ या व्यामित्रगान कहा गया है। यह कनड़ा रंग विरंगे सूती से भी बुना जाता था (वर्णान्तरासंसृष्ट) उस समय कनड़ों के नाम उनके उत्पत्ति स्थान के आधार पर होते थे जैसे मथुरा का बना माधुरा, कलिंग देश का ककि-गक, काश्मिर का काशीक, बंगाल का वांगक, बत्सदेश का वात्सक, महिषदेश का महिषक आदि।^१ भारतीयों के वस्त्र सुनहरे काम वाले व रत्न जटिल भी होते थे।^२ श्रांगुण में (ई०पू० दूसरी सदी) कामदार, फातरदार, लंगोतरा, गररिदार, उदुदार आदि विभिन्न प्रकार के लंकार युक्त, वस्त्र जिन पर फूल पत्तियां बनी होती थीं जैसे माफे व उदुदार, चुरदार, बाभूषण युक्त, पानाकार आदि पाड़ियां विभिन्न मार्गों में प्रचलित थीं।^३ इसी प्रकार क्रेतीवैसंपुषा में मुदीदार साड़ी, मापी साड़ी, चौड़े किलारे जिनपर चौकुलिया औरसहरसा की नेईं वाली साड़ी कामदार, बौद्धनी, बूनदार करीने की साड़ी और चारखाने दार बौद्धनी प्रचलित थीं। सातवाहन युग (ई०पू०प्रथम शताब्दी) में प्रायः सभी गुरुप विभिन्न प्रकार की पाड़ियों व धोतियों पलते थे।^४ जो कि जग जग स्थानों पर जग जग प्रकार से बांधे जाते थे। स्त्रियां साड़ियां व सिर पर बौद्धनी पलती थीं। कुषाण युग (ई० पहले शताब्दी से तीसरी शताब्दी के प्रारम्भ तक) में सूती कनड़ों का चमक बहुत ही गया था व विभिन्न स्थानों पर वारिक सूत की मउमउ, बनती थी और कलकौ परिमाण में नियाते होती थी। राम, भारतीय मउमउ का मुख्य वाजार था। वहां जवही मउमउ को 'वैटस टेक्स्टाइलिस' (हना की तरह कपड़े) और नेबुडा कहा जाता था।^५ साधारणतः लीज होती और हुपट्टा पलते थे व राधा, मंची, कंगुल सैठ आदि पाड़ियां भी पलते थे।^६ तामिळ स्त्रियां उस समय ऐड़ी तक पहुंचती साड़ी पलती थी। उसके लिए कलक सनाई, तामिळ स्टूटिंग ब्लेड इयर्न एनी ५०११० पर लिखा है, कि

चार वनितार्ये वैठ गंधर्वों के मध्य तक पहुंचती साड़ी पलती थी जिसका पीत इतना महीन होता था कि शरीर नंगा देख पड़ता था।^७

१. वही पृष्ठ ५६, २. वही पृष्ठ ६१, ३. वही पृष्ठ ६६, ४. वही पृष्ठ ७१-७३, ५. वही पृष्ठ ७७, ६. वही पृष्ठ ८४, ७ वही पृष्ठ ८४, ८. वही पृष्ठ १०२, ९. वही पृष्ठ १०३।

गंधार में स्त्रियां सारे शरीर को डकने पागो साड़ी पहनती थी। उस समय जतने तथा विदेशी स्त्रियां राधा के जंतराकर का काम करती थी। यवनियां गुड्डों के ऊपर तक पहुंचना कंबुक व क्लर कंब मुक्त गुन्टदार पापरा पहनती थी। मथुरा में रत्न लीन प्रायः कामदार साड़ी दिन भर सोने के बूजाकार शोष पट्ट ली होती थी पहनती थी। विदेशी उरानो जारा रूक प्रायः टोपियां पहनती थी। मथुरा में स्त्रियां प्रायः रेडों तक पहुंचती साड़ियां और दोनों कन्धों को डकते हुए नोने लटकने वाले हुन्ट्टे पहनती थी। मध्याह्नकालीन उत्तर और पश्चिम भारत में स्त्रियां प्रायः लहंगा पहनती थी। जानाराम में कालिा नामक वस्त्र का वर्णन जामा है जिसके लिये लिखा है "कालिा पुराणनिधा कालिा बक्ष" यह सांस्कृतिक के समान स्वच्छ और पारदर्शी था। गुप्ताकाल में मथुरा को उरिया प्रसिद्ध थी। नासाधाम पलाजों में राजकुमार गौतम जो कंबुक को गोतो और हुन्ट्टा जी रीन महोनस और मुजायम थे और स्त्रियों पर सुहरा काम था, चले जागाना गया है वह युग में काड़े का रस्ता पहरा आचार था कि बहुत से व्यापारी लाल रक हो किस के काड़े रली थी।

इस प्रकार प्राचीन काल में हमारे देश को पलायु के अनुसार दो अधिकार गरम और बुश्क रहती है गोतो, हुन्ट्टा, साड़ी, चानर, और साड़ी जनुका और स्थास्थ कर पहराने थे। इतोलिी अधिकार भारतीय शिल्पे काड़े नहीं पहनते थे। साधारणतया पुरुष गोतो, हुन्ट्टे और साड़ियां व स्त्रियां साड़ियां व रलों रलों हुन्ट्टे भी पहनती थी। लेखित में बिना ति) काड़े ही रीत पारम्परिक रंग से पहने पाते थे कि बिकरी पहने जाने के सौन्दर्य में अविभूति होती थी और काड़े मो कड़े सुहावने लगते थे।

गुप्ता युग में भारतीय संस्कृति का उरानो, बहगानो, और नोनो संस्कृतिां के साथ व्यापारिक व धार्मिक सम्बन्ध स्थापित हुआ। उनके नाम ही संस्कृति के अन्य चीनों के समान ही वैश्वभूषा पर भी प्रभाव पड़े बिना नरक कता। यानों यवनों के जाग्रण हुए व यान साम्राज्य को स्थापना हुई। बुंति में जीन उंडे मुस्लीं से जाये थे जतः इनको वैश्वभूषा तनुकुल थी और लिडे व जतन से कड़े वस्त्रों का उत्प

१. वही पृष्ठ १२२, २. वही पृष्ठ १५०,

३. वही पृष्ठ १३।

प्रमुख स्थान था। शासकों की नकल करने की परम्परा के अनुसार भारतीयों ने भी उनकी वैशमूषा ज्वकन, कोट, कुर्ते, चूड़ीदार पायजामे, पाघरे, जोड़ने आदि का प्रयोग प्रारम्भ किया। जहाँ जहाँ मुसलिम प्रभाव अधिक रहा यह प्रभाव बढ़ता चला गया। लोगों के शासन काल में उनसे प्रभावित हो उनको वैशमूषा को बनाने का प्रवृत्त नज़ा परंतु यह वैशमूषा भारतीय बज्जायु के अनुसार न होने के कारण उनके राज्य काल में एक वर्ग विशेष तक सीमित रही।

भारतीय संस्कृति की धरोहर के रूप में आज भी भारतीय बुनकर अधिकतर धौती, साड़ी, हुपस्टा, चूदर, पाड़ो आदि के लिये ही कनड़ा बुनते हैं। मुसलिम काल में भी शरीर को सजाने के लिये उपयुक्त वस्त्र वस्त्र पाड़ो, हुपस्टा, जोड़नी आदि के लिये महीन वस्त्र जिनमें मऊ, चौखाना, और डोरिया प्रमुख थे प्रचलित रहे। जैसा कि पहले अध्याय में बताया गया है मसूरिया कुतावट का उद्गम डोरिया और चौखाना दोनों कुतावटों के सम्बन्ध से है। यह भी प्रारम्भ से ही अत्यधिक महीन सूत से बुना जाता रहा है। मुसलमानों में नीचे सम्पूर्ण बदन को ढकने वाला मोटा वस्त्र पहनकर ऊपर से फलापूर्ण धारीक वस्त्र पहनना प्रारम्भ से ही बड़े परानों की परम्परा रही है। जतः चौखाना, डोरिया व नकलाशी की हुई मऊ के वस्त्र ऊपर से जोड़ने के लिये पहले से प्रयुक्त किये जाते रहे होंगे। कोटा चूंकि प्रारम्भ से ही मुसलिम प्रभाव में रहा था कतएव यहाँ भी वह परम्परा विद्यमान थी। यहाँ एक ओर तो चौखाना व डोरिया बुने जाते थे जो जोड़ने व हुपस्टे के काम जाते थे दूसरी ओर उसी प्रकार के महीन सूत की पाड़ियाँ व माफे बुने जाते थे। यह सब उत्पादन प्रारम्भ से ही मारवाड़ के व बम्बई के बाजारों में जाता रहा है। मारवाड़ व बाँहरों में एक साथ दो जोड़ने, जोड़ने की परम्परा के कारण ऊपर के जोड़नों व मारवाड़ियों में पाड़ो वैशमूषा का मुख्य भाग होने से पाड़ो के रूप में इनका प्रयोग होता रहा है। उच्च कोटि के साफ़ों का उपयोग प्रारम्भ से ही राज्य परानों मंत्रो, मलाज, साधुकार आदि में विशेष उत्सर्गापर होता रहा है। जतः मसूरिया कुतावट के प्रारम्भ होने पर हमने जो वस्त्रों का सर्वप्रथम प्रयोग जोड़ने व हुपस्टों के रूप में किया जाने लगा। बाद में पैरों के रूप में भी इनका उपयोग हुवा और नकलाशी के लिये जैसा कि बताया गया है यह प्राचीन काल से भारतीय परंपरा रही है। सतर्था उच्च विस्स के सूत व रेशम के वस्त्रों में बरी का प्रयोग भारतीय

परम्परा रही है।

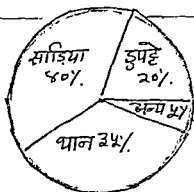
प्रारम्भ में मसूरिया उत्पादकों के प्रमुख ग्राहक देश के विभिन्न भागों में व्यापक मारवाड़ी व बाँहरा लोग थे। जहाँ जहाँ भी मारवाड़ी थे मसूरिया वस्त्र बनाया करते थे। बोकानेर, बम्बई व कलकत्ता इसके प्रमुख बाजार थे। स्थानीय उप-भाग में अधिकतर सस्ता व सूती मसूरिया ही काम जाता था। केवल विवाह शादी एवं अन्य उत्सवों पर ही उच्च कौटि के मसूरिया वस्त्र काम जाते थे। भारतीय सभ्यता की प्रतीक पगड़ी व धौतो राजस्थानियों की वैशमूषा का प्रमुख भाग प्रारम्भ में ही रही है व आज भी है। इनलिथे राजस्थान के विभिन्न भाग विभिन्न प्रकार की पगड़ियों के लिये प्रसिद्ध हैं उनमें से कोटा भी बारीक सूत की पाड़ियाँ जिन्हें पैना कहा जाता है के लिये प्रसिद्ध रहा है। मारवाड़ में धनो परिवारों में नीचे बौढ़ने के ऊपर चलने के लिये सूत व रेशम के धागों से बने धरी के काम बने वाले मसूरिया के बौढ़ने अत्यधिक पसन्दकिये गये हैं। धनिक समाज होने से उनके लिये उनका क्रय करना अधिक भारी नहीं पड़ता। इसीलिये उस समय कुछ उत्पादन का लगभग 95 प्रतिशत उत्पादन मारवाड़ में चला जाता था। ऐसा कहा जाता है कि बोकानेर में बड़े से बड़े धनवान से लेकर किसी भी जाति के गरीब से गरीब के यहां पर भी विवाह के अवसर पर मसूरिया का बौढ़ना देना उच्च माना जाता है। इस प्रकार रियासत काल में मसूरिया उत्पादन के बाजार की लगभग यही स्थिति चरती रही। उस समय लगभग 70 प्रतिशत उत्पादन बौढ़ने व पाड़ियों के लिये, 15 प्रतिशत उत्पादन पाड़ियों के लिये व शेष 15 प्रतिशत उत्पादन अन्य कार्यों के लिये होता था।

स्वतंत्रता के स्वर्णिम सूर्योदय के साथ भले ही पुरुषों ने अंधे होकर दासत्व का प्रभाव अनुभव्य बनाये रखने के लिये भारतीय उद्योग के प्रतिकूल पारवासी वैशमूषा की नकल की हो परंतु भारतीय नारियों ने ज्योंही उन्हें नत्न ज्ञानरूपी प्रकाश मिला भारतीय संस्कृति के प्राचीन आदर्श साड़ियों को नौ यगं की गर्म एवं सुरक्षित जलवायु के स्तुतुल है की अभाकर अपनी बुद्धिमत्ता का परिचय दिया है। वैसा कि बताया गया है प्राचीन काल में भारतीय महोन परंतु कलापूर्ण साड़ियों की कलात्मक ढंग से पहनते थे। तदनन्तर ज्यों ज्यों बाहर के अर्थिकियों की मसूरिया की महोन परंतु कलापूर्ण, आकर्षक व सुभावनी साड़ियों का ज्ञान हुआ उन्हें बनाया गया। किंतु

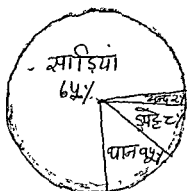
सेवका विषय यह रहा है कि इसके प्रचार के लिये व इनको बाहर के व्यक्तियों के ज्ञान में लाने के लिये बुनकरों, सेठियों या सरकार द्वारा जोई प्रयत्न नहीं किये गये हैं। फिर भी स्वाभाविक रूप से कोटा के विकास के साथ साथ व साड़ियों का प्रचलन बढ़ने के साथ साथ एक ओर तो उत्पादन को मात्रा में वृद्धि हुई है और दूसरी ओर धानों की अनेका कटापूर्ण नकलाओं को साड़ियां अधिक बुनो जाने लगी हैं। फलस्वरूप: वहां १९४८-४९ में सम्पूर्ण कोटा विभाग में इसका उत्पादन ४-५ गुना करने के लगभग था वह १९५८-५९ में बढ़कर लगभग १४-१५ लाख रुपये का हो गया। इस काल में स्थानीय विद्रय व निर्यात दोनों में वृद्धि हुई है परन्तु स्थानीय विद्रय को अनेका निर्यात में लगभग तीगुनी वृद्धि हुई है।

चर्मण्यमती को महती कृपा से कोटा का माण्योदय हुआ और उनके साथ ही मसूरिया वस्त्रों का भी। विमुक्त उपग्रहिय से लौयोगीकरण, (सम्बन्ध वैरान बादि) के कुराण एक ओर तो यह यात्रा का केन्द्र हो गया दूसरी ओर सिंचित एवं उच्चगरीय जनसंख्या की वृद्धि हुई गिनने मसूरिया की पैप कीमती व कटापूर्ण साड़ियां की स्थानीय विक्रो बढ़ी। सबसे साड़ियां बाहर गईं तो इनका पन्नाव भी स्वयं इनके प्रचार का माध्यम बना और तेजी के साथ इनकी बाहर से मांग होने लगी। मांग वृद्धि के साथ साथ ही विभिन्न उपनोक्ताओं कीरुधि के अनुकूल विभिन्न प्रकार की कटापूर्ण, रंगीन व जरी की साड़ियां बनाई जाने लगी। मसूरिया - साड़ियों की लोकप्रियता का कारण केवल इसकी कटापूर्णता नहीं परन्तु इसकी बुनावट हुई क्योंकि गत दो वसों में साड़ियों के साथ साथ मसूरिया धानों की भी बाहर से भारी मांग आई है। वित्तका कारण यह है कि यहां के बुनकर इनको कटात्मक बनाने में आवश्यक मात्रा में सफलीभूत नहीं हो सके हैं। एतदर्थ, मसूरिया धानों को मंगाकर उनपर विशिष्ट प्रकार की कटात्मक व बाकफैक हवाई और कतोदाकारी करके उनका उपयोग साड़ियों के साथ साथ पारवात्य वेलभूषा के नम्य विभिन्न दस्तों में भी किया जाने लगा है। स्थानीय व्यापारी वर्तमान में पक्ष बाहर जाते हैं तो मसूरिया कपड़े के विभिन्न उपयोगों की देखकर दांतों तडे खुली दया लेते हैं। वर्तमान में ऐसी स्थिति है कि मसूरिया वस्त्रों के उत्पादकों एवं स्थानीय व्यापारियों को भी इस बात का पूर्ण ज्ञान नहीं है कि किस प्रकार से दिन रूपों में इसका प्रयोग हो रहा है ? अब तक बोझानेर व ढाकका हो इनके

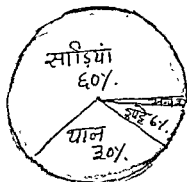
उत्पादन के विभिन्न स्वरूपों का बदलता अनुपात



१९५०-५१



१९६०-६१



१९६२-६३

बाजार थे। लेकिन पर्यटकों की मात्रा में वृद्धि व कानपुर, दिल्ली, पम्बई, एन्दौर आदि के उद्योगपतियों द्वारा कोटा में उद्योग स्थापित होने से वहां के उपभोक्तियों का कोटा में सम्पर्क व यहां से नमूने के तौर पर मसूरिया साड़ी व धान ले जाना और वाद में वहां से भारी मांग के कारण दिनों दिन इन स्थानों पर भी निर्यात बढ़ रहा है।

केवल भारत में ही नहीं गत वर्षों से विदेशों में भी विशेषकर अमेरिका में इसकी भारी मांग ली रही है। १९६२ में श्रीमती बेनेडो के जयपुर तागमन पर कैमू की सज्जारी समिति द्वारा उन्हें तथा उनकी बहिन को मसूरिया की उत्कृष्ट मोटि की स्वर्ण वरपत्र छरी कौष पदमेदार साड़ी भेंट की गई थी। इसके साथ ही उनके दल के अनेक व्यक्ति मसूरिया की साड़ियां व धान खरीदकर ले गये। तब से अमेरिका से मसूरिया पस्ना की मांग निरंतर आ रही है। वहां तक विदित हुआ है उसके अनुसार वहां दुपट्टा (स्लाफी), प्रक व नृत्य वेशभूषा में इसका प्रयोग किया जाता है।

इस प्रकार गत चार पांच वर्षों में मसूरिया उत्पादन लगभग ढाईगुना हो गया है। ५८-५९ में इसका वार्षिक कुल उत्पादन १४-१५ लाख के लगभग था जबकि अब ३६ लाख रुपये के लगभग हो गया है। इसकाळ में एक और तो साड़ियों के साथ साथ धानों की मांग बढ़ी है दूसरी ओर निर्यात की बड़ेदा स्थानीय विदेशों में अधिक वृद्धि हुई है जिससे स्थानीय छोटे छोटे दुकानदारों की संख्या में भी वृद्धि हुई है। स्थानीय विदेशों में अधिक वृद्धि के दो कारण रहे हैं। प्रथम तो पर्यटकों की मात्रा में वृद्धि और दूसरे मांग की बड़ेदा पूर्ति कम होने से बाहर के उद्योगपतियों द्वारा यहां आकर क्रय करके ले जाना। इसकाळ में साड़ियों व दुपट्टों में नककाशी के काम में भी काफी विकास हुआ है।

वर्तमान में साड़ियों, धानों, दुपट्टों व पैरों का उत्पादन क्रमशः ६०, ३०, ८, व १ प्रतिशत के लगभग है। जबकि १९५०-५१ में यह प्रतिशत क्रमशः ४०, २०, ३५, व ५ प्रतिशत था। १९६०-६१ में यह प्रतिशत क्रमशः ७५, १५, ८ व २ प्रतिशत के लगभग था। इस समय जरी के काम वाली साड़ियों की बड़ेदा रंगीन एवं कलापूर्ण साड़ियां अधिक पसन्द की जाती हैं। चूंकि यहां के अनुसार इस कार्य में अधिक दवा नहीं है और न ही यहां अच्छी एवं आधुनिक हथारों की कमी

मसूरिया उत्पादन एवं विपणन

५०

३५

२०

३५

२०

१५

१०

५

इलाव

प.इलाव

बि.इ.प.इलाव

१९५८-५९

१९५९-६०

१९६०-६१

१९६३-६४

अनुमानित

स्थानीय विक्रय

□

बाहर निर्यात (द्वारा म)

व्यवस्था है। अतः यहाँ से ४६ ईव बोर्डे धान मंगाकर उन पर बयपुर, दिल्ली और बंगलौर में अर्पाई या क्लीवाकारी करके उनकी साठियां काई का रही है। स्थानीय उपभोग के लिए इसकी विप्री देवल ५०,००० रुपये वार्षिक के लगान है।

नीचे दी गई तालिका गत १५ वर्षों में इसके उत्पादन व विप्री में हुई वृद्धि को स्पष्ट करती है :-

गत १५ वर्षों में
उत्पादन एवं विप्री में वृद्धि दर्शन तालिका

सं.	कुल उत्पादन रूपये	स्थानीय विप्री रूपये	निर्यात रूपये
१९४८-४९	३,६५,०००)	९५,०००)	२,७०,०००)
१९५८-५९	१४,००,०००)	२,९०,०००)	११,१०,०००)
प्रतिशत वृद्धि	२८४ प्रतिशत	१२१ प्रतिशत	३४१ प्रतिशत
१९६२-६३	३६,००,०००)	६,००,०००)	३०,००,०००)
१९५८-५९ से ६२-६३ में प्रतिशत वृद्धि	१५८ प्रतिशत	१८५ प्रतिशत	१५२ प्रतिशत
१९४८-४९ से ६२-६३ में प्रतिशत वृद्धि	८८६ प्रतिशत	५३२ प्रतिशत	१०११ प्रतिशत

२- प्रबलित विप्री पद्धति :-

उत्पादन, वित्त प्रबन्ध और विप्री अन्तर सम्बन्धित घटक हैं। स्वतन्त्र विप्री संगठन, उत्पादन संगठन और वित्त प्रबन्ध के ऊपर आभारित रहता है। ऐसा कि पहले बताया जा चुका है मसूरिया बुनकर चार प्रकार से उत्पादन करते हुए पाये जाते हैं :-

- १- स्वयं के लिए,
- २- सैठियाँ (मध्यस्थ) या गठरी वालों के लिए,
- ३- सहकारी समिति के लिए, और

तदनुरूप ही विच प्रवृत्त होता है। विपणन प्रक्रिया को हम सुविधापूर्ण

विवरण - पत्र
स्थानीय विद्यमान एवं निर्यात (देश के विभिन्न र

क्रमां०	नाम व्यापारी	१९४८-४९		कुल	१९५०-५१		कुल
		स्थानीय	निर्यात		स्थानीय	निर्यात	
१	२	३	४	५	६	७	८
१.	श्री लक्ष्मण दान मदनदास	२००००)	५००००)	७००००)	३५०००)	३३००)	३८३०५ हजार
२.	श्री मजसूम दान गौविंद	२००००)	५००००)	७००००)	५००००)	२३००)	३३०० ५०००)
३.	श्री प्रेमराज भन्साज	२००००)	७००००)	९००००)	५००००)	३३००)	३३०० ५०००)
४.	श्री कौटा रत्न मण्डार	३००००)	१०००००)	१३००००)	४००००)	३३००)	३३०० ४०००)
५.	श्री शिवराज भन्साज	--	--	--	--	--	--
६.	श्री कौटा गाड़ो स्टोर	--	--	--	१००००)	४०००)	५०००)
७.	श्री कल्याणमठ सल्कारा	--	--	--	--	--	--
८.	गाड़ो	--	--	--	--	--	--
९.	गाड़ो निकेत	--	--	--	--	--	--
१०.	बाकर सञ्चारो समिति नं० ८२७ देसू	--	--	--	--	--	--
११.	कल्प	५०००)	--	५०००)	२५०००)	--	२५००)
कुल योग		९५०००)	२९००००)	३६५०००)	२९००००)	११३००)	१४३०० ६०००)

नोट :- १. १९४८-४९ एवं ५०-५१ के बारे में सूनायें पिछा सांख्यिका सचिवारी के व
२. १९६२-६३ के सम्बन्ध में सूनायें वीजस एवं कुमाना है। ३. १९४८-४९ व
के लिए, सचिवारियों के लिए व व्यापारियों के लिए किया जाने वाला संपूर्ण
उत्पादन व्यापारियों के पास बाकर रक्षित हो जाता है।

जो माल धुलाने का होता है उसे व्यापारी व सहकारी समिति कोटा में जो धोजी मसूरिया कच्चे घाँते हैं उनसे धुखा लेते हैं। इस प्रकार संपूर्ण उत्पादन विज्ञ के लिए तैयार होता है।

(२) स्थानीय विज्ञ :-

स्थानीय विज्ञ वर्तमान में कुल उत्पादन का लगभग १६-१७ प्रतिशत होता है। इस विज्ञ में भी स्थानीय उन्माँक्तसर्जों का भाग केवल १० प्रतिशत के लगभग ही होता है। बाहरी पर्यटकों, विवाह शादी आदि महोत्सवों पर जाने वालों व बाहर के उन व्यक्तियों के लिए जो कोटा में उषम कर रहे हैं वापिस जाते समय यह प्रश्न उपस्थित होता है कि कोटा से क्या ले जाया जाये ? इस समस्या का हल मसूरिया को साड़ियाँ बौढ़ने आदि करते हैं। स्थानीय विज्ञ का लगभग ४० प्रतिशत विज्ञ इसी प्रकार के उन्माँक्तसर्जों को ही जाता है। इसके साथ ही बाहर से भी व्यापारी स्वयं आकर इन्सानुसूल किसम का माल प्रतियोगी दरों पर खरीद कर ले जाते हैं। स्थानीय विज्ञ का लगभग ५० प्रतिशत विज्ञ इस प्रकार बाहर के व्यापारियों को होता है।

(३) निर्यात :-

बाह्य बाजारों में परम्परा से बीकानेर क्षेत्र (संपूर्ण मारवाड़) व कच्छा इसके प्रमुख बाजार रहे हैं। वर्तमान में देश के सभी बड़े बड़े नगर दिल्ली, बंबई, मद्रास, इन्दौर, जयपुर, कोयपुर, मन्दायौर, नागपुर और मारवाड़ के सैठ लोगों के निवास स्थान नागौर, कुन्कुनु आदि इसके प्रमुख बाजार हैं। जहाँ जहाँ भी मारवाड़ी रहते हैं या जहाँ से कोटा के व्यापारियों के व्यापारिक संबंध हैं मसूरिया वस्त्र भेजे जाते हैं। बाहर संपूर्ण निर्यात डॉक द्वारा होता है। बंबई व दिल्ली वर्तमान में विकसित हो रहे हैं, बड़े बाजार हैं। निर्यात अत्रक साधारणतया व्यापारी और सहकारी समिति ही करती थी परन्तु अब कुछ सैठिये भी करने लगे हैं किन्तु यह माना बहुत कम है। साथ ही एक फर्म में जो अब तक बीकानेर व कच्छा में मसूरिया कच्चे का व्यापार करती थी कोटा में अपनी दुकान खोल ली है। यह यहाँ से मैजिस्ट्री से ख़रके या कुन्करों से बुवाकर

बोकाराने
वस्ती दुकानों पर ~~खुद~~ व कठकता में स भेज देती है। समय समय पर कोटा के
दुग्ध व्यापारी भी इधर से सामान लेकर दिल्ली बंबई आदि जाते हैं और वहाँ
पर उस सामान को बेच जाते हैं और उधर से कच्चा माल ख़री करके ले जाते हैं।

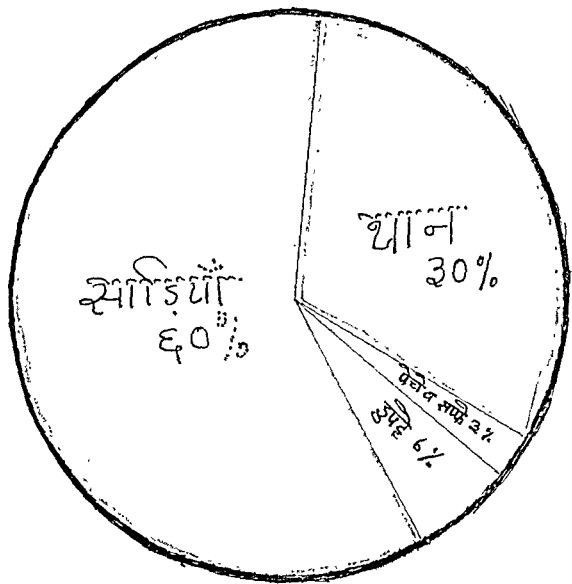
(४) सहकारी समिति द्वारा विप्रेयः-

बुनकर सहकारी समिति नम्बर ८२७, कैथून वस्ती उत्पादन का लगभग संपूर्ण
भाग निर्यात करती है। राजस्थान राज्य बुनकर सहकारी संघ लिमिटेड, बयपुर
अलिष्ठ भारतीय हाथ कर्मा एवं एस्त म्हा निर्यात निगम लिमिटेड, कलकत्ता,
हेन्डलूम हाउस दिल्ली और अलिष्ठ भारतीय हाथ कर्मा वस्त्र विप्रेय समिती
समिति इसके प्रमुख ग्राहक हैं। इसके अठाना समय समय पर विभिन्न नगरों में
स्थित सहकारी हाथ कर्मा वस्त्र विप्रेयालयों एवं विप्रेय गृहों से भी मांग जाती
रहती है जिसकी पूर्ति इसी सहकारी समिति द्वारा की जाती है। अलिष्ठ भारतीय
हाथ कर्मा वस्त्र समिति के पुटकर विप्रेयालय भारत में बंबई, मद्रास, नयी दिल्ली
व कलकत्ता में और विदेशों में ब्रून, बैकॉक, कोलम्बो, जुडा, लुम्पुर एवं सिंगापुर
में है। लगभग इन सभी स्थानों पर मसूरिया उत्पादन विप्रेय हेतु उत्कृष्ट होते
हैं। सहकारी समिति द्वारा किये जाने वाले उत्पादन का लगभग ५० प्रतिशत भाग
राजस्थान राज्य बुनकर सहकारी संघ लिमिटेड के बयपुर स्थित विप्रेयालय द्वारा
ख़री किया जाता है। सहकारी समिति को यह माल साधारणतया साल के आधारे
पर भेजना पड़ता है। इसके लिए उसे न तो अग्रिम मिलता है और न ही बी०पी०
पी० द्वारा ही भेजा जाता है। सहकारी समिति सीधा निर्यात नहीं करती है।

(५) विदेशों को निर्यातः-

इस संबंध में कोटा में सही सही सूचना उत्कृष्ट नहीं हो पायी है क्योंकि
न तो सहकारी विभागों में ही नहीं निर्यात संबंधी कार्यालयों में मसूरिया
उत्पादनों का हाथकर्मा वस्त्रों में अलग से श्रेणीयन किया गया है और न ही
निर्यात सीधा यहाँ के व्यापारियों द्वारा होता है। लेकिन यह निश्चित है
कि सहकारी एवं निजी दोनों आधारे पर मसूरिया वस्त्रों का निर्यात वाश्य
होता है। अमेरिका में इस समय उच्च कोटि के मसूरिया धानों को भारी मांग
बढ़ाई जाती है जिसकी पूर्ति केवल बुनकर सहकारी समिति नं० ८२७ कैथून के माध्यम

उत्पादन के विभिन्न स्वरूप



से होती है। विदेशों को निर्यात वल्लि भारतीय हाथ कर्वा वस्त्र विद्युय समिति एवं वल्लि भारतीय हाथ कर्वा एवं हस्त कला निर्यात निगम करता है। विदेशों को निर्यात से पूर्व मसूरिया धानों पर बयनुर, दिल्ली व बंबई में उत्कृष्ट कोटि की इन्सार्ह की जाती है।

फलतः कोटा में मसूरिया बस्त्रों के व्यापारियों को संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है और जो पुराने व्यापारी है उनका विद्युय भी निरंतर बढ़ रहा है। संलग्न तालिका मुख्य मुख्य व्यापारियों का स्थानीय एवं निर्यात द्वारा विद्युय और उत्तरे हुई वृद्धि को दिग्दर्शित करती है :-

३- उत्पाद के विभिन्न स्वरूप :-

मसूरिया उत्पादन स्तरों की मात्रा, बरी, रंगीन सूत, फूला रेशम, मसूरारण के विभिन्न स्तरों में प्रयोग व कूठ पत्ती के धान के अनुसार विविध प्रकार के होते हैं। प्रवर्तित नानों को ध्यान में रखते हुए इनका श्रेणीकरण निम्न प्रकार से किया जा सकता है :-

(१) धान :-

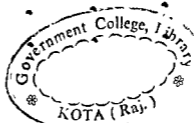
धानों को लंबाई चौड़ाई निश्चित होने और केवल सादा सूत व रेशम प्रयोग होने पर स्तरों की मात्रा १०० से ४०० तक (पांच पांच के क्चर से) हो सके के कारण श्रेणीकरण का एकमात्र वाधार स्तर ही होते हैं। इसी वाधार पर श्रेणीकरण किया जाता है। धान ३६ इंच, ४० इंच व ४६ इंच चौड़े स्तर प्रकार से मुख्य तीन प्रकार के होते हैं। लम्बाई सभी धानों की १२ गज होती है। यह तीनों प्रकार के धान १०० स्तर से ४०० स्तर तक के बुने जा सकते हैं। साधारण-तया २०० से २२० स्तर के धान बुने जाते हैं। धानों के संबंध में बुंदों का स्थान सर्व प्रथम है। वहाँ के बुनकर उच्च कोटि के ३५० स्तर तक के धान वर्तमान में भी बुन रहे हैं। इस समय ३६ इंच चौड़े धानों की मांग सर्वाधिक है।

(२) पैने या फाड़ियां :-

पैनों में लम्बाई के साथ साथ स्तरों में भी अन्तर पाया जाता है। इसलिए प्रवर्तित पैनों के उत्पादन का श्रेणीकरण उपरोक्त वाधार पर निम्न प्रकार से

श्रेणीकरण किया जा सकता है :-

15 गज ---	10 सत, 20 सत, 22 सत, 24 सत, 26 सत ।
18 गज ---	10 सत, 20 सत, 22 सत, 24 सत, 26 सत, 28 सत एवं 30 सत।
20 गज ---	20 सत, 22 सत, 24 सत, 26 सत, 28 सत, एवं 30 सत ।
22 गज ---	• • • • •
24 गज ---	• • • • •
26 गज ---	• • • • •
28 गज ---	• • • • •
30 गज ---	• • • • •



(3) साफ़ :-

साफ़-सफ़-में लता की मात्रा व बरी के उपयोग में विविधता पायी जाती है । सतदर्य उसी के अनुसार श्रेणीकरण किया जा सकता है ।

100 सत ---	जरी चौड़ाई :- 1 सत, 2 सत, 3 सत, 4 सत ।
200 सत ---	• • • • •
220 सत ---	• • • • •

साफ़ साधारणतया 20 गज ऊंचे व एक गज चौड़े कनाये जाते हैं ।

(4) साड़ियाँ व हुपट्टे :-

वैश्वभूषा में निरंतर परिवर्तन युग की परम्परा रही है । शिवा के प्रसार के साथ साथ मगरत में भी साड़ियाँ का प्रवर्जन निरंतर बढ़ता चला पा रहा है । तदनुसार ही विविध प्रकार की साड़ियाँ विविध प्रकार प्रकारों में देश के विभिन्न भागों में बुती जा रही है । वास्तविक रूप में तो साड़ी उत्पादन की ही इस बात का श्रेय दिया जा सकता है जिसके कारण लाखों लोगों ने हस्तकला की पित रुसकी और निरंतर विकास कर रही है । साड़ियाँ वर्तमान समय में विश्व में सबसे उत्तम कोटि की स्त्री वेश भूषा है , क्योंकि यही एकमात्र वस्त्र है जो बिल्हा सम्पूर्ण अंगों को ढक सकता है । साथ ही सुहावना लगता है और सम्पत्ता का प्रतीक है । मसूरिया साड़ियाँ में सादा सूत व रेशम, रंगीन सूत व रेशम, बारी,

मसूरिया आदि का विविध प्रकार से उपयोग कर विभिन्न वाकार प्रकार का माल उत्पादित किया जाता है। साड़ियाँ व हुपट्टों में लगभग वही लम्बर प्रकार व रुपांकन होता है। केवल वाकार भिन्न भिन्न होता है। केवल कुछ रुपांकन ऐसे हैं जो साड़ियों में होते हैं परन्तु हुपट्टों में नहीं होते।

वर्तमान में साड़ी के मध्य भाग में पट्टा, चौकड़ी, बौसाना और बरीकोशा (टीशु) का रुपांकन किया जाता है। पट्टा भी तीन प्रकार से डाला जाता है। इसी प्रकार चौकड़ी, बौसाने आदि भी कितने ही प्रकार के डाले जाते हैं। प्रवर्तित प्रकार निम्न है :-

१- सादा पट्टा :- इसमें पूरा लंबाई में तीन-तीन एवं चौड़े विविध रंगों के पट्टे बनाये जाते हैं।

२- बंगला पट्टा :- इसमें दो प्रकार के पट्टे एक एक क्रम से डाले जाते हैं। प्रथम पट्टे में एक ही रंग के सारे धागे एक साथ जा जाते हैं और दूसरे में बीच बीच में थोड़े थोड़े अन्तर पर दूसरा रंग देकर धारियाँ के रूप में पट्टा डाला जाता है। यह धारियाँ तीन, चार या पांच होती हैं।

३- धाघरा पट्टा :- इसमें लम्बाई में केवल एक ओर की ओर ६ एवं चौड़े भाग में क्रम से किनार की ओर बढ़ती चौड़ाई के पट्टे डाल दिये जाते हैं जिससे यह धाघरा या लहंगा के निचले भाग के समान ही जाता है। श्रेष्ठ मस- भाग सादा रहता है। यह पट्टा केवल साड़ियों में डाला जाता है और इस पट्टे की सुती साड़ियाँ केवल एक ओर से पहनी जा सकती हैं।

४- पट्टे सब रंगों में सूत व रेशम का प्रयोग कर बनाये जाते हैं। पट्टेदार साड़ी में किनारों पर ढाई-तीन एवं चौड़ी मसूरिया या पूना रेशम की किनार बनाई जाती है। पट्टेदार साड़ियाँ सादी भी होती हैं और कुछ में बरी की चौकड़ियाँ भी डाल दी जाती हैं। सामान्यतः सस्ती होने से इनमें फूल गनी का काम नहीं दिया जाता है। अगर आवश्यकता हो तो किनार पर ही केईं डाली जाती है।

चौकड़ी

सफेद या हल्के रंग की साड़ियों में बरी की चौकड़ियाँ डाली जाती हैं। चौकड़ियाँ दो प्रकार की होती हैं।

१- जरी चौकड़ी:- इसमें जरी के दो या चार तार एक साथ एक सत, दो सत, तीन सत, चार सत, पांच सत की दूरी पर समान रूप से लम्बाई व चौड़ाई में ढाल दिये जाते हैं जिससे वर्गदार चौकड़ियां सम्पूर्ण साड़ी में बन जाती हैं।

२- बंगला चौकड़ी :- इसमें एक साथ दो प्रकार की चौकड़ियां बड़े बाकार में ढाली जाती है। प्रथम प्रकार की चौकड़ी में वर्गदार चौकड़ी के समान ही जरी के तार एक साथ ढाले जाते हैं और दूसरे प्रकार की चौकड़ी में उनके मध्य थोड़ा-थोड़ा अंतर ल रखा लिया जाता है जिससे तीन, चार या पांच धारियां की चौकड़ी बन जाती है। बंगला चौकड़ी बड़े बाकार की होती है। यह दस से बीस तक के अंतर पर ढाली जाती हैं, जिससे कुल चौड़ाई में ७ से १३ तक चौकड़ियां बन जाती हैं।

३-बने

चौसाना

चौसाना साड़ी में रंगीन सूत के पट्टे लम्बाई व चौड़ाई दोनों में ढाल देने से चौसाने बन जाते हैं। इसकी किनार भी मसूरारज या पूना रेशम को २।।-३ इंच चौड़ी होती है। इसके साथ साथ ही जरी की चौकड़ियां भी ढाल दी जाती हैं।

जरी कोण

जरी कोण (टिश्यु) साड़ियों में ताना तो सूत व रेशम का ही होता है परन्तु बाने (चौड़ाई) में केवल जरी व रेशम के धागे ढाले जाते हैं अर्थात् सूत के स्थान पर जरी से सत व सत बनाये जाते हैं। यह सादी व पट्टेदार २ प्रकार के होते हैं। पट्टेदार में कोणा में जरी के प्रयोग के साथ साथ जरी के बहुत से तार एक साथ ढालकर जरी के पट्टे भी काट दिये जाते हैं। इनमें स्वर्ण जरी या रजत जरी प्रयोग की जाती है जिससे जरी कोण साड़ियां चार प्रकार की हो जाती हैं।

सूती पट्टों की तरह ही सूत के स्थान पर पूना रेशम काम लेकर साड़ी भी बुनी जाती है। इसे पूना रेशम पट्टीदार बोलते हैं। यह सादा भी बुना जाता है और जरी चौकड़ी या बंगला चौकड़ी भी ढाल दी जाती है।
उपर्युक्त रूपांतरों के साथ साथ ही चौड़ी किनार वाली साड़ियों में

किनार पर व वर्गदार परी चौकड़ी वाली साड़ियाँ में चौकड़ियों के बीच फूल पती भी बनाये जाते हैं ।

एस प्रकार वर्तमान में प्रचलित मसूरिया साड़ियों का निम्न प्रकार से श्रेणीकरण किया जा सकता है :-

- १- साड़ी जरी किनार,
- २- साड़ी चौखाना पट्टा,
- ३- साड़ी सूती पट्टा,
- ४- साड़ी बंगला पट्टा,
- ५- साड़ी घाघरा पट्टा; - (क) घाघरा पट्टा सूती
(ख) घाघरा पट्टा जरी
- ६- साड़ी जरी चौकड़ी :-

- (क) १ सत:- २ तारी यां ४ तारी,
- (ख) २ सत:- २ तार वाली या ४ तार वाली,
- (ग) ३ सत:- २ तार वाली या ४ तार वाली,
- (घ) ४ सत:- २ तार वाली या ४ तार वाली,
- (ङ) ५ सत:- २ तार वाली या ४ तार वाली ।

७- साड़ी बंगला चौकड़ी:-

- (क) तीन धारी, (ख) चार धारी, (ग) पांच धारी ।

८- साड़ी जरी कोण :-

- (क) स्वर्ण जरी कोण : (१) सादा, (२) पट्टे दार
- (ख) रवत जरी कोण : (१) सादा, (२) पट्टे दार

९- साड़ी पूरा रेशम पट्टेदार,

१०- फूल दार :-

(क) किना जरी,

(ख) जरी दार :-

- (१) जरी चौकड़ी फूलदार: २, ३, या ४ सत
- (२) बंगला चौकड़ी फूलदार ४० इंच

हुपट्टे २। गज लम्बे व २ गज चौड़े होते हैं, इसके लिए रेशम-पन की चौड़ाई में कपड़ा बुना जाता है। इनमें साधारणतया जरी चौकड़ी, बंगला चौकड़ी

स्वर्ण जरी कोण, रजत जरी कोण, जरी चौकड़ी फूडदार और चंगला चौकड़ी फूडदार बनाये जाते हैं।

४- विपणन संबंधी समस्याएँ:-



(क) बावागमन के साधन :-

मसूरिया उत्पादन के लगभग सभी केन्द्र कोटा जिला के मुख्य कस्बे हैं। ये सब मध्य एवं दक्षिणी भाग में केन्द्रित है अतः कोटा से मोटर मार्ग द्वारा सुसंबंधित हैं। केवल कनेठसुत कोडसुता, मंडावरा और मोरपा ऐसे ग्राम हैं जो मुख्य सड़क से दूर है और जहाँ पर खाना खाना कठिनार्थ से मरा हुआ है। ये तीनों ग्राम कोटा बड़ाद सड़क पर मुख्य सड़क से ४-५ मील दूर हैं। कोटा-मांगरोटा कोटा-वारां, कोटा-सानपुर जिडे के इन तीन मुख्य सड़क मार्गों पर और इनके पास ही सम्पूर्ण मसूरिया उत्पाद केन्द्र स्थित है। कोटा स्वयं भी पश्चिमी रेलवे की दिल्ली-बंबई बड़ी लाईन व कोटा-बीना लाइन का मुख्य बंदूक है। अतः उत्पादन को बाहर भेजने में कोई क्शुविधा या देरी नहीं होती है। अधिकतर निर्यात डाक पार्सल द्वारा ही किया जाता है क्योंकि यह उत्पादन हल्का व काफी मूल्यवान होता है। इस प्रकार बावागमन के सम्बन्ध में कोई विशेष कठिनार्थ नहीं है। केवल कोडसुता ऐसा ग्राम है जहाँ पर मसूरिया बुनकरों की संख्या कम है परन्तु वर्तमान में नहरों के कारण कच्चे सड़क मार्ग विगड़ जाने से जहाँ पर पहुंचना कठिन व क्शुविधानकर हो जाता है। मोरपा व मंडावरा में बुनकरों की संख्या बत्तल्य होने से उनके संबंध में कोई विशेष बात नहीं है।

(ख) श्रेणीकरण:-

उत्पादक व उपभोक्ता के मध्य निरंतर बढ़ते हुए अंतर ने स्वाभाविक रूप से एक ऐसी प्रणाली को जन्म दिया है कि जिसके कारण उपभोक्ता बड़े पैमाने पर उत्पादित विविध प्रकार की वस्तुओं में से मनवांछित प्रकार की वस्तु का चुनाव आसानी से कर लेता है। उत्पादक व उपभोक्ता के प्रत्यक्ष संयोग के कारण सामान्यतः कुटीर उपोगीय उत्पादन में श्रेणीकरण की विशेष आवश्यकता प्रतीत नहीं होती। परन्तु कुटीर उपोगीय उत्पादकों में भी उच्च कोटि की वस्तुओं

के संबंध में भिन्नका बाजार विस्तृत क्षेत्र में फैला हुआ हो और मध्यस्थों की एक लंबी श्रृंखला विद्यमान हो, श्रेणीकरण आवश्यक हो जाता है। मसूरिया वस्त्रों का उत्पादन तो केवल कोटा विभाग के सीमित क्षेत्र में होता है परन्तु इसके उपभोक्ता भारत के कौनों कौनों व विदेशों में भी विद्यमान हैं। अतः श्रेणीकरण परमावश्यक हो जाता है। सरकारी विभागों द्वारा संघालित विद्यालयों द्वारा विद्यार्थियों को सुविधापूर्णा बनाने के लिए इसकी अत्यधिक आवश्यकता है।

मसूरिया उत्पादनों का श्रेणीकरण वास्तविकी से किया जा सकता है जिसका वर्णन पड़े कर दिया गया है। श्रेणीकरण संभव हो सकने पर भी प्रमाणीकरण के अभाव में उसका महत्व कम रह पाता है।

(ग) प्रमाणीकरण :-

किस प्रकार की श्रेणी में किस प्रकार से सूत रेशम व बारी का प्रांगण किया जाय, किस किस का काम में लाया जाय, किस श्रेणी के लिए कितने कतों की बुनावट चुनी जाय आदि सब बातें तय हो जाने पर ही मसूरिया उत्पादनों का वस्तु प्रमाणीय उत्पादनों के समान वैज्ञानिक श्रेणीकरण एवं प्रमाणीकरण हो सकता है जिससे दूरस्थ स्थानों पर भी मध्यस्थों की लंबी श्रृंखला होते हुए भी विपणन एवं उपभोक्ताओं की मांग के अनुसार उत्पादन सरल हो जाता है। परन्तु मसूरिया उत्पादनों के संबंध में निश्चित प्रमाणीकरण का अभाव है। यह प्रमाणीकरण हो सकता है परन्तु नये नये व्यापारियों के प्रवेश व उनमें बायसी प्रतियोगिता के कारण उसी श्रेणी का माल हल्की किसिम का तैयार करने की परम्परा चल गयी है जिसको प्रतिबंधित करना संभव नहीं है। सरकारी समिति को कमसे कम इस क्षेत्र में जागे बाकर अपने उत्पादनों के संबंध में प्रमाणीकरण करना चाहिए।

(घ) प्रचार एवं विज्ञापन :-

वर्तमान युग व्यासायिक माण्डा में प्रचार का युग (एक लोक प्रोपेन्डा) कहा जाता है, क्योंकि आज के युग में किसी भी वस्तु का बाजार उसके प्रचार एवं विज्ञापन पर निर्भर है। विज्ञापन में वह चुंबकीय शक्ति है जिसके फलस्वरूप उपभोक्ता की रुचि में परिवर्तन हो सकता है, एक ही वस्तु के प्रति रुचि बनी

रह सकती है और उसके उपयोग में भी वृद्धि हो सकती है। मसूरिया उत्पादनों के संबंध में प्रचार का लगभग अभाव ही है। स्थानीय और बाहरी बाजारों में प्रचार एवं विशासन के लिए सरकार, व्यापारियों, सहकारी समिति, बुनकरों किन्हीं के भी द्वारा प्रभावपूर्ण कदम नहीं उठाये गये हैं। बाहर से आने वाले पर्यटक ही इसके प्रचार का एकमात्र साधन हैं। जयपुर, दिल्ली, बंबई, कलकत्ता आदि नगरों में स्थापित सहकारी एवं सरकारी विद्यालयों पर इसका प्रदर्शन किया जाता है लेकिन यह पर्याप्त एवं प्रभावपूर्ण कदम नहीं है। इसके साथ ही सहकारिता, विकास एवं हस्तकला से संबंधित प्रदर्शनियों में इसका प्रदर्शन किया जाता है। यहां तक कि बुनकरों को कर्षे पर बुनते हुए बताया जाता है। यह एक अल्प आकर्षक एवं प्रभावपूर्ण साधन है परन्तु अभी तक मसूरिया वस्त्रों के संबंध में इसका व्यापक रूप से प्रयोग नहीं किया गया है। बुनकर सहकारी समिति नम्बर ८२७ का मसूरिया के प्रचार कार्य में महत्वपूर्ण योगदान है। इस समिति द्वारा समय-समय पर श्रीमती कैनेड़ी को जयपुर में मसूरिया साड़ी, प्रधान मंत्री श्री जवाहर लाल जी नेहरू को, राजस्थान के मूतपूर्व राज्याल श्री गुरुमुख निहाल सिंह, राजस्थान के मुख्य मंत्री श्री मोहन लाल सुताड़िया एवं वर्तमान राज्याल श्री डा० सम्पूर्णानन्द आदि बड़े बड़े व्यक्तियों को वैधुत आगमन पर मसूरिया के साफे मेट फिर गये हैं। इन सबके कारण अब प्रचार कार्य हुआ है। स्थानीय व्यापारियों में से कुछे ज्यों हुई थेलियाँ आदि के द्वारा भी विशासन करने का प्रयत्न किया है। परन्तु यह सब प्रयत्न पर्याप्त नहीं है। मसूरिया उत्पादनों के संबंध में पर्याप्त कुछ एवं मेरे वैज्ञानिक टंग से प्रचार इनको माँग में आशातीत वृद्धि कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त इसके लिए कुछ सुझाव निम्न हैं—

(१) इसके लिए राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय एवं प्रान्तीय स्तर की प्रदर्शनियों में इसका प्रदर्शन किया जाना चाहिए। प्रदर्शन में उत्कृष्ट कला पूर्ण वस्त्र होने चाहिए और उनकी बारीक बुनावट व अन्य विशेषताओं के बारे में दर्शकों को परिचय कराया जाना चाहिए।

(२) कोटा में व्यापारियों को अपने परम्परागत ढाँचे को छोड़कर दुकान पर प्रदर्शन कर्षे बनाने चाहिए और उनमें सुनावट भरती चाहिए ताकि देखने वाले स्वयं आकर्षित हो जाय।

(३) स्निमा में स्लाइड के द्वारा बौर समाचार पत्रों में विज्ञापन लिया जाना चाहिए। स्थानीय प्रचार की अपेक्षा बड़े बड़े नगरों में विदेशों में प्रचार कार्य होना अधिक आवश्यक है जिनका यह उपयुक्त माध्यम है।

(४) सरकार को भी इस बौर ध्यान देना चाहिए व इसका प्रचार विदेशों में बौर अंतर्राष्ट्रीय स्तर की प्रदर्शनियों में इसकी विशेषताएं बताते हुए करना चाहिए। समूह देश वहाँ पर सबसे भिन्न व नये वस्त्र पहिनने को छोड़ लगी है इसका वक्शा बाजार ही सकते हैं। क्योंकि यह कड़ा बाजारों बौर वसे डंग का निराला है वो किमिती में पैदा नहीं हो सकता परन्तु विभिन्न बाजार प्रकार व रूपांश का हो सकता है बौर उसका प्रमाणीकरण व श्रेणीकरण संभव है। इस प्रकार विज्ञापन एवं प्रचार द्वारा यह विदेशी मुद्रा खर्च का वक्शा एवं स्थायी माध्यम बन सकता है।

(६०) प्रतियोगिता :-

व्यापारियों की सीमित संख्या, श्रेणीकरण एवं प्रमाणीकरण के कारण मसूरिया उत्पादनों के बाजार में व्यापारियों में प्रतियोगिता पाई जाती है। फलस्वरूप व्यापारी निर्मित माऊ पर केवल ६ से १० प्रतिशत लाभ लेकर कार्य कर रहे हैं। परन्तु विक्री शीघ्र होने से उन्हें बसी विनियोजित पूंजी पर बणार में पर्याप्त लाभ मिल जाता है।

गत कुछ वर्षों में नये नये व्यापारियों के बाजार में जाने से जिनका अधिकतर विद्वान् स्थानीय है बौर वो बांशिक रूप से अन्य प्रकार की वस्तुओं के साथ साथ मसूरिया बस्त्रों में व्यापार करते हैं उनके बस्त्र-द्वारा बसे बाजार की वृद्धि बौर पुराने व्यापारियों के समक्ष प्रतियोगिता में टिकने के लिए फिस में निरुद्धता लाने के प्रयास किये गये हैं जिनका अनुसरण प्रतियोगिता के कारण अन्य व्यापारी भी करते हैं। यह कार्य उद्योग की साथ एवं प्रतिष्ठा के लिए अनुपयुक्त व रुच्यान्तक है। परन्तु विवशता है कि वर्तमान में सरकारी हस्तक्षेप इतना प्रभावपूर्ण नहीं हो सक्ता है कि इसे पूर्णतः रोक दे।

(६१) सरकार एवं सहकारिता :-

सहकारिता बान्दोलन गांवों के पुराने संगठित जीवन के सुधारण बौर

और उसकी शक्ति के नुस्खे पुनर्स्थापन का एक सशक्त साधन है। विच-प्रवन्ध के साथ साथ विपणन के क्षेत्र में भी सहकारिता द्वारा जो कुछ किया गया है वह सतह खरौंचने के बराबर है। स्वतंत्रता के पश्चात् इस क्षेत्र में सरकार द्वारा काफी प्रयत्न किये गये हैं परन्तु उनका कार्यकरण अभी भी नाम मात्र को ही है। मसूरिया जैसे उत्पादन के लिए जितकी बनती विशेषताओं के कारण मध्यस्थों की लंबी श्रृंखला विद्यमान है विपणन की सस्ती व सुष्ठम सुविधायें उपलब्ध न होने तक कृषा जैसे वास्तविक स्वामियों की वही परम्परागत शोषण व्यवस्था बनी रहेगी। विपणन की सस्ती व सुष्ठम सुविधायें तब तक उपलब्ध नहीं हो सकती जब तक कि सरकार जागे उठकर जात्मसहायता के मार्ग की प्रोत्साहन एवं सहयोग एवं संरक्षण देकर, नियंत्रण करके नहीं, पूर्ण एवं दीर्घजीवी नहीं बना देती। जब तक ऐसा न हो सरकार को ही इस नस्ले-कार्य में हाथ बंटाना होगा।

किसी भी विशाल संगठन की सुदृढ़ता, कार्यक्षमता एवं सकल अस्तित्व उसकी झोटी से झोटी इकाई की सुदृढ़ता, कार्यक्षमता, निरव्ययता और वास्तव सहायता पर निर्भर होता है। सरकार द्वारा प्रान्तीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर विद्यालय स्थापित किए गए हैं जो अक्षरों पर तो हैं ही परन्तु उनकी कार्यक्षमता का भी पूरा पूरा उपयोग नहीं किया जा रहा है। इसका मूल कारण प्राथमिक सहकारी समितियों का अभाव है। प्राथमिक विपणन सहकारी समितियों का अभाव इसलिए है क्योंकि विपणन से पूर्व सहकारी समिति के लिए या सदस्यों द्वारा स्वयं के लिए उत्पादन होना आवश्यक है जो कि कच्चे माल की उपलब्धि की महान समस्या व विच-प्रवन्ध की पर्याप्त व समुचित व्यवस्था के अभाव में सामाजिक रूप से असंभव है। यदि कुछ कुंकर मिलकर ऐसा करने का प्रयास भी करते हैं तो गरीब व अक्षिप्त होने से हमारी गुलामी के मूल जैसी भाषा में पन ब्यवहार के धनेड़ों द्वारा इस प्रकार से धकेले जाते हैं कि उनके लिए स्वनिर्भर हो उठे रह सकना असंभव हो जाना है। इसे हम राष्ट्र का दुर्भाग्य नहीं बल्कि और नहीं तो क्या कि जहाँ जनता को सूख पसीने की कमाई के करोड़ों रुपये पानी की तरह सहकारिता, विकास, हिन्दी भाषा आदि के नाम पर खर्च किए जा रहे हैं, वहाँ हमारे गरीब, दलित एवं अक्षिप्त मजदूरों

से इस विदेशी जुड़े के माध्यम से, जिसका पूर्ण ज्ञान उन्हें १०० वर्षों में भी नहीं हो सकता। भारत के संविधान की परवाह किये बिना स्वतंत्रता के १६ वर्षों बाद भी सम्पर्क स्थापित कर उनके विकास के लोखंडे सपने साकार करने का प्रयास किया जा रहा है। इतना ही नहीं सहकारी माध्यम से विपणन की प्रक्रिया इतनी बटोल, दीर्घ एवं कमितव्ययी है कि सरल, सादा, एवं प्रत्यक्ष संतुष्टि का जीवन व्यतीत करने वाले ग्रामीण उसमें निराश हो जाते हैं। इसके लड़ावा सर्वोपेक्षा के काष्ठ में यह भी ज्ञात हुआ है कि बुनकरों से जब वे मोटा काड़ा बुनते थे कुछ कपड़ा सहकारी विभाग द्वारा विद्वय के लिये लिया गया था उसका मूल्य ५-६ भाए बाद चुकाया गया था। इसके कारण यदि वे सहकारी माध्यम से विद्वय करते हैं तो पहले ही बने उत्पादनों का मूल्य काफी ऊंचा उगा देते हैं दूसरे जब सेठिये उन्हें सारी सुविचार्य दे रहे हैं तो वे उनकी ओर ही आकर्षित हो जाते हैं।

सहकारिता के नाम से बुनकर इतने उदास हो गये हैं कि फिलाने ही बुनकर तो समितियों में से अपनी दी गई वंशुंजी वापिस प्राप्त करने के लिए अत्यधिक लालायित हैं। दूसरी ओर बुनकर सेठियाँ व व्यापारियों के शिर्षों में इस प्रकार फंसे हुए हैं कि उन्हें उसमें से निकालने के लिए द्रान्तिकारी, पूर्ण एवं सुसंगठित योजनायुक्त प्रयत्नों की आवश्यकता है। लेकिन यदि सहकारिता हम असफल होती है तो ग्रामीण भारत की ससे बढ़ी जाशा निष्कल हो जायेगी। अतः मूतकाल की असफलताओं के बावजूद भी बान्दोलन वित्त संबंधी संकुचित कार्य को पूरा करने के अतिरिक्त बुनकरों के जीवन विनाश के साधन के रूप में सब प्रकार से विकसित किया जाना चाहिए।

विपणन समितियों की असफलताओं के लिए यह आवश्यक है कि पहले सुदृढ़ उत्पादन सहकारी समितियाँ स्थापित की जावें। अन्ततः सर्वप्रथम कच्चे माल व वित्त प्रपन्थ की समस्या के विषयका ह्य किये बिना जाने की बात सोचना कैउ ह्या में चिन्तन करने के समान है। वर्तमान स्थिति को देखते हुए तात्कालिक प्रयत्न के रूप में सरकार को एक सुदृढ़ एवं पूर्णतः विर समस्या से मुक्त अत्र विद्वय पैन्ड कोटा में स्थापित करना चाहिए जिसकी समस्या मसूरिया बुनकर सहकारी समितियों के लिए आवश्यक होनी चाहिए। उसमें इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि बुनकरों की बाय बढ़ाने का प्रयत्न, सस्ते कच्चे माल की उमठव्य एवं

मितव्ययता के द्वारा ही न कि उन्हें प्रचलित बाजार मूल्यों से अधिक मूल्य देकर।
क्या वह विद्यालय व्यापारियों की प्रतियोगिता में कभी भी न टिक सके।
और अन्ततः बेसा हो रहा है सरकारी पूंजी का दुरुपयोग मात्र हो होगा। वर्त-
मान में ऐसा पाया गया है कि सरकारी समिति के माध्यम से बाहर भेजे गये माठ
पर ऊंची कीमत ली जाती है जिसका परिणाम यह होता है कि बाहर उद्योगों का
सरकारी विद्यालयों को अंशदा व्यापारियों से खरीदना पसन्द करते हैं। तात्का-
लिक रूप से इस केंद्र पर केवल सरकारी समिति के माध्यम से ही माठ खरीदने का
प्रतिबन्ध नहीं होना चाहिये। इसे सीधे बुनकरों से खरीदने की छूट होनी चाहिये।

इस क्रय विक्रय केंद्र में सरकारी समितियाँ, बुनकर, एवं सरकार सबका
प्रतिनिधित्व होना चाहिये, परन्तु सरकारों हस्तक्षेप धीरे धीरे कम किया जाना
चाहिये। इस समिति को सम्पूर्ण क्षेत्र के लिये आवश्यक उच्च कौटिक के सूत, रेशम
व धरी का कोटा दिया जाना चाहिये जिसका विच प्रबन्ध सरकार द्वारा रिजर्व
बैंक योजना द्वारा ^{और} मान्यता प्राप्त होने, म् प्रमाणिकरण व श्रेणीकरण होने पर
व्यापारिक बैंकों द्वारा किया जा सकता है। कच्चे माठ को सस्ते प्राप्ति करने
और सस्ती विच सुविधाओं से प्राप्त मितव्ययता का प्रयोग आंशिक रूप से बुनकरों
को आय बढ़ाने, प्रचार, उत्पादन का मूल्य कम करने और सुदृढ़ कौश निर्माण
हेतु होना चाहिये। इसे न तो क्रय के लिये ही केवल सरकारी समितियाँ पर निर्भर
होना चाहिये और न विक्रय के लिये केवल सरकारी विद्यालयों पर। इसे बम्बई,
दिल्ली, मद्रास आदि मुख्य बाजारों में सम्बन्धित व्यापारियों से सम्बन्ध स्थापित
कर उन्हें माठ भेजने का प्रावधान करना चाहिये। इस विद्यालय द्वारा क्रियेमगये
विक्रय पर वे सभी छूटें दी जानी चाहियें जो वर्तमान में अन्य हाथकर्मा उत्पादनों
के विक्रय पर दी जा रही हैं। जो कि निम्न प्रकार हैं :-

(क) २) रूपये से ऊपर की फुटकर बिक्री पर ५ प्रतिशत।
(ख) अतिष्ठ भारतीय हाथकर्मा सप्ताह और अन्य उत्सवों पर ५ नये पैसे

प्रति रूपया अतिरिक्त छूट।

(ग) धोक बिक्री पर ३ प्रतिशत प्रति रूपया (१००) से अधिक विक्रय पर।

(घ) भारत से बाहर निर्यात पर ५ नये प्रति रूपया अतिरिक्त छूट।

विदेशों में निर्यात के लिये इस समिति का सोचा सम्पर्क विदेशी विद्या-

लियाँ से होना चाहिये ताकि वहाँ की मांग के अनुसार उत्पादन कराके शीघ्र भेजा जा सके।

इतना सब होते हुये भी इसकी सफलता संवालय मण्डल व व्यवस्थापक की योग्यता पर निर्भर होगी क्योंकि किसी भी योजना में नियंत्रण एवं संगठन स्वामित्व की अनेका अधिक महत्वपूर्ण होता है। अतः कम से कम व्यवस्थापक और जहाँ तक हो सके संवालय मण्डल के सक्रिय सदस्यों में अच्छी तारतम्य बुद्धि, नैतिकता, व्यवसायिक योग्यता, व्यवसायिक शिक्षा, सहनशीलता और संस्था व कला के विकास में रुचि होना परम आवश्यक है।

६ - निष्कर्ष :-

विद्यमान परिस्थितियों में विपणी सम्बन्धी कोई समस्या नहीं है। समस्या यह है कि किस प्रकार विद्यमान विपणन संगठन में हो रही अमितव्ययताओं को दूर किया जाय और उसका बाजार अधिक से अधिक विस्तृत कर अधिक बुनकरों को रोजगार देकर ग्रामों की पूर्ण एवं बर्बरीजगारी को समस्या को हट करने व कला के विकास के लिये प्रयत्न किया जाय। समस्या इस बात की भी है कि किस प्रकार इस फेज की वस्तु की मांग निरन्तर बनी रहती जाय जिसके लिये प्रचार आवश्यक है। अतथा किसी भी समय रुचि एवं फेज परिवर्तन होने पर हजारों बुनकरों के बेरोजगार हो जाने व राजस्थान के कला के विलुप्त हो जाने की सम्भावना है। राष्ट्रीय बाजारों की अनेका विदेशी बाजारों के विकास पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिये जहाँ कि अन्ती विशेषताओं के कारण यह उत्पादन स्थायी एवं भारी मांग पैदा कर सकता है। राष्ट्रीय दृष्टिकोण से विदेशी कच्चा माल आयात करना और उत्पादित माल का विहासता के रूप में उपयोग विद्यमान परिस्थितियों में उचित नहीं कहा जा सकता। अतः जहाँ तक हो सरकार, सहकारिता एवं व्यापारियों सबको मिलकर विदेशी बाजारों के विकास के लिये कृतसंकल्प हो प्रभाव पूर्ण कदम उठाने चाहिये।

==0==0==0==0==0==0==0==0==

=====

कोटा जिला में मसूरिया उत्पादन

अध्याय - अष्टम

अ म

१. श्रम का महत्व एवं प्रकार :-

हुटीर उद्योगों की सफलता जिनमें कि मानव श्रम द्वारा सस्ते व सादे यंत्रों को सहायता से बसे गृह में ही उत्पादन किया जाता है अथवा सब बातों की बोझा कला के स्वामी श्रमिकों का महत्व अधिक बढ़ जाता है। नक्काशी, पच्चीकारी, मीनाकारी आदि हस्तकला के उत्कृष्ट नमूनों में श्रम कुशलता का महत्व और भी अधिक है। मसूरिया एक अत्यधिक बारीक एवं कलापूर्ण बुनावट है क्योंकि इसमें बाल के समान महीन सूत व रेशम के एक एक धागे को गिनकर समान दूरी पर जमाते हुये (सममन्त्र) ५ से १ मिमी मीटर के आकार के सत बनाते हुए नक्काशी का कार्य किया जाता है अतः स्वाभाविक रूप से इस उत्पादन में श्रम कुशलता का महत्व और भी अधिक ही जाता है। कोटा जिले में चल रहे १५००-१७०० कार्यों पर जिन पर लगभग ५,००० व्यक्ति जांशिक व पूर्णतः निर्भर हैं मसूरिया बना जा रहा है। हुटीर उद्योग के रूपमें उत्पादित होने से स्वाभाविक रूपसे इसके उत्पादन में पूर्ण परिवार का योगदान होता है। बर्बाद से ल्याकर घर के बड़े बूढ़े व स्त्रियां भी किसी न किसी रूप में अपना सहयोग अक्षय देती हैं। पूर्णतः श्रम पर आधारित होने के कारण ही अत्यधिक महंगा कच्चा माल प्रयुक्त होने पर भी सामान्य उत्पादनों की उत्पादन लागत में ४० से ५० प्रतिशत भाग श्रम का प्रतिफल ही होता है। इस पर भी यदि कच्चा माल उचित मूल्यों पर मिल सके तो बुनकरों के प्रतिफल का प्रतिशत ५०-६० प्रतिशत ही सकता है। फूलदार, बैठदार एवं नक्काशी के काम वाले साड़ियों में श्रम का प्रतिफल और भी अधिक बढ़ जाता है। यदि इनका इतना महीन सूत व रेशम ये बुनकर वास्तव में सकेते तो यह प्रतिफल ८०-९० प्रतिशत तक पहुंचना स्वाभाविक था।

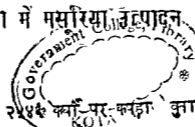
वैसे ही स्त्रियां एवं पुरुष दोनों का योगदान महत्वपूर्ण है फिर भी

कौनसा काम स्त्रियां ही करें और कौनसा पुरुष ही करें ऐसा बिल्कुल सही माप दृष्टिगोचर नहीं होता। कुछ प्रक्रियाएँ ऐसी हैं जिन्हें सामान्य रूप से केवल स्त्रियां ही करनी हैं, कुछ ऐसे हैं जिन्हें पुरुष ही करते हैं और कुछ ऐसी हैं जिन्हें दोनों करते हुये पाये जाते हैं। जो कम कुशलता के परन्तु अधिक समय लेने वाले काम हैं जैसे सूत पक्का करना, नरियां मरना, व ताना करना इन्हें सामान्यतः स्त्रियां ही करती हैं। माण्डी करना, सज्जीकरण, घाने बाँझना, मांज बांधना व कुतार्ई जैसे कार्य हैं जिनमें पूर्ण कुशलता की आवश्यकता होती है। क्तः ये कार्य सामान्यतया पुरुषों द्वारा ही किये जाते हैं। कुतार्ई में जो सामान्य कुतार्ई का काम तो कई स्थानों पर स्त्रियां करती हुई पाई गई हैं परन्तु क्तापूर्ण कुतार्ई केवल पुरुष ही करते हैं। नरियां मरना व ताना करना ऐसे काम हैं जिनमें समय, कुतार्ई में लगने वाले समय की जोकाता कम लगता है क्तः स्त्रियां घरका काम करती हुये आसानी से उन्हें कर लेती हैं। सज्जीकरण में काफी ताकत की आवश्यकता होती है इसलिये यह कार्य केवल पुरुष ही कर सकते हैं। कोटा में पैरों की कुतार्ई साधारणतया स्त्रियां करती हैं क्योंकि पुरुष अन्य उद्यमों में लगे हुये हैं।

मांज बांधने का कार्य सबसे बारीक एवं कुशलतापूर्ण होता है। ज्यों, ज्यों सती की मात्रा अधिक होती जाती है अधिक कुशल बुनकर ही उस काम को कर सकते हैं। इसी प्रकार नकशाही का काम भी केवल अत्यधिक कुशल बुनकर ही कर सकते हैं।

२. श्रम की प्रति एवं प्रकृति :-

अतित काल से भारत में सूत कातना राष्ट्रीय धन्या व कनड़ा बुनना उत्साह करीबों व्यक्तियों का व्यवसाय रहा है। कोटा जिला भी उपरोक्त परम्परा का अवसाद नहीं है। कोटा, फैसल, मांगरोल, सीसवाडी, सांगोद, कोडसुवां, पनावर, सुल्तानपुर आदि जिले के प्रसुत बुनकर केंद्र हैं। इनके अलावा जिले के प्रत्येक कस्बे में जो पहले निवामतें थीं वहाँ सामान्य रूप से बुनकर रहते हैं जो परम्परा से विविध प्रकार के कनड़े बुनते चले जा रहे हैं। प्रत्येक कस्बे में फैले हुये बुनकर भारतीय ग्रामीण स्वनिर्मिता का स्पष्ट दिग्दर्शन करते हैं। १९५१ की जनगणना के अनुसार कोटा जिला में ३३२० पुरुष व ८७३ स्त्रियां वस्त्र निर्माण कार्य में संलग्न थीं।



वर्तमान में जिंठे में ४० स्थानों पर २५४६ क्वार्टरों पर कनड़ा बुना जाता है। इस प्रकार लगभग ५००० व्यक्ति वस्त्र निर्माण में संलग्न हैं। वहाँ तक माना जा सकता है पूर्ति सम्बन्धी कोई कठिनाई नहीं आती। मसूरिया कनड़ा बुनने के लिये कुछ विशेष - प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है जो कि बुनाई का काम कर रहा बुनकर ५-६ माह में आसानी से प्राप्त कर सकते हैं। यदि नये व्यक्तियों को न भी लिया जाय तो भी सामान्य प्रशिक्षक बुनकरों को कुछ उच्च प्रशिक्षण देकर आवश्यक आवश्यकतानुसार पूर्ति बढ़ाई जा सकती है। देश में अधिकांश व्यक्तियों का यह एक मात्र व्यवसाय व आय का साधन है। अन्य गाँवों में जहाँ अब तक मोटा कनड़ा बुना जाता रहा है कृषि व पशु पालन सहायक उद्यम हैं। ज्यों ज्यों बुनकर मसूरिया बुनना प्रारम्भ कर रहे हैं यह प्रवृत्ति पाई जाती है कि वे कृषि कार्य स्वयं करना छोड़कर दूसरे कृषकों से करवाने लग गये हैं। कोटा में ५० प्रतिशत क्वार्टरों पर जिन पर पैरे बुने जाते हैं लगभग सप्त प्रशिक्षार्थ स्त्रियाँ व बच्चे ही करते हैं। यहाँ पुरूष अधिक लाभदायक उद्योगों जैसे सिगाई, मजदूरी व्यापार नौकरी आदि में लगे हुये हैं। जिनके लिये मसूरिया उत्पादन सहायक परंतु पेट्रिक धन्धा है। फिर भी लगभग ६० प्रतिशत बुनकरों का बुनना ही मुख्य व्यवसाय है।

प्रति क्वार्टर कम से कम एक स्त्री व एक पुरूष की आवश्यकता होती है परंतु उत्पादन इकाई का आकार बढ़ने पर यह अनुपात कम हो जाता है। इस प्रकार वर्तमान में कोटा जिंठे में मसूरिया उत्पादन में लगभग १५०० परिवार संलग्न हैं। जिनमें से ५० प्रतिशत पूर्ण रूप से स्त्री कार्य पर निर्भर हैं। ४० प्रतिशत का कृषि एवं पशुपालन सहायक व्यवसाय है और शेष १० प्रतिशत में से ५ प्रतिशत अन्य सहायक व्यवसायों में लगे हैं और ५ प्रतिशत का मसूरिया उत्पादन सहायक व्यवसाय है।

३. सामाजिक व आर्थिक स्थिति :-

(क) आय :-

जैसा कि बताया जा चुका है अधिकतर बुनकरों का यही मुख्य उद्यम है। इसमें आय बुनाई की क्षमता पर निर्भर होती है। यह पाया गया है कि देश में व कोटा में बुनकरों को २५ गज कनड़ा बुनने में जहाँ १५ दिन लगते हैं वहाँ अन्य गाँवों में २० - २२ दिन लग जाते हैं। क्योंकि वे जमी उतने कुशल नहीं हुये हैं। सदस्य

दिसम्बर ६३ से मजदूरी में की गई मारी कमी

<u>उत्पादन एवं किसम</u>	<u>दिसम्बर ६३ से पूर्व</u>	<u>दिसम्बर ६३ से</u>
(क) धान (प्रति पाण्ड २५ गज)		
२०० सत	६०)००	४५)००
२५० सत	७०)००	५५)००
३०० सत	८०)००	६५)००
(ख) साड़ियां (२५ गज की पाण्ड)		
जरी किलार	६०)००	४५)००
जरी स्काट सादा	६३)००	४८)००
जरी बंगला	७०)००	५०)००
जरी चौकड़ी - ५ सत २ तार	७०)००	५०)००
५ सत ४ तार	७२)००	५२)००
३ सत २ तार	७१)००	५१)००
३ सत ४ तार	७३)००	५३)००
२ सत २ तार	७३)००	४३)००
२ सत ४ तार	७५)००	५५)००
१ सत २ तार	८२)००	६०)००
१ सत ४ तार	६०)००	६५)००
फूलदार (१०० फूलजरी)	८०)००	६५)००
पूना रेशम	७२)००	५५)००
सादा पट्टा	६३)००	४८)००
टीसू सादा	६५)००	६०)००
टीसू पट्टेदार	९०)००	६५)००
(ग) साफा :- (२७ गज की पाण्ड)		
जरी किलार	६५)००	५०)००
जरी चौकड़ी ३ सत	८०)००	६०)००
२ सत	६०)००	६५)००
१ सत	६५)००	७०)००
	५)००	३)५०

उनकी आय भी कम है। अधिकतर बुनकर ऐसे हैं जिनकी आय वर्तमान प्रचलित मसूरिया दरों के बाजार पर प्रति कर्मा १०० से १२० रुपये के मध्य है। नमूने की पांच के बाजार पर विभिन्न आय वर्गों में जाने वाले परिवारों का प्रतिशत इस प्रकार है:-

<u>मासिक आय</u>	<u>प्रतिशत</u>
८० रुपये से कम	५
८० रुपये से १००	३०
१०० रुपये से १२०	४०
१२० रुपये से १४०	१५
१४० रुपये से अधिक	१०

दुश्कलता, सहायक उपम और उत्पादन इकाई के जाकार एवं प्रकार के बाजार पर आय में भिन्नता पाई जाती है।

(स) कार्य करने व रहने का स्थान :-

सामान्य रूपसे सभी बुनकर रहने के मकान के एक भाग में ही बुनाई का काम करते हैं। ताना, सज्जीकरण आदि प्राथमिक क्रियाएँ बाहर लुके मैदान में करती पड़ती हैं। एक कर्मे के लिये औसत ३० वर्ग फीट स्थान कम से कम आवश्यक होता है। सामान्यतः यह रहने के घर का एक भाग, बरामदा या छल कमरा होता है। बाय की कमी के कारण उनके मकान कच्चे, ऊँधेरे, तिरल के व कम हवादार हैं। जहाँ बुनकर बैठकर काम करते हैं उसके पास सामान्य रूपसे पांच वर्ग फीट से १० वर्ग फीट के जाकार की खिड़कियाँ पाई जाती हैं। उन गाँवों में जहाँ पर कमी की यह कार्य चालू हुआ है, उस प्रकार की खिड़कियाँ भी नहीं हैं। कुछ परिवार जिनके आय के साक्ष्य बच्चे हैं उनके पत्नी, हवादार मकान पाये जाने हैं। अधिकतर पक्के व हवादार मकान जो मसूरिया उत्पादन के उपयुक्त हैं गत एक दो वर्षों में ही बनाये गये हैं। और कुछ वर्तमान में निर्माणाधीन हैं। पक्के मकान वर्तमान में केवल दो तीन प्रतिशत बुनकरों के पास हैं। इतना होते हुये भी गाँव में बुनकरों के मकान अन्दर व बाहर साफ सुथरे पाये जाते हैं। कोटा में अन्दर व बाहर से अत्यधिक गन्दे मकानों में ही बुनकर रहते हैं।

(ग) कार्यकाल :-

औसतन रूपसे वे बुनकर जिनका यह मुख्य व्यवसाय है वर्ष में 300 दिन बीर माह में 25 दिन काम करते हैं। उद्योग में वर्ष भर चलता है परंतु अत्यधिक वर्षाकाल व पारिवारिक कार्यों के लिये समय समय पर काम बन्द करना पड़ता है। वर्षाकाल में मुश्किल में मास भर में 15-20 दिन काम ही पाता है। सर्दी का मौसम सर्वाधिक उपयुक्त होता है परंतु प्रकाश की सुविधा के अभाव में उसका पूरा उपयोग नहीं हो पाता है। अत्यधिक गर्मों के दिनों में बन्द मकान होने से कार्यक्षमता कम हो जाती है। वर्ष के विभिन्न मार्गों में प्रति दिन कार्य करने के औसत घंटों की संख्या निम्न प्रकार होती है :-

पतवरी से मार्च	६ घंटे
जुलै से जून	१० घंटे
जुलाई से सितम्बर	७ घंटे
अक्टूबर से दिसम्बर	८ घंटे

औसतन प्रतिदिन 2 घंटे काम किया जाता है। प्रकाश के अभावमें रात्रि के समय कोई भी काम नहीं करते हैं। प्रातःकाल का अंधेरे का समय मधुगाल आदि सहायक उद्योगों के सम्बन्ध में व सायंकाल व रात्रि का समय मौजब व गन्धे मारने में काम लिया जाता है।

(घ) मौजब शिक्षा एवं स्वास्थ्य :-

यह सभी बातें जाय के ऊपर निर्भर होती हैं। कोटा व कैथून में बुनकरों का मौजब बही होता है जो सामान्यतः शहरों में निम्न वर्ग वालों का पाया जाता है। गेहूं, दालें बीर सब्जियां मुख्य साधनार्थ हैं। पौष्टिक मौजब का सामान्यतः अभाव रहता है परंतु जाय पीने की जादत सामान्य रूप से पाई जाती है। जाय का ६० - ७० प्रतिशत भाग मौजब पर व्यय किया जाता है। कोटा में मांसहारी मौजब भी किया जाता है परंतु गांव में इसका लगना अभाव है। केवल विशेष उत्सवों एवं त्यौहारों पर काम में लिया जाता है।

अधिकतर बुनकर अशिक्षित हैं। उनमें भी स्त्रियां तो पूर्णतः अशिक्षित ही हैं। अब नई पीढ़ी के बचपुत्रक पढ़ने के बाद भी इस उद्योग में लग रहे हैं। केसाति

उद्योग का स्वभाव है कृषि के समान इसमें वर्कों का सक्रिय भ्रम के रूप में उपयोग नहीं किया जाता जिससे जहां जहां भी शिक्षा की सुविधायें उपलब्ध हैं सभी बुनकरों के बच्चे पढ़ रहे हैं। कई स्थानों पर कितने ही नवयुवक बुनकर रहे हैं जो माध्यमिक (हाई व हायर सेकेंड्री) शिक्षा प्राप्त हैं। परंतु फिर भी वे इस उद्योग में संलग्न हैं। उत्पादन के लगभग सभी केंद्रों पर माध्यमिक शिक्षा की सुविधायें उपलब्ध हैं स्वतंत्र, काली पीढ़ी के शिक्षित होने की पूर्ण सम्भावना है।

स्वास्थ्य, पोषण व रक्त सन्त को स्थिति पर निर्भर होता है। कोटा में बुनकरों का स्वास्थ्य सबसे निम्न कोटि का है क्योंकि उनके रहने के मकान गंदे व कच्चे हैं, उनका पोषण भी अधिकतर तामसिक होता है, वीर शहर में दूध व दूध निर्मित वस्तुओं जैसे सामान्य सुख प्रकृतितक पदार्थ जैसे हो नहीं मिलते हैं। गांवों में बुनकर गरीब होते हुए भी साक सुखे मकानों में रहते हैं, सुदृष्ट का सेवन करते हैं और तामसिक की बजाय शाकाहारी पोषण करते हैं और पशुमाल सामान्य रूपसे महायुक्त व्यसनाय होने से दूध सभी कृत पोषिक पोषण के रूपमें मिल ही जाता है। अतः उनका स्वास्थ्य अच्छा है। कस्बों में स्वास्थ्य मध्यम श्रेणियों का है।

(80) सामाजिक स्थिति व रक्त सन्त का स्तर :-

सामाजिक स्थिति के दृष्टिकोण से मसूरिया उत्पादन में संलग्न समस्त बुनकर मुसलमान जुड़ाहे एवं हिन्दू कृतज्ञे हैं। हिन्दू कृतज्ञे केवल कोटा में हैं शेष रज स्थानों पर मुसलमान जुड़ाहे हैं जो मौमिन कहलाते हैं। सभी सभी रैगर, हींपा आदि धातियों के व्यक्ति भी इस कार्य को सीत रहे हैं। संलग्न बुनकरों में से ६८ प्रतिशत मौमिन हैं। समाज में इनका विशेष स्थान नहीं है। कोटा में तो सामाजिक स्थिति की दृष्टि से इनको स्थिति अत्यन्त दयनीय है। गांव में इनमें से जो व्यक्ति अच्छे समकदार व धनवान हैं उनको सामाजिक स्थिति भी अच्छी है। शहर से ज्यों ज्यों गांव की ओर बढ़ते हैं हिन्दू-मुस्लिम भेद की लहर कम होती हुई दृष्टिकोणर होती है।

मुसलमान जुड़ाहों में नशा धार्मिक दृष्टि से वर्जित होने के कारण नहीं किया जाता है परन्तु कृतज्ञे व रैगर आदि अत्यधिक नशेवाप हैं। इनकी लय का २० से ३० प्रतिशत भाग इसी पर व्यय हो जाता है।

जनसंख्या वृद्धि की दर इनमें काफी तीव्र पाई जाती है जिसका कारण

निम्न रहन सहन का स्तर, रात्रि को कोई काम न होना, मनोरंजन के अन्य साधनों का अभाव व इनकी परम्परायें एवं मान्यतायें हैं।

सामान्य रूपसे औरतों का घर पर प्रभुत्व पाया जाता है। चूंकि औरते ही घर गृहस्थी का सारा काम करते हुये भी बुनारई के कार्य में पूर्ण योगदान देती हैं वे अत्यधिक सक्रिय पाई जाती हैं। यही कारण है कि परिवार का सारा नियंत्रण उन्हीं के हाथ में होता है। पुरुष अधिकतर बालसों से दृष्टिगत होते हैं जो दिन का कार्य करने का अन्तिम काफी समय भी बाजार में गन्ने लगाने व ताच सेजों में ताराव कर देते हैं। यह पाया जाता है कि पुरुष मुख्य मुख्य क्रियार्थ करके व मांग बांधकर चले जाते हैं फिर बुनारई का काम भी स्त्रियों को ही करना पड़ जाता है। स्त्रियों का उत्साह एवं कार्यशीलता प्रशंसनीय है।

रहन सहन का स्तर सामान्य है। नीचे विभिन्न जाय वाले ५ परिवारों का आर्थिक विवरण दिया गया है। जो इसे स्पष्ट करता है :-

बुनारों को आर्थिक स्थिति दिग्दर्शक तालिका

परिवार क्रमांक	१	२	३	४	५
सदस्य संख्या	८	८	५	५	३
परिवार की कुल आय	१५० रूपये	१३० रूपये	१०० रूपये	८० रूपये	७५ रूपये
व्यय :- (रूपयों में)					
भोजन	६०	८०	६०	५५	५०
ईंधन	७	७	५	५	५
प्रकाश	३	३	२	२	२
वस्त्र	१५	१५	१०	८	८
मकान	१०	१०	८	६	५
शिक्षा	३	२	२	-	-
स्वास्थ्य एवं चिकित्सा	१	१	१	-	१
अन्य	१०	७	७	३	२
बचत	१०	५	५	१	२
	१५०	१३०	१००	८०	७५

हो ।

(त) श्रम विभाजन :-

इसके उत्पादन में श्रम विभाजन करके भी मितव्ययता प्राप्त की जा सकती है । सूत पक्का करना, तानाकरना, सज्जीकरण, नजी मरना आदि ऐसी क्रियाएँ हैं जिन्हें कई कर्मी के लिये एक साथ करने पर समय एवं श्रम दोनों की बचत होती है । इस वीर ज़ी कुछ क्रम उठाये गये हैं जिनके अनुसार कोटा में व दैयू में कुछ बुनकर ऐसे हैं जो केवल सूत पक्का करके उसका ताना करने व सज्जीकरण का लुंडी बना देने का कार्य करते हैं । शेष बुनारों का काम व रेशम के ताने का काम बुनकर स्वयं करते हैं । परन्तु यह विभाजन एक प्रयास मात्र है वीर इसका उद्देश्य श्रम-विभाजन न होकर बुनकर की उपउत्पत्ति के अभाव में कार्य की सुचारु रूपसे चालू रखा मात्र है । आदर्श श्रम वस्ती में अलग अलग क्रियाओं का अलग अलग विस्तिष्टीकरण करके श्रम विभाजन के लाभ प्राप्त किये जा सकते हैं । सकारिता ही श्रम विभाजन के लाभ प्राप्त करने का एक मात्र ज्ञोष उपाय है ।

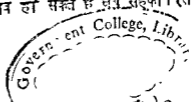
(ग) प्रशिक्षण :-

प्रशिक्षण के लिये जहाँ पर परिवार में यह बुनावट चर रही है वहाँ परम्परा से स्वामात्रिक रूप से मिला जाता है । परन्तु जहाँ यह कार्य नहीं हो रहा है परन्तु वे बुनकर सोझा आते हैं तो उन्हें अपने सम्बन्धियों या मित्रों की सहायता ज़ी पड़ती है । जाति प्रथा के होने से पारस्परिक प्रेम इस कार्य की सुविधापूर्ण बना देता है फिर भी बाज के बढ़ते स्वार्थ युग में जन्मी कला का दूसरे को पूर्ण ज्ञान देना बहुत कठिन समस्या है । साथ ही इस प्रकार की प्रशिक्षण मित्रता है वह अपूर्ण एवं परम्परावर्दी होता है । इससे जो त्रुटियाँ वियमान समय में हैं वे चरती रहती हैं । अतः यह आवश्यक है कि स्वतंत्र रूप से शिक्षा के साथ साथ नवीन पीढ़ी को जो इस उद्योग में ला रही है आधुनिक ढंग से आधुनिक सुविधाओं का उपयोग बताते हुये प्रशिक्षण दिया जाय । इसके लिये सरकार को जाने बड़ने की आवश्यकता है । बुनकर वस्ती में एक प्रशिक्षक की नियुक्ति करके, जो कि समय समय पर काम कर रहे बुनकरों को आवश्यक निर्देश दे एवं नये बुनकरों को पूर्ण प्रशिक्षण दे, के द्वारा इस समस्या का कुछ हद तक हल हो सकता है । चूंकि नये बुनकर कम प्रतिकूल के कारण सरकारी प्रशिक्षण केंद्रों में काम करना पसन्द नहीं करते,

यहां पर उन्हें प्रशिक्षण भी दिया जा सकता है और लौच का काम भी किया जा सकता है।

(घ) मनोरंजन एवं स्वास्थ्य :-

मसूरिया उत्पादन के एक ही स्थान पर मुककर, बैठकर, बांते गड़ाकर नियमित रूप से निरन्तर काम करना पड़ता है, जो: स्वास्थ्य बरबाद हो जाने व बांते बरबाद होने का मय रहता है। मनोरंजन के द्वारा लोई गई शक्ति का संकय होकर कुशलता व उत्पाद बनाये रस्ता भी पड़ती है। इसके लिये गांवों में रात्रि को मुशायरा, नाटक, मजन, विचार गोष्ठी आदि को व्यवस्था उपयुक्त हो सकती है। समय समय पर सरकार के प्रचार विभाग द्वारा फिल्म प्रदर्शन आदि भी किये जावे तो अच्छा होगा। ये सब कार्य तभी सम्भव हो सकते हैं जब सहकारिता विपमान हो और सरकारी योगदान हो।



५. सरकार एवं सहकारिता :-

श्रम समस्याओं के हल एवं श्रम कल्याणकार्यों के सम्बन्ध में जो तक सरकार एवं सहकारिता मूक प्राय है। गृह समस्या के सम्बन्ध में सरकार द्वारा सहकारी गृह निर्माण योजना चालू करके इस और प्राथमिक कदम उठाया गया है। इस योजना के अन्तर्गत वहां के हाथकरवा बस्त्र उत्पादक सहकारी समिति को ५० मकान निर्माण हेतु १,२०,००० रुपये ऋण एवं ६०,००० अनुदान के रूपमें स्वीकृत किया गया है। अब तक ८०,००० रुपये प्राप्त किये जा चुके हैं व निर्माण कार्य चल रहा है। (इसका एक चित्र साथ में दिया गया है।) केंद्र में भी इसी प्रकार की बुनकर बस्ती निर्माण हेतु योजना बनाई गई थी परन्तु गत वर्ष राष्ट्रीय संकट के कारण उसे बनी स्थिति पर दिया गया है।

प्रशिक्षण के सम्बन्ध में कोई सरकारी या सहकारी केंद्र ऐसा नहीं है जहां मसूरिया उत्पादन के प्रशिक्षण की सुविधायें विपमान हों। द्वितीय योजना-काल में पंचायत समिति के अन्तर्गत विकास विभाग द्वारा जो हाथ करवाई प्रशिक्षण केंद्र कुछ स्थानों पर चालू किये गये थे वे एक अप्रैल, १९६३ से बंद कर दिये गये हैं। केंद्र के हाथ करवाई प्रशिक्षण केंद्र में १९६२ में ही एक वर्ष पर मसूरिया उत्पादन का प्रशिक्षण देना चालू किया गया था परन्तु कुछ ही समय बाद यह केंद्र हो बंद

हो गया। कोटा में सरकार द्वारा संवाहित बावर्ष माथकर्मा प्रशिक्षण केंद्र है परन्तु इस में भी मसूरिया उत्पादन के लिये प्रशिक्षण नहीं दिया जाता है।

मनोरंजन के लिये भी सरकार या किसी सहाकारी समिति द्वारा कोई प्रयास नहीं किया गया है। सहाकारिता के वास्तविक पोषण में न बाने के कारण श्रम विमाजन को और भी कोई प्रयत्न नहीं किये जा रहे हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि उत्पादन के प्रमुख पहलू श्रम की ओर अभी तक कोई ध्यान नहीं दिया गया है। जब आवश्यकता इस बात की है कि शीघ्र ही सरकार इस ओर ध्यान दे। गृह समस्या के हल के लिये उठाया गया कदम प्रशंसीय है। परन्तु देखा गया है कि उस प्रकार से प्राप्त रकम से बड़ा बड़ा बुनकराँ नारा घर बनाने से घन को बमितव्ययता हुई है। दूसरी ओर ऋण एवं ऋदान प्राप्त करने के सम्बन्ध में जो नियम बनाये गये हैं उनका पालन नहीं किया गया है। इस प्रकार की वस्तियाँ केवल सीमित व्यक्तियों के लिये ही सुविचार्य उपलब्ध कर सकती हैं। अतः यह आवश्यक है कि नई वस्तियाँ निर्माण के साथ साथ विद्यमान मकानों को मसूरिया उत्पादन के उपयुक्त बनाने के लिये तात्कालिक ऋण भी दिये जाने चाहिये। मांगरील को बुनकर बस्ती में सामान्य श्रेष्ठ बनाने की भी कोई व्यवस्था नहीं की गई है जो कि मसूरिया उत्पादकों के लिये प्रथम आवश्यकता है।

इन सब समस्याओं के सामूहिक हल का उचित उपाय तो यह दृष्टिगत होता है कि बस्ती के लिये जो राशि प्राप्त हो उससे एक साथ एक ही स्थान पर एक कोलोनियों के रूप में घर बनाये जावें। ऋण एवं ऋदान से प्राप्त राशि का सदस्यता में वितरण न किया जाकर समिति ही गृह निर्माण एक बस्ती के रूप में कराये जिसके चारों ओर काम करने व रहने के मकान हों। बाहर अन्दर के मकान बनाये जावें ताकि बाहर की तरफ कर्मा लगाया जा सके व अन्दर बुनकर स्वयं रहें इस बस्ती के मध्य भाग में मैदान रखा जाय जहाँ पर कड़की घूम और वर्षाकाल में ताना सज्जीकरण आदि कार्य आसानी से किये जा सकें। साथ ही इस मैदान का उपयोग मनोरंजन कार्यों के आयोजन के लिये भी आसानी से किया जा सकता है। इस बस्ती का प्रथम सहाकारी समिति द्वारा किया जाना चाहिये। सहाकारी समिति सरकारी योगदान से वहाँ पर प्रशिक्षण, लंगर्ड गृह, स्पाँक एवं सुधार कार्यों का प्रवन्ध करे। प्रशिक्षक नव शिक्षितों को तो पूर्ण प्रशिक्षण

दे हो साथ में चूड़ रहे क्वाँ पर काम के सम्बन्ध में बने सुधारात्मक सुझाव भी दे । बने सुझावों को लागू करवावे और उनका समय समय पर निरीक्षण करते हुये आवश्यक निर्देशन देता रहे । इसी सकारो समिति द्वारा रात्रि के समय मोक्त के उपरांत मनोरंजन कार्यक्रम आयोजित किये जायें । समय समय पर सरकारी चूड़ चित्र पालन भी वहाँ जाकर विभिन्न प्रकार की शिक्षा प्रद एवं योजना सम्बन्धी फिल्मों का प्रदर्शन करे ।

यदि यह समिति उत्पादन एवं विपणन का वित्त प्रबन्ध एवं उत्पादन व विपणन कार्य बने हाथ में लेकर बहुउद्देशीय समिति के रूप में कार्य करे जो सर्वोच्च होगा । बुनकर बस्ती के साथ ही सरकार द्वारा रंगार्ड व रूपांकन केंद्र खोले जा सकते हैं । इन बस्ती के एक प्रांगण में एक मनोरंजन एवं शिक्षा केंद्र भी खोना चाहिये वहाँ पर रेडियो, पत्र पत्रिकार्थ एवं अन्य मनोरंजन सामग्री उपलब्ध हो ।

स्त्रियों की स्थिति को ठीक करने के लिये व उनमें सुधारात्मक भाव लाने हेतु विशेष प्रयास किया जाना चाहिये । बादश बस्ती के अन्तर्गत उनके लिये विशेष एवं विशिष्ट प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किये जाने चाहिये ।

ग्राम कल्याण के लिये यह भी एक सश्रिय एवं सुधारात्मक कदम होगा यदि उन समिति के प्रांगण में ही एक उपनोक्ता सकारो बस्तु मण्डार स्थापित कर दिया जाय । इस प्रकार की बादश बस्ती के निर्माण का सर्वप्रथम प्रयास केंद्र में किया जाना चाहिये, क्वाँकि वहाँ पर बुनकरों की संख्या अन्य सभी स्थानों की अपेक्षा अधिक है । साथ ही यहाँ के बुनकर ही अन्य स्थानों के बुनकरों पर नियंत्रण एवं नैतिक प्रभाव भी रखते हैं । कोटा के पास होने व विद्युत सुविधा होने से इसकी उपयुक्तता और भी अधिक बढ़ जाती है । उसके पश्चात् ऐसी लोक बस्तानों प्रमत्ते बताई जायें और उनमें प्रयत्न यह रहे कि बुनकर स्वयं अधिक से अधिक रुचि लें एवं प्राथमिकता करें ।

६. निष्कर्ष :-

मसूरिया उत्पादन में गृह, प्रशिक्षण एवं श्रम कल्याण प्रमुक्त समस्यार्थ हैं, जिनका स्थायी हल परमावश्यक है । सरकार एवं सकारिता ही इनके हल का उपयुक्त माध्यम है । ऊपर बताई गई योजना के अनुसार प्रयत्न होने पर विविध प्रकार की मितव्ययतायें सरकारी एवं निजी क्षेत्र में प्राप्त होंगीं, बुनकरों की सामाजिक व

वार्षिक स्थिति का सुधार होगा और अन्ततः उत्पादन में सुसज्जता व मितव्ययता प्राप्त होगी जो कि इस ढर्रा के विकास एवं संवर्धन में सहायक होगी चिमने बुनकरों के एवं उत्पादन के सुन्दर मविष्य का निर्माण होगा । बुनकरों को विद्यमान स्थिति का बहुत कुछ उच्चदायित्व बुनकरों को रुढ़िवादिता बहिष्कार एवं परम्परागत विश्वास हैं फिर भी यदि अन्य बुनकरों से जो थोटे उत्पादन में संलग्न हैं तुम्हारी जावे तो मसूरिया उत्पादन में संलग्न बुनकरों की वार्षिक स्थिति उनकी जैसा काफ़ी अच्छी है । बुनकर भी समय काफ़ी जालाक हैं जो कि समय आने पर सेठिया एवं व्यापारियों को जो थोड़ा देकर ऋणित लाभ प्राप्त कर उते हैं । केशू में बुनकरों की स्थिति अन्य गांव के बुनकरों की जैसा काफ़ी अच्छी है क्योंकि ग्राम तो वे काफ़ी दिनों से इस उत्पादन में संलग्न होने से अधिक कुशल हैं दूसरे इसका पूर्ण ज्ञान होने से क कई प्रकार से अत्रत्यता जाय प्राप्त कर उते हैं । निरन्तर पनने एवं मसूरिया उत्पादन के उपयुक्त सुन्दर एवं विशालकाय मक्खनों का निर्माण व दैनिक जीवन स्तर में जो रगी वृद्धि बुनकरों की वार्षिक स्थिति में होने वाली निरन्तर वृद्धि को स्पष्ट करती है । परन्तु ईमानदार बुनकरों को सुरक्षा भी आवश्यक है । का: बेईमानी को रोककर ईमानदारी व सत्यता से कार्य करते हुए बसो स्थिति अच्छी करने के लिये बुनकरों को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिये तभी यह उत्पादन स्थायी एवं सुदृढ़ बाजार स्थापित कर विकास एवं संवर्धन को प्राप्त होगा जो कि इसके सुदृढ़ मविष्य का निर्माण कर अन्य हाथकरों उत्पादनों के लिये वादत सगठित करेगा ।

-0-0-0-0-0-0-0-0-



व्याय-नवम्उ प सं हारविद्यमान स्थिति :-

कित्ती उद्योग के कित्ती स्थान या क्षेत्र विशेष में उद्गम, विकास एवं केंद्रीयकरण कच्चे माल को सुविधापूर्ण व पर्याप्त उपलब्ध एवं मांग को पर्याप्तता के ऊपर मुख्य रूप से निर्भर होता है। परन्तु मसूरिया उत्पादन के सम्बन्ध में विधि की विहम्बता है। एक ऐसे क्षेत्र में, एक ऐसे उद्योग का उद्गम, विकास एवं केंद्रीयकरण हुआ है वहाँ उसके लिये आवश्यक उच्च कौटि का तो दूर सामान्य कौटि का कच्चा माल भी उपलब्ध नहीं है। न पर्याप्त बाजार है और न ही पर्याप्त संरक्षण एवं प्रोत्साहन। अतः प्रकार यह क्षेत्र बायोगिक विकास के लिये पर्याप्त सामग्री का भण्डार होते हुये भी दीर्घकाल से सुपुष्ट वृत्ति में पड़ा हुआ था उसी प्रकार यह कला भी उसके विकास का पर्याप्त क्षेत्र विद्यमान था, सुपुष्ट प्राय ही थी। चर्मपत्रती की महती कृपा व स्वतंत्र भारत की विकासप्रिय सरकार को कुदूल नोति के कारण ज्योंही इस क्षेत्र में विद्यमान प्राकृतिक साधनों के शोषण को और सरकार का ध्यान आकृष्ट हुआ और उसके लिये सक्रिय कदम उठाये गये सामाजिक रूप से ही किना सरकार, बुनकरों, सेठियों एवं व्यापारियों के प्रयास के ही इस कला का मार्गोदय हुआ एवं इसने तोड़ विकास का मार्ग ग्रहण किया। १० वर्ष पूर्व कोटा, बून्दी व कैम्पून की कुछ फार्मपड़ियों तक सीमित यह कला औद्योगिक विकास के गत १० वर्षों में इतनी फेरी कि इन स्थानों के सभी परम्परागत क्र इसके उत्पादन में संलग्न हो गये और इसके बढाना कोटा विभाग के अन्य ग्रामों एवं कस्बों में वहाँ वहाँ भी मुसलमान बुनकर विद्यमान हैं इसका प्रसार तेजो से हो रहा है। १९६२ तक कोटा जिले में बुनकरों की दो प्रमुख बस्तियां कोटा व कैम्पून में ही मुख्य रूपसे इसका प्रसार हुआ। परन्तु जब वहाँ विद्यमान सब बुनकर उनके उत्पादन में संलग्न हो गये तो १९६२-६३ के वर्ष में ही लगभग १० अन्य स्थानों पर इसका उत्पादन प्रारम्भ हो गया और अब १९६४ के फेब्रुअरी दो माह की अवधि में ही पांच अन्य स्थानों (सातौली, आटौन, सांगोद, पवैठ और इनास) पर भी इसका

उत्पादन कार्य प्रारम्भ हो चुका है। १९५० में जहाँ कोटा जिले में यह ५०० के लगभग क्वार्टर पर बना जाता था १९६० में १००० क्वार्टर पर बना जाने लगा। और अब ३ वर्ष की अत्यल्प अवधि में छेदे क्वार्टर (१५००) पर बना जाने लगा है। वर्तमान में (फरवरी ६४) कोटा जिले में १६ स्थानों पर लगभग १६०० क्वार्टर पर इसका उत्पादन हो रहा है। इसके अलावा बून्वी व फालावाड़ जिलों के ७ बुनकर फैक्ट्री पर लगभग ४०० क्वार्टर पर भी इसका उत्पादन कार्य प्रारम्भ हो चुका है। अन्तिम इसका तीनों जिलों के बुनकर फैक्ट्री पर निरन्तर प्रसार हो रहा है।

इस उत्पादन के सम्बन्ध में विद्यमान परिस्थितियाँ इस प्रकार हैं :-

१. कच्चा माल सम्बन्धी :-

इसके उत्पादन में प्रयुक्त किया जाने वाला सम्पूर्ण कच्चा माल

(क) हंगरों व सैकड़ों मील दूर देश व विदेश से आता है।

(१) देशी कच्चा माल अम्पदाबाद, बम्बई, सूरत एवं वेंगलौर से मुख्य रूप से आता है।

(२) विदेशी सूत इंग्लैंड व इटली और रेशम जापान से आता है।

(३) देशी कच्चा माल हल्की किसम का होता है एवं विदेशों से आयात किया हुआ उच्च किसम का होता है।

(स) विशाल प्रमाणीय उद्योगों में निर्मित होता है।

(ग) कीमती एवं हल्का है।

(घ) कच्चे माल के सम्बन्ध में प्रमाणीकरण का निरन्तर संज्ञ किया जाकर हल्के किसम का कच्चा माल प्रयोग करने की महत्परा वर्तमान में चल रही है।

२. उपकरण एवं सज्जा :-

(क) इसे केवल थो शर्ट पिट लूम पर ही बना जा सकता है।

(स) इसके उत्पादन में प्रयुक्त होने वाले उपकरण एवं सज्जा

(१) की लागत अन्य क्वार्टरों की लागत की अनेकगुण कम है।

(२) के मुख्य भाग क्वार्टरों, डोटा और बुल भी बाहर से आते हैं एवं बाहर मार्ग द्वारा काये जाते हैं।

३. संगठन सम्बन्धी :-

(क) सम्पूर्ण उत्पादन का नियंत्रण कोटा के व्यापारियों द्वारा होता है ।

(ख) कोटा के केवल चार व्यापारी ७५ प्रतिशत उत्पादन का नियंत्रण करते हैं ।

(ग) कुन्करों में कुछ शिक्षित व घनिक कुन्कर जी व्यापारियों व कुन्करों के बीच की महत्वपूर्ण कड़ी हैं जिन्हें कुन्कर सैठिया व व्यापारी गठरी गले जोड़ते हैं वे व्यापारियों द्वारा दिये गये प्रोत्साहनों के कारण

(१) कुन्करों के शोषण में मदद करते हैं,

(२) सहकारी आंदोलन को सकल नहीं होने देते क्योंकि

(ब) प्रायः वे ही सहकारी समितियों के भी प्रभावकारी हैं
 बातः अपने स्वार्थों के हित को ध्यान में रखकर समिति के विकास के लिये कार्य नहीं करते और जो कुछ सरकारी रूपमा मिलता है उसका दुरुपयोग मात्र हो करते हैं ।

(ब) ये सरकार व सहकारिता के प्रति मियूसा व डरावने प्रचार करते हैं विलो कुन्करों में इनके प्रति गलत विचारधारा बड़ पकड़तीपा रही है ।

४. कुन्करों-क (३) कुन्करों को अपने शिकने में इस प्रकार फंसा रता है कि वे न निकल नहीं सकते, क्योंकि ये

(क) बसों दुर्बे लगाकर व उपकरण देकर स्थायी पूंजी का प्रबंध करते हैं ।

(ख) मजदूरी अग्रिम दे देते हैं

(ग) तारिखारिक समी के लिये समय समय पर व्यापारहित रूप भी दे देते हैं ।

(घ) मजदूरी का तत्काल मुगतान करते हैं ।

(घ) जहाँ सहकारी क्षेत्र की भारी आवश्यकता है इसका पूर्णतः अभाव है । यहां तक कि सहकारी क्षेत्र का दुरुपयोग ही रहा है । सहकारी समिति नं० ८२७ जिसने सहकारिता के नाम पर सरकार से

सूत व रेशम के कोटे प्राप्त कर रहे हैं और सहकारी एवं सरकारी विद्यालयों को निर्मित माठ भेजती है।-

(१) बुनकरोंके हित के लिये कोई काम नहीं करती

(क) उत्पादन एवं विपणन से होने वाला सम्पूर्ण लाभ इसके अधिकारो हो विभिन्न रूपों में प्राप्त कर लेते हैं।

(ख) बुनकर मजदूरो पर कार्य करते हैं जो जमाना उतती ही है पित्तो सेठिया जोग देते हैं।

(स) उनके प्रतिक्षण, अनुसंधान, प्रोत्साहन एवं श्रम कल्याण के लिये यह कोई व्यवस्था नहीं करती।

(२) इसके उत्पादन एवं विपणन का विच प्रबन्ध भी व्यापारी करते हैं।

(३) सरकारी एवं सरकारी विद्यालयों को उत्पादन बाजार मूल्यों से ऊंचे मूल्यों पर भेजा जाता है।

(४) इतना तक होता है कि सहकारी व सरकारी विद्यालयों को मांग को पूर्ति समिति द्वारा भी व्यापारियों के निर्मित माठ क्रय करके की जाती है।

(५) कोटे से सस्ते मूल्यों पर प्राप्त कच्चा माठ इसके द्वारा भी ऊंचे मूल्य लेकर बेव दिया जाता है।

(६) इसके क्रय विषय के सम्बन्ध में कोई सूचना एवं बाँकड़े सहकारी विभाग में उपलब्ध नहीं हैं।

(७) इसने कार्यशील पूंजी के लिये सरकार या सहकारी बैंक से कोई ऋण नहीं ले रखा है। इसके अधिकारो ही बन्ने साधनों से या कोटा के व्यापारियों से साह सुविधा प्राप्त कर विच प्रबन्ध करते हैं।

(४०) वैज्ञानिक एवं क्रमबद्ध संगठन है

(१) नर्सेनि-कोटा के व्यापारी शीर्ष स्थान रखते हैं उनके प्रतिनिधि सेठिया जोग हैं और जब लोक गांवों में विस्तार होने से हर गांव में सेठिया भी अपना प्रतिनिधि रखते जाते हैं।

- (२) सैठिया स्वयं कच्चा माल जाकर देने व पक्का माल लाने से मितव्ययता होती है और श्रम व समय की बचत होती है ।
- (३) कच्चे माल, उपकरण, एवं सच्चा को पूर्ति व विच प्रबन्ध, मजदूरी चुकाने का विच प्रबन्ध और विपणन एवं विपणन का विच प्रबन्ध सभी कार्य एक ही श्रमवद्ध संगठन द्वारा सम्पादित किये जाते हैं ।
- (४) बड़े बड़े नगरों एवं विदेशों में विज्ञप्त हेतु सहकारी व सरकारी विक्रयालय विपणन हैं परन्तु उनकी मांग को पूर्ति के लिये क्लैंड स्के प्राथमिक उत्पादन सहकारी समितियां नहीं हैं ।

४. उत्पादन प्रक्रिया सम्बन्धो :-

- (क) उत्पादन प्रक्रिया विशेष बटिल नहीं है । कुतकर दूध में उत्कृष्ट व्यक्ति नसानी से ६ माह में इसका पूर्ण त्रिशिक्षण प्राप्त कर सकता है ।
- (ख) रंगार्ड, रुपांजन एवं नक्काशी में यह उत्पादन काफी पीढ़े है ।
- (ग) इसका उत्पादन भेड़ों में या शक्तिवाहित कर्षों पर नहीं हो सकता ।
- (घ) उत्पादन प्रक्रिया में कठिनाइयों का मूल कारण कार्य करने के उपयुक्त स्थान का अभाव है ।

५. उत्पादित माल सम्बन्धो :-

- (क) उत्पादनों में साड़ी का उत्पादन सर्वाधिक है । गत १-२ वर्षों में जी धानों का उत्पादन बढ़ा है उसका उपयोग भी साड़ियों के रूप में हो जाता है ।
- (ख) उत्पादन की किस तकनीक की दृष्टि से निरन्तर घट रही है परंतु नक्काशी के काम की दृष्टि से विकास कर रही है ।
- (ग) उत्पादन में अब तक प्रभाषीकरण था परन्तु अब नये व्यापारियों के प्रवेश, मांग का आधिक्य व प्रतियोगिता के कारण प्राणि उत्पादन का ध्यान न रखते हुए विभिन्न प्रकार से उसी श्रेणी के उत्पादन को सस्की किस का बुनाने का प्रयत्न किया जाता है जो उद्योग के विकास एवं प्रतिष्ठा के लिये घातक है ।

- (घ) सामान्य रूप से उत्पादन का श्रेणीकरण किया जा सकता है ।
- (ङ) उत्पादन लागत में कच्चे माल व श्रम की लागत मुख्य हैं जो सामान्य उत्पादनों में लगभग बराबर होती हैं । किस्म ऊंची होने के साथ साथ कच्चे माल की लागत का अनुपात बढ़ता जाता है और श्रम लागत का अनुपात घटता जाता है । विना बरी के नक्काशी के काम द्वारा किस्म ऊंची करने पर श्रम लागत का अनुपात बढ़ता है ।

६. वित्त (प्रवन्ध सम्बन्धी) :-

- (क) मुख्य रूप से कच्चे माल, विपणन एवं मजदूरी के लिये कार्यशील पूंजी का प्रवन्ध करने की आवश्यकता होती है । स्थिर पूंजी के लिये छोटी मात्रा में ही वित्त प्रवन्ध आवश्यक होता है ।
- (ख) इस उत्पादन का लगभग सम्पूर्ण वित्त प्रवन्ध कोटा के व्यापारी सैठियों के माध्यम से करते हैं ।
- (ग) बुनकरों को वर्तमान में वित्त प्रवन्ध सम्बन्धी कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ता ।
- (घ) वित्त प्रवन्ध के लिये सरकार द्वारा पर्याप्त सुविधायें उपलब्ध हो गई हैं परन्तु उनका उपयोग मसूरिया उत्पादन में बिल्कुल भी नहीं किया जा रहा है ।

७. मांग एवं विपणन सम्बन्धी :-

- (क) राजस्थान के मारवाड़ी सेठ अब तक इसके प्रमुख उपभोक्ता थे एवं मारवाड़ प्रमुख बाजार ।
- (ख) अब तक बीकानेर एवं कठकना एवं- प्रमुख बाजार थे परन्तु अब दिल्ली व बम्बई भी तेजी से विकसित हो रहे नये बाजार हैं ।
- (ग) गत २-३ वर्षों से इसका तेजी से विदेशों को निर्यात किया जाने लगा है और वह निरंतर वृद्धि पर है । ऐसा कहा जाता है कि बड़े अमेरिका की मांग १ करोड़ रुपये वार्षिक है ।
- (घ) अब तक इसका प्रयोग साड़ी, हुपट्टे, फाड़ी आदि परम्परागत भारतीय वस्त्रों के रूप में ही होता था परन्तु अब यह पाश्चात्य वेशभूषा एवं सजावट में भी काम करने लगे हैं ।

- (ड०) इसकी मांग इन वस्त्रों पर की जाने वाली नक़्क़ाशी के कारण न होकर मसूरिया बुनावट के कारण है क्योंकि निरन्तर सादे धानों की मांग बढ़ती चली जा रही है ।
- (ब) विपणन में मध्यस्थों की लम्बी श्रृंखला विषयान है ।
- (क) प्रचार एवं विज्ञापन की कोई समुचित व्यवस्था नहीं है ।
- (ख) सहकारी उत्पादक समिति न होने से केन्द्रीय विद्युत संघों के विद्यालयों एवं सरकारी विद्यालयों की मांग पर्याप्त होते हुये भी माल नहीं मिल पा रहा है । सहकारी समिति नं० २२७ द्वारा जो माल भेजा जाता है वह बाजार मूल्यों से भी ऊँचे मूल्यों पर भेजा जाता है, जिसका प्रभाव यह होता है कि वहाँ के विद्यालयों में विद्युत मूल्य वहाँ के बाजार मूल्य से कुछ अधिक ही होता है ।

६. श्रम एवं रोजगार सम्बन्धी :-

- (क) कलात्मक कार्य होने से श्रम का महत्वपूर्ण स्थान है ।
- (ख) इसके उत्पादन में मुख्यतः मुसलमान बुढ़ाके ही संलग्न हैं जिन्हें मोमिन्स कहा जाता है ।
- (ग) बुढ़ारों की प्रत्यक्ष रूप से व धोबी, राई मलेवाले और बूझ बनाने वालों को अप्रत्यक्ष रूप से पूर्णरोजगार मिलता है ।
- (घ) कला में बारीकी एवं सावधानी पूर्ण कार्य एवं मंलाई को देखते हुये श्रमिकों का प्रतिकूल काम है । परन्तु कैशुन में फिस्न की हल्का करने की जो परम्परा चली है उसके कारण बुढ़ार अप्रत्यक्ष रूपसे अधिक आय प्राप्त कर लेते हैं ।
- (ड०) बुढ़ारों का व्यापारियों एवं सेठियों द्वारा शोषण हो रहा है परन्तु बुढ़ार भी अधिकांश रूप से वमै आप को अत्यधिक चतुर मानते हैं और उन्हें धो कब्जा मात्र बुढ़ने के लिये दिया जाता है उसमें से कुछ बचाकर अतिरिक्त आय प्राप्त करते हैं । ऐसा बहुत दिनों से काम कर रहे कैशुन के बुढ़ार हो कर पाते हैं ।
- (च) बुढ़ारों के शोषण की जिम्मेदारी बहुत कुछ उन्हीं पर एवं उन्हीं में से निकले उनके नेता सेठियों पर है ।

- (ख) श्रम कल्याण सम्बन्धी कोई व्यवस्था नहीं है ।
- (घ) काम करने एवं रहने के स्थान का अभाव सबसे बड़ी समस्या है । कच्चे, संकरे व कंधेरे मकान हैं जो इसके उत्पादन कार्य के लिये पूर्णतः कुपयुक्त हैं ।
- (ङ) बुनकर सैठियों से मजदूरी के सम्बन्ध में ठहराव करने की स्थिति में नहीं है का: जो कुछ वे देते हैं वे उसे ही स्वीकार कर लेते हैं । इसी प्रकार सैठिया भी साधारणतया व्यापारियों से ठहराव नहीं करते । उनका जो प्रतिफल नियत होता है उतना समायोजन कर व्यापारी मूल्य आ देते हैं ।

६. कृष्य :-

- (क) मसूरिया वस्त्रों को बेसी घुंछाई कोटा में होती है वैसे कमी तक कृष्य किसी स्थान पर नहीं हो सकी है ।

कृषियाँ एवं दोष :-

(क) बुनकरों का शोषण :- मध्यराज में वैगकि भारत में सामान्य रूपसे हुआ है चाहे कृषक हों, चाहे मजदूर या कलाकार सबका महाजन, साहूकारों, मध्यस्त्रों एवं व्यापारियों द्वारा शोषण होता रहा है । मसूरिया उत्पादन में कमी भी वही परम्परा विद्यमान है । इसके निम्न कारण-हैं:-

- (१) मूल उत्पादक जो कला के स्वामी हैं, किराये के मजदूर मात्र रह गये हैं,
- (२) बुनकरों में स्वामिमान व स्वनिर्मिता व जात्यविश्वास की भावना मुन लुप्त प्रायः हो गई है,
- (३) मुख्य मुख्य व्यापारी मिलकर कमी भी बुनकरों को मजदूरी कम करके उन्हें निम्नतम जीवन स्तर पर जीवन व्यतीत करने को बाध्य कर सकते हैं जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण दिसम्बर ६३ में मजदूरी में एक दम को गई १० से ३० प्रतिशत तक की कटौतियाँ हैं,
- (४) इसके परिणामस्वरूप बुनकरों को बहुत कम मिल पाता है जिससे वे न्यूनतम जीवन स्तर पर भी नहीं रह पाते और पविष्य में इस कार्य को छोड़कर अन्य कार्यों में संलग्न हो सकते हैं ।

(स) सहकारिता का अभाव :- सहकारिता ही इसका एक मात्र हल है परन्तु मसूरिया उत्पादन में उसका अभी तक कोई वास्तविक उपयोग नहीं किया गया है जिसके निम्न कारण हैं :-

१. बुनकरों का क्लान, अशिक्षा व रुढ़िवादिता,
२. सैठियों का सहकारी समितियों के अधिकारों पर होना,
३. सैठियों एवं व्यापारियों द्वारा सहकारी विभाग, सहकारी समिति एवं सहकारी संघों के प्रति बुनकरों को उल्टे सीधे समझाकर भ्रम एवं झंझा में डालना,
४. रिजर्व बैंक द्वारा मसूरिया उत्पादक सहकारी समितियों को ऋण देने के लिये केंद्रीय सहकारी बैंकों को राशि कौष (फंड) न देना । फरवरी ६४ में रिजर्व बैंक द्वारा यह आदेश दिया गया है कि केंद्रीय सहकारी बैंक मसूरिया उत्पादक सहकारी समितियों को चाहे तो अपने कौषों से ऋण दे सकते हैं । इन्होंने ऋणों पर भी सरकारी गारन्टो योजना लागू होगी परन्तु यह सुविधा पर्याप्त नहीं है क्योंकि प्रथम तो केंद्रीय सहकारी बैंकों के पास स्वयं के कौषों का अभाव हो रहता है दूसरे इनकी व्याज दर भी ऊंची होगी,
५. सहकारी विभाग एवं सरकार द्वारा इस पर विशिष्ट रूप से अब तक कोई ध्यान न दिया जाना,
६. गैर बुनकरों का भी बुनकर सहकारी समितियों के सदस्य होना ।

(ग) सहकारी श्रोतों के अभाव निम्नी श्रोतों (व्यापारियों, सैठियों या बुनकरों) द्वारा भी निम्न के बारे में कोई सासप्रयत्न नहीं किये गये हैं :-

१. गृह समस्या का हल,
२. बुनकरों के शिक्षा एवं प्रशिक्षण की व्यवस्था,
३. ऋणसंधान एवं लोन,
४. आधुनिक उत्पादन प्रक्रिया एवं उपकरणों का उपयोग,
५. प्रचार एवं विज्ञापन,
६. बुनकरों के कल्याण एवं मनोरंजन की व्यवस्था ।
७. रूपांकन एवं विस्म ऊंचा करने के समुचित प्रयत्न ।

(घ) कच्चा माल :- कच्चे माल के सम्बन्ध में काफी गड़बड़ चर रही है। वास्तविक लागत से काफी ऊँचे मूल्यों पर इसे उत्पादन लागत में पौड़ा जाता है जिससे उत्पादन का मूल्य काफी बढ़ जाता है। सरकारी समिति को प्राप्त होने वाले मूल्य एवं बाजार मूल्य में १५ से ३५ प्रतिशत तक का अंतर पाया जाता है। विदेशी कच्चे माल एवं जरी के सम्बन्ध में यह अंतर अधिक होता है। इसके निम्न कारण हैं :-

१. आगंतकों से मसूरिया खुदरा तक पहुंचने के बीच मध्यस्थों की लम्बी श्रृंखला की विद्यमानता,
२. व्यापारियों से प्रतियोगिता करने वाली किसी सरकारी या सरकारी संगठन का न होना,
३. विदेशी विनिमय नियंत्रण के कारण विदेशी कच्चे माल की पूर्ति में कमी,
४. स्वर्ण नियंत्रण के कारण बरी निमाण हेतु पर्याप्त बुद्ध स्वर्ण का उपलब्ध न होना।

(ड०) किस द्वारा :- वर्तमान में किस द्वारा की जो प्रवृत्ति पैदा हो गई है उसे रोकना चाहिये। क्यथा उसका दीर्घकालीन प्रभाव खुदरा, व्यापारियों एवं उत्पादकों सबके लिये बुरा होगा।

इस प्रकार यदि विद्यमान स्थिति रही तो इसके परिणाम भविष्य में निम्न हो सकते हैं :-

१. कठिन कार्य के साथ कम मजदूरी होने पर खुदरा कोटा में विकासशील रोजगार के नये क्षेत्र उद्योगों में बाकर रोजगार दृष्टि से जिसका परिणाम होगा कटा जो हमेशा के लिये खोना।

२. इस उद्योग की स्थिति ऐसी हो जावेगी कि कौ भी हवारों खुदरा एक साथ बेरोजगार हो सकते हैं इसके निम्न कारण हो सकते हैं :-

(क) सरकार द्वारा विदेशी विनिमय संकट के कारण विदेशी सूत व रेशम के आयात पर प्रतिबन्ध,

(ख) रुबिनुसार अन्वेषण द्वारा परिवर्तन एवं प्रकार व विज्ञान न होने के कारण रुबि एवं फैसल में परिवर्तन,

(ग) शक्तिचाण्डल कर्म या शक्ति में बुने जा सकने को सोचना,

(घ) व्यापारियों द्वारा गठबंधन ।

यदि सरकार द्वारा चागे बढ़कर इसके विकास को समुचित व्यवस्था की जावे तो इसके निम्न परिणाम हो सकते हैं :-

१. यह विदेशी मुद्रा कर्ज का स्थायी साधन बन सकता है क्योंकि इसका विदेशी बाजार निरन्तर प्रसार कर रहा है । और चागे भी बढ़ने की सम्भावना है क्योंकि :-

(क) मिर्छों में रमका उत्पादन नहीं हो सकता,

(ख) पार्श्वगत्य घनिक देशों में नये नये एवं विशिष्ट आकार प्रकार व रूपांकन के वस्त्रों की मांग,

(ग) मसूरिया उत्पादन में नये नये एवं विशिष्ट आकार प्रकार व रूपांकन का उत्पादन सम्भव होना,

(घ) मंहगा होने पर भी पार्श्वगत्य घनिक देशों द्वारा उरीदा जा सकता,

(ङ) आकर्षक एवं सुभावना,

(च) पार्श्वगत्य देशों में केंद्र प्रत्यक्ष दिखने वाले वस्त्रों की पहनने की फैशन,

(छ) श्रेणीकरण व प्रमापिकरण हो सकता ।

२. मिर्छों द्वारा बढ़ते हुए सूती वस्त्र उत्पादन के कारण उसकी प्रतियोगिता में न टिकने से ग्राम ग्राम में फैले हजारों बुनकरों को इससे रोकवार मिल जावेगा ।

३. उत्कृष्ट कौटि के सूत व रेशम की मांग बढ़ने पर उसे भारत में ही निर्माण करने के लिये क्लम उठाये जावेंगे ।

४. एक हस्तकला जीवित रहकर विकास को प्राप्त लगेगी ।

सुझाव :-

मसूरिया उत्पादन के सुव्यवस्थित विकास एवं प्रचार के लिये निम्न सुझाव कार्यान्वित किये जाने चाहिये ।-

तात्कालिक रूप से :-

१. कानून व कौटा में एक एक नियम सरकार की और से स्थापित किया जाय

या राजस्थान राज्य बुनकर सहकारी संघ द्वारा कसे क्रय विक्रय केंद्र कोटा व कैथून में खोले जायें ।

(क) इसके लिये पर्याप्त वित्त की व्यवस्था होनी चाहिये । कम से कम प्रति केंद्र ५ लाख रुपये की व्यवस्था होनी चाहिये ।

(ख) सभा नं० ८२७ का रेशन का कोटा इस केंद्र को दे दिया जाय व उसमें आवश्यकतानुसार वृद्धि कर दी जावे । उसी प्रकार सूत भी वान वायुक्त द्वारा वांछित किसम का समुचित मात्रा में उपलब्ध कराने के लिये प्रयत्न किया जाय ।

(ग) यह केंद्र मजदूरी के जाघार पर सेठियों से कुछ अधिक दर पर कपड़ा बुनवाना चाहूँ फी ।

(घ) सहकारी विक्रयालयों द्वारा ही मसूरिया बस्त्रों को पर्याप्त मांग होने से वर्तमान में विपणन सम्बन्धी कोई कठिनाई इसके सामने नहीं आवेगी । यदि उत्पादन वहाँ की मांग से अधिक हो तो कोटा में मसूरिया बस्त्र विक्रयालय स्थापित किया जाय और दिल्ली बम्बई आदि नगरों में स्थित मसूरिया बस्त्रों के व्यापारियों को भी उत्पादन करने का प्रवन्ध यह केंद्र कर सकता है ।

(ङ) इसके काम का कुछ भाग बुनकरों के प्रशिक्षण की व्यवस्था, कम कल्याण व्यवस्था, स्वास्थ्य सुधार आदि कार्ययों पर व्यय किया जाना चाहिये ।

(च) कैथून का केंद्र केवल कैथून के बुनकरों के लिये कार्य करे और कोटा का केंद्र अन्य सब स्थानों के बुनकरों के लिये व्यवस्था करे । इसमें यह व्यवस्था होनी चाहिये कि बाहर गांव के बुनकर या कुछ बुनकरों के प्रतिनिधि या विद्यमान सहकारी समिति के अधिकारी जाकर कच्चा-माछ ले पावें और फिर निर्मित माछ लाकर वापिस ऋ दे पावें ।

२. जो व्यक्ति वर्तमान में सेठियों के रूपमें कार्य कर रहे हैं उन्हें बुनकर न माना जाय और इस प्रकार सहकारी समितियों की सदस्यता से उन्हें वंचित कर दिया जाना चाहिये ।

३. समिति नं० ८२७ के सम्बन्ध में गलत एवं विस्तृत वांच को बाकर सह-कारिता के नाम के दुरुपयोग के सम्बन्ध में उचित कार्यवाही हो जानी चाहिये ।

४. समाचार पत्र पत्रिकाओं में व चित्रों में विज्ञापन पट्टियाँ (सिनेमा ग्राइड्स) द्वारा बड़े बड़े नगरों व विदेशों में विज्ञापन की व्यवस्था की जानी चाहिये।
उपरोक्त कार्यों का निम्न परिणाम होगा :-

१. व्यापारियों एवं श्रेष्ठिजनों की प्रतियोगी सहकारी केंद्रों की देखभाल करनी शोषण की प्रवृत्ति दूरी की जाएगी।
२. बुनकरों में सहकारिता के प्रति जो उदासीनता एवं निराशा का भाव है व समाप्त होकर रुचि एवं उत्साह पैदा होगा।
३. सहकारी समिति नं० २२७ द्वारा सहकारिता का दुरुपयोग बन्द होकर व वास्तविक सहकारी समिति के रूपमें बुनकरों के कल्याण के लिये कार्य करने का मार्ग ग्रहण कर सकते हैं।
४. सहकारी समितियों को कच्चे माऊ का कोटा देने पर इसका काले बाजार में जो विद्रोह होता है वह नहीं होगा।
५. दीर्घकालीन कार्यक्रम लागू करने के लिये प्रारम्भिक स्तर तैयार हो जायेगा।
६. श्रेणीकरण व प्रमापीकरण सम्भव होगा।

दीर्घकालीन कार्यक्रम :-

जात्म सहायता या सहकारिता ही एक मात्र मार्ग है जो किसी भी वर्ग या समाज के दीर्घकालीन विकास के-सक-सकन में सहायक बन सकता है व प्राप्त उच्चतम स्तर को बनाये रख सकता है। अतः दीर्घकालीन उद्देश्य यह होना चाहिए कि बुनकर स्वावलम्बी हो जावे। इसके लिये :-

१. कैम्पून व मांगरील में जहाँ बुनकर बस्तियाँ बनने की योजना विचाराधीन है कैम्पून-कैम्पून-में- एवं बन रही हैं आदर्श मसूरिया बुनकर बस्ती स्थापित की जावे। इसमें श्रम विभाजन, प्रशिक्षण, रंगार्थ गृह, रूपांक एवं उपभोक्ता मण्डल की व्यवस्था की जानी चाहिये।
२. जागे जो बुनकर बस्तियाँ बने उनमें चारों तरफ मकान बनाये जावें व बीच में खुला पालान रह जिसमें ताना करने, प्राणकलने, सज्जीकरण आदि के लिये आवादार स्थान बनाये जावें।
३. अलग से प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केंद्र सरकार द्वारा स्थापित किया जाना चाहिये जो नये बुनकरों को मसूरिया उत्पादन का प्रशिक्षण देने के साथ साथ नवी-

बाधुनिक उपकरणों के उपयोग रूपान्तरों की सीधे बाध के बारे में भी व्यवस्था की ।

४. प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले बुनकरों को पर्याप्त शात्रुचि देने की व्यवस्था होनी चाहिये ताकि उत्पादन करने से प्राप्त होने वाली आय को छोड़कर वे बुनकर प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिये जा सकें ।

५. मसूरिया बुनकर समितियां अलग से स्थापित की जावें या विद्यमान समितियों को पुनर्गठन कर दिया जाय । इन सब समितियों का एक संघ स्थापित हो विसे हो बाद में सूत व रेशम का कौटा मिले । वर्तमान में तात्कालिक कदम के रूपमें सरकार या राजस्थान राज्य बुनकर सहकारी संघ द्वारा क्रय विध्य केंद्र को ही इस रूपमें बढल दिया जाय । इसे नियंत्रित मूल्यों पर कच्चा माल व अन्य सामग्री प्राप्त कर सदस्य समितियों में पितरित करने व उनके उत्पादन के उचित मूल्यों पर विध्य की व्यवस्था करनी चाहिये । इतमें सरकार भी मागोदार बने ताकि विद्य सम्बन्धी कठिनाई न बावे ; और नियंत्रण रहे विससे धोला व सरकारी कौषों का दुरुपयोग न हो । इसका सम्बन्ध कर्ताराम्द्रोय सहकारी संस्थानों से स्थापितकिया जाय ताकि यह वहां से सीधा कच्चा माल प्राप्त कर सके और निर्मित माल को विध्य के हेतु घोषा भेज सके । इससे मसूरिया बस्त्रों के प्रचार एवं विज्ञापन में भी सुविधा होगी ।

६. बुनकरों को सामान्य शिक्षा देने की व्यवस्था की जावे विसके लिये ग्रीड कक्षाएँ प्रारम्भ करनी चाहियें ।

७. प्रचार के लिये बाधुनिक ढंग से विज्ञापन किया जाना चाहिये मितव्ययता एवं कुशलता प्राप्त करने के लिये विज्ञापन का कार्य मसूरिया बुनकर सहकारी संघ द्वारा किया जाना चाहिये ।

८. नई बुनकर बस्तियों के निर्माण के साथ साथ विद्यमान घरों को समुचित सम्मत व मसूरिया उत्पादन के उपयुक्त बनाने के लिये आवश्यक परिवर्तन करने हेतु तत्कालिक व मध्यकालीन कण भी दिये जाने चाहियें ।

९. देशी वाचारों की अज्ञेता विदेशी वाचारों के विस्तार पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिये । इसके लिये विदेशों में समाचार पत्रों में इसका विज्ञापन किया जाय, वहां पर होने वाली प्रदर्शनियों में इसका प्रदर्शन किया जाय । चलचित्रों में विज्ञापन पट्टियां द्वारा प्रचार किया जाय । विदेशों में विद्यमान सहकारी एवं सरकारी विज्ञापकों में इसकी बिक्री एवं प्रदर्शन की व्यवस्था होनी चाहिये ।

विदेशों में विपणीम- विस्तार का कार्य बसिठ भारतीय हाथ क्या वस्त्र विज्ञान सहकारी समिति लि० एवं बसिठ भारतीय हस्तकला एवं हाथकर्मियां नियमित निगम द्वारा किया जाना चाहिये क्योंकि इनके विदेशों में विक्रय गृह विपणन हैं और मविष्य में भी ये नये नये विक्रय गृह स्थापित कर रहे हैं और कर सकते हैं ।

१०. वर्तमान में उत्कृष्ट कोटि की बाबुनिक हवाई की व्यवस्था इस क्षेत्र में न होने के कारण बम्बई, दिल्ली वयपुर आदि में जाकर हवाई होती है । इस कोटा या क्षेत्र में ही उत्कृष्ट कोटि की हवाई व्यवस्था की जानी चाहिये । यह कार्य संघ द्वारा आसानी से प्रारम्भ किया जा सकता है ।

११. बरी की पर्याप्त व सस्ती दर पर उपउद्भि के लिये कोटा में लघु-उद्योग के रूपमें बरी निर्माणशाळा स्थापित की जावे ।

१२. गांव में सस्ती विद्युत उपउद्भि की जावे जिससे वर्षाकाल में, अन्धेरे मकानों में व रात्रि के समय भी बुवाई का कार्य किया जा सके ।

१३. स्वास्थ्य विभाग द्वारा इनकी बांखों की सुरक्षा के लिये उपयुक्त औषधि की व्यवस्था की जानी चाहिये ।

१४. सहकारी समितियों द्वारा विभिन्न स्थानों पर मनोरंजन के विभिन्न कार्यक्रम समय समय पर आयोजित किये जाने चाहिये । बुनकर बस्ती में मनोरंजन के हेतु अलग कक्षा रचना जा सकता है ।

१५. स्त्रियों के महत्वपूर्ण योगदान, निरंतर कार्यक्षमता, उत्साह आदि को ध्यान में रखकर उनके लिये शिक्षा, स्वास्थ्य एवं मनोरंजन की व्यवस्था अलग से एवं विशिष्ट रूप से की जानी चाहिये ।

१६. मांग वृद्धि के साथ न्ने साथ कोटा विभाग के उन विभिन्न स्थानों पर जहां बुनकरों की बड़ी संख्या विद्यमान है, इसकी बुवाई का प्रचार किया जाना चाहिये ।

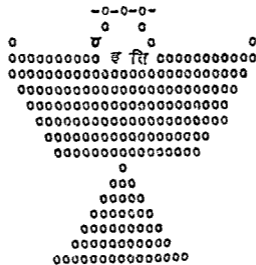
१७. कच्चे माल की समस्या के हल के लिये उत्कृष्ट कोटि का १०० से १६० फाउन्ट तक का सूत भारतीय सूती मिर्छों में ही तैयार करवाने के लिये प्रयत्न करना चाहिये । इसी प्रकार कृत्रिम रेशम जो कि इसमें उपयोग न्ने की जाती है और बापान से जाती है उसके स्थानापन्न के लिये भारत में ही इस प्रकार की रेशम उत्पादन करने के लिये आवश्यक प्रयत्न किये जाने चाहिये ।

१८. विदेशों से लायात किया हुआ सूत व रेशम संघों के माध्यम से उपउद्भि

कर इनके मुश्यों में होने वाली चौर बाजारी को रोका जावे ।

मविष्य :-

सरकार एवं सहकारी विभाग द्वारा इसके विकास एवं विस्तार में रुचि, विदेशों से जा रही भारी मांग, उत्पादन के विस्तार के लिये पर्याप्त ज्ञान, सस्ती विद्युत् की उपलब्धि, कोटा के विकास के साथ साथ इसकी स्थानीय मांग में हो रही वृद्धि और इस उत्पादन को उत्तमी विशेषतायें इसके उज्ज्वल मविष्य के लिये आदर्श परिस्थितियाँ उपलब्ध करती हैं । किंतु सुदृढ़ बाजार पर स्थायी विकास तभी हो सकता है जब आत्मसहायता का मार्ग ग्रहण किया जाय । इसके लिये कुछ बहुउद्देशीय सहकारी समितियाँ एवं संघ स्थापित करने होंगे और तात्कालिक रूपसे सरकार को जागे बढ़कर सक्रिय योगदान देना होगा । यदि सरकार, बुनकर और व्यापारी सब मिलकर जानसो सहयोग से काम करें तो इस उत्पादन का राष्ट्रीय व विदेशी बाजार अल्पकालिक विकसित हो सकता है जिससे मसूरिया उत्पादन के साथ कैथून व कोटा का नाम बूटकर कोटा विभाग के विभिन्न स्थानों पर विद्यमान बुनकरों की हजारों फार्मिडियों का नाम सुद्ध सकता है । साधन, सुविधायें एवं ज्ञान विद्यमान है आवश्यकता केवल संगठन, सने-समानदारी, कठिन परिश्रम के द्वारा सुविधाओं के समुचित एवं मितव्ययता पूर्ण उपयोग की है ।



१	२	३	४	५
२२.	सभा मौमोनान सुल्तानपुर	सुल्तानपुर	७२३	१७-८-४५
२३.	कौड़ुवां हाथकारा वस्त्र उत्पादक सहकारी समिति लि०	कौड़ुवां	७२४	१७-८-४५
२४.	सोसमाली हाथकारा वस्त्र उत्पादक सहकारी समिति लि०	सोसमाली	७४०	५-२-४६
२५.	बड़ौद हाथकारा वस्त्र उत्पादक सहकारी समिति लि०	बड़ौद	७४४	२८-३-४६
२६.	मांगरौल हाथकारा वस्त्र उत्पादक सहकारी समिति लि०	मांगरौल	६११	
२७.	मसूरिया हाथकारा वस्त्र उत्पादक सहकारी समिति	बून्दी	१६५७	२३-६-५७
२८.	मौरहीपाडा मसूरिया हाथकारा वस्त्र उत्पादक सहकारी समिति	बून्दी	२१२वी, २३-१२-५७	
२९.	कुतफर सहकारी समिति	राठौडा	१०५२वी, २३-६-५९	

प्रस्तावलिपियां

क. व्यापारी :-

- १ - दुकान का नाम एवं पता
- २ - संगठन का प्रकार
- ३ - स्थापना वर्ष
- ४ - वर्ष जब से मसूरिया कन्डे का व्यापार करते हैं
- ५ - क्या क्या कार्य सम्पादित करते हैं :-
 - क- कच्चे माल का आयात(देश से विदेश से)
 - ख- सच्चा एवं उपकरणों का आयात
 - ग- द्रव्य (१) सैठियों से (२) बुनकरों से
 - घ- कुनाई (मजदूरी के बाजार पर) कुनाई की दरें
 - च- विद्व्य (१) स्थानीय (२) बाहर (देश धोर विदेश)
- ६ - गत वर्ष में विद्व्य (मात्रा एवं मूल्य) रु. स्थानीय स. निर्यात
- ७ - प्रचलित बाजार भाव (क) कच्चा माल (ख) उपकरण एवं सच्चा (ग) उत्पादन
- ८- कुमानित द्रव्यों की संस्था कितना उत्पादन इनके पास बाता है
- ९ - विभिन्न उत्पादनों का कुमानित प्रतिशत

साड़ी, धान, पैसे, हुपट्टे, चाके. एवं कसत कस्य
- १०- व्यापार में लगी पूंजी
- ११- कच्चा माल एवं उपकरणों के विभिन्न प्रकार कहां से मंगाते हैं एवं द्रव्य मूल्य

सूत, रेशम, धरी, मसूराइब, पूना रेशम, कंठी, ढाँटे
- १२- बाहर माउ कहां कहां बाता है और कित फिल कार्मों में प्रयुक्त होता है
- १३- उत्पादित माउ किस प्रकार प्राप्त करते हैं
- १४- केवल मसूरिया का व्यापार करते हैं या अन्य व्यापार भी साथ में होता है
- १५- कठिनाइयां जो सामने आती हैं
- १६- अन्य (क) गत वर्षों में कच्चे माल एवं विभिन्न उत्पादन एवं उनको विभिन्न किस्मों के मूल्य (ख) लाभ का प्रतिशत आदि

- १- नाम एवं पता
- २- मसूरिया क्यों कबूते हैं ? कब से बुना धारहा है ? कितने चालू किया ? आदि ।
- ३- मसूरिया बुनवाने का काम कब से कर रहे हैं ?
- ४- इससे पूर्व क्या करते थे ?
- ५- स्थानानुसार क्यों की संख्या बिन पर बापका कनड़ा बुना जा रहा है ।
- ६- क्या बुनाई का काम भी करते हैं ?
- ७- क्या किसी सहकारी समिति के सदस्य हैं ? यदि हां, तो क्या कोई पद भी ले रता है ?
- ८- कच्चा माल कहाँ से और कैसे प्राप्त करते हैं ?
- ९- स्वयं का ही बुनवाते हैं या ज़र भी करते हैं ?
- १०-क्यों का स्वामित्व कितना है (क) बुनकरों का (ख) स्वयं का ।
- ११-कच्चा माल प्राप्त करते एवं बुनाई के लिये देने की शर्तें ।
- १२-यदि मुख्य मुख्य उपकरणों का भी प्रबन्ध करते हैं तो (क) कहां से प्राप्त करते हैं ? (ख) कैम मूल्य ?
- १३-वार्षिक उत्पादन को बापके माध्यम से होता है ? (क) बुनाई (ख) ज़र ।
- १४-कच्चे माल की सफत (वार्षिक) मूल, रेशम, बरी, एवं अन्य ।
- १५-विभिन्न प्रकार के उत्पादनों का अनुपात
- १६-किस प्रबन्ध कहां से होता है ? (क) स्वयं को फूँकी (ख) व्यापारियों से उधार (ग) सहकारी समिति ने कण (घ) अन्य ।
- १७-विक्रय :-
 - (क) कितने व कहाँ करते हैं
 - (ख) मूल्य निर्धारण विधि
 - (ग) आनका पारव्रमिक निर्धारण विधि ।
- १८-मजदूरी को प्रयुक्त दरें क्या हैं ?
- १९-कन्व सहायक व्ययसाय यदि कोई हो ?
- २०-बुनाई प्रशिक्षण कहां से प्राप्त किया ?
- २१- मासिक वाय
- २२- वाय ।

- १- मसूरिया क्यों कहते हैं एवं कबले बुना वा रहा है ?
- २- क्या से एवं किससे सीता और सीतले में कितना मय लगा ?
- ३- क्या से बुन रहे हो ?
- ४- कुंकर का स्वरूप (क) स्वयं के लिये उत्पादन कर्ता
(ख) सेठियों के लिये उत्पादन कर्ता
(ग) सहकारी समिति के लिये
(घ) व्यापारियों के लिये
- ५- क्या सहायक व्यवसाय वा भाय का कोई साधन
- ६- यदि स्वयं के लिये उत्पादन करते हैं तो :- (क) कच्चा माल क्या से प्राप्त करते हैं ? (ख) कौ प्रो प्राप्त करते हैं एवं कि शर्तों पर प्राप्त करते हैं - उधार । नकद (ग) शुभ मूल्य (घ) विद्रुय - किसको एवं क्या करते हैं ? मूल्य निर्धारण विधि (च) शुद्ध प्रतिकूल जो प्राप्त हो जाता है
- ७- यदि सेठियों वा उन्नत व्यवसायियों के लिये उत्पादन करते हैं तो (क) उनकरण एवं क्या स्वयं का है वा उनका (ख) मजदूरी क्या मिलती है ?
- ८- यदि सहकारी समिति के लिये उत्पादन करते हैं (क) क्या उसके सदस्य हैं ? (ख) क्या कोई ऋण प्राप्त कर रहा है ? (ग) क्या राशि (घ) मजदूरी की दर (च) क्या सहकारी समिति लाभान्वित देती है यदि हां तो कितना ? (ङ) क्या कोई सुविधा वा सहकारी समिति देती है । (ज) क्या और ऋण प्राप्त करना

५. राबस्थान हस्तकला विक्रमालय, नई दिल्ली

७. बलिष्ठ भारतीय हस्तकला एवं लघुव्यापार निर्यात निगम,

२४६- दादाभाई नाराबो रोड,

परिशिष्ट - व

सरकारी एवं सरकारी विक्रमालय

(जहाँ मयूरिया वस्त्रों
का विक्रय होता है)
=0=0=0=0=0=

१. अखिल भारतीय हाथ कर्मा वस्त्र विक्रय समिति लि०:-
धन्मभूमि, बेम्बर, ग्राउण्डफ्लोर, फर्स्ट स्ट्रीट, बम्बई-१
२२१, दादाभाई नौरोजी रोड, बम्बई
६, रत्न बाजार, मद्रास
लिन्डले स्ट्रीट, कलकत्ता
६-ए फ्लॉट प्लेस, नई दिल्ली
विदेशी में :-
कन, बैकॉंग, फोल्म्बो, कुला, ठम्पुर एवं सिंगापुर
२. हाथकर्मा गृह (हैन्डूम हाउस)
३ -ए, गेस्टर प्लेस, त्रिनसेड स्ट्रीट,
कलकत्ता
३. हाथकर्मा गृह, ६-ए फ्लॉट प्लेस,
नई दिल्ली
४. हाथकर्मा गृह, मद्रास
५. राजस्थान राज्य कुनकर सरकारी संघ लि०, :-
हाथकर्मा वस्त्र विक्रय केंद्र, जयपुर
हाथकर्मा वस्त्र विक्रय केंद्र, जाङ्गेर
६. राजस्थान हस्तकला विक्रमालय, नई दिल्ली
७. अखिल भारतीय हस्तकला एवं हाथकर्मा निर्यात नियम,
२४६- दादाभाई नौरोजी रोड,

स्थिति दर्शन-फरवरी, १९६४

सामान्य रूपसे सर्वेक्षण का कार्य नवम्बर, दिसम्बर मास तक पूर्ण हो चुका था। इसके बाद दिसम्बर, जनवरी व फरवरी में भी उद्योग के विस्तार संगठन एवं मूल्यों में अत्यधिक परिवर्तन हुये हैं एवं सरकार द्वारा भी कुछ नये कदम उठाये गये हैं और कुछ नये कदम उठाने का आश्वासन मिठा है।

एक काल में फौज, सांगोद, सातोली, साटीन, कवास, खानपुर आदि स्थानों पर भी उत्पादन प्रारम्भ हो गया है एवं कोटा की द्वितीय ^{प्रगत} कुतकर बस्तो मांगरील में भी मसूरिया कुत रहे क्षर्णों को संख्या बढ़कर १३० के लगभग हो चुकी है और निरन्तर बढ़ रही है। इसी प्रकार अन्य केंद्रों पर भी कुतकर मोटा काम छोड़कर निरन्तर मसूरिया कुतना सीज रहे हैं। परिणामस्वरूप अब तक कैच केंद्र के सेठिये सभ्यत स्थानों पर काड़ा कुतवाते थे किंतु अब मांगरील में भी वहां के ही ५-६ सेठियों ने 'जां पड़े मोटा कनडा कुतवाते थे मसूरिया कुतवाना चालू कर दिया है।

मजहुरी को दर्द अभी भी वहाँ है जो दिसम्बर में घटाकर इस कर दो गई थीं। रेशम व सूत का मूल्य बढ़े हैं परन्तु परी का भाव और अधिक बढ़ गया है।

रिजर्व बैंक द्वारा कोटा केंद्रीय सहकारो बैंक को गम्मे क्षर्णों से मसूरिया उत्पादन हेतु ऋण देने की स्वीकृति प्रदान कर दी गई है। जिन पर कि सरकारी गारन्टी योजना लागू होगी। आशा है इनका उपयोग शीघ्र प्रारम्भ होगा। इसके लिये मांगरील में जिनमान कुतकर सरकारी समिति के अलावा एक अलग मसूरिया-उत्पादक सहकारो समिति संगठित करने की योजना बन चुकी है।

जनवरी, ६४ में महाराजा हरिश्चन्द्र जी द्वारा केंद्र क्षरे के समय मसूरिया कुत रहे क्षर्णों का निरोक्षण किया गया है और कच्चे माल, विप-प्रवन्ध एवं विपणन की समुचित व्यवस्था हेतु केंद्र में सरकार की ओर से एक निगम स्थापित करने का आश्वासन दिया गया है। हाल ही में खयपुर में मसूरिया उत्पादन के सम्बन्ध में सरकार द्वारा उभां आयोजित की गई थी जिनमें सरकार द्वारा इसके

विवरण अभी प्राप्त नहीं हुआ है।

वर्तमान में प्रचलित मूल्य एवं मजदूरी निम्न प्रकार हैं :-

१. कच्चा माल :-

(क) सूत (प्रति १० पॉउंड)	८० का०	१०० का०	१२० का०	१४० का०	१६० का०
देशी	७०)००	८०)००	११६)००	१३२)००	--
विदेशी	६२)००	६५)००	१२०)००	१५७)५०	१६०)००

(ख) रेशम :- (प्रति किलो)

देशी २०।२२ काउन्ट	--	१३।१५ काउन्ट	१२०)००
विदेशी २०।२२ काउन्ट	१८३)००	१३।१५ काउन्ट	२०४)००
फ्लारेशम	--	१७२)००	

(ग) बरी (प्रति गट्टक-२४० ग्राम)

	१४०८ गजी	२७०० गजी	२४०० गजी
स्वर्ण	६५)००	११२)००	११०)००
रजत	-----	७२)००	-----

(घ) मसैराकल (प्रति तोला) :-

१२० नं०	१०० नं०
१)७५	१)५०

२. मजदूरी :-

उत्पादन एवं फिस्म	दिसम्बर ६३ से पूर्व	दिसम्बर ६३ से
१	२	३

(क) धान (प्रतिपाण २५ गज)

२०० सत	६०)००	४५)००
२५० सत	७०)००	५५)००
३०० सत	८०)००	६५)००

१

२

३

(स) साड़ियाँ (प्रति पाण्ड २५ गज)

बरी कितार	६०)००	४५)००
बरी स्नाट सादा	६३)००	४८)००
बरी स्नाट रंगीन (दौरंग)	६५)००	५०)००
बरी बंगला	७०)००	५०)००
बरी चौकड़ी (पांच सत दौ तार)	७०)००	५०)००
बरी चौकड़ी (पांच सत चार तार)	७२)००	५२)००
बरी चौकड़ी (तीन सत दौ तार)	७१)००	५१)००
बरी चौकड़ी (तीन सत चार तार)	७३)००	५३)००
बरी चौकड़ी (दा सत दौ तार)	७३)००	५३)००
बरी चौकड़ी (दौ सत चार तार)	७५)००	५५)००
बरी चौकड़ी (एक सत दौ तार)	८२)००	६०)००
बरी चौकड़ी (एक सत चार तार)	६०)००	६५)००
साड़ी फूलदार (१०० फूल बरी)	८०)००	६३)००
साड़ी पूरा रेशम	७२)००	५५)००

-०-

(ग) साफा :- (२७ गज की पाण्ड)

बरी कितार	६५)००	५०)००
बरी चौकड़ी ३ सत	८०)००	६०)००
२ सत	६०)००	६५)००
१ सत	६५)००	७०)००

३. उत्पादन मूल्य :-

	<u>उत्पादन एवं क्रिस</u>	<u>दिस० ६३ से पूर्व</u>	<u>दिस० ६३ से</u>
<u>(क) धान (१२ गज)</u>			
	२०० सत	५५)००	५०३)००
	२५० सत	६५)००	६१)००
	३०० सत	७५)००	७२)५०
<u>(ख) साड़ी (५गज)</u>			
	घरी क्लार	२५)००	२२)००
	घरी स्नाट गादा	२६)००	२३)२५
	घरी स्नाट रंगिन	२८)५०	२४)००
	बरी बंगला ३ सीक ६ तार	३३)००	२६)५०
	बरी बंगला ४ सीक ६ तार	३४)००	३१)००
	घरी चौकड़ी ५ सत २ तार	३३)००	३०)००
	५ सत ४ तार	३५)००	३३)५०
	४ सत २ तार	३४)००	३१)००
	४ सत ४ तार	३८)००	३४)००
	३ सत २ तार	३७)५०	३५)००
	३ सत ४ तार	४२)००	३८)००
	२ सत २ तार	४२)००	४०)००
	२ सत ४ तार	५२)००	४५)००
	१ सत २ तार	७०)००	६०)००
	१ सत ४ तार	६०)००	७२)५०
	रंगिन मस्टा	२८)००	२५)००
	फूलदार	५०)००	४५)००
	टीसू सादा	८०)००	७५)००
<u>(ग) साफा :- (६ गज)</u>			
	घरी क्लार	४०)००	३६)००
	घरी चौकड़ी ० सत	१००)००	९५)००

संदर्भ ग्रन्थ-सूची

१. कोटा राज्य का इतिहास -- डा० मथुरा आठ शर्मा
२. प्राचीन भारतीय वैज्ञानिकता -- डा० मोती चन्द
३. विभिन्न रजिस्टर मर्दम जुमारो रियासत, कोटा १९२१
४. विभिन्न रजिस्टर मर्दम जुमारो रियासत, कोटा १९३१
५. जनगणना रिपोर्ट, कोटा जिला १९५१
६. भारतीय धर्म-शास्त्र-बोधवार एवं वैरी
७. भारत १९६३
८. ग्रामीणीय मासिक पत्र
९. राजस्थान एयर बुक १९६३
१०. अहिंसक समाजवाद को जोर -- गांधी
११. सहकार संकल्प -- प्रचार संविभाग, सहकारी विभाग, राजस्थान ।
१२. कतिपय सहकारी मुद्दा -- डा० स्वल्पचन्द्र मेहता
१३. साधारण सिद्धान्त -- अरिष्ठ भारतीय छात्रकर्मा योर्ड
१४. पैन्पेड्स, अरिष्ठ भारतीय छात्र कर्मा सप्ताह ।

